कम्बोडिया के संस्कृत अभिलेख
भाग 2
डॉ. महेश कुमार शरण
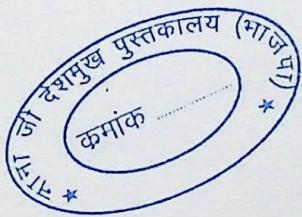
कम्बोडिया के संस्कृत अभिलेख

द्वितीय भाग

डॉ० महेश कुमार शरण

एम०ए० (प्रा०भा०ए०अ०), एम०ए० (इति०), पीएच० डी०, डी० लिट्०, डी०आर०एस०;
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष,
स्नातकोत्तर प्राचीन भारतीय एवं एशियाई अध्ययन विभाग,
गया कॉलेज़, गया
(मगध विश्वविद्यालय, बोधगया);
पूर्व अतिथि प्राध्यापक,
महाचुलालौंगकौर्न बौद्ध विश्वविद्यालय, बैंकॉक (थाईलैण्ड);
महामहिम राज्यपाल बिहार से सम्मानित

॥ नामूलं लिख्यते किंचित् ॥

प्रकाशन-विभाग

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

नयी दिल्ली-110 055

'KAMBODIYĀ KE SAṀSKṚTA ABHILEKHA'
Vol. II
by Dr. Mahesh Kumar Sharan

Published by:
PUBLICATIONS DEPARTMENT
Akhila Bhāratīya Itihāsa Saṅkalana Yojanā
Baba Sahib Apte Smriti Bhawan, 'Keshav Kunj', Deshbandhu Gupt Marg,
Jhandewalan, New Delhi-110 055
Ph.: 011-23675667
e-mail : abisy84@gmail.com
Visit us at : www.itihassankalan.org

First Edition : Kaliyugābda 5117, i.e. 2015 CE

Laser Typesetting & Cover Design by:
Mahesh Narayan Trigunayat, Amit Gaurav & Mukesh Upadhyay
Cover Introduction :
Angkor Vat— an image of heaven on the earth early 12th century

Printed at: Graphic World, 1659 Dakhni Sarai Street,
Daryaganj, New Delhi-110055
Price: ₹ 2,000/- (2 Vols. set)
(Funded by Madhav Sanskriti Nyas)

ISBN : 978-93-82424-16-1 (set)

प्रकाशक :
प्रकाशन–विभाग
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
बाबा साहेब आपटे–स्मृति भवन, 'केशव–कुञ्ज',
झण्डेवाला, नयी दिल्ली–110 055
दूरभाष : 011–23675667
ई–मेल : abisy84@gmail.com
वेबसाइट : www.itihassankalan.org

प्रथम संस्करण : कलियुगाब्द 5116, सन् 2014 ई०

लेज़र–टाईपसेटिंग एवं आवरण–सज्जा :
महेश नारायण त्रिगुणायत, अमित गौरव एवं मुकेश उपाध्याय
आवरण–परिचय :
अंगकोरवाट – पृथ्वी पर स्वर्ग का एक प्रतीक (आद्य बारहवीं शताब्दी)

मुद्रक : ग्राफ़िक वर्ल्ड, 1659, दखनी सराय स्ट्रीट,
दरियागंज, नयी दिल्ली–110 002

वन्दना
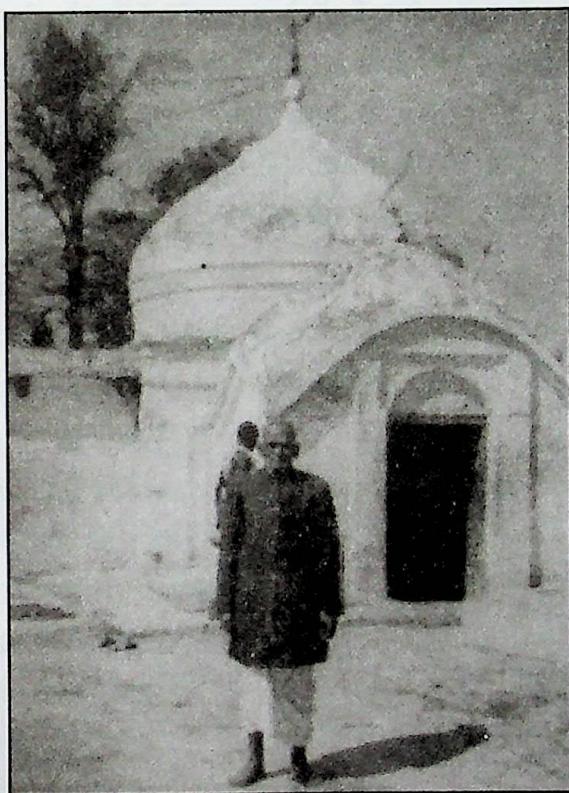
बिहार राज्य के सीतामढ़ी जिलान्तर्गत, बेलसन्ड अनुमंडल के शिवनगर स्थित लेखक के गाँव के दमामीमठ के बाबा ईशाननाथ महादेव का प्राचीन मन्दिर

ऋग्भिर्व्वह्नि शिखाकलाप विसरव्यक्ताभिरैन्द्रीन्दिशं

प्रोधद्वायुसमीरितेन यजुषा यो दीपयन्दक्षिणाम्।

साम्ना चन्द्रमरीचिरश्मिनिकर प्रद्योतितेनापरा-

ङ्कौवेरीञ्च विभाति तैस् समुदितैस्तस्मै नमश्शम्भवे।

पूरब दिशा में ऋग्वेद की स्तुतियों के द्वारा अर्चियाँ फैलाते हुए अग्नि के रूप में, यजुर्वेद की स्तुतियों के द्वारा दक्षिण दिशा में प्रवाहमान वायु के रूप में, सामवेद की स्तुतियों के द्वारा पश्चिम दिशा में रश्मि समूहों के अधिष्ठान चन्द्रमा के रूप में तथा सभी रूपों में एक साथ उत्तर दिशा में प्रकाशित होनेवाले शिवजी को नमस्कार है।

(कम्बोडिया नरेश राजेन्द्रवर्मन द्वितीय (944 ई.-968 ई.) का प्रे रूप अभिलेख पद्य संख्या-1)

विषयानुक्रमणिका

बन्ते श्री अभिलेख
Bantay Srei Inscription

सियम रियप जिले में स्थित बन्ते श्री मन्दिर में एक खड़े पत्थर पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यह अभिलेख भगवान् शिव एवं शक्ति की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। उसके बाद राजा जयवर्मन तथा उनके गुरु यज्ञवराह एवं गुरु के छोटे भाई विष्णु कुमार की प्रशस्ति इस अभिलेख में है। अभिलेख से हमें बन्ते श्री के केन्द्रीय मन्दिर में चार भाइयों द्वारा भगवान् शिव के महेश्वर लिंग की स्थापना की चर्चा है। इसमें श्री भद्रेश्वर के साथ इस देवता की प्रसन्नता के लिए दानों का भी वर्णन है। इसके बाद इसमें मूर्ति की देखभाल के लिए कुछ संकेत प्रदर्शित किये गये हैं– अतिथियों के खान–पान के नियम, प्राध्यापकों इत्यादि के द्वारा अटूट वेदपाठ इत्यादि। इस मूर्ति की स्थापना की तिथि शक संवत् 889 दी गयी है।

इस अभिलेख में कुल 44 पद्य हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इसका सम्पादन किया है ।[1]

नमश् शब्दगुणायास्तु व्यतीतेन्द्रियवर्त्मने ।
विश्वतो व्यश्नुवानाय व्योमरूपाय शम्भवे ॥ 1
उन्मना या सती कान्ता नितान्त शिवसंगता ।
जगद्धिताय शाशक्तु सा शक्तिरचलात्मजा ॥ 2
श्री कम्बुजेन्द्र सन्तानसन्तानक महीरूहः ।
सुतश् श्रीजयवर्म्मेति यश् श्रीराजेन्द्रवर्म्मणः ॥ 3
कालदोषाम्बुद्यौ मग्ना दुर्ग्गे गम्भीरभीषणे ।
प्राप्य पारमिवोत्तुङ्गं यं समाश्वसीषुः प्रजाः ॥ 4
प्रणयावनते कृत्स्ने चम्पाद्यीशादिराजके ।
केवलं गुणवत्प्रीत्या नोज्झाञ्चापञ्चकार यः ॥ 5
स्मरयत् स्मरसौन्दर्य्यं सौन्दर्य्यं यस्यनिर्म्मलम् ।
नूतनाम करोन् नूनम् अनूनामरतिं रतेः ॥ 6
दक्षिणापथविन्यस्त सारस् सिद्धिंप्रदोऽर्थिनाम् ।
युक्तं यो युक्तिनिपुणैश् श्रीपर्व्वत द्वतीरितः ॥ 7
दूरे येषां मनांसीमामस्पृक्षन् क्ष्मां महीभृताम् ।
आदर्शनपथात्तेषां यं संप्राप्य शिरांसि तु ॥ 8
प्रायशो दुर्व्विदग्धानाम् पार्थिवानां लयन्दद्यत् ।
अदि्भस्तुज्य मजन्युग्रं तेजो यस्यापि दुःसहम् ॥ 9
जाग्रतः प्रतिवर्षान्तं शौरेश् श्रीरनुरागिणी ।
यस्य नित्य प्रबुद्धस्य कथाभिर्म्मास्य कत्थ्यत ॥ 10
वृद्धोऽपि पादहीनोऽपि राजधर्म्मः कलौ युगे ।
यद्दण्डनीति मालम्ब्य प्रवृत्तोऽस्खलितं पथि ॥ 11
तस्य राजाधिराजस्य सुरराजसमद्युतेः ।
यश् शैवदीक्षाविधिना शास्तानुग्राहको गुरुः ॥ 12
यशोवर्म्मपुत्रस्य पौत्रस्य श्रीन्द्रवर्म्मणः ।
श्रीहर्षवर्म्मणो राज्ञो दौहित्रो योऽग्रणीस् सताम् ॥ 13

---

1. *IC*, p.147

70. बन्ते श्री अभिलेख

धिया गोत्रेण तुल्यस्य पुरहूतपुरोद्यसा ।
दामोदराख्यविप्रस्य वह्वृचस्यात्मजश्च यः ॥ 14
प्रकाशरूपास् संप्राप्य सुप्रसन्न सर्ग्गतः ।
अर्कत्विष इवादर्श यं विद्या व्यद्युतन् भृशम् ॥ 15
मत्तयाष्टपुष्पिकां शैवीं हवींषिच हविर्भुजि ।
योगञ्च प्रत्यहं योग्यस् स्वपोषमिव योऽपुषत् ॥ 16
हिरण्यानि च वासांसि कुण्डोघ्नीगश्चि पर्व्वसु ।
यः प्रतिग्राहयामास मासि मासि द्विजन्मजः ॥ 17
सदा यश्चान्तिक सदा राज्ञा श्रीजयवर्म्मणा ।
मायूरच्छत्र सौवर्ण्णादोलाद्यैस सत्कृतः कृती ॥ 18
ये बृंहयन्त्यत्यल्पद्धियां कुलविद्यादयो मदम् ।
व्यनीनशत्तैर्युगपत् परेषामात्मनश्च यः ॥ 19
पातञ्जलये कणादेऽक्षपादकपिलागमे ।
बौद्धे वैद्येऽय गान्धर्व्वे ज्यौतिषे नयतेस्म यः ॥ 20
आख्यायिकाकृतिरभूत् स्वदेशे यदुपक्रमम् ।
ननाभाषालिपिज्ञश्च प्रयोक्ता नाटकस्य यः ॥ 21
दोषवैषम्य दारिद्र्यमिथ्याज्ञानमयीं रूजः ।
भेषजद्रव्य विद्याभिर्य्यो जन्तूनामशीशमत् ॥ 22
दीनानाथन्ध कृश बालवृद्धा तुरादिभिः ।
दुःखार्ण्णवन्तितीर्षद्भिर्य्यत्सद्भाकुलमन्वहम् ॥ 23
काव्यैस् सच्चरितैर्दूरे नानाद्वीपान्तर स्थितान् ।
यस् सुमुत्सुकयामाम विदुषस् सज्जनानपि ॥ 24
सदस्सु सद्गुणैर्य्यस्य सज्जनायितुमिच्छताम् ।
प्रसह्यापि द्विषां नीता जिह्वा स्तुत्यविजिह्वताम् ॥ 25
शिवलिङ्गान्यनेकानि साच्चार्न्याशयमम्मसाम् ।
स्थापयामाश्रमांश्चास यश्चलिङ्गपुरादिषु ॥ 26
तस्य यज्ञवराहस्य विद्यानां पारदृश्वनः ।
ख्यातो विष्णुकुमाराख्यस् सोदर्य्यो योजघन्यजः ॥ 27
यस्यामृतमयीं विद्याज्योत्स्नां वक्रकुमुद्वनी ।

निर्ग्गतां गुरुवक्त्रेन्द्रोः पायम्पयमजृम्भत ॥ 28
कृत्स्नानि शब्दविद्यादिशास्त्राणि सकलाः कलाः ।
शैवञ्च गौरवं योगं भ्रातुर्ज्येष्ठादवाप यः ॥ 29
विद्यासन्तत्य विच्छित्त्यै कृत्स्नां वृत्तिञ्चकशिकाम् ।
पारमेश्वरपूर्वाञ्च योऽलिखच्छिव संहिताम् ॥ 30
महागुणैरनेकैर्यो गुरूणा प्राग् विभूषितः ।
हेमदोलादिविभवैर्भूचः कम्बुजभूभृता ॥ 31
ताभ्यामाचार्य्यवर्य्याभ्यां व्याप्राशाभ्यां यशोऽङ्शुभिः ।
भातृभ्यां स्थापितं लिङ्गमिदं शैवं यथाविधि ॥ 32
करङ्ककरकामत्रप्रमुखा हैमराजताः ।
रचनाधारभृङ्गारकुम्भादर्श प्रतिग्रहाः ॥ 33
नानारत्ननिबद्धानि महार्हाभरणानि च ।
बाह्याभ्यान्तरपूजार्हकृत्स्नोपकरणानि च ॥ 34
नरनारीजन प्राया बाह्यान्तः पारिचारकाः ।
क्षेत्रारामाभिरामाश्च ग्रामास् सपशुकिङ्कराः ॥ 35
तेन यज्ञवराहेण सह भ्रात्रा कनीयसा ।
अदायिषत भक्त्यास्मै शिवाय शिवतातये ॥ 36
मिश्रभोगश्च देवोऽपं श्रीभद्रेश्वर शूलिना ।
तस्मै देयं यथाशक्ति प्रतिवर्षमुपायनम् ॥ 37
कुलस्य पत्या कर्त्तव्यमातिथ्यं भोजनादिकम् ।
अध्यापकेन चाच्छिन्नं ब्रह्मसत्रमतन्द्रिणा ॥ 38
यो मतः कम्बुजेन्द्रस्य शैवाचार्य्योऽग्रणीर्गुरुः ।
तदधीनमिदन्देवकुलं रक्ष्यं यथाविधि ॥ 39
राज्ञीविज्ञापनैस् सप्तकृत्वो दुष्टस्य निग्रहैः ।
इहामुत्र बुभूषद्भिस् सद्भिस्तत् परिपाल्यताम् ॥ 40
अभ्यर्थितस्य गुरुणा राज्ञश् श्रीजयवर्म्मणः ।
गुर्व्वर्थोद्युक्तमनसः तदिदं किल शासनम् ॥ 41
अनादेयमदेञ्च भूपैस्तद्वल्ल भैरपि ।
परिरक्ष्यन्तु तत्पुण्यं यथा यज्चप्रकल्पितम् ॥ 42

70. बन्ते श्री अभिलेख

प्रष्टव्यपूर्व्ववृत्तान्त आप्रष्टव्योऽस्तु नारकैः ।
आकल्पान्तादवीच्यादौ यः कुर्य्यादिदमन्यथा ।। 43
भृङ्गोदयात पञ्चममारजीव-
शुक्रेषु याते दशमान्तमिन्दौ ।
शेषे रिमत्रास्थित माद्यबाद्ये
यम्येऽह्नि देवस् स नवाष्टमूर्त्तौ ।। 44

अर्थ–

शब्द हैं गुण जिसके ऐसे आकाश रूप शिव को नमस्कार करता हूँ जो इन्द्रियों के मार्ग से व्यतीत हो चुके हैं अर्थात् इन्द्रियों से जो परे हैं, अतीन्द्रिय हैं; जो विश्वव्यापी हैं, आकाशरूप हैं, शम्भु हैं ।। 1

उन्मत्त रहनेवाली जो सती शिव की कान्ता सदा शिव के साथ रहनेवाली जो पर्वत की पुत्री हैं, शक्तिरूपा हैं, संसार के कल्याण के लिए वह शक्ति प्रदान करें ।। 2

श्री कम्बुजराज की सन्तान के विस्तार करनेवाले वंशवृक्ष श्री जयवर्मन नाम से प्रख्यात् श्री राजेन्द्रवर्मन के पुत्र थे ।। 3

गहरे भयंकर दुःख से जाने लायक कालरात्रि रूप समुद्र में डूबी हुई प्रजाजन ने ऊँचे पार के समान जिसे पाकर सम्यक् रूप से आश्वासन को पाया ।। 4

प्रेम से नम्र कठिन चम्पा के राजाओं के समूह में जिसने केवल गुणी की प्रीति से धनुष से बाण नहीं छोड़ा ।। 5

जिसका निर्मल सौन्दर्य कामदेव के सौन्दर्य की याद दिलानेवाला है । कामदेव की स्त्री रति की बड़ी आरति को निश्चित ही नयी रति का रूप प्रदान कर दिया जिसने ।। 6

दक्षिण की ओर त्यागा है सार को जिसने, ऐसा राजा याचकों को सिद्धि देनेवाला युक्ति में कुशल जो उचित ही 'श्री पर्वत' नाम से विख्यात हुआ ।। 7

दूर पर जिसके मन हैं, वे राजाओं की पृथिवी को न छू सके थे । उनके

नेत्रपथ से जिसे पाकर सिरों का पाया था ।। 8

प्राय: कम पढ़े-लिखे राजाओं के प्रलय को धारण करता हुआ पातियों के समान जिसका तेज उत्पन्न हुआ जो तेज दु:ख से सहने योग्य है ।। 9

प्रतिवर्ष के अन्त में जागनेवाले विष्णु की प्रेयसी श्री लक्ष्मी जी नित्य जागनेवाले जिस राजा की कथाओं से नहीं इसकी कही जाये ।। 10

बूढ़ा भी पैरों से हीन भी राजधर्म कलियुग में जो दण्डनीति का आलम्बन कर प्रवृत्त होकर राह पर फिसलता नहीं है ।। 11

देवराज इन्द्र के समान प्रकाशमान उस राजाधिराज के जो गुरु शैव दीक्षा की विधि से शासन करनेवाले दयालु गुरु थे ।। 12

श्री यशोवर्मन के पुत्र श्री इन्द्रवर्मन के पौत्र के राजा श्री हर्षवर्मन के नाती जो सज्जनों में अग्रगण्य है ।। 13

बुद्धि से गोत्र से तुल्य बहुत ऋचाओं के ज्ञाता दामोदर नामक विप्र के जो पुत्र हैं इन्द्र के पुरोहित दामोदर थे ।। 14

प्रकाश रूप स्वभावत: सुप्रसन्न को पाकर सूर्य के तेज के समान दर्पणवत् बहुत विद्याओं को प्रकाशित किया था ।। 15

प्रतिदिन भक्ति से आठ फूलोंवाली शिव-सम्बन्धी हवियों के अग्नि में प्रदान करनेवाले प्रतिदिन योग्य योग को अपने पोषण के समान पोसा-पाला अग्नि के योग को ।। 16

पर्वों में सोने, कपड़े, दूध से कुण्ड को भरने लायक दूध देनेवाली गायें जो महीने-महीने ब्राह्मण को दान रूप देते थे ।। 17

सदा जो नजदीक सभावाले राजा श्री जयवर्मन द्वारा मयूर पंख निर्मित छत्र, स्वर्ण डोले आदि से प्रयत्नवान् सत्कार पानेवाला था ।। 18

जो छोटी बुद्धिवालों के वंश और विद्या आदि तथा मद को बढ़ानेवाला है, उन्हीं के द्वारा पुन:-पुन: अतिशय रूप से एक ही बार दूसरों के और अपने सब कुछ विनष्ट किये गये ।। 19

जो पाणिनीय व्याकरण के महाभाष्य में, आयुर्वेद के चरक में, कणाद

के बनाये तर्कशास्त्र में, अक्षपाद में, कपिल-निर्मित आगम न्यायशास्त्र में, बौद्ध शास्त्र में, बौद्धदर्शन में, वैद्यक में, गान्धर्व में, ज्योतिष में जय पाते थे ।। 20

जो आख्यायिका की आकृति हुए अपने देश में जो उपक्रम था उसको, न भाषाओं व बहुत-सी लिपियों के ज्ञाता थे, न प्रयोग करनेवाले नाटककार थे ।। 21

जो सभी प्राणियों के दोष, विषमता, दरिद्रता, मिथ्या ज्ञानवाली दुर्बुद्धि और बीमारियों को दवा की विद्या और द्रव्य की विद्याओं से सबकुछ को बार-बार बहुत रूप से शान्त करनेवाले थे ।। 22

प्रतिदिन दीन, अनाथ, अन्धा, दुबला, बाल-वृद्ध, बीमार आदि से दु:खरूप समुद्र को तैरकर पार करने की इच्छावालों से जिनका घर हमेशा आकुल अर्थात् अस्त-व्यस्त रहता था ।। 23

कविताओं से सुन्दर चरित्रों से बहुत दूर दूसरे नाना द्वीपों में रहनेवालों को जिसने विद्वानों को सज्जनों को उत्कण्ठित कर दिया था, मिलने के लिए सभी आते उत्सुकतापूर्वक उनसे मिलते थे ।। 24

सभाओं में जिसके सद्गुणों से सज्जन बनने की इच्छावाला शत्रुओं की जीभें टेढ़ापन छोड़कर दृढ़तापूर्वक इनकी स्तुति में लीन हुई थीं ।। 25

जिसने लिंगपुर आदि स्थानों में अनेक शिवलिंगों की स्थापनाएँ कीं । जलाशय यज्ञपूर्वक पूजा के साथ बनाये । आश्रमों की स्थापनाएँ कीं ।। 26

विद्या के उस पारदर्शी यज्ञवराह का सहोदर भाई विष्णु कुमार नाम से ख्यात था ।। 27

जिसकी अमृतमयी विद्या की छटा को जो मुख की चाँदनी को जो मुँह से निकलती थी, विद्या थी । गुरु के मुखरूप चन्द्र से निकलने पर पीते-पीते जम्हाई लेते थे शिष्य लोग ।। 28

बहुत कठिन-कठिन व्याकरण (शब्दविद्या) आदि शास्त्रों को सभी चौंसठ कलाओं को शिव-सम्बन्धी गौरव-गरिमापूर्ण योग को ज्येष्ठ भ्राता से जिसने पाया था ।। 29

विद्या की सन्तति धारा न टूटने देने की इच्छा से कठिन काशिका ग्रन्थ, वृत्तिग्रन्थ लिखे । परमेश्वर पूर्व शिवसंहिता ग्रन्थ जिसने लिखा था ।। 30

जो अनेक महान् गुणों से पहले गुरु से विभूषित था, सुवर्ण-निर्मित डोले आदि ऐश्वर्यों से पुनरपि कम्बुजराज से विभूषित हुआ ।। 31

उन दो आचार्य श्रेष्ठों द्वारा जिन दोनों के यश की किरणें सभी दिशाओं में फैली थीं । दोनों भाइयों द्वारा उचित विधि से शिवलिंग की स्थापना करायी गयी ।। 32

सोने, चाँदी से बने करंक कर का यहाँ प्रमुख वस्तुओं को रचना के आधार भृंगार, घैला आदि आदर्श दान दिये गये ।। 33

नाना रत्नों से अच्छी तरह बँधे बड़े मूल्योंवाले आभूषण अंतर्बाह्य पूजा योग्य कठिन उपकरण भी दिये गये ।। 34

नर, नारी जन बाहर-भीतर काम करनेवाले नौकर, सुन्दर खेत, वाटिका, बहुत से गाँव पशुओं और दासों से युक्त दिये गये ।। 35

उस यज्ञवराह के द्वारा छोटे भाई के साथ शिव के लिए भक्ति से दिलाये गये, दिये गये ।। 36

मिश्र भोगवाले ये देव हैं । श्री भद्रेश्वर शूली के द्वारा उन्हें यथाशक्ति प्रतिवर्ष उपनयन चढ़ौना देना चाहिए ।। 37

कुलपति द्वारा आतिथ्य सत्कार भोजनादि देना चाहिए । आलस्य छोड़ अध्यापक द्वारा जो कटा नहीं हो ऐसा ब्रह्मयज्ञ किया जाये ।। 38

जो कम्बुज राज के मत के अनुकूल पूजनीय गुरु शैवाचार्य अग्रणी गुरु हैं उनके अधीन यह देवकुल उचित विधि से रक्षा करने लायक है ।। 39

सात बार दुष्टों के निग्रहों से राज्ञी के विज्ञापनों से यहाँ इस स्थान को विभूषित करनेवाले सज्जनों द्वारा इसका पालन करने लायक है ।। 40

राजा श्री जयवर्मन के गुरु से प्रार्थना करने पर गुरु के लिए अर्थ के उद्योग के मनवाले राजा की आज्ञा निश्चित रूप से पालन करने लायक है ।। 41

जिस प्रकार यज्ञ करनेवाले के द्वारा प्रकल्पित है, उसी प्रकार सब ओर

से रक्षा करने लायक है । कुछ न लेने योग्य है न देने योग्य है, किन्हीं प्रिय राजाओं से भी रक्षा करने योग्य है । जो जिस चीज को प्रिय समझ कर लेना चाहे सो भी न लेकर इसकी रक्षा करे ।। 42

पूछने योग्य पूर्व वृत्तान्त नरक भोगनेवालों द्वारा पूछने लायक नहीं । कल्पपर्यंत अवीचि नामक नरक में रहें जो इस आदेश का उल्टा आचरण करें ।। 43

भृंग के उदय से पाँचवें सिंह मीन में बृहस्पति और शुक्र के रहने पर चन्द्र के मीन में आने पर शेष में दक्षिण में शनि दिन में देवनवाष्टमूर्ति की प्रतिष्ठा की गयी ।। 44

71
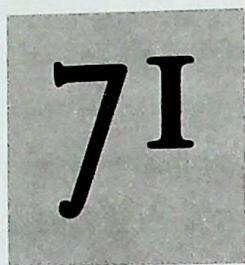
सेक ता तुई अभिलेख

Sek Ta Tuy Inscription

करेंग जिले में जो बेन माला में साढ़े सात मील पश्चिम की ओर है, सेक ता तुई का मन्दिर स्थित है । यज्ञवराह के स्थापत्य एवं दानों का वर्णन इसमें हम पाते हैं ।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 33 है । पद्य-संख्या 1 से 26 बन्ते श्री अभिलेख के पद्य-संख्या 1 से 26 के समान है । पुनः पद्य-संख्या 29 से 33 उपर्युक्त बन्ते श्री अभिलेख की पद्य-संख्या 39 से 43 के समान है ।

फिनौट ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है ।[1]

ब्रह्म क्षत्रेण तेनेदं विद्यानां पारदृश्वना ।
अस्मिन् यज्ञवराहेण स्थापितं लिङ्गमैश्वरम् ॥ 27

1. *BEFEO*, Vol. XXVIII, p.46

योऽसौ श्रीमत् त्रिभुवनमहेश्वर इतीरितः ।
तन्मिश्रभोगो देवोऽयं कल्पितस्तेन यज्वना ॥ 28

अर्थ–

विद्याओं के पारदर्शक, ब्राह्मण एवं क्षत्रिय से उत्पन्न उस यज्ञवराह के द्वारा यहाँ भगवान् शिव के इस लिंग की स्थापना की गयी ॥ 27

वे जो भगवान् श्री त्रिभुवन महेश्वर के नाम से विख्यात हैं, वे शक्कर (मिश्री) भोगदेव उस यज्ञकर्ता के द्वारा बनाये गये ॥ 28
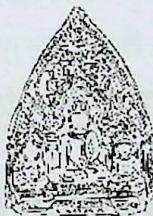
72

अंगकोर वाट अभिलेख
Angkor Vat Inscription

अंगकोरवाट के चारों ओर की खाई के उत्तर-पूर्वी कोने के बाहर ईंटों से बने मन्दिर के खण्डहरों में खड़ा पत्थर पाया गया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस इलाके को कपिलपुर कहा जाता है। यहाँ एक अभिलेख उत्कीर्ण है जिसमें राजा द्वारा अपने सेनाध्यक्ष वीरेन्द्रवर्मन को धार्मिक स्थापत्य के लिए आदेश का वर्णन है। सरकारी आदेश से इसकी पुष्टि होती है। इस स्थापत्य के लिए यह अभिलेख राजकीय विज्ञप्ति मानी जाती है। भगवान् विष्णु को यह मन्दिर समर्पित था।

प्रस्तुत अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 9 है।

फिनौट ने इस अभिलेख का सम्पादन किया था।[1]

---

1. *BEFEO*, Vol. XXV, p. 365

हरिरेकार्ण्णवादुर्व्वीमुद्धृत्य जय............।
सेवितस् स्मृतिमात्रेण यो दाता पदमव्ययम् ॥ 1
प्राप्ते कलो किल कलङ्ककलाकलाप-
लीढ़ज्जगद्दुरित कारिविपद्विवृद्धा ।
तद्भञ्जनात् कजभवो भुवि राजभयम्
स्वस् स्वामतारयति धूर्जटिपङ्कजाक्षौ ॥ 2
देव्याम् राजपरम्परोदय भुवि श्रीकण्ठवैकुण्ठयो-
रेकाङ्शो वसुधाद्युरामधिकधीरा वारिधेर्द्धरिणे ।
जातो द्यौतयशास् समस्तगुणभृद्धर्म्मावदाताकृतिन्
वाग्मौ वासवसख्य लक्षणयुतो गर्भेश्वरोयोवशी ॥ 3
वियद्ग्रहैश्वर्य्यशुभोदयः श्री-
राजेन्द्रवर्म्मेश्वर सूनुरासीत् ।
(राज)न्य वङ्शाम्बर नीर जाति
(राजां जयी श्री जयवर्म्मदेवः)....॥ 4
....।
वियद् ग्रहैश्वर्य्यशके तस्मिन् तद्वददाय स ॥ 5
तद् बाहुदण्डमाश्रित्य यूनापि कलिनाद्युना ।
वृद्धस् सञ्चालितो धर्म्मो न स्खलत्येकपादपि ॥ 6
सेनान्या जन्यजायेना स श्रीवीरेन्द्रवर्म्मणा ।
वन्द्यवीर्य्येण वीरैस्तन्तस्मिन्त द्वददापयत् ॥ 7
ज्वालाभिरालीढ़वियद्भिरूर्द्ध
धूमध्वैरौर भावृताङ्गम् ।
ये यान्तु यावद् रविरात्रिराजौ ॥ 8
आसंहृतेरिन्द्रपदे रमन्तान्
ते येऽनुकुर्व्वन्ति नृपेन्द्रवाणीम् ।
सुपुत्रपौत्राः पुनरन्तकाले
हरेः पदं यान्तु निरामयन्ते ॥ 9

अर्थ–

विष्णु ने एकार्णव से पृथिवी से उद्धार करके......जय स्मरण मात्र से जो विष्णु की सेवा करता है वह उसे अविनाशी कैवल्य पद देते हैं ।। 1

कलियुग के प्राप्त होने पर निश्चित रूप से कलंक की कलाओं के समूह से छुआ हुआ, संसार पापी होकर बढ़ी विपदाओं से भरा हुआ हो गया उसे काटने के लिए कम्बुज में उत्पन्न राजा पृथिवी पर शिव और विष्णु को उतारा ।। 2

देवी में राजा के वंश की परम्परा भूमि में शिव और विष्णु के एक अंश पृथिवी की धुरा जो अधिक क्षीरसमुद्र की धारणा में पैदा हुआ था प्रकाशित यशवाला सभी गणों को धारण करनेवाला धर्म से श्वेत आकारवाला सार और थोड़ा बोलनेवाला गर्भेश्वर था ।। 3

890 शाके में आकाश के ग्रहों के ऐश्वर्य का शुभ उदय श्री राजेन्द्रवर्मन ईश्वर का पुत्र राजाओं के समूह के वंश के आकाश का कमल राजा विजयी श्री जयवर्मन देव था ।। 4

........890 शाके में उसमें उस प्रकार वह लेकर ।। 5

उसकी बाँह-रूप दण्ड को आश्रित करके इस समय युवक कलि के द्वारा भी वृद्ध धर्म सम्यक् चालित हुआ कलि में एक पैर धर्म का बचा है तथापि चलता है ।। 6

सेनापति द्वारा उस वीरेन्द्रवर्मन द्वारा बँधे वीर्य-बलवाले के द्वारा वीरों से उसे उसमें उसी प्रकार दिला दिया ।। 7

बहुत ज्वाला से आलीढ़ चाटा हुआ आकाश से ऊँचा धुआँ-रूप ध्वजों से आच्छादित अंगवाला जो राजा की वाणी का उल्लंघन करनेवाले हों– वे सूर्य और चन्द्र जब तक रहें, तब तक नरक में जाएँ ।। 8

राजा की वाणी माननेवाले प्रलयकाल तक इन्द्र पद पर रमण करें, सुन्दर गुणोंवाले पुत्रों, पौत्रों से भरे-पूरे रहें फिर अन्तकाल में अविनाशी विष्णु के पद को प्राप्त करें ।। 9

73

बन्ते श्री अभिलेख
Bantay Srei Inscription

गकोर थोम के उत्तर 13 मील की दूरी पर स्थित बन्ते श्री का मन्दिर है। यहाँ के अभिलेख में त्रिभुवन महेश्वर के नाम से पुकारे जानेवाले शिव देवता की प्रार्थना है।

इस अभिलेख में कुल 11 पद्य हैं।

जॉर्ज सेदेस ने अंशतः इसका सम्पादन किया है।[1]

विविच्य चेदं पश्यन्ति ययोध्यनिदृशोऽन्निशम्।
अग्न्युष्णतावत् भूयास्तां शिवशक्ती शिवाय नः॥ 1
आचैतन्यादुपादान कालाव्यक्तः स्वकर्म्मणा।
जन्मना जगतां कर्त्तानुमितो यश्चिदाचितः॥ 2

---

1. *IC*, p.144

कर्त्तृत्वे युगपन्नानाकार्य्योत्पादस्य दर्शना- ।
न्नित्यानुत्तरसर्व्वार्थं यस्य ज्ञानमरनाद्यनम् ॥ 3
क्षित्यादिभिः प्रसिद्धाभिस्तनुभिस्तन्वता जगत् ।
उच्चैः कारणता ख्याता येनाानक्षरम् ॥ 4
शक्तिशक्तिमतोर्व्यक्तं भेदाभेदौ प्रदा.... ।
.........योऽधत्त संपृक्तमेकं स्त्रीपुंसयोर्व्वपुः ॥ 5
.....अन्तःप्रतिद्वन्द्वैर्य्यस्य धर्म्मादिभिर्युता ।
वशितादिगुणान् सन्तः स्मरन्ति स्मरनिग्रहात् ॥ 6
मथिताब्धेः सुधां दत्वा परेभ्यः पिबतो विषम् ।
यस्य मृत्योरसद्भावो विद्वद्भिरनुमीयते ॥ 7
वाग्वेशचारित्रगुणान् स्वीकृत्यावयवैः स्थिताः ।
यस्य सर्व्वात्मनोऽन्योन्यं विवदन्तेऽल्प बुद्धयः ॥ 8
दृष्टादृष्टार्थ विद्यानां य एकः प्रमयः परः ।
विकल्प(भेद)दाद् भिन्नानां सर्व्वापामिव चन्द्रमाः ॥ 9
सार्थेनेश्वरनाम्नैव कृत्स्नानस्पृशतापरान् ।
यत्स्वामित्वमसन्दिग्धं ख्यापितं भवचारिणाम् ॥ 10
जीयात् स(श्री)(त्रि)भुवनमहेश्वर इतीरितः ।
कृत्तिवोसाः कृ(त्स्न) वासो लिङ्गमूर्त्तिश्चिरादिह ॥ 11

अर्थ–

ध्यानयुक्त दृष्टिवाले निरन्तर विचार कर यह देखते हैं कि शिव तथा पार्वती अग्नि और उसकी ऊष्णता की तरह भिन्नाभिन्न हैं । वे शिव और शिवा हमलोगों के लिए कल्याणकर हों ॥ 1

अपने कर्म से, चेतन से लेकर क्षित्यादि जड़ोपादान तथा कालाव्यक्त (आकाश) तक के तथा जन्म से इन जगतों का जो चिद्चिदात्मक प्रभु भगवान् शिव कर्त्ता माने जाते हैं ॥ 2

जगत् कर्तृत्व होने पर भी उनके बहुत से कार्यों को एकसाथ ही होते देखने के कारण, सभी ज्ञानों में प्रमुख ईश ज्ञान असाध्य हैं । ईश्वर अगम्य हैं ॥ 3

क्षित्यादि प्रसिद्ध जड़ोपादानों से जगत् का विस्तार करते रहने से जो

संसार के प्रसिद्ध कारण रूप में उच्च स्वर से कहे जाते हैं । जिससे अविनाशी......
....।। 4

शक्ति और शक्तिमान के अव्यक्त भेदाभिन्न स्वरूप- जिन्होंने एकसाथ ही स्त्री-पुरुष- दोनों का शरीर धारण किया है ।। 5

.........अन्दर की प्रतिद्वन्द्विता से, जिसके वशितादि गुणों को धर्मादि से युक्त सज्जन लोग स्मरनिग्रहपूर्वक स्मरण करते हैं ।। 6

जिन्होंने मथे हुए समुद्र से निकले अमृत, दूसरों को देकर स्वयं विष पीया, जिनकी मृत्यु के असम्भव होने का अनुमान विद्वानों द्वारा किया जाता है ।। 7

वाग्रूपात्मक भगवान् शिव जो चरित्र गुणों (लीलाचरित्रों) को स्वीकार कर अवयवात्मक रूप धारण करते हैं तथा जिसके सर्वात्मस्वरूप को अल्प बुद्धिवाले अन्योन्य रूप से व्याख्यापित करते हैं ।। 8

जो दृष्टादृष्टार्थ विद्याओं का एकमात्र परम उत्स है। जो स्वयं एक होते हुए भी विकल्प से भिन्न-भिन्न दिखलाई पड़ता है ठीक उसी प्रकार जैसे एक ही चन्द्रमा अलग-अलग जल अधिष्ठानों में अलग-अलग दिखलाई पड़ता है ।। 9

नाम से वह ईश्वर है, परन्तु अर्थ से अन्य सभी लोगों को दुष्प्राप्य (अन्य सभी लोगों से स्पर्शरहित) है तथा संसार के लोगों के स्वामी के रूप में जो असंदिग्ध रूप से प्रतिपादित है । उन श्री त्रिभुवन महेश्वर के नाम से विख्यात शिवजी की जय हो ।। 10

वे व्याघ्रचर्म को पहननेवाले सर्वव्यापी भगवान् शिव इस लिंगमूर्ति में चिरकाल तक वास करें ।। 11
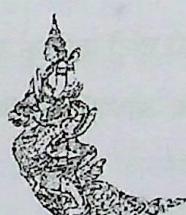
74

बन्ते श्री अभिलेख
Bantay Srei Inscription

इस वर्ग में चार समर्पण का अभिलेख है । ये जयवर्मन पञ्चम तथा उनके सम्बन्धियों के गुरु यज्ञवराह के धार्मिक स्थापत्य की ओर इंगित करते हैं–

1. वागीश्वरी (सरस्वती) की मूर्ति और विद्या गुरुओं में से दो की मूर्ति (दान देने वाले का आचार्य)
2. उनके माता-पिता की धार्मिक योग्यताओं की वृद्धि के लिए उमा एवं महेश्वर की मूर्तियाँ
3. जाह्नवी नामक यज्ञवराह की छोटी बहन के द्वारा ईश्वर का लिंग
4. यज्ञवराह के सम्बन्धी तथा आध्यात्मिक मित्र पृथ्वीन्द्र पण्डित द्वारा विष्णु की मूर्ति।

इन चार अभिलेखों में कुल 6 पद्य हैं।

जॉर्ज सोदेस द्वारा इनका सम्पादन किया गया है।[1]

(अ) तेन यज्ञवराहेण भक्त्या वागीश्वरीनिभा।
विद्यागुरुद्वयस्यापि स्थापिता स्थितिवेदिना।।

(ब) तेन यज्ञवराहेण पित्रोर्द्धर्म्मविवृद्धये।
उमामहेश्वरनिभे स्थापिते स्थितिवेदिना।।

(स) तस्य यज्ञवराहस्य जाह्नवीति यवीयसी।
स्वसा संस्थापयामास भक्त्या लिङ्गमिहैश्वरम्।।

(द) जयति प्रथमः पुंसां यस्य शब्दगुणं पदम्।
परमं परमार्थज्ञैस् सन्दृष्टमिव मध्यम्।।1
तस्य यज्ञवराहस्य संबंधी धर्म्म बान्धवः।
आख्यां श्री पृथिवीन्द्राद्यां पण्डितान्तामवापयः।।2
तेनेह स्थापिता विष्णोः प्रभविष्णोरियं निभा।
भक्त्या भागवतार्य्येण सर्व्वशास्त्रार्थवेदिना ।। 3

अर्थ–

(अ) उस स्थितिवेत्ता यज्ञवराह के द्वारा भक्ति से देवी वागीश्वरी तथा दोनों विद्यागुरुओं की भी मूर्ति स्थापित की गयी ।।

' उस स्थितिवेत्ता यज्ञवराह के द्वारा अपने माता-पिता के धर्म की विशेष वृद्धि के लिए उमा-महेश्वर की मूर्ति स्थापित की गयी ।।

(स) उस यज्ञवराह की जाह्नवी नाम की बड़ी बहन ने भक्ति से शिवजी के इस लिंग की स्थापना की ।।

(द) पहले का शब्द, गुण और पद पुरुषों को जीतता है तथा मध्यम श्रेष्ठ परमार्थ ज्ञानियों द्वारा आदरपूर्वक देखा जाता है ।। 1

उस यज्ञवराह के ऐसे सम्बन्धी तथा धर्मबन्धु हैं तथा जिसने अपने नाम के आगे पृथ्वीन्द्र तथा अन्त में पण्डित की पदवी प्राप्त की है ।। 2

ऐसे सभी शास्त्रों के अर्थ को जाननेवाले भक्तश्रेष्ठ यज्ञवराह द्वारा भक्तिपूर्वक प्रभविष्णु भगवान् विष्णु की इस प्रतिमा की स्थापना की गयी ।। 3

---

1. *IC*, p.143

75

प्रह येनकोसी अभिलेख

Prah Einkosei Inscription

सियम रियप शहर में एक प्राचीन मन्दिर का प्रह येनकोसी नाम है । संस्कृत एवं ख्मेर भाषाओं में एक बड़े पत्थर पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है । लेख का संस्कृत भाग तीन खण्डों में है । प्रथम खण्ड में शिव की प्रार्थना की गयी है । इसमें अनिन्दितपुर के बालादित्य की चर्चा है जो सोमा तथा कौण्डिन्य के वंशज थे । इनके वंशज राजेन्द्रवर्मन की प्रशस्ति भी इस अभिलेख में है ।

द्वितीय खण्ड में शिव की प्रार्थना तथा जयवर्मन पञ्चम की प्रशस्ति के पश्चात् राजेन्द्रवर्मन की पुत्री इन्द्रलक्ष्मी तथा उनके जामाता ब्राह्मण दिवाकर भट्ट के धार्मिक स्थापत्य की चर्चा है। ब्राह्मण दिवाकर भट्ट को कालिन्दी नदी के पास जन्मा बतलाया गया है । भारत में यमुना नदी का नाम कालिन्दी है । यहाँ के स्थापत्य में निम्नलिखित सम्मिलित थे–

1. इन्द्रलक्ष्मी की माता की मूर्ति
2. दिवाकर भट्ट द्वारा मधुवन के मन्दिर में शिवभद्रेश्वर तथा स्थापित दो अन्य देवताओं की मूर्ति ।
3. द्विजेन्द्रपुर में विष्णु की मूर्ति। यहाँ एक आश्रम भी बनाया गया ।
4. एक अस्पताल
5. भारत में एक मूर्ति या एक मन्दिर ।

इस अभिलेख का ऐतिहासिक महत्त्व यह है कि यह जयवर्मन पञ्चम की राजगद्दी की तिथि बतलाता है जब वह मधुसूदन ग्राम का युवराज था ।

तृतीय खण्ड में वागीश्वरी की प्रार्थना से यह अभिलेख प्रारम्भ होता है । हाथ उठाये हुए विष्णु की मूर्ति की स्थापना तथा वासुदेव द्वारा शिवलिंग की स्थापना की भी चर्चा इस अभिलेख में है ।

इस अभिलेख में कुल 45 पद्य हैं । इस अभिलेख की विस्तृत जानकारी हमें बर्गेने से मिलती है ।[1]

(अ) एकोऽपि वह्निपवनार्क्क विसर्प्पिताभि-
रुद्गीथ वर्ण्णरणित् स्वर सङ्गताभिः ।
मात्रा..
..।। 1
पातु वो बहुद्यैकापि...................
......................रसकृद्विश्वनीरद्यौ ।। 2
वन्देलोले (?)..........................।
कुशारिश् (लिनः) (केशाद्वीथीश)......।। 3
पायाद् भिन्नरसश् श(म्भु)स् स्थिरयोगोऽपिवोभृशम् ।
गौरीकटाक्ष विक्षेपवञ्चितो योऽदहत् स्मरम् ।। 4
आसीद् भूपाल मौलिस्फुरितमणिशिखाराजदिग्धाङ्घ्रिजश्री-
बालादित्योऽपि सन्योऽहित कुलक मलाकुञ्चनायैक चन्द्रः ।
सोमाकौण्डिन्य वंशे निखिल गुणनिधिर्द्दीप्त कीर्त्त्यात पत्रो

1. *ISC*, p.77

दौर्द्दण्डद्योति तानिन्दित पुरविलसद्राज्य लक्ष्मीन्दधानः ॥ 5

सिद्धैरप्सरसाङ्गणैर्द्विजवरैरादित्यवत् किन्नरै-

र्न्नित्यं पादरजोरुणान्तरुचिरैस् सद्भूभृदिन्द्रैर्न्नतः ।

स्वर्ग्गद्वार पुरोदितोऽपि जगतामैशं पदन्दीपयञ्

...........लिङ्गशतं विभज्य....................भूतले ॥ 6

(तस्यान्वयो योऽरिरसाष्टशाके महीधरो विष्णुरिवोज्ज्वलश्रीः)

राजेन्द्रवर्म्मावनिपेन्द्र.............................

....॥ 7

(शौर्य्यङ्केसरिणो बलञ्च मरुतो गाम्भीर्य्यमम्भोनिद्येस्

सौव.........................ऐश्व)र्य्यमिन्द्रा......।

................(हरेश् श्रियमलं शक्तिङ्कुमारात्परान्

त्यागन्दैत्यपतेर्म्मतिं सुरगुरोर्ज्जग्राह यो)..........॥ 8

निर्द्दग्धोऽनङ्गीभूतो (नो)..............................।

(इतीवाजितमीशं यं कान्त्या घाताधिकं व्यघात्) ॥ 9

Only a few letters of the following verses are legible.

भोगीन्द्र भोगमणि दीद्यितिदीपिताङ्कम्

कान्तेन्दुद्यौत कलयाङ्कित केशवृन्दम् ।

वन्दे भवं भवहरे भरितं (भवान्या)

.........................भविनां विभूत्यै ॥ 1

महीपतेस्तस्य बभूव पुत्रो.............

(दिग्राजवन्द्यो).........................।

द्यातेव वर्ण्णाश्रम सद्व्यवस्थां

कृत्वा ररामेश्वर (मन्त्रमार्गैः) ॥ 2

(श्यामो युवा कमलदृक् कमलाङ्कितांङ्घ्रिश्)

...की.........चक्रचितचारुकरः कलाढ्येः ।

(श्रीद्धो गुणीरवनवमूर्त्तिभिराप्तराज्यः

प्राज्यारिराजविजयी जयवर्म्मदेवः) ॥ 3

यो मण्डले.................म............

(लब्धोदयो दिक्षु विकीर्णतेजाः) ।

75. प्रह येनकोसी अभिलेख

प्रकामदाता युद्यि दुर्न्निरीक्ष्यः
(पूषेव नित्यं विजितारिपक्षः) ॥ 4
......यद् विश्वन त्रि.............
......वा भानार्न्निशायां शशिनः क्रमात्....
....॥ 5
याने यस्य बलाक्रान्त साचला वसुधाचलत् ।
वायुक्षुब्धसमु(द्रोर्म्मि)...........तारिव संहतौ ॥ 6
पटुपपटहसुमिश्रैलल्लिरीकङ्सतालैः
करदितिमिल वीणा वेणुघण्टामृदङ्गैः ।
पुरवपणवभेरीकाहलानेकशङ्खै-
र्भयमकृत रिपूणां (यस् सदा वा) द्यसंद्यैः ॥ 7
यात्रामरखानलशिखो धूमकेतो-
रासाद्य यस्य बलिनोऽस्त्र (निपातद्या) तम् ।
त्रस्ता विदुद्रुवुरशेषरिपुप्रवीरा-
स्त्यक्त्वाभिमान मदमाशु महीमहाजौ ॥ 8
(दिव्यास्त्र)शिखिना यस्य दग्धं वैरिमहावनम् ।
न रुरोह पुनस्सिक्तं मन्त्रि............... ॥ 9
...........सरभसं कृतसिंहनादन्
दुर्व्वारवैरिवरवारण कुम्भकूटे ।
यं राजसिंहमसितीक्ष्णनखप्रहारन्
दृष्ट्वा नराधिपमृगाः प्रययुर्व्वनान्तम् ॥ 10
अरिकरिकुम्भकूट पटु-
पातनविघटित विमौक्तिकैर्न्निचिता ।
संङ्खेय यस्यासिलता
विजृम्भिता कालजिह्वेव ॥ 11
चक्रिवन्मुक्तचक्रेण च्छिन्नारातिशिरोम्बुजैः ।
रणे रत्नात्पिरुचिरैरर्च्चिता येन दिग्वधूः॥ 12
छिन्नारिमूर्द्ध रुधिरौघविलिप्तधार-
माधारमे.......व्य.............कृपाणम् ।

उत्फुल्लनीरजरजोरुणिताङ्घ्रि पाणि-
र्य्यस्य स्थिता प्रियतमेव करे जयश्रीः ॥ 13
विद्यूतखड्गाग्रभयाद्विलाम्बिनी-
म्बिपक्षवक्षः क्षत जारुणां श्रियम् ।
विलोक्य कीर्त्तिः कुपितेव दिग्द्रुता
प्रियापि यस्य प्रययौ न सन्निधिम् ॥ 14
वरनरहरिखङगैर्म्मत्तमातङ्गसंघै-
र्व्विविधशरसमूहैराकुलं सद्विपक्षैः ।
अशिवरुतशिवाभिर्भीषणं सिंहनादै
रणवनमदहद यो दीप्तशस्त्रानलौघेः ॥ 15
द्विङ्दन्तिदन्ते कषण स्फुरितोर्म्मिपात-
मस्त्राभिघातघनगर्ज्जित वीरनीरम् ।
योऽनेकदुर्ग्गरण सागरमाततार
शक्तिप्लवं समभिरुह्य यद्यैव रामः ॥ 16
भोगीन्द्रश्वा सवात स्फुरित विष च योद्भूत वह्नि प्रदिग्धन्
व्यक्त्वा भृङ्गीव शुष्कं हरिक जमनिशं नष्टबोधंविशीर्ण्णम् ।
इद्धे द्यौताननाब्जे निखिलगुणनिधौ कीर्ण्णसत्कीर्तिपत्रे
स्निग्धे लावण्यरेणौ स्मितमधुनि रराजोज्ज्वला यस्यलक्ष्मीः ॥ 17
कलिकलुषमहाब्धौ धर्म्मसेतुस्त्रिलोक्या
मथिरवर भुजङ्ग कीर्त्तिलक्ष्मी निवासः ।
विबुधमुनिगणानामाश्रयः कल्पवृक्षः
क्षितिधर इव विष्णोरास बाहुर्य्यदीयः ॥ 18
यस्याग्निहोत्रधूमेन दिङ्मुखे शबलीकृते ।
भीतास्तत्पतयो जग्मुर्व्वनं वनफलाशिनः ॥ 19
शुभ्रानुलिप्रवरगन्धसुगन्धिताशा
स्निग्धा विचित्र रचनारचिताङ्गयष्टिः ।
जित्वा रराज कुसुमास्त्रसमग्रकान्ति-
माह्लादयन्त्यवनिभिन्दुकलेव यस्य ॥ 20
विप्रैर्य्यः ख्यातवीर्य्यैरति पटुरुचिभिर्ध्वस्तपापान्धकारै-

75. प्रह येनकोसी अभिलेख

र्व्वेदान्तज्ञानसारैस् स्मृतिपयनिरतैर्व्वीनरागैलुब्धैः ।
धर्म्यैरष्टाङ्गयोग प्रकटित किरणैरर्क्क भार्गानुयाते-
र्न्नित्यन् ध्यानामृतार्द्रैर सकृद्भिनुतो वेदवेदाङ्गविद्भिः ॥ 21
भूतेशो भूतशेषो गतविभभवो भासमानो विमानो
राजा राजेन्द्रकान्तो जितविजित रिपुर्म्माधवो माधवानः ।
...(न्त्रिकस्थो वह.....नद्य...) ररणे शक्तियुक्तः परेषा-
मिद्धां लक्ष्मीं विमालां करिकरटतटा.....स्वयं यः ॥ 22
तस्य प्रकीर्ण्णयशसः प्रथितानुजा श्री-
राजेन्द्रव(र्म्म)..........भू............या ।
प्रेम्ना द्विजेन्द्र महिषी निजमातुरर्च्चाम्
प्रातिष्ठपत् रवनवमूर्त्तिभिरिन्द्रलक्ष्मीः ॥ 23
जामाता भुवनेश्वरस्य सकलक्षोणीन्द्रचूड़ामणे-
र्ल्लोकाक्रान्तजयश्रियः पृथुयशा राजेन्द्रवर्म्माभिधेः ।
देवो भट्टदिवाकरो मधुवने संस्थाप्य देवत्रयं
स्यालश् श्रीजयवर्म्मदेव नृपतेर्भद्रेश्वरेऽकल्पयत् ॥ 24
सुवर्ण्णयानादिधनैरूपेतं
विचित्र रत्नाभरण प्रदीप्तम् ।
प्रभूतभूराजतताम्रहेम-
गोदास दासीमहिषाश्वनागम् ॥ 25
भद्रेश्वरेणैव विमिश्रभोग-
ङ्भुक्त्वादिदेश स्वयमेव देवः ।
षट्खारिका भोजनतण्डुलाना-
न्तदागतेभ्य(:) प्रतिवत्सरन्त(त्) ॥ 26
....
न्दुग्धाब्धिवत् प्रीतिकरं स भूयः ।
श्रमार्त्तिनाशं विपुल..................
....॥ 27
व्यक्त्वा कर्म्मफल(ं) विजित्य विषयान् कामादिदुर्ग्गकुषा-
न्यो..।

......................रो मधुवने संस्थाप्य सद्भारतीम्

....॥ 28

(निधाय भूयः) प्रतिमां स विष्णो-

द्विजेन्द्रपुर्य्यां विधिना विधीन्द्र(:) ।

प्रियेन्द्रलक्ष्म्या..................द्विजेन्द्रो

द्विजेन्द्रविद्याश्र(म)मत्र चक्रे ॥ 29

कालिन्दी यत्र रम्या तुभ.........रिज्य.......जैर्द्विजेन्द्रैष

षट्त्रिंशद्भिस सहस्रैरनुसवनकृतैर्ऋग्यजुस्सामशब्दैः ।

कृष्णः कृष्णाहिमर्द्दी दितिजकुलहरः कीड़ितोयत्रबाल्ये

तत्रैवाभूत् स देवो दिवसकर इति ख्यातभट्टस्सुकर्त्तिः ॥ 30

सुवर्ण्णयानं मधुसूदनारण्य-

ङ्ग्रमङ्हरौ श्रीजयवर्म्मदेवः ।

द्विजेन्द्रपुर्य्यां युवराङ् दिदेश

वियद्विलाष्टाधिकृताधिराज्यः ॥ 31

क्रूराश् शठातिलुब्धा ये परधर्म्मविलोपकाः ।

ते यान्ति पितृभिस् सार्द्धन्नरकं मनुरब्रवीत् ॥ 32

स्वधर्म्मादधिको धर्म्मः परकीय इति श्रुतिः ।

अतो भवद्भिः पाल्योऽयन्त्रिवर्ग्गफलकाङ्क्षिभिः ॥ 33

(स) उद्यद्भानुनिभा विभिद्य कमलं रवं याति या संहृतौ

सृष्ट्यर्थं पुनरेति चन्द्ररुचिरा यन्मानसं मानिनी ।

वर्ण्णैरात्मक................................स्त्रिता

सा शक्तिर्भुवनेश्वरो(दय) करी वागीश्वरी पातु वः ॥ 1

भूयस् सुरारिमथनोद्यत चित्रबाहु-

रूपन्त्रिवर्ग्गफल दो पलकं प्रियायाः ।

देवो दिवाकर इह प्रथितं पृथिव्यां

प्रातिष्ठिपद्द्विनवमूर्त्तिभिरिन्द्र लक्ष्म्याः ॥ 2

भ..................................श्रकः ।

वासुदेवः प्रसन्नात्मा शिवलिङ्गमतिष्ठिपत् ॥ 3

75. प्रह येनकोसी अभिलेख

अर्थ–

(अ) एक भी अग्नि, वायु, सूर्य से .... विशेष रूप से चलित उच्च स्वर से शब्दायित स्वरों से मिली-जुली मात्रा...............।। 1

तुमलोगों की रक्षा करें, एक भी बहुत दीखनेवाली......बहुत बार विश्वरूप समुद्र में ।। 2

वन्दना करता हूँ, हे चंचले !...........कुशादि शिव के केश से बीथी के स्वामी.......।। 3

भिन्न रसवाले शिव स्थिर योगवाले भी तुमलोगों की अधिकाधिक रक्षा करें । गौरी के कटाक्ष के विक्षेप से ठगे हुए जिस शिव ने कामदेव को जला डाला ।। 4

राजाओं के मस्तकों से फड़की हुई मणियों की चोटियों के रंगों बढ़े हुए चरणों से उत्पन्न लक्ष्मी और शोभावाला, बाल सूर्य, सत्य, शत्रु के कुल की लक्ष्मी के समेटने के लिए अद्वितीय चन्द्र के समान, सोमा-कौण्डिन्य के वंश में सभी गुणों के समुद्र, प्रकाशित अनिन्दितपुर में सोहनेवाली राज्य लक्ष्मी को धारण करता हुआ राजा ।। 5

नित्य ही सिद्ध लोगों, अप्सराओं के समूहों श्रेष्ठ ब्राह्मणों सूर्य के समान, किन्नरों द्वारा चरणों की धूल के निकट सुन्दर अच्छे राजाओं के स्वामियों द्वारा नम्र भाव से नमस्कार किया जानेवाला, स्वर्ग के द्वार पुर पर उगे हुए सम्पूर्ण संसार के ईश पद को प्रकाशित करता हुआ..........सैकड़ों लिंगों का विभाग करके पृथिवी तल पर ।। 6

उसका वंशज जो 866 शाके में 'महीधर' राजा विष्णु के समान उज्ज्वल लक्ष्मीवाला, राजेन्द्रवर्मन राजाओं का स्वामी राजेन्द्र...........।। 7

शूरता सिंह की सी, बल से वायु की सी, गम्भीरता समुद्र की सी, ऐसा सौ......ऐश्वर्य विभूति...........इन्द्रा..........विष्णु की लक्ष्मी को कुमार कार्तिकेय की सी शक्ति को, परां, परम शक्ति को कुमार कार्तिकेय से पानेवाले। त्याग दैत्यपति से, बुद्धि बृहस्पति से जिसने ये सभी चीजें पायी थीं ।। 8

कामदेव जलाया गया, अंगहीन हुआ...........जिसे इसके समान न जीतने योग्य ईश को कान्ति से ब्रह्मा ने अधिक बनाया ।। 9

Only a few letters of the following verses are legible.

(ब) सर्पराज के फण की मणि की कान्ति से प्रकाशित अंकवाले सुन्दर चन्द्र की धोई हुई कला से चिह्नित केशसमूहवाली भवानी से युक्त होना, जन्मन और न मरना भवसंसार, जन्म-मरण के छुड़ाने वाले शिव की वन्दना......... संसारियों के ऐश्वर्य के लिए करता हूँ ।। 1

उस राजा का पुत्र हुआ.............दिशा के राजा के बन्धु के.......ब्रह्मा के समान वर्णों और आश्रमों, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चातुर्वर्ण्य और ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, संन्यास एवं वानप्रस्थ– चार आश्रमों की अच्छी व्यवस्था को करके ईश्वर के मन्त्रों के मार्गों से रमण करता था ।। 2

श्याम=कृष्ण वर्ण, युवक, कमलनयन, कमल-चिह्नित चरणोंवाला........ ...की....चक्र से सुन्दर हाथों वाला, कला से धनी लक्ष्मी से प्रकाशित, गुणवान् 890 शाके में राज्य पानेवाला, बहुत बड़े प्राज्य, शत्रु के राज्य पर विजय पानेवाला जयवर्मन राजा था ।। 3

जो मण्डल में..........म..........प्राप्त उदयवाला..........दिशाओं में तेज बिखेर चुकनेवाला । मांगनेवाले की इच्छा के अनुकूल यथेच्छ दान करनेवाला । लड़ाई में दुःख से देखने योग्य, सूर्य के समान नित्य शत्रु पक्ष को जीत चुकनेवाला ।। 4

...........जो विश्व न...........वा अथवा, सूर्य के, रात में चन्द्र के ..... क्रम से....।। 5

जिसकी युद्ध यात्रा में सैनिकों से आक्रान्त वह अचला पृथिवी चलती थी । हवा से मथित समुद्र की ऊर्मि-भँवर.........संहार में ।। 6

डमरू के शब्द से सुन्दर रीति से मीलित, लाल्लरी एक वाद्य और कंस के तालों से करदिति, मिली वीणा, बीन वेणु=मुरली घण्टा और मृदंगों से पुख और पणव, भेरी=नगाड़ा काहला और अनेक शंखों से जो सर्वदा इन कहे हुए वाद्य-समूहों से शत्रुओं को भयावह रूप से त्रस्त करता था ।। 7

75. प्रह येनकोसी अभिलेख

युद्ध यात्रा रूप यज्ञ की आग की चोटी के समान उद्यत धूमकेतु अग्नि के समान तेजस्वी से जिस बलवान् के अस्त्र के फेंकने के घात को पाकर अभिमान और मद को छोड़कर पृथिवी पर महासंग्राम में भयभीत हो-हो करके सभी शत्रु के मुख्य वीर डरने लगे ।। 8

जिस सुन्दर, देव-संबंधी अस्त्रवाले राजा के दिव्य अस्त्र रूप मयूर से शत्रु रूप महावन जलाया गया । पुनः जल से सींचने पर वह शत्रु वन पनपा था..... .....।। 9

.........वेगयुक्त किये गये सिंहनाद को..........दु:ख से निवारण करने योग्य श्रेष्ठ शत्रु-रूप हाथियों के मस्तकों के कुम्भों के समूह में जिस राजाओं में सिंह के समान बहादुर की तलवार रूप तेज अग्नि नखों के प्रकार को देखकर राजरूप मृग दूसरे वन में, वन के अन्त में भाग खड़े हुए थे ।। 10

शत्रु रूप गजों के कुम्भों के समूह के फाड़ने में चतुरता से गिराने से विघटित निकले विशेष मौक्तिकों से भरी असंख्येय न गिनने योग्य जिसकी तलवार रूप लता विशेष रूप से जम्हाई लेती, काल की जीभ सी लगती थी ।। 11

विष्णु के समान छोड़े हुए चक्र से कटे हुए शत्रु के सिर रूप कमलों से रण में रत्नों की पंक्तियों से सुन्दर सोहनेवाले कमलों से जिसके द्वारा दिशा रूप वधू पूजित हुई थी ।। 12

कटे हुए शत्रु के मस्तक के रुधिरों के समूह से विशेष रूप से लथपथ धारावाले आधार में.........व्य......कृपाणवाले खिले हुए कमल की धूल से लाल चरण और हाथवाले राजा जिसके हाथ में जयलक्ष्मी प्रियतमा के समान स्थित है ।। 13

विशेष रूप से काँपे हुए खड्ग के अग्रभाग के भय से रुकनेवाली शत्रु के वक्षस्थल के घाव से लाल लक्ष्मी को देखकर कीर्ति रंज हुई सी दिशाओं में तेजी से भाग खड़ी हुई थी प्रिया भी कीर्ति जिसके समीप नहीं गयी थी ।। 14

श्रेष्ठ नरसिंह के खड्गों से मतवाले हाथियों के समूहों से, अमंगल बोलने वाली गीदड़ियों से सिंहनादों एवं प्रकाशित शस्त्र रूप अग्नि के समूहों से जिसने रणरूप वन को जला डाला था ।। 15

शत्रु रूप गजों के दाँतों के घिसने से फड़कनेवाली भँवरों के गिरने से अस्त्र की चोट के घने गर्जन से वीर रूप जल को जिसने अनेक दुर्ग के रण रूप समुद्र को तैरा था । शक्ति रूप बाढ़ को जैसे ही राम ने समुद्र तरण किया था ।। 16

सर्पराज की साँस की हवा से फड़के हुए विषों के समूह से निकली आग से बढ़े भृंगी के समान सूखे हमेशा नष्टबोध जीर्ण–शीर्ण हरिकन को छोड़कर प्रकाशित धोये मुखकमल सभी गुणों की खान अच्छी कीर्ति से बिखरे पत्रवाले स्निग्ध सुन्दरता की धूलवाली मुस्कान भरे मधु में जिसकी लक्ष्मी उज्ज्वल रूप से रमण करती थी ।। 17

कलियुग के पापरूप महासमुद्र में त्रिभुवन के धर्मरूप पुल (विष्णु) मथे गये बड़े सर्प जहाँ ऐसे विष्णु कीर्तिरूप लक्ष्मी के निवास (विष्णु) देवों और मुनियों के आश्रय (विष्णु) कल्पवृक्ष के समान (विष्णु) विष्णु के पर्वत के समान जिनकी बाँह थी ।। 18

जिसके अग्निहोत्र के धुएँ से दिशाओं के मुख के भर जाने पर डरे हुए उसकी स्वामी राजा लोग वनैले फलों के खानेवाले जंगल चले गये ।। 19

जिसकी उजली लेपी हुई, श्रेष्ठ सुगन्ध से सुगन्धित दिशाओंवाली स्निग्ध विचित्र चना से रचित अंगरूप छड़ी कामदेव की समूची कान्ति को जीतकर पृथिवी को चन्द्र की कला के समान आह्लादित करती हुई सोहती थी ।। 20

जो प्रख्यात वीर्यवाले अतिशय चतुर सुन्दर प्रकाशवाले पापरूप अन्धकार को दूर कर चुकनेवाले, वेदान्त के श्रेष्ठ ज्ञानों से यादगारी की राह पर निरत रहनेवाले विरागियों, लोभहीनों, धर्मयुक्तों, अष्टांग योग से प्रकाशित किरणोंवाले सूर्य के मार्ग से अनुसरण करनेवाले, नित्य ध्यानरूप अमृत से भीगे हुए बहुत बार सब ओर से प्रणाम किये गये वेदों और वेदांगों के ज्ञाता ब्राह्मणों से युक्त जो राजा था ।। 21

प्राणियों का स्वामी भूतशेष नष्ट धन पुनः हो जाये ऐसा वेदों और वेदांगों के ज्ञाताओं के द्वारा प्रकाशमान विमानवाला राजा राजेन्द्र सुन्दर शत्रु को जीत चुकनेवाला, माधव नामक माधव की सी आभावाला लक्ष्मीपति विष्णु सी आभा

वाला । त्रिकस्थो....वह.....नद्य......शक्ति से युक्त परेषा सिद्ध विशाल लक्ष्मी को हाथी करटतटा.....खुद जो ।। 22

उस बिखरे यशवाले प्रसिद्ध छोटी बहन श्री राजेन्द्रवर्मन...........भू....... या जो प्रेम से द्विजेन्द्र की पटरानी अपनी माता की पूजा को प्रतिष्ठा की..........शाके 890 में इन्द्रलक्ष्मी ने........।। 23

समस्त जगत् के स्वामियों के स्वामी के मस्तक की मणि भुवनेश्वर का जामाता लोक को जयलक्ष्मी से आक्रान्त करनेवाले पृथु के समान यशवाले राजेन्द्रवर्मन नाम के राजा भट्ट दिवाकर मधु वन में तीन देवों की स्थापना कर श्री जयदेववर्मन के साले ने भद्रेश्वर में कल्पना की ।। 24

सुवर्ण रथ आदि धनों से युक्त विचित्र रत्नों और भूषणों से प्रकाशमान बहुत-बहुत ज़मीन, चाँदी, ताँबा, सुवर्ण, गाय, दासी, भैंस, घोड़ा, हाथी दिये ।। 25

भद्रेश्वर के द्वारा ही विभिन्न प्रकारों के मिले-जुले भोग करके स्वयं ही राजा ने आदेश दिया- छः खारी=चार द्रोण भोजन के चावल, उन आनेवालों को उतने प्रतिवर्ष दिये जायें ।। 26

दूध के समुद्र के समान प्रीतिकर वह फिर श्रम की पीड़ा का नाश करनेवाला बहुत........।। 27

कर्म के फल को त्यागकर विषयों का विजय कर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य सब दुर्गों से आकुलों को जो.............रो................मधुवन में अच्छी सरस्वती की स्थापना करके........।। 28

फिर विष्णु की प्रतिमा को प्रतिष्ठित कर द्विजेन्द्रपुरी में निधिपूर्वक विधि का ज्ञाता प्रिय इन्द्र की लक्ष्मी से..........द्विजेन्द्र.........ने द्विजेन्द्र विद्याश्रम...... यहाँ......बनाया ।। 29

जहाँ रमणीय यमुना यज्ञ....रिज्य.......श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा छत्तीस हज़ार अनुश्रवण किये हुए ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद के शब्दों से कृष्ण सर्प के मर्दन करनेवाले कृष्ण ने दैत्यवंश के नाशक जहाँ बचपन में क्रीड़ा की थी वहाँ ही हुआ वह राजा 'दिवसकर' इस नाम से प्रसिद्ध योद्धा सुन्दर कीर्तिवाला ।। 30

मधुसूदन नाम के सुवर्णरथ ग्राम को हरनेवाले दो श्री जयवर्मन राजा ने द्विजेन्द्रपुरी में युवराज ने आदेश दिया 890 शाके में राज्य करने वाले ।। 31

जो निर्दय, शठ, अतिशय लोभी दूसरों के धर्मों के लुप्त करनेवाले हैं वे अपने पितरों के साथ नरक जाते हैं ऐसा मनु ने कहा है ।। 32

वेद कहता है या सुना जाता है कि अपने धर्म से अधिक रक्षणीय दूसरों का धर्म होता है । इस कारण आपके द्वारा जो आप लोग धर्म, अर्थ और काम चाहनेवाले हैं यह धर्मपालन करने लायक है ।। 33

(स) उगते सूर्य के समान कमल को छेदकर आकाश पर जाती है जो संहार के समय में सृष्टि के लिए पुनः आती है चन्द्र के समान प्रकाशमान जिसके मन में रूठी नायिका सी एक वर्ण है आत्मा जिसकी......स्त्रिता- वह शक्ति भुवनेश्वर के उदय करनेवाली सरस्वती तुम लोगों की रक्षा करें ।। 1

फिर दैत्य के नाश में उद्यत चित्र बहुरूप को धर्म, अर्थ, काम इन त्रिवर्ग फलों के देनेवाले प्रिया के राजा दिवाकर यहाँ पृथिवी पर प्रसिद्ध हैं । उन्होंने 892 शक में इन्द्रलक्ष्मी की प्रतिष्ठापना की ।। 2

भ..........श्रकः ....वासुदेव प्रसन्न आत्मावाले ने शिवलिंग की स्थापना की ।। 3

75. प्रह येनकोसी अभिलेख

76

प्रसत कौमफस अभिलेख

Prasat Komphus Inscription

कलू प्री प्रान्त में नोम संडक के करीब 10 मील दक्षिण की दूरी पर स्थित प्रसत कौमफस मन्दिरों का एक समूह है। मन्दिरों के आँगन में एक खड़े पत्थर के चारों ओर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। इस अभिलेख से हमें यह जानकारी मिलती है कि मधुवन जो अब प्रसत कोमफस कहा जाने लगा है वहाँ दिवाकर भट्ट के धार्मिक स्थापत्य हैं।

इस अभिलेख में अनिन्दितपुर के राजा बालादित्य के द्वारा राजा राजेन्द्रवर्मन तथा उसके पुत्र जयवर्मन पंचम की प्रशस्ति की गयी है। दिवाकर भट्ट द्वारा धार्मिक स्थापत्यों की भी यह अभिलेख चर्चा करता है-

1. द्विजेन्द्र नाम विष्णु महेश्वर लिंग
2. विष्णु की एक मूर्ति
3. द्विजेन्द्रपुरी शहर में विद्याश्रम
4. मधुवन का स्थापत्य

उनके लड़कों ने अपनी माँ की भक्ति के चलते विष्णु की एक मूर्ति स्थापित की। यह भी वर्णन है कि राजा के द्वारा बहुत से अधिकारियों को पालकी उपहार स्वरूप प्रदान किये गये थे।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 59 है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

(The verses which are identical with those of No. 111 of RCM-MKS. 73 are indicated below by signs of equality.)

Verses 1-4 = A, 1-4

Only a few letters of v.5 are legible.

Verses. 6-8 = A. 5.7.

सामादियोग परिवर्द्धितदिङ्मुख श्री-
रुद्यत्प्रतापकरमण्डित मण्डलाग्रः।
पद्मोदया..................................
....॥9

Verses 10-11 = A. 8-9

यस्य यानबलोद्धवतधूलि।
.....र्म्महत्..........स्थो राहुग्रासभयादिव॥12

यद्दुन्दुभीनामसकृन्निनादै-
र्घोरे रणे गोगणगोभृदिन्द्राः।
सन्त्रास................................
....॥13

........भिन्नदृप्नवरवारकुम्भ कूटा-
द्रक्तृस्तुति प्रचुरकर्द्दमचर्च्चिताङ्गः।
वैधव्यदो................................
....॥14

धनुर्ज्याघातघोषेण पूरयान्दिङ्मुखानि यः।
ववर्ष शरधारौधान् रणे शक्र (इवापरः)॥15

.......हवाणिलोद्धूताश् शाल्मलितूलवद् द्विषः।
लेभिरे न क्वचित् स्थानं भ्रमन्तो गहनाम्बरे॥16

1. *IC*, p.169

76. प्रसत कौमफस अभिलेख

येन शक्तिभिरुग्राभिर्द्धारिता भू..................।

..........भिरु...........भिरिव संयुगे॥17

दुर्व्वारदन्तिघन कुम्भ विदारणोत्थ-

मुक्ताफल प्रकर दन्तुरतीक्ष्णधारः।

....

....युधि यस्य रराज खड्गः॥18

मत्तद्विपेन्द्रहरियूथयुत्ते सखड्गे

भीमे विपक्षगह........................

....

र्य्यावद् द्विषान्न वनितानयनाम्बुसिक्तः॥19

यस्याम्बराद्भूमविनिर्गतापि

कीर्त्तिः प्रकीर्ण्णा.....................

.......................च वृति-

दृष्टा रजन्यामिव शीतरश्मेः॥20

verses 21-23 = B, 2-4

कृच्छ्रेण हरिणा..................

............शासनेनेव येन तु॥24

चन्द्रः क्रमेण सकलो रुचिरो रजन्यां

भानुर्द्दिवाकर.......................।

....

........न्ती रराज भुवि यस्य पतिव्रतेव॥25

verses 26-35 = B, 6-15

V. 36 = B 17

V. 37 = B 19

V. 38 = B 18

V. 39 = B 22

(First two lines of V. 40 are missing.)

..........शशिकलामिव वर्द्धमानां

गान्दी..................................॥40

..........................द्धबुद्धि-

र्द्दिवाकरस् सामविद्...........।

.....................रिपुभोगिभोगान्

ममर्द्द मन्त्रैः स..................।।41

....

यो...........शिवभावनामृतरसस्वाद प्रसक्तोऽपिसन्।

लिङ्ग विष्णुमहे..........................

..............नकृ.........ईशं द्विजेन्द्राह्वयम्।।42

V. 43 = B. 29

वक्त्रेन्दुविम्बगलितामृतवाहिनी वाक्

प्रह्लादयन्त्य खिल....................।

...........विलङ्घया

यस्यासकृत्स्थितिद्यरैर्व्विधृता शिरोभिः।।44

तस्यात्मजो धर्म्मनिघे............

....

..............................च्चर्या-

मतिष्ठिपन मातुरतीवभक्तः।।45

वाक्यामृतेन परिद्यौतकरा द्यरेन्द्रा

....

....

प्रातिष्ठिपत् स्वजननी महसेन्द्रलक्ष्मीः।।46

V. 47 = B 24

मिश्रीकृत्य स देवेन मधुकाननवासिना।

द्विजेन्द्रपुरदेवे न्वत्राश्रम(ं) पर्य्यकल्पयत्।।48

धान्यशतं प्रतिवर्ष कल्पितं मधुकानने।

दातव्यं कुलपतिना भृत्यैश्चाश्रमपोषकैः।।49

प्रतिमासं...........मधुरे मधुकानने।

मधूच्छिष्टैक पिण्डश्च विद्याश्रम विभूस्थितैः।।50

Verses 51-52 = B 32-33

V. 53 = B. 1

शैलेशयाजक पुरोहित कार्य्य मुख्याः

साध्यापकाश्च गुणदोषदृशो धनेशाः।

76. प्रसत कौमफस अभिलेख

राज्ञः प्रसाद मधुकानन लब्ध दोला
भद्रेश्वरार्च्चनरता यतयोऽत्र धन्याः।।54
दत्तं मधुवनन्देवे श्रीमद्राजेन्द्रवर्म्मणा।
गृहीत्वा यवनाच्छेषं भूयश् श्रीजयवर्म्मणा।।55
भूमिराकरोलात् प्राच्यां याभ्यां सपर्थसंज्ञितात्
प्रतीच्याञ्च स्थलाभङ्गादुदीच्यां भारती गृहात्।।56
आसुरमेस्तथाग्नेय्यां नैर्ऋत्यांस्तीद्रुमाह्वयात्।
वायव्यामानष्टशशादैशान्यां थ्मान्प्रगोपुरात्।।57
प्राक्..रर्वालोविषयेशो दत्तवान् राजशासनात्।
भूयो विक्रमविजयो राज्ञः श्रीजयवर्म्मणः।।58
श्रीन्द्रलक्ष्म्यन्वये भूमिमतां मधुवनावृताम्।
राज्ञस्तत्र प्रधानत्वादयाचत दिवाकरः।।59

अर्थ- (The verses which are identical with those of No. 111 of RCM-MKS. 73 are indicated below by signs of equality.)

Verses 1-4 = A, 1-4
Only a few letters of v.5 are legible.
Verses. 6-8 = A. 5.7

साम आदि योग से बढ़ायी दिशाओं की मुख रूप लक्ष्मी और शोभा से प्रकाशमान प्रताप की किरणों से सोहने वाले मण्डल का अग्रभाग कमल के उदय या लक्ष्मी के उदय......।।9

Verses 10-11 = A. 8-9

जिसकी चढ़ाई के समय सैनिकों द्वारा उड़ी धूल........ महत्=महान्..........थो- ठहरा.......राहु के ग्रास के भय के समान।।12

जिन दुन्दुभियों के बहुत बार शब्दों से भयंकर युद्ध में गायों के समूह गायों का धारण करने वाले इन्द्र गो, वाणी, भूमि, गाय सन्त्रास भली-भाँत डर...........।।13

टूटे-फूटे गर्वीलों में श्रेष्ठ हाथियों के कुम्भों के समूह से रक्त के चूने से बहुत कीचड़ों से पूजित अंगों वाला वैधव्य................।।14

धनुष की डोरी की ध्वनि से जिसने दसों दिशाओं को भरते हुए जिसने रण में बाण धारा समूह की सृष्टि की है वे दूसरे इन्द्र के समान ही

थे।।15

वायु से उड़ने वाले शेमल की रुई के समान शत्रु लोगों ने वन में, आकाश में भ्रमण करने पर स्थान नहीं पाया।।16

जिससे उग्र शक्तियों से फाड़ी गयी पृथ्वी........भीरू.......समान संग्राम में।।17

दुख निवारण करने योग्य हाथियों के कुम्भों के फोड़ने से निकले मोती रूप फलों के समूह से ऊँचे दाँतों वाली दंतुली, तेज धारों वाली...... युद्ध में जिसकी तलवार सोहती थी।।18

मतवाले गजेन्द्र सिंह वानर युक्त तलवार युक्त भयंकर शत्रु....... जब तक शत्रुओं को उनकी स्त्रियों के नेत्रों के जल से सिक्त नहीं कर डाला।।19

जिसकी कीर्ति बिखरी थी आकाश से निकले धुएँ भी......और वृत्ति देखी गयी रात में जैसे शीतल किरणों वाले चन्द्रमा के समान हो।।20

verses 21-23 = B, 2-4

कठिन हरि के द्वारा.........शासन के समान जिसके द्वारा।।24

चन्द्र क्रम से कला सहित प्रकाशमान रात में- सूर्य दिन करने वाले..........उसकी पृथ्वी पर पतिव्रता के समान सोहती थी।।25

verses 26-35 = B, 6-15

V. 36 = B 17

V. 37 = B 19

V. 38 = B 18

V. 39 = B 22

(First two lines of V. 40 are missing.)

.........बढ़ती हुई.......चन्द्र की कला के समान........गान्दी...... ।।40

.........बुद्धि.........सूर्य........साम को जानकर...............शत्रु रूप साँपों के फणों को .....मर्दित कर दिया............मन्त्रों से उसने।।41

जो शिव कल्याणकारी महादेव सम्बन्धी भावना रूप अमृत के रस के आस्वादन में लगा हुआ भी........लिंग को विष्णु के यज्ञ में.......... नकृ...........द्विजेन्द्र नामक ईश शिव को।।42

V. 43 = B. 29

76. प्रसत कौमफस अभिलेख

मुख रूप चन्द्र बिम्ब से निकली अमृत धारा बहाने वाली वाणी खुश करते हैं सब- विशेष रूप से लाँघने वाला जिसके अनेक बार स्थिति धारण करने वाले सिरों से विशेष रूप से पकड़ी हुई।।44

उसके पुत्र- धर्मनिधि.........चर्चा.......माता के अतिशय भक्त ने स्थापना की।।45

वाक्य रूप अमृत से धोयी किरणों वाली या धोए हाथ वाले........ ..अपनी माता के तेज से इन्द्र की लक्ष्मी की प्रतिष्ठा की।।46

V. 47 = B 24

उसने यहाँ पर मधुवन वासी तथा द्विजेन्द्रपुर वासी देवों की उपस्थिति (स्थापना) से पवित्र बनाकर (श्रेष्ठ बनाकर) आश्रम को विधिपूर्वक दान किया।।48

मधुवन में प्रतिवर्ष दान किये गये सौ मन धान, कुलपति, आश्रम सेवकों या आश्रम पोषकों द्वारा (में) बाँटा जाना चाहिए (दिया जाना चाहिए)।।49

प्रतिमास मधुर मधुवन में मीठे पिण्ड भी विद्या आश्रम में स्थित होवे।।50

Verses 51-52 = B 32-33
V. 53 = B. 1

यहाँ राजा की प्रसन्नता के लिए मधुवन में डोलारूढ़ भगवान् भद्रेश्वर की पूजा में लगे शिव की पूजा करने वाले तथा पुरोहित कार्य में प्रमुख लोग अध्यापकों सहित गुण-दोष की परख रखने वाले धनी लोग तथा संन्यासीगण सभी धन्य हैं।।54

श्री राजेन्द्रवर्मन द्वारा मधुवन के देवताओं को दी गयी भूमि का शेष भाग पुनः श्री जयवर्मन द्वारा यवनों से लेकर मधुवन के देवताओं को दी गयी।।55

पृथ्वी आकरोल से पूरब में जिन दोनों से समर्थ नाम वाले से पश्चिम में 'भारती गृह' से स्थल भंग से उत्तर में।।56

अग्निकोण में सुरभि तक, नैऋत्यकोण में पेड़ तक, वायव्यकोण में नष्ट शशक तक तथा ईशानकोण में श्ला प्रगोपुर तक की चौहद्दी के

अन्तर्गत की भूमि पहले देवकार्य के लिए राजा की आज्ञा से दी जा चुकी है।।57

पुनः विजय विक्रम सम्राट् जयवर्मन द्वारा यवनों से लेकर दी गयी लक्ष्मी नारायण से समन्वित मधुवन से घिरी इस भूमि को राजप्रधान होने के कारण दिवाकर ने राजा से माँगा।।58-59

76. प्रसत कौमफस अभिलेख

ता त्रु अभिलेख
Ta Tru Inscription

अंगकोर थोम में ता त्रु नाम का एक छोटा गाँव है जो बयोन के दक्षिण में बसा है। यहाँ यह अभिलेख तीन खम्भों पर उत्कीर्ण है। इस अभिलेख के अधिकांश भाग नष्ट हो गये हैं तथा अपठनीय हैं। प्रथम और अन्तिम ख्मेर भाषा में है।

दूसरा भाग संस्कृत में है। पवित्र कालिन्दी नगर के किनारे दिवाकर भट्ट के जन्म की यह चर्चा करता है। कालिन्दी यमुना नदी का नाम है जिसके तट पर कृष्ण ने अपना बचपन बिताया था। इस अभिलेख में लिखित 1090 अंक को समझना कठिन है कि वह किस बात का प्रतीक है।

इस अभिलेख में केवल एक ही पद्य है जो अस्पष्ट है।[1]

कालिन्दी यत्र पुण्या प्रवहति................................

............सहस्राधिकनवतिकृता यत्र सा......................।

---

1. BEFEO, Vol XXV. p.355

कृष्णः कृष्णाहिमर्द्दी दितिजकुलहरः क्रीडितोबालरूप-
स्तत्रैवाभूत् स देवो दिवसकर इति ख्यातभट्ट सुकीर्त्तिः।।

अर्थ- जहाँ पवित्र यमुना बहती है....................जहाँ एक हजार नौ की गयी वह जहाँ कालिय मर्दन, दैत्य कुल विनाशक भगवान् श्रीकृष्ण बालरूप से क्रीड़ाएँ किये हैं, वहीं पर सुन्दर कीर्ति वाला वह विख्यात् वीर राजा दिवसकर हुआ।।
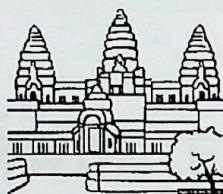
78

अंगकोर थोम अभिलेख
Angkor Thom Inscription

अंगकोर थोम में बयोन के पश्चिम बौद्ध चबूतरे के भग्नावशेषों में बसे मन्दिर के पत्थर के एक टुकड़े पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यह प्राचीन मन्दिर प्रह कोक थ्लोक के आधुनिक मन्दिर के बहुत निकट है। अभिलेख का ऊपरी भाग पठनीय है। शेष सभी नष्टप्राय हैं।

इस अभिलेख में विष्णु के पाँच रूपों- वासुदेव, त्रिविक्रम, पद्मनाभ, मधुद्विस, पुण्डरीकाक्ष की प्रार्थना सम्मिलित है। शिव, ब्रह्मा, लक्ष्मी और उमा की भी प्रार्थना की गयी है। इस अभिलेख के अन्तिम भाग में राजा द्वारा एक भद्र पुरुष को सोने की वस्तुएँ तथा पालकी दान-स्वरूप देने का वर्णन है। यह अभिलेख पुण्डरीकाक्ष नामक मूर्ति की स्थापना की भी चर्चा करता है।

प्रारम्भ में इसमें आठ देवी और देवताओं की स्थापना की चर्चा है तथा इसके अन्तिम भाग में नौवें देवता की स्थापना का वर्णन है। आर.सी. मजूमदार का कहना है कि इस अभिलेख के लेखक ने नौ देवताओं के लिए नौ मन्दिरों को

बनाया था।[1] बखेन पर्वत के केन्द्रीय मूर्ति के चारों ओर से ये छोटे-छोटे मन्दिर रहे होंगे। इस बखेन पर्वत को आज हम यशोधर पर्वत के नाम से जानते हैं।

इस अभिलेख में 18 पद्य हैं। यह अभिलेख फिनोट द्वारा सम्पादित हुआ है।[2]

पान्तु वो वासुदेवस्य पादपङ्कजपांसवः।
भुवनत्रितयोत्पत्तिस्थितिसंहारहेतवः।।1
वन्दे त्रिविक्रमे येन त्रैलोक्यन्तत् स्थितान्वितम्।
ममेदन्न परस्येति स्वपदैस्त्रिभिरंकितम्।।2
नमोऽस्तु पद्मनाभाय सर्व्वसर्ग्गसिसृक्षया।
निजज्ञाभ्युद्भवाम्भोज प्रा(दु)र्भूतस्वयम्भुवे।।3
नमोऽस्तु योगि (हृ)त्पद्म.......वे निमद्युद्विषे।
सुरासुरशिरश्चुम्बि (पदपङ्क)जरेणवे।।4
वन्दे श्रीपुण्डरीकाक्ष................दम्।
क्षितां भुवमिवोर्द्धर्त्तु (श्री)यशोधरपर्व्वते।।5
नमश् शिवाय यत्स्कन्धो भस्मशुभ्रोज्वलज्जटः।
शारदाम्भोदभक्ताङ्गस् स्वर्ण्णमूर्द्धाद्रिराडिव।।6
वन्दे पितामहं साभ्यात् स्मितास्याब्जचतुष्टयम्।
चतु(र्दिक्)...........गतां समं वक्तुमिवाशिषम्।।7
....................विष्णोरमृतार्द्रा पुनातु वः।
..................न्ति श्रान्तस्याह्लाद नादिव।।8
.................ता रुद्र दिव्य देहार्द्धहारिणी।
.............(दर्शना) वाप्तिमिच्छन्तीव निरन्तरम्।।9
................स् सान्ति.............दिव्यदर्शनाः।।10
Concluding portion
मंत्री मन्त्रादिकृत्येषु (शा)स्ता शास्त्र(वि)दर्शने।
यो बभूव विभुर्भर्तुर्भृत्यस् सर्व्वसुखार्प्पणे।।11
सराग श्री रतिश्रान्तः कान्तो मेऽयमितीवयम्।
अनीर्ष्या शास्त्रपीयूषमपाययत भारती।।12

1. *IK*, p.302
2. BEFEO, Vol. XXIX, p. 343

हेमदोलाकरङ्कासिभृङ्गारामत्र मेखलाः।
मयूरच्छत्रमन्यांश्च भोगान् भर्तुरवाप यः।।13
विष्णुः श्रीपुण्डरीकाक्षनामानं नमतां मुदे।
.........आदस्थापितात्मीयभक्तिस् स प्रत्यतिष्ठिपत्।।14
स(चो)वाचेति तां वाचं वाचस्पति विचक्षणः।
आचार चतुरश्चारु चरिता चरणाच्युतः।।15
अत्र श्री(पु)ण्णडरीकाक्षो रक्ष्यताम्धर्म्मकाङ्क्षिभिः।
धर्म्मेव रक्ष्यते रक्षन्निति सत्यं विचिन्त्यताम्।।16
ये हरन्ति हरेरत्र किञ्चिद्दासादिकल्पितम्।
अवीच्यादिषु (प)च्यन्ते ते यावच्चन्द्रभास्करौ।।17
(रक्षन्ति ये सदा) तस्य तदेव सुकृतार्थिनः।
..............................सन्तस्ते वैष्णवे पदे।।18

अर्थ- तुम लोगों की रक्षा विष्णु के चरण-कमल की धूलें करें जो तीनों भुवनों की उत्पत्ति, पालन और संहार के कारण हैं।।1

त्रिविक्रम भगवान् की वन्दना करता हूँ जिससे त्रैलोक्य स्थित है। अपने तीन पैरों से अंकित है जिसके द्वारा वह मेरा है दूसरे का नहीं।।2

विष्णु को नमस्कार है तथा सभी सृष्टियों की रचना करने की इच्छा से अपनी नाभि से उत्पन्न कमल से उत्पन्न स्वयम्भू ब्रह्मा को नमस्कार है।।3

नमस्कार है योगियों के हृदय-कमल..........मधु नामक राक्षस के शत्रु को देवों दानवों के सिर से चुम्बन किये जाने वाले चरण-कमल की धूल को नमस्कार है।।4

श्रीविष्णु की वन्दना करता हूँ........जो श्री यशोधर पर्वत पर की पृथ्वी के उद्धारक हैं।।5

शिव को नमस्कार है जिनका कन्धा भस्म से उजला है। जटा उजला है। वे शरद ऋतु के मेघ के समान अंगों वाले स्वर्ण के मस्तक वाले पर्वतराज के समान सोहते हैं।।6

पितामह को प्रणाम है समानता से थोड़े विकसित चार कमलों से युक्त हैं। चारों दिशाओं.........समान आशीर्वाद बोलने के समान।।7

..........विष्णु के अमृत से भीगे तुम्हारी रक्षा करें।.......थके हुए को आनन्द देने से जैसे।।8

..........शिव के आधे शरीर को हरण करने वाली।.........दर्शन से प्राप्ति की इच्छा करती हुई सी हमेशा।।9

.............दिव्य सुन्दर दर्शन वाले।।10

Concluding portion

मन्त्री मन्त्र विचार आदि कार्यों में शासन करने वाला शास्त्र के विशेष दर्शन में जो स्वामी का भृत्य सर्व सुख देने में विभु=व्यापक हुआ।।11

राग सहित लक्ष्मी की रति से थके मेरे स्वामी ये हैं- यह जिसको बिना डाह के सरस्वती ने शास्त्रामृत पिलाया।।12

सोने के डोले छोटा सा बक्सा तलवार, सोने का घट, मेखला मयूर पंख के छाते और अन्य भोगों को जिसने राजा से पाया।।13

विष्णु श्रीपुण्डरीकाक्ष नाम वाले जो नमस्कार करने वालों के हर्ष के लिए.........अपनी भक्ति देते हैं वे विष्णु स्थापित हुए।।14

विलक्षण वाचस्पति ने इस वाणी को कहा कि आचार्य और चरित में जो सुन्दर हैं वे आचार से अच्युत हैं।।15

यहाँ पुण्डरीकाक्ष भगवान् विष्णु (श्वेतकमल नेत्र वाले) ने धर्म की आकांक्षा करने वालों की रक्षा की। धर्म से ही रक्षा होती है।।16

अत: इसलिए सत्य का चिन्तन करना चाहिए जो कुछ कल्पित था उसका जो हरण करते थे जब तक सूर्य चन्द्र हैं वे अवीचि आदि नरकों में पकते रहते हैं।।17

और सुकृत चाहने वाले जो उनकी रक्षा करते हैं वे विष्णुपद को प्राप्त करते हैं।।18

79

प्रसत खन अभिलेख
Prasat Khna Inscription

कलू प्री जिले में प्रसत खन नाम का एक मन्दिर है। इस अभिलेख में राजा उदयादित्यवर्मन के सरदार एवं बड़े भाई नरपतिवर्मन द्वारा विष्णु की सोने की मूर्ति की स्थापना का वर्णन है। उनके भाई की वीरता का यह अभिलेख वर्णन करता है तथा हमें यह जानकारी मिलती है कि अपने भाई की फौजी योग्यता के चलते ही उन्होंने राजगद्दी प्राप्त की थी। इस अभिलेख में श्रेष्ठपुर के राजकीय परिवार की वंशावली का भी वर्णन हमें मिलता है।

मन्दिर के दक्षिण-पूर्व कोने में बसे एक छोटे भवन में पाया जाने वाला यह अभिलेख इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करता है कि यह कम्बुज के बहुत से मन्दिरों से लगा एवं सटा एक परम्परागत पुस्तकालय भवन था। आर.सी. मजूमदार के अनुसार इन छोटे-छोटे भवनों को खजाना समझने का कोई औचित्य नहीं है।[1]

इस अभिलेख में कुल 36 पद्य हैं जो दो खण्डों में हैं। समूह-(।) में 11 तथा

---

1. *IK*, p.304

समूह-(ठ) में 25।[2]

(।) येनैकेन वितन्वता तनुभृतामात्मान्तराण्यात्मना
भिन्नाजन्त...।
नानाकार विकाररूपमखिलन्नस्वी कृतन्त्वत-
स्तं वन्दे हरिं...॥1
येनारविन्दनिलयन्निजनाभिपद्मं
यो...।
व्याख्यायते निज................रमाधिपत्य-
न्नारायणन्...॥2
यस्यात्मेन्दुनभो....................नलक्षीत्यम्बुतीक्ष्णाङ्शुभि-
र्ग्राह्याभिस्तनुभि..।
निर्म्मूर्त्तित्वमुदीरयन्ति मु.........वशो नास्पद-
न्निर्व्वाणभ्युदयादिकारण................................॥3
आसीदासिन्धुसन्धेस् स्फुरितशरकरो निर्ज्जतारातिवर्ग्गो
राजेन्द्रः कम्बुजेन्द्रान्वयगगण.............................।
श्रीमान् यस्त्रिद्विरन्ध्रर्धरणिभृटुदयादित्यवर्म्माग्यूकर्म्मा
दोर्भ्योमुर्व्वीमसह्यामहिपति...............................॥4
वर्म्मान्तं युधि नाम विभ्रदजितः श्री राजपत्यादि यस्
सेनानांर्ज्जयवर्म्मणोऽवनिभृतां पत्युः सुपत्नी च या।
मातुः श्रेष्ठपुरेश्वरान्वयमुवो यस्याग्रजः सोऽनुजा
सा सोदर्य्यतयाभवद्वरयशस्त्यागादिभिः सद्गुणैः॥5
योद्धे युद्धसमुद्धताय रिपवे दिव्यं सदिव्याङ्गन-
न्दाता लोकमिहोदयन्नतिकृत योऽरण्यमोजेर्द्धते।
उद्धर्त्तुर्धरणीधरस्य धरणीमम्भोधिमग्नो पुरा
लीलां लिप्सुरिवोद्दधार पतितान्तां विप्लवाब्धौपुनः॥6
कामन्दग्ध्वा तदङ्गद्युति निखिलधनान्यात्म सात्कृत्य गात्रे
कीर्त्तीभूतार्द्धचन्द्रो रिपुजनभयकृत्कालकूटाग्रयवीर्यः।
गङ्गाभ्यः सुप्रसादो युगनयनभवद्वह्नितेजोऽनुजातश

2. *BEFEO*, Vol. XI, p.400

शर्व्वोऽसावीश्वरो यः सकल गुणनिधिःसाम्बुधिक्ष्मामरक्षतु॥7

तस्याग्रजो धृतासिर्युधि वैरिगणैरुदीरितोऽन्ताग्निः।
गुणगणमणिनीर निधिश् श्रीनरपति वीरवर्म्मा यः॥8

प्रेङ्खड्गभृतानुजेन जयिना यस्तेन युद्धे युतो
दुर्द्धर्षोऽरिगणैरिवामरपतिः श्रीजानिना सा (शौ)रिणा।
यत्कारुण्यसुवृष्टिहृष्टहृदयान्येतानि शुष्कान्यति
प्रारूढ़ानि पुनः फलन्ति च जगत्सस्यानिभान्ताआयुगात्॥9

विद्याश्चतस्त्रश्च तुरस्य यस्य
रुचिप्रकाशेन कृत प्रकर्षाः।
विवृद्धिमीयुर्ज्जगतां समृद्धैय
पूर्णोडुपस्येव पयोधिमालाः॥10

तस्मिन् धर्म्मनिधौ पयाधिरशनां क्षोणीं प्रदायानुजे
कान्तान्निस्पृहद्यीर्य्युवापि स वशी बद्धासिद्यारावतः।
सद्भाक्तिर्हरये हरिङ्कलिजिते हैमे स्वमूर्त्ति परां
प्रादादुत्सवयायिने सुरचितन्तन्तारताक्ष्र्यस्थितम्॥11

(B) ....जल इवाशुभान्।
भेदभेदात्मने तस्मै परमेशाय नो नमः॥1

...........यनान्तर्व्वासितज्जगति।
कल्पान्ते कालवह्न्यर्च्चिर्ब्बीजदाहभयादिव॥2

....................वा करौ।
व्यज्जितौ निजयोगर्द्धिज्ज्योतिः पुञ्जोद्गमाविव॥3

वन्दे वागीश्वरी.....................जम्।
नम्रामरेन्द्रमूर्द्धन्य माणिक्या सज्जनादिव॥4

श्रीमन्तः कम्बुजेन्द्रा..................।
तेजः कान्तिकला कीर्त्तिगाम्भीर्य्यादि विभूषणाः॥5

राजेन्द्रः श्रीयशोवर्म्मो हर्षवर्म्मा महोज्ज्वलः।
श्रीशानवर्म्मा ततः श्रीजयवर्मा महायशाः॥6

श्रीहर्षवर्म्मा नृपति.......................था।
राजेन्द्रवर्म्मा....सु.....यशस्वी जयिनां वरः॥7

क्रियावद्गुणवद्येषां म.........................।
..............क्ष्या................लक्षणं॥8
रूषा काभारिनिर्दग्धात् कामात् कान्ति......।
.................येषामिव.............मृते॥9
............पादः सुखं सुप्तः पादपीठे हिरण्मये।
त........ष्ठमलिभुजाम.....................॥10
.....सन्तं वीक्ष्य यल्लक्ष्मीं सप्तष्वङ्गेषुवल्लभाम्।
तत्स्पर्द्धिनी....................................॥11
न वक्तं वाक्पतिर्य्य माम............गुणान्।
शब्दराशीन् प्रतिपदं केस.................॥12
.................नोत्तेजयामास धीनिधिः।
यो द्यौम्य इव पाण्डूनां रघूणामिव वारुणिः॥13
...............................अवतसकः।
वाग्गङ्गापावितजगन्महेश्वर इवापरः॥14
मूर्द्धाभिषेकमापन्नं.....................।
...............उक्तौ यमन्वग्राहयद् गुरुः॥15
अष्टाविंशतिद्या शैवी पञ्चद्याध्यात्मनै......।
...................स्य कमले स्थिता॥16
भ्रभित्वा मतिमन्थाद्रिमुद्धृत्यार्थर सामृतम्।
य.................विबुद्यान्॥17
गुणानतरज्ञः सुमहान् सत्कार्य्यारम्भभास्वरः।
विवेकी योऽपि धी......................॥18
..............नेक प्रबन्ध ममलं यशः।
क्षेतज्ञतत्त्ववद् यस्य भुवनेषु प्रसारितम्॥19
.................येषु च।
राजाज्ञा मुनिवृन्देषु समं योगेषु धारणा॥20
स्वभावो यस्य.........................।
...........क्षमालाद्यैः पश्चाद्राजा तु पुजकः॥21
हिरण्यरुचिना तेन.........................।

............ज्ञन(?) कृतोऽयं पुस्तकाश्रमः।।22
अध्यापकाध्येतृहितैः....................।
.............सार्व्वाणां शास्त्राणां शस्तबुद्धिना।।23
सरस्वती पदज.........................।
........रुर्द्देयश्च तैरेव हवये हारिकर्म्मणे।।24
इदं..........विफलं यदानद्याः।
..........वर्म्मितावग्रहशोषि.......न्वितम्।।25

अर्थ–

(।) विस्तारित करते हुए जिस एक के द्वारा प्राणियों की आत्मा के अन्तराय=शत्रुवत् आत्मा वाले के द्वारा........भिन्न अजन्म..........नाना प्रकारों के आकार और विकार रूप समस्त तत्त्व से नहीं स्वीकृत हैं उन विष्णु भगवान् को प्रणाम करता हूँ।।1

जिसके द्वारा कमल रूप घर वाले को अपनी नाभि के कमल...... ..जो.....व्याख्या की जाती है, निज.......लक्ष्मी के आधिपत्य को.........नाश करता हुआ............।।2

जिसकी आत्मा रूप चन्द्र वाले आकाश.........न देखने लायक जल में दृष्टि रूप किरणों से ग्रहण करने योग्य शरीरों से....मूर्तिहीन कहे जाते हैं मु.......वशो........वश हो करके न आस्पद=नहीं प्रतिष्ठा निर्वाण मोक्ष के अभ्युदय के कारण...........।।3

समुद्र की सन्धि पर्यन्त फड़कने वाले बाणों से युक्त हाथों वाले श्रेष्ठ शत्रुओं के जीत चुकने वाले राजाओं के राजा राजेन्द्र, कम्बुज राज के वंश रूप आकाश......जो श्रीमान् ९२३ शाके में राजा उदयादित्यवर्मन के आगे, काम करने वाले, सर्पराज से असह्य पृथ्वी को दोनों हाथों से............ ।।4

सब ओर लड़ाई में वर्मन है अन्त में जिस नाम के ऐसे वर्मान्त नाम को धारण करता हुआ श्री राजपतिवर्मन जो राजाओं के स्वामी जयवर्मन के सेनापति और जो उसकी सुन्दरी धर्मपत्नी, माता के श्रेष्ठपुर के राजा के वंशज जिसके ज्येष्ठ भ्राता वह छोटी बहन के सहोदर होने के नाते

श्रेष्ठ यश और त्याग आदि सद्गुणों से युक्त हुआ।।5

युद्ध में भली-भाँति उद्दण्ड योद्धा शत्रु को वह सुन्दर स्वर्ग का आंगन देने वाला (मृत्यु द्वारा स्वर्गगामी बनाने वाला) नम्रता दिखाने वाले को इस लोक में उदय लोक देने वाला, जो युद्ध से पीठ दिखा भागने वाले को जंगल देता है। पूर्व समय में समुद्र में डूबी पृथ्वी के उद्धार करने वाले राजा के पुनः उस पृथ्वी के विप्लव रूप समुद्र में पति होने पर लीला के लाभ की इच्छा वाले विष्णु के समान राजा ने पुनरुद्धार किया था।।6

कामदेव को जलाकर उसके अंगों के सभी प्रकाशों के धनों को लेकर अपने में मिलाकर (अपनी देह में मिलाकर) कीर्ति रूप आधे चन्द्र से युक्त होकर शत्रु जनों को भय देने वाला, कालकूट विष के अग्रगण्य वीर्य बल वाला गंगाजल रूप सुन्दर प्रसन्नता से युक्त दोनों नेत्रों से उत्पन्न अग्नि के तेज से पीछे उत्पन्न वह शिव जो ईश्वर है, सभी गुणों का समुद्र उसने समुद्र सहित पृथ्वी की रक्षा की।।7

उसका ज्येष्ठ भाई जो श्री वीरवर्मन नाम से विदित युद्ध में तलवारधारी शत्रु समूहों से 'अन्नग्नि' उपाधि से विभूषित गुणों के समूह रूप समुद्र था।।8

विजयी चमकती तलवारधारी जो उसे छोटे भाई से युक्त युद्ध में, शत्रु समूहों से इन्द्र के समान निडर श्री हैं जाया जिसकी वह=श्री जानि विष्णु के द्वारा जिसकी दया की सुन्दर वर्षा से ये सूखे हृदय वाले भी हर्षित होकर जगत् रूप धान्य जनमते बढ़ते फिर फलते भी हैं युग के आदिकाल से कान्ति बिखेरते रहते हैं।।9

जिस चतुर की चार विद्याएँ किरणों के प्रकाश से उन्नति करने वाली संसार की समृद्धि के लिए विशेष वृद्धि को प्राप्त हुई, जैसे समुद्रों की पांतियाँ पूर्ण चन्द्रमा को देखकर बढ़ती हैं।।10

उस धर्म के समुद्र छोटे भाई के संरक्षण में समुद्रों के श्रोणीबन्धन (डंड़कस) वाली पृथ्वी को प्रदान करके सुन्दरी प्रिया पत्नी को निःस्पृह बुद्धि से न चाह कर जवान होकर भी वह इन्द्रियों को वश में रखने वाला, बाँध लिया है असिधारा व्रत को जिसने तलवार की धारा है बँधा व्रत जिसका वह बद्धासिधारा व्रत होकर कलि के जीतने वाले विष्णु के लिए

अच्छी भक्ति वाला स्वर्ण की सबसे अच्छी मूर्ति को उत्सव से यज्ञ करने वाले, या उत्सव में प्राप्त होने वाले देवों से चुने गये वेगगामी गरुड़ पर स्थित विष्णु भगवान् को समर्पित कर चुका था।।11

(B) ....जल...........सूर्य के समान

आत्मा के लिए जो काट दे.......उस परमेश्वर को हमारा नमस्कार है।।1

....अन्दर बसने वाले जगत् से....

.............।।2

......................वा दो हाथ।

व्यक्त किये गये अपने योग रूप धन को..........मानो ज्योतियों के समूह के उत्पन्न होने के समान।।3

वाणी जो ईश्वरी सरस्वती है उनकी वन्दना करता हूँ..........मानो नम्र राजाधिराज के मस्तक के माणिक्य की सजावट के समान।।4

श्रीमान् कम्बुज राज लोगों...........जो तेज, कान्ति कला, कीर्ति, गम्भीरता आदि अलंकारों से युक्त हैं।।5

राजाओं में श्रेष्ठ श्री यशोवर्मन और महा उज्ज्वल हर्षवर्मन तब श्री ईशानवर्मन और महायशस्वी जयवर्मन हैं।।6

श्री हर्षवर्मन राजा..............था। राजेन्द्रवर्मन........सु......यशस्वी और विजयी राजाओं में श्रेष्ठ था।।7

जिनकी क्रिया के तुल्य, गुण के तुल्य म.........क्ष्या......... लक्षण=चिह्न।।8

क्रोध से शिव के द्वारा जलाने पर कामदेव से कान्ति......... जिनके समान.....मरने पर.........।।9

............चरण सुखपूर्वक सोया हुआ सुवर्णमय पादपीठ= पैर रखने का पीढ़ा (राजा का) त.........ष्ठम अलि=भ्रमर भुजाम् योग्य करने वालों के..........अ..........।।10

..........सन्त, ...देखकर जिस लक्ष्मी को सातों अंगों में प्रिया को। उससे होड़ लेने वाली को...........।।11

बृहस्पति जिसका वर्णन नहीं कर सकते............माम......... गुणों को। शब्दों के समूहों को प्रति शब्द को केस.........।।12

..........नहीं उत्तेजित किया बुद्धि का सागर। जो पाण्डु वंशजों का धौम्य और रघुवंशजों का वारुणि था।।13

..............अलंकार था। वाणी रूपी गंगा से पवित्र किया संसार को मानो ऐसे दूसरे महेश्वर के समान।।14

सबसे उत्तम अंग मस्तक है उस मस्तक पर अभिषेक पा चुकने वाले को.........कहे गये दो गुरु ने जिस पर कृपा की थी।।15

अट्ठाईस बार शिव सम्बन्धी.......पाँच बार अध्यात्म में नै.......... .स्य कमल में स्थित रहने वाली।।16

भ्रमण करके बुद्धि द्वारा मंथन करने से मतिमंथ अद्रि= मतिमंथ नामक पहाड़ को निकाल करके अर्थ के रस रूप अमृत को जिसने........ विशिष्ट विद्वानों को, या देवों को।।17

गुण के अन्दर का ज्ञाता सुन्दर महान् अच्छे कार्यों के आरम्भ से तेजस्वी......और जो विवेकी भी थी......।।18

.........अनेक प्रबन्ध वाले स्वच्छ यश को। आत्मा के तत्त्व के तुल्य जिसका भुवनों में प्रसार किया था।।19

..........और जिनमें.......। राजा की आज्ञा मुनियों के समूहों में साथ ही योगों में धारणा।।20

जिसका स्वभाव...........क्षमालाद्यैः स्फटिक अक्षमाला आदि से पीछे राजा पूजा करता है।।21

उस सोने की कान्ति वाले के द्वारा..........जन, यह पुस्तकाश्रम बनाया गया था।।22

अध्यापकों और अध्येताओं, पढ़ाने वालों और पढ़ने वालों के हितों से.........। शिव सम्बन्धी शास्त्रों के प्रसिद्ध बुद्धिवाले के द्वारा।।23

सरस्वती पद से उत्पन्न..........।........और ध्यान के योग्य उन्हीं के द्वारा......हवि के लिए........हरण करने वाले कर्मकारी के लिए।।24

यह.........फलहीन..........जब नदी का.......वर्मित=कीलित-कील ठोका हुआ, अब ग्रहण में भी..........युक्त।।25

४०

प्रसत कोक पो अभिलेख

Prasat Kok Po Inscription

प्रसत कोक पो मन्दिर का एक समूह है। अंगकोर थोम के निकट पश्चिमी बारे के उत्तर में यह पाया गया है। अभिलेख संस्कृत एवं ख्मेर दोनों भाषाओं में लिखा हुआ है। इस अभिलेख में कोई प्रार्थना नहीं है।

अभिलेख के प्रारम्भ में विष्णु वराह, जिन्हें पृथ्वीन्द्र पण्डित भी कहा जाता है- नामक व्यक्ति को दिये गये दानों की चर्चा है। भिन्न-भिन्न स्थानों पर विष्णु के मन्दिरों की स्थापना का यह अभिलेख चर्चा करता है और दानों का भी वर्णन करता है। इस अभिलेख से हमें यह पता चलता है कि पृथ्वीन्द्र पण्डित को एक राजकीय आदेश प्राप्त था कि प्रसत कोक पो के चारों मन्दिरों का अधिकार उनकी माता की वंशावली से आने वाले उत्तराधिकारी का ही रहेगा।

इस अभिलेख में कुल 3 पद्य हैं जो सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।[1]

श्वेतद्वीपपदे स्वमातृजननीसन्मातुलेनार्प्पित-

---

1. *BEFEO, Vol. XXXXII*, p.393

न्दौहित्रः पृथिवीन्द्रपण्डित इति श्रीद्धस्य तत्संज्ञिना।
विष्णुं विष्णुवरं स्वयञ्च निहितं वृण्डावने वर्द्धय-
च्छौरिग्रामपुरी करम्बपुरयोः पूजावितानश्रिया।।1
श्रीचम्पेश्वरशौरिणा भगवता भक्ति प्रभासार्ण्णवो-
द्दामोदीर्ण्ण विकीर्ण्ण कीर्त्तिशरदिन्दूद्भासिताशामुखः।
मिश्रीभावितभोग सम्पदममुं विष्णुं स सर्व्व वरो
विद्वान्विष्णुवरारवया कथितयाख्यातोऽकरोदवैष्णवः।।2
ये वंश्या मम मातृतश् शुभधियस् सं (भा) विनोभूपते-
राचार्य्या वरिवस्यया प्रथितया युक्ताः प्रमाणीकृताः।
सर्व्वं स्थानचतुष्टयं भगवतो विष्णोरिदं पान्तु ते
नान्याधीतमिति क्षितीन्द्रवचनात् सोऽकल्पयत् कल्पवित्।।3

अर्थ- पृथ्वीन्द्र पण्डित जो श्रीपति (भगवान् विष्णु अर्थात् विष्णुवर) के नाम से जाने जाने वाले ने श्वेत द्वीप के निकट अपनी नानी एवं मामा के द्वारा स्थापित पालकों में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु को जो वृन्दावन में स्वयं स्थापित हैं, शौरी ग्राम पुरी तथा करम्बपुर की पूजा सामग्रियों से पूजा की।।1

चम्पेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति सागर से उदित, दिशाओं में व्याप्त कीर्ति चन्द्र वाले प्रसिद्ध वैष्णव विष्णुवर नामक विद्वान् ने भगवान् के इस मधुर भक्ति भोग वस्तु का दान किया।।2

जो मेरे मातृवंशीय पवित्र बुद्धि वाले, होने वाले राजा की सेवा के लिए सम्पूर्ण रूप से नियुक्त तथा प्रमाणीकृत हैं। वे भगवान् विष्णु के इन सब चारों स्थानों की रक्षा करें। उस धर्मशास्त्रवेत्ता ने दूसरे की नहीं अपितु राजा के आदेश से ही यह दान किया।।3

81

प्रसत कोक पो अभिलेख
Prasat Kok Po Inscription

अंगकोर थोम के निकट पश्चिमी बारे के उत्तर स्थित मन्दिरों के समूह में से यह एक है। यहाँ पाँच अभिलेख पाये गये हैं। दो संस्कृत भाषा में तथा तीन ख्मेर भाषा में हैं। इन सभी अभिलेखों में से किसी नारायण (जिसे ख्मेर मूल लेख में ख्लोन वल त्वान ब्रहमण कहा गया है) द्वारा श्वेत द्वीप के देवता को दिये दानों की चर्चा है। संस्कृत भाषा के दोनों अभिलेख करीब-करीब एक समान हैं। वे विष्णु की प्रार्थना से प्रारम्भ होते हैं और बाद में जयवर्मन पंचम की चर्चा करते हैं। तत्पश्चात् संक्रान्तपद आश्रम नारायण नाम के दाता द्वारा स्थापित होने का वर्णन है। उसने विष्णु मन्दिर के फाटक पर नन्दिन और महाकाल की भी स्थापना की।

संस्कृत अभिलेख का अन्तिम भाग इन स्थापत्यों को दिये गये भिन्न-भिन्न दानों का वर्णन करता है। ख्मेर मूल भाग से यह पता चलता है कि ये दान शक संवत् 901 में दिये गये थे।

इस अभिलेख में पद्यों की संख्या 51 है तथा समूह-(A) और समूह-(B) में बँटे हुए हैं। समूह-(A) में 22 और समूह-(B) में 29 पद्य हैं।[1]

(A) नमश्चतुर्भुजायास्तु चतुर्द्धाविष्कृतात्मने।
निस्त्रैगुण्य गुणायापि चतुस्त्रैगुण्यधारिणे।।1
वन्दे त्रिविक्रमं यस्य कौस्तुभो भाति वक्षसि।
त्रैलोक्योल्लङ्घवेगेन लग्नवानिव भास्करः।।2
विष्णुन्नमत यस्योर्द्ध शङ्खचक्रधरौ करौ।
राहोर्मेत्तुरिव ग्रासभयादर्केन्दु संश्रितौ।।3
श्री कम्बुजेन्द्रधरणीधरवंश केतु-
र्य्यो धूमकेतुररि राजगणे गुणाढ्यः।
राजेन्द्रवर्म्मन्तपतेस्तनयो नयाग्रयः
श्रीद्धो बभूव नृपतिर्ज्जयवर्म्मदेवः।।4
पादारविन्दशरणागतकामकान्ता-
सोरोनिपीडन विलापमनुग्रहीत्रा-
मन्ये स्मरोऽपर इव स्मरवैरिणा य-
श्चक्रे रतेरतिभुदेऽधिक सुन्दराङ्गः।।5
वियद्विलाष्ट साम्राज्यभुजो भुजजितद्विषः।
भृत्यस्तस्य सदाचार चारुर्ण्णारायणाह्वयः।।6
नारायणास्याङ्घ्रि युगारविन्द-
संसक्तचित्तभ्रमर प्रचारः।
यो धर्म्मकामार्थ विचक्षणोऽपि
विचक्षणैर्धार्म्मिक एवं दृष्टः।।7
स्वकीयबन्धुमूलस्थो यो बालपरिचारकः।
उदितदितवंशोद्यन् मातापितृमहोदयः।।8
चकार चक्रिसौभक्त्या संक्रान्त पदमाश्रमम्।
दासीदासहिरण्यादि धनैरापूरयच्च सः।।9
द्विप्रस्थं तदा शुच्यन्नं दातव्य प्रतिवासरम्।
त्रिपस्थदेवयज्ञञ्च चक्रिणे सोऽप्य कल्पयत्।।10

---

1. *BEFEO, Vol. XXXVII*, p.393

नन्दिनं श्रीमहाकालं द्वासस्थं विष्णोर्व्विद्याय सः।
द्विप्रस्थमन्वहन्ताभ्यां यज्ञन्देयमकल्पयत्।।11
मासि मासि स संक्रान्ते देयं द्रोणकतण्डुलम्।
धान्यादि प्रस्थ मेकैक पञ्चयज्ञमकल्पयत्।।12
चतुश्शातकमेकैकं दातव्यमृ प्रतिवत्सरम्।
याज्काभ्यां सकारिभ्यां दक्षिणां सोऽप्यकल्पयत्।।13
यत्सव्वन्तस्थित क्षेत्रं यज्ञार्थं प्रतिकासरम्।
क्षेत्रसंक्रान्तकं यत्तु संक्रान्ते कल्पयच्च सः।।14
प्रति ग्रहं सभृङ्गारं ताम्रं सर्व्वञ्चतुष्टयमं।
प्रदाय पादमूलायक्षेत्रं सेत्वन्त मादूदे।।15
राजारामनराधिकारपुरुषो भौसंज्ञकः संज्ञतो
विस्संज्ञेन कृतज्ञतां विदधता भूपालकार्य्ये कृते।
भृङ्गारद्वितयं प्रतिग्रहयुतं ताम्रं महद्भाजनं
गृह्गंस्तस्य धनानि संप्रतिददौ तं क्षेत्रसंक्रान्तकम्।।16
पुरोहितस् सबन्धुश्च धार्म्मिको याजकोत्तमः।
ते पालयन्तु तत्पुण्यं स्वपुण्यमिव संयताः।।17
नैताश्रमस्य ये दासा नियोक्तव्याः कदाचन्।
राजकार्य्येऽन्यकार्य्ये च यत्ते कुर्व्वन्तु कल्पितं।।18
ताम्रं भृङ्गारमेकं दराय....................
सीमार्हं दारुदासं दशकपृथुतराश् शर्क्करजाश् शिलाश्च।
दत्त्वा मूल्यानि संज्ञान्....द्....दा...भिनुत...ब्राह्मवान् तां शिवात्याम्
तं - ईशे स लब्ध्वाव्यतरदिह हरौ अन्समाख्यां सपुत्राम्।।19
अन्येपि दासाः कृतास्ते तेनान्य..........चान्यतः।
भक्त्या दत्तास् सुमतिना विष्णवे प्रभविष्णवे।।20
ये पुत्रपौत्रः पर्व्व......भगिन्यस्तस्य भाविनः।
तदधीनामिदं सर्व्वं पालितं धर्म्मतो हरौ।।21
चतुर्म्मुख चतुर्भुजेश्वरपद...........आद्यन्त.......
स्वधर्म्ममिव धर्म्ममत्र परिपालयन्त्येव ये।
न तारयति पाञ्चजन्यमपि ताञ्चिरेणोद्धमन्

हरिर्निखिल रौरवादि नरकाद् वि..........न॥22

(B) Verses 1-9, same as in A.

चतुःप्रस्थ...........शुच्यन्नं दातव्यं प्रतिवासरम्।
त्रिपस्थदेवयज्ञञ्च चक्रिने सोऽप्यकल्पयत्॥10

Verses 11-16, same as in A.

ज्नेनाभसंज्ञतेनैव हृत्वा ताम्रं सधान्यकं।
दात्ताभूमिरियं संस्था स्थलाप्रवचे संज्ञते॥17

Verse 18 same as V.20 in A.

Verse 19 same as V. 21 in A.

सर्व्वापदस् स्मरति यस्य न केवलाया
हन्तुश् श्रिय...............इवुद्यन्तपदज्य दातुः।
नारायणन्नमत तं विबुधारिराशि-
जेतारमिन्द्रविभवाय सुरासुराजौ॥20
नारायणे प्यन्यपपुष्यहृष्टो
नारायणोत्कण्ठ इवाम्बरीषः।
नारायणात्मापि विविच्य विश्व
न्नरायणाख्योऽभवदिद्ध वीर्य्यः॥21
रैरूप्यवस्त्रभृङ्गारं क्षेत्रं क्रीतं शिवाध्वके।
नागशर्म्मयुतात्तेन श्रीनिवासाक्षिदन्वितात्॥22
देवारिञ्जकं क्षेत्रं हृद्याख्यं द्रङ्गसंज्ञकम्।
नगरीमार्ग्ग एवास्या भुवः प्राच्यादितोऽवधिः॥23
सर्व्वकालकृमिक्षेत्रं षष्टि व्यामोरसापि सः।
ज्नोङ्क्षेत्रं शतरवार्य्यर्हवीजस्थापनमन्वदात्॥24
श्रीनिवासादितो लब्ध्वा श्रीनिवासे महीभिमाम्।
सोऽदाद्रहृ.........निशुद्धात्मा श्वेत द्वीप महास्पदे॥25
संक्रान्तकल्पनासिद्ध्यै क्षेत्रसंक्रान्त संज्ञिता।
सर्व्वा भूमिर्धनैः क्रीतादाधि तेनासुरारये॥26

V. 27 same as V. 17 in A.

स्थलाप्रवच आरामे सेतुपादे शिवाध्वके।
ज्नेङ्क्षेत्र सर्व्वदाक्षेत्रे आयत्ताश्चाश्रमे भुवः॥28

V. 29 same as V. 22 in A.

अर्थ-

(1) चतुर्भुज विष्णु को नमस्कार है जिन्होंने चार प्रकार से आत्मा का आविष्कार किया है जो तीनों गुणों से हीन होकर भी सगुण हैं तथा जो चार त्रैगुण्यों के धारण करने वाले हैं।।1

जिसके हृदय पर कौस्तुभ मणि सोहती है उस त्रिविक्रम विष्णु को नमस्कार है। त्रैलोक्य के उल्लंघन के वेग से मानो सूर्य को छू दिया है।।2

तुम विष्णु को नमस्कार करो जिनकी ऊपर खड़ी दो बाहें शंख और चक्र को धारण करने वाली हैं। काटने वाले राहु के ग्रास के भय से मानो सूर्य और चन्द्र सम्यक् आश्रित हैं।।3

श्री कम्बुज राज राजवंश के पताका के रूप से जो गुणों से धनी और शत्रु राजाओं के लिए विनाशकारी धूमकेतु नीति में अग्रगण्य राजेन्द्रवर्मन के पुत्र लक्ष्मी से प्रकाशित राजा जयवर्मन राजा थे।।4

चरण कमलों में शरणागत कामदेव की स्त्री रति के पीड़न से रुदन पर दयालु हैं। मानते हैं कि दूसरा कामदेव जैसा शिव के द्वारा जो रति के अत्यन्त हर्ष के लिए अधिक सुन्दर अंगों वाला कामदेव को बनाया गया है वही यह जयवर्मन है।।5

आकाश के आठ बिलों के साम्राज्य के भोग करने वाले बाँह से शत्रुओं के जीतने वाले के नौकर सदाचार में सुन्दर 'नारायण' नाम से ख्यात हैं।।6

नारायण के चरण रूप दोनों कमलों में प्रेम करने वाले चित्त रूप भ्रमर के प्रख्सा होकर धर्म, काम और अर्थ में निपुण होकर भी निपुणों के द्वारा धार्मिक ही देखे गये थे।।7

अपने बन्धु की जड़ में स्थित जो बालकों का परिचारक उगे हुए कुल को प्रकाशित करता हुआ माँ-बाप के महान् उदय था।।8

उसने विष्णु की भक्ति से विष्णु का आश्रम बनाया और दासी, दास, सोने आदि धनों से आश्रम को पूर्ण किया।।9

तब प्रतिदिन दो प्रस्थ=32 पल शुद्ध अन्न दिया जाये और तीन

प्रस्थ देव यज्ञ के लिए विष्णु के नाम पर दिया जाये।।10

विष्णु के द्वार पर स्थित रहने वाले नन्दी और महाकाल की स्थापना की और दोनों देवों को प्रतिदिन दो प्रस्थ चावल यज्ञ के लिए दिया जाये।।11

संक्रान्ति के दिन प्रतिमास में एक द्रोण=बत्तीस सेर या चौंसठ सेर चावल दिया जाये और एक-एक प्रस्थ धान आदि पंच यज्ञ के लिए दिये जायें।।12

प्रतिदिन एक एक चतु:शतक=चार सौ का समूह दिया जाये। यह दक्षिणा दो यज्ञ करने वालों को दी जाये यह उसने आदेश दिया था।।13

और जो खेत सेत्वन्त के समीप है प्रतिदिन यज्ञ के लिए संक्रान्ति के समय क्षेत्र संक्रान्ति की कल्पना की उसने।।14

सुवर्ण कील सहित ताँबा सब चार देकर चरण के मूल के लिए सेत्वन्त खेत दिया।।15

राजा राम नराधिकार पुरुष नाम से 'भौ' यह ख्यात विस् नाम के द्वारा राजा के कार्य में कृतज्ञता प्रकट करने पर अधिकारी बनाया गया था। दो स्वर्ण कलश दान से युक्त ताँबा बड़ा बर्तन लेता हुआ उसके धनों इस समय दे दिया उस क्षेत्र संक्रान्त को भी दान कर दिया था।।16

उत्तम यज्ञकर्ता धार्मिक बन्धु सहित पुरोहित वे सभी उस पुण्य को पालें। इन्द्रियों को वश में करके अपने पुण्य समान पालन करें।।17

आश्रम के जो दास लोग हैं वे कभी नियुक्त न किये जायें। राजकार्य में अन्य कार्य में जो करें वे करें जो पुरोहित अधिकारी हैं ऐसा आदेश दिया।।18

ताँबा, एक स्वर्ण कील दस............। सीमा के योग्य काठ के दास, दस स्थूल शर्क राज और शिलाएँ मूल्य देकर............नाम वाले को.. ....ब्राह्मणों को उसे राजा के विषय में उसने पाकर वितरण कर दिया विष्णु को और उनकी 'अनू सभा' को पुत्र सहित को।।19

वे और भी नौकर बनाये गये उसके अन्य......दूसरी जगह से...... ......सुबुद्धि द्वारा भक्ति से दिये गये प्रभु विष्णु को।।20

जो पुत्र-पौत्र थे पर्व..........बहनें उसके भावी लोग। उसी के

अधीन सब रक्षित रहें विष्णु में भक्ति धर्म से।।21

चतुर्मुख चतुर्भुजेश्वर पद=चरण.............आदि अन्त अपने धर्म के समान जो यहाँ धर्म पालन करते ही हैं। पहले पाञ्चजन्य को भी नहीं तारते हैं विष्णु उन्हीं को जो रक्षक हैं जो चिरकाल से रक्षक हैं विष्णु सकल रौरव आदि नरक से...........।।22

(ठ) Verses 1-9, same as in A.

चार प्रस्थ शुद्ध चावल प्रतिदिन दिया जाये, तीन प्रस्थ देव यज्ञ के लिए विष्णु को दिया जाये।।10

Verses 11-16, same as in A.

'ज्ने' नाम वाले द्वारा ही ताँबा धान सहित यह भूमि दी गयी वे संस्था स्थला प्रवचे नाम से ख्यात थे।।17

Verse 18 same as V.20 in A.

Verse 19 same as V. 21 in A.

जिसकी सभी आपदों को याद करता है, केवल मारने वाले को ही लक्ष्मी का.............और इवुधन्त पद दाता के- नारायण को नमस्कार करो दैत्यों को जीतने वाले इन्द्र के ऐश्वर्य के लिए देवासुर संग्राम में.........
....।।20

नारायण में भी अन्य के पालन पुष्प से प्रसन्न, नारायण में उत्कण्ठा वाले अम्बरीष के समान नारायणात्मा भी विश्व की विवेचना करके नारायण नामक प्रकाशमान बल वीर्यशाली था।।21

धन, रुपये, वस्त्र, स्वर्ण कलश, खेत शिव यज्ञ में खरीदे गये नाग शर्मा से युक्त उसके द्वारा श्री निवास के नेत्र के साथ।।22

देवारिंजक खेत ह्द्य नामक द्रङ्ग नामक, इसका नगरी मार्ग ही पृथ्वी का पूरब आदि से सीमा है।।23

सर्व काल कृमि खेत षष्टिव्यामो रसा भी ज्नोङ्ग खेत सौ खारी बीज के लायक बीज स्थापन के लिए खेत दिया।।24

...........शुद्धात्मा ने श्वेत द्वीप महास्पद में दान किया।।25

संक्रान्त कल्पना की सिद्धि के लिए क्षेत्र संक्रान्त नाम हुआ। उसने सभी भूमि धनों से खरीदी। उसी के द्वारा विष्णु को दी गयी।।26

V. 27 same as V. 17 in A.

पृथ्वी के ऊपर आश्रम के अधीन स्थलाप्रवच फुलवारी में सेतुपाद में शिवाध्वक में ज्नेङ् क्षेत्र, सर्वदा क्षेत्र में सभी पर आश्रम की अधीनता थी।।28

V. 29 same as V. 22 in A.

81. प्रसत कोक पो अभिलेख

४२
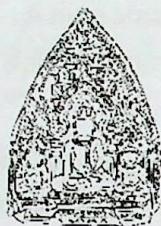
प्रह को अभिलेख

Prah Ko Inscription

बकोन के मन्दिर के निकट ही प्रह को का मन्दिर है और रूलो समूह का एक भाग बनता है। शिव की प्रार्थना तथा राजा जयवीरवर्मन की प्रशस्ति से यह प्रारम्भ होता है। जयवर्मन के द्वारा विनय को परमेश्वर मन्दिर का आचार्य तथा राजेन्द्रवर्मन के द्वारा उस मन्दिर का मुख्य बनाने की भी चर्चा है। अन्तिम पंक्तियों में देवीपुर नगर में दिये गये दान तथा भगवान् शिव पर चढ़ने वाली दैनिक सामग्रियों का भी वर्णन है।

इस अभिलेख का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि परम्परागत धार्मिक सूचना प्रस्तुत करने के अतिरिक्त यह अभिलेख हमें लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन से भी परिचित कराता है क्योंकि इसमें राजा के द्वारा देवीपुर के लोगों को सुनारों के निगम का सदस्य बनने की अनुमति देने की भी बात है।

इस अभिलेख में कुल 18 पद्य हैं। पद्य संख्या 9 नष्ट हो चुके हैं। पद्य संख्या 7 एवं 8 पठनीय हैं।

जॉर्ज सेदेस द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन हुआ था।[1]

शीताङ्गगङ्गाधर उत्तमाङ्गे
नह्लादने यो भुवनस्य.................।
संसारनिर्व्वाणविभूति हेतु -
रस्मै शिवायास्तु नमश् शिवाय॥1
आ....................(ज)यवीरवर्म्मा
........................नोद्धृतपादयद्मः।
....
...................................कीर्त्तिः॥2
अतुल्यवीर्य्यो जितरामवीर्य्यो
योऽतुल्यविद्यो जितसर्व्वविद्वान्।
अतुल्यकीर्त्तिर्जितशक्र कीर्त्ति-
रतुल्यकान्तिर्जितकामकान्तिः॥3
धात्रा समादृत्य जगत्रयामा
नापूय चन्द्रो विहितो मलीति।
तेनानुतापादिव यः पुनस्ताः
पूत्वाकलङ्की जनितोऽतिकान्तः॥4
भिन्नार्युरोनिः सृतरक्तवारि-
राशिप्लुतां यस्य जयश्रियन्दौः।
इच्छन् इवोत्तारयितुं सखड्गः
सेतूकृतोत्कृत्तरिपूत्तमाङ्गः॥5
धर्म्मार्प्पितैरुज्ज्वलवीर्य्य वर्य्यै-
रुद्धतविद्विड् कलिदोषराशेः।
कल्युदगतापत्ति भयादिवाङ्घ्रो
व्यद्याद्धियं यस्य शुभास्यचन्द्रे॥6
Only a few words of vv 7-8 are legible.
v. 9 is completely lost.
यो नीति कन्याभिरतो मनूनां
त्रिवर्ग सङ्घर्षिगतिन्दधानः।

---

1. *IC*, p.189

संसार दुःखाण्र्ण वसन्ति तीर्षः
सत्पुण्य नौकां सततं करोति।।10
अनेकशास्त्राम्बुद्यिपारदृश्वा
मातामहो यस्य शिखाशिवाख्यः।
योऽनिन्दितोऽनिन्द्य पुरप्रधान
...........जातो विनयाभिजा(ज्ञा?)तः।।11
राज्यं द्युवाणाष्टभिरेव धात्रा
......................................।
योऽध्यापकत्वे परमेश्वराख्ये
......................................।।12
यं षड्रसैश्वर्य्यधराधरः श्री-
(राजे)न्द्रवर्म्मावनिपेन्द्र (व)र्य्यः।
भूयोऽपि देवे परमेश्वराख्ये
पौरोहिते पौर(हिते) न्ययुङ्क्त।।13
देवीपुराख्ये स्वकृते पुरेऽस्मिन्
संस्थापि (ताः कि)ङ्करभृत्य.........।
प्रस्थद्वयं तण्डुलमन्वहन् ते
दातुं शिवे तेन निय.................।।14
मदीयसन्तान परम्पराजे-
ष्वाधीन तान्तेषु गता न...............।
शैलाधिपे नैव तु देवदासे-
ष्वन्येषु नैवेति मतिस्तदीया।।15
राजाधिराजो नगनेत्ररन्ध्रे
देवीपुरस्था जनतास्तदानीम्।
चकार चाभीकरकारवर्ण्णे
निवेदनात्तस्रू सुशिल्पबुद्धीः।।16
तत्पुण्य संवर्द्धनरक्षणेषु
सत्तण्डुलं प्रस्थचतुष्टयन्तत्।
भोज्यीकृतं व्यञ्जनजातयुक्तं

स प्रत्यहं सम्प्रददौ महेशे।।17

इदमतिशय पुण्यं वर्द्धयेयुर्जना ये

त्रिदशपुरनिवासन्ते भजन्ते सगोत्राः।

निजगङ्मतिमन्दा ये विलुम्पन्ति मोहाद्

विविधनरक कूपे ते भजन्तेऽग्रदुःखम्।।18

अर्थ- शीतल अंगवाली गंगा को धारण करने वाले जो भुवन के प्रसन्न करने वाले संसार के निर्वाण में विभूति के कारण हैं ऐसे शिव को कल्याण के लिए नमस्कार है।।1

...............जयवीरवर्मन.............उद्दण्ड चरण कमलों वाला।..... ....कीर्तिवाला।।2

न तुलना करने लायक वीर्य वाला जीत लिया है राम के वीर्यबल को जिसने ऐसा अतुल विद्या सभी विद्वानों के जीतने वले अतुल कीर्ति वाले इन्द्र की कीर्ति को जीतने वाले थे।।3

ब्रह्मा द्वारा आदर करके तीनों भुवनों के तेज को पवित्र करके चन्द्र मलिन हो गया मानो उसी पछतावे से जो फिर उन्हें पवित्र करके अति सुन्दर कान्ति वाला भी कलंकी चन्द्र बना है।।4

कटे शत्रु के हृदय से निकले रक्त रूप जल राशि से पटी हुई विजय लक्ष्मी की चाह करता हुआ मानो उतारने के लिए तलवार सहित कटे शत्रु मुण्डों से पुल बना देने वाला है।।5

धर्म के लिए दिए उज्ज्वल श्रेष्ठ वीर्य बलवानों के द्वारा शत्रु रूप कलियुग के दोषों के ढेर से उठा मानो कलियुग की आपत्ति के भय से मूर्ख जिसके कल्याणकारी मुखचन्द्र में बुद्धि का विधान किया था।।6

जो मनुओं की नीति रूपी कन्या में रत रहने वाला त्रिवर्ग धर्म, अर्थ, काम के समूह को ऋषि की गति को धारण करता हुआ संसार के दुख रूप समुद्र से पार जाने की इच्छा वाला अच्छे पुण्य रूप नाव की व्यवस्था हमेशा करता रहा है।।10

अनेक शास्त्र रूप समुद्र के पार तक देखने वाला जिसका नाना शिखाशिव नाम से प्रख्यात जो अनिन्दित निंदा योग्य पुर का प्रधान है..... पैदा हुआ विजयी हुआ।।11

ब्रह्मा के द्वारा राज्य को आढ से ही कँपाने वाला.....जो परमेश्वर नाम वाले के शिक्षकत्व में.......।।12

जिसे छः रसों के ऐश्वर्य वाले राजा श्री राजेन्द्रवर्मन राजाओं के राजा के भी श्रेष्ठ फिर भी परमेश्वर नामक राजा के पुरोहित के कार्य पर नियुक्त करने वाला था।।13

अपने द्वारा प्राप्त किये या बनाये इस देवीपुर नामक पुर में संस्थापित किये उन मूर्तियों को दास नौकर..........दो प्रस्थ चावल प्रतिदिन शिव को देने के लिए उसने निय...........।।14

उसकी ऐसी राय थी कि मेरे कुल में उत्पन्नों की अधीनता रहे शैलराज या देवदास के अधीन न रहे न ही और किसी की अधीनता में रहे।।15

राजाओं का अधिराज शाके 131 में देवीपुर की जनता ने उस समय स्वर्णकार वर्ण में..........उसके निवेदन से सुन्दर शिल्प सम्बन्धी बुद्धि वालों का विधान किया था।।16

उस पुण्य के बढ़ाने रखने अच्छा चावल चार प्रस्थ भोजनार्थ और तरकारी आदि समूह से युक्त महेश को प्रतिदिन दिया जाये।।17

इस अति पुण्यप्रद कार्य को जो बढ़ावें वे गोत्र सहित स्वर्गवास करें। मोह से जो मूर्ख मन्दबुद्धि विशेष रूप से लुप्त करें वे विविध नरक कूपों में आगे-आगे दुख भोगें।।18

८३

वट थिपेदी अभिलेख

Vat Thipedi Inscription

यम रियप जिले में स्थित वट थिपेदी नाम का एक छोटा मन्दिर है। इस पुस्तक के अभिलेखों की क्रम संख्या 56 में वर्णित शिखाशिव के द्वारा स्थापित लिंग की पुनर्स्थापना की चर्चा इसमें है। यह अभिलेख त्रिदेवों की प्रार्थना तथा राजा सूर्यवर्मन की प्रशस्ति से प्राप्त होता है। राजा सूर्यवर्मन के राज-दरबार में रहने वाले कृतीन्द्र पण्डित की एक लम्बी वंशावली का वर्णन है। इस वंशावली से महिलाओं के पक्ष की ओर से उत्तराधिकार प्राप्त करने के प्रचलन की पुष्टि होती है।

इस अभिलेख की दो पंक्तियों में शिवाचार्य नामक एक व्यक्ति का वर्णन है। इस नाम के होने से एक विवाद उठता है कि ये दोनों एक ही व्यक्ति थे या भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के नाम थे।

इस अभिलेख में कुल 23 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 21 से 23 टूटे हुए हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

सिद्धिरस्तु।

जयत्यम्भोजभवनो जयत्यम्भोज लोचनः।
जयत्यमभोज भूपेन्द्र दुर्ब्बोध प्रभवो भवः।।1
श्रीद्धः श्रीसूर्यवर्म्मासीद् सिध्वस्तारिमण्डलः।
अब्धिद्विविवरै रम्यराज्यभुग् भुवनर्द्धये।।2
कम्बुजेन्द्रान्वयव्योमद्युमणेः श्रीन्द्रवर्म्मणः।
मात्रन्व वायदुग्धाब्धि विद्युयौ धूर्ज्जटिप्रियः।।3
निजवीर्य्यानिलोद्धूतो धामधूमध्वजो युधि।
विपक्ष तक्षमध्यक्षमवाक्षीत् यस्य दुस्सहः।।4
सन्तप्रान् योऽनिशन्नम्रान्नरेन्द्राँस्तीव्रतेजसा।
दययेवाङ्घ्रि जस्यांशुवारिणास्नापयत्सदा।।5
गाढ़गाम्भीर्यमम्भोधिन्धीमयं यः स्वयन्धिया।
तीर्त्थातितीर्षून विदुषस्तारयामास पारगान।।6
हृन्मेरूमूर्द्धसंरूढं यस्य दिव्यासुर द्रुमम्।
प्राप्य प्रकाम फलदन्ननन्द विवुद्यद्विजः।।7
यत्कीर्त्तिमणिभिः पूर्णन्नूनन् त्रैलोक्यकोष्ठकम्।
ररक्षतोषितश्चक्री चक्राङ्कत्रिदाङ्कितम्।।8
बभूव भूभृतस्तस्य कृती यः कृतिसत्कृतः।
कृतीन्द्र पण्डितः कृत्यकृदकृत्य निकृन्तकः।।9
प्रणवात्माख्यविदुषो होतुः श्रीजयवर्म्मणः।
भगिनीदुहितुः सुनूः सूरिरासीत् शिखाशिवः।।10
तस्यासीत् श्रीन्द्रवर्म्मेशबाल्लभ्याल्लब्धसम्पदः।
श्री यशोवर्म्महोतुश्च भागिनेयीसुतोऽग्रधी।।11
शङ्कराख्यो भुवि ख्यातस्तीर्णशास्त्रमहार्णवः।
राजेन्द्रवर्म्मभूपेन्द्रपुरोधा धीमतां वरः।।12
तस्यानुजोऽजितगुणो नारायण इतीरितः।
राजन्यवृन्दवन्धाङ्घ्रेर्होता श्रीजयवर्म्मणः।।13

---

1. *IC*, p.189

तद्भगिन्यात्मजश्चासीत्सूरिरग्रेसरः सताम्।
शिवाचार्य्य इति ख्यातो होता तस्यैव भूभुजः।।14
भगिनीनन्दनस्तस्य विद्याम्भोनिधि पारगः।
धैर्य्यसौन्दर्य्यवादन्यवाग्मित्वाद्यालयश्च यः।।15
विद्वान् विद्यां क्षमी क्षान्तिन्त्यागमर्थ्यधिकं यथा।
तथान्येऽन्यगुणान् यस्य स्पर्द्धयेव स्म शंसति।।16
परमार्थ परस्यापि यस्यार्थो गृहसंस्थितः।
न तथा प्रीतिमकरोद् यथा दत्तस् स यायके।।17
तपस् संसक्तमनसां स्वामिभक्तया तपस्विनाम्।
यस्तन्त्रविधिमन्त्रज्ञ उपदेष्टा नृपाज्ञया।।18
सौजन्यश्रुतशीलादि गुण भूमोऽपि योऽनिशम्।
भोगैर्भोग्यास्यदोलाद्यैर्भूयो भूभुग्वि भूभतः।।19
पुरा शिखाशिवेनेदं स्थापितं लिङ्गमुद्धृतम्।
तेन द्वीपद्वयद्वारैर्भूयो भक्तया प्रतिष्ठितम्।।20
तस्य च....................नुजो ज्यायान् गुणोदयैः।
क्षि......................................स् सरः।।21
vv. 22, 23 are mostly illegible.

अर्थ- कमल के भवन में रहने वाले की जय हो, कमल नयन की जय हो, अम्भोज के भूपेन्द्र की जय हो दुर्बोध के प्रादुर्भाव ही भव शिव और संसार है।।1

लक्ष्मी से ज्योतित श्री सूर्यवर्मन था जिसने तलवार से शत्रु समूह को ध्वस्त किया था समुद्र रूप दो बिलों से रमणीय राज्य का भोगी भुवन की समृद्धि के लिए था।।2

कम्बुज के राजवंश रूप आकाश की मणि श्री इन्द्रवर्मन की जो माता के वंश के दूध के समुद्र का जन्मा चन्द्र था जो शिव का प्रिय था या शिव थे प्रिय उसे।।3

अपने वीर्य बल रूप वायु से उड़ाया हुआ युद्ध में मकान के तेज के धुएँ रूप ध्वजा वाले जिसने शत्रु पक्ष रूप तक्ष के अध्यक्ष को दुःसह होकर देखा।।4

जो हमेशा संतप्त विनीत राजाओं को तीक्ष्ण तेज से मानो दया करके पैरों से उत्पन्न नखों की किरणों के जन्म से अस्त किया।।5

जिसने स्वबुद्धि से गाढ़े गहरे समुद्र को बुद्धि ही बुद्धि से भरा तीर्थ के तैरने की चाह वाले विद्वानों को तैराया जो विद्वान् पार जा चुके थे।।6

हृदय रूप सोने के पहाड़ सुमेरु पर चढ़ी हुई जिसकी दान की इच्छा रूप देववृक्ष कल्पवृक्ष को पा करके जितनी इच्छा हो उतनी रकम पा उतने फल देने वाले को प्राप्त कर पण्डित ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ था।।7

जिसकी कीर्ति रूप मणियों से पूर्ण निश्चय ही त्रैलोक्य की कोठी है, उसकी रक्षा की। सन्तुष्ट होकर चक्रधारी विष्णु ने चक्र के औत्रि पद के चिह्न वाले कोष्ठक का पालन किया था।।8

जो प्रयत्नवानों से सत्कार पाने वाले उस राजा का प्रयत्नशील कवीन्द्र पण्डित करने योग्य कार्य करने वाला, न करने योग्य कार्य को न करने वाला था।।9

हवन करने वाला प्रणवात्मा नामक विद्वान् श्री जयवर्मन की बहन की बेटी का बेटा विद्वान् शिखाशिव नामक था।।10

उस श्री इन्द्रवर्मन राजा की प्रियता से सम्पत्तियाँ पाने वाले का और होता श्री यशोवर्मन की बहन की बेटी का बेटा अग्रबुद्धि था।।11

पृथ्वी पर विख्यात शास्त्र रूप महासमुद्र का पारंगत शंकर नाम का राजेन्द्रवर्मन राजाधिराज का पुरोहित बुद्धिमानों का श्रेष्ठ था।।12

उसका छोटा भाई जिसके गुण जीतने योग्य न थे नारायण नाम से ख्यात राजाओं के समूह से प्रणाम करने योग्य चरणों वाले हवन करने वाले श्री जयवर्मन के होता= हवन करने वाला था।।13

उसकी बहन का बेटा विद्वान् सज्जनों का अगुआ शिवाचार्य इस नाम से ख्यात उसी राजा का होता था, यज्ञ करने वाला था।।14

विद्या रूप समुद्र का पारगामी उसकी बहन का पुत्र धीरता, सुन्दरता, दाता का गुण वदान्य गुण है उस वदान्य कारण से युक्त थोड़ा और सार बोलने वाला (वाग्मी) आदि का जो घर था।।15

विद्वान् विद्या को, क्षमाशील क्षमा को, याचक से याचे गये द्रव्य

से अधिक दानी और दूसरे गुणों को अन्य लोग जिसके बारे में होड़ लेने की नाई कहा करते थे।।16

परमार्थ कार्यों में तत्पर रहने पर भी जिसका धन घर में रखा है। वैसी प्रीति उसने न की जैसा याचने वालों को उसने दान दिया था।।17

राजा की आज्ञा से उपदेशक तन्त्र की विधि, मन्त्र का ज्ञाता, तपस्या में लगे मनन वाले तपस्वियों की स्वामीभक्ति द्वारा जो राजाज्ञा से उपर्युक्त गुण वाला था।।18

हमेशा सुजनता, वेदशास्त्र श्रवण, शील आदि बहुत गुणों से बहुत-बहुत भरा पूरा रहने पर भी जो भूमि का बहुत भोगने वाला था पूज्य था भोगों से भोगने योग्य जेलों से युक्त था।।19

पहले शिखाशिव के द्वारा यह स्थापित लिंग उखाड़ा गया। उसके द्वारा दो द्वीपों के द्वारों से फिर भक्ति से लिंग की प्रतिष्ठा की गयी।।20

और उसके..............छोटा भाई, बड़ा भाई गुणों के उदयों से..... .....क्षि.......स्.......सरोवर।।21

84

बन्ते कदेई अभिलेख
Bantay Kdei Inscription

अंगकोर क्षेत्र में यह मन्दिर है। यह अभिलेख शिव, उमा, भारती और अनिन्दितपुर के शिवलिंग की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है और इसमें राजा इन्द्रवर्मन प्रथम, यशोवर्मन तथा हर्षवर्मन प्रथम की प्रशस्ति है। शिवाचार्य के गुरु (जिसके नाम नहीं है)–के द्वारा धार्मिक स्थापत्यों की एक सूची भी इस अभिलेख में है। अभिलेख का शेष भाग शिवाचार्य की प्रशस्ति ही है जिन्हें लगातार चार राजाओं– ईशानवर्मन द्वितीय, जयवर्मन चतुर्थ, हर्षवर्मन द्वितीय तथा राजेन्द्रवर्मन का होता बनना पड़ा। उनकी प्रतिष्ठा स्वरूप उन्हें स्वर्ण धातु से निर्मित एक पालकी, सफेद छाता तथा दूसरी वस्तुएँ दी गयीं। कहा जाता है कि वह विद्वान् पण्डित था और 88000 पण्डितों एवं पुजारियों के अगुआ थे। यद्यपि वे एक शुद्ध वैष्णव परिवार में जन्म लिये थे। वे शैव आचार्य बन गये और उन्होंने अपने गुरु के आदेशानुसार ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्ति स्थापित की। आर. सी. मजूमदार इस शिवाचार्य को –क्रमसंख्या 81 के शिवाचार्य जो होता के रूप में

वर्णित हैं-मानते हैं।

इस अभिलेख में कुल 45 पद्य हैं। पद्य संख्या 7, 13 से 15, 16, 18 से 20, 28, 30 एवं 37 टूट चुके हैं।

फिनोट ने इसका सम्पादन किया है।[1]

नमश् शिवाय यत्पाद कुशेशयरजोऽरजः।
त्रिदशत्रि दशारीन्द्र शिरोमन्दार मन्दिरम्।।1
जेजीयतेऽम्बुजाक्षेण यस्य तेजोऽतिदुर्ज्जयम्।
दैत्यदर्प्पेन्धनोद्दाहद्यूतधूमध्वजायते।।2
(ता)म्रपादन रवाग्राणि पान्तु वः पद्मजन्मनः।
निरस्ताशेषरागस्य वर्त्मानीव हृदालयात्।।3
नमाम्युमां मुखं यस्यास् स्मितमीशस्य दर्शने।
पूर्ण्णचन्द्रायते चन्द्रखण्डं मूर्द्धीव निन्दितुम्।।4
सर्व्वत्र व्यापिनीं वन्दे भारतीं भूरिभारतीम्।
सुधावदन पूर्ण्णेन्दुकला पीयूषवर्षिणीम्।।5
वन्दे श्रीशिवलिङ्गाख्यं शङ्करं विश्वशङ्करम्।
अणिमादिगुणानिन्द्यनिन्दित पुरास्पदम्।।6
बभूव भूभृतां भर्त्ता श्रीन्द्रवर्म्मारिदुर्ज्जयः।
श्रीकम्बुजेन्द्र..................................।।7
निर्ज्जिताशेषतो (जसा)मे क्वाग्निः(?) केवलो द्रुतः।
विलीन इति यत्तेजो दिशो गान्मार्ग्गणादिव।।8
(द्यौ)तैरिव यशोरत्नैस् सदा दानाम्बुधारया।
(वि)शुद्धैर्यस्य हारिण्यो भवन्त्यद्यापि दिक्स्त्रियः।।9
कुत्र कान्तिरनङ्गस्य दग्धस्येयं भवेदिति।
तत्स्थिराश्रितये धात्रा दुर्द्धर्षो यो नु निर्म्ममे।।10
(भि)न्नेभकुम्भतो येन मुक्ता सासृग्विसारिता(:)।
(सर)क्तचन्दनजला पुष्पवृष्टिरिवाहवे।।11
तस्य पुत्रो जगदीनगुणो राजा धराभुजाम्।

1. *BEFEO*, Vol. XXV, p.354

श्रीयशोवर्म्मनामाभूदरिद्विरद केसरी॥12
.............लवाले यत्ते (जो) नलदग्धद्विऽिन्धने।
..............यशोद्रुमो रूढ़श्छादयत्यखिलज्जगत्॥13
.............नयुद्धानले शस्त्रद्यूमे सृक्सप्रिरूज्ज्वते।
.........रिपुयशोहव्यं स्थापितास् स्वयशोमराः॥14
................(यद)रीमेन्द्रकुम्भेभ्यो मुक्तं मौक्तिकमाहवे।
(दि)ग्दिगद्गुताया यत्कीर्त्तेहरिजालमिवागत्मत्॥15
(का)माङ्ग प्रतिमस्वाङ्गदहनाशङ्कयेव यः।
..................द्रसहजसौहाद्रं सुद्याब्धौ हृदये व्यघात्॥16
तस्य सूनुरनून श्रीश् श्रीत्रिविक्रम विक्रमः।
(श्री)हर्षवर्म्मनामासीदधीशोऽशेषभूभुजाम्॥17
.............दमीश्वरशिरोविशदोपाश्रयं यशः।
............तजगद्यस्य गङ्गावारीव राजते॥18
..............ह्लादिनि विभ्रदासमुद्रल सत्तरः।
..............शिष्टकलाढ्यो यस्तुहिनाङ्शुरिवापरः॥19
.............इन्द्रश् श्रीधरः पद्मलोचनः।
...................हुरिवापरः॥20
A few words only of vv. 21-24 are legible.
(शु)द्धयशोधरपुरे स्थापयित्वेद मैश्वरम्।
(स) श्रीभद्राश्रमे भूयो लिङ्गमन्यदतिष्ठित्॥25
(भ)द्रावासे स लिङ्गे द्वे भारतीप्रतिमामपि।
शिवपर्व्वत शृङ्गे पि लिङ्गत्रयमतिष्ठिपत्॥26
लिङ्गं भीमपुरेऽमोघपुरेलिङ्गे च स व्यधात्।
लिङ्गैकाङ्शौ समोमार्च्चावनिन्दितपुरे पुनः॥27
.................लिङ्गपुरे शम्भुपुरे शिवपुरे पुनः।
वककाकेश्वरपुरे विदद्ये श्रीमदाश्रमान्॥28
(स) पञ्चलिङ्गनिलये कृतज्ञे रुद्रपर्व्वते।
(ज)लाङ्गेश्वरवादित्रपुरयोराश्रमान्व्यधात्॥29
श्रीमत् सिद्धेश्वरपुरे प्राक् प्रत्यच्छिवपादयोः।

........देवाश्रमदेशे पि चकार श्रीमदाश्रमान्॥30

श्रीचम्पेश्वरद्याम्नि श्रीपुण्डरीकाक्षद्यामनि।
श्रीपद्मनाभनिलये स व्यद्यादाश्रमानपि॥31

(स) लिङ्गपुररुद्राणीद्यामनि स्थिरपट्टने।
अन्यत्र चाश्रमान् पूजाविधये विविधान्वयधात्॥32

तस्यान्तेवास्यभूद्वाग्मी सर्व्वान्तेवासिनां वरः।
स्तुतानान्तद्वदाचार्यो मीषामपि मद्दीभृताम्॥33

श्रीशानवर्म्मणो योऽर्हो होता श्रीजयवर्म्मणः।
श्रीहर्षवर्म्मणो भूयस्तत्सूनोरिन्द्रतेजसः॥34

बाल्यात्प्रभृत्या बार्द्धक्याच्छैवाचार्योऽपि यो(ऽभवत्)।
(शु)द्धवैष्णववङ्श्योऽर्थ्याम् हृषीकेशाभिद्यामद्यात्॥35

नैश्वासमण्डलीन्दीक्षान्नैष्ठिकाचार्य्यताप्रणीम्।
शिवाचार्य्याभिधानाद्यां योऽभिषेक विधौ दधौ॥36

(कृ)त्स्न व्याकरणे धीती योऽपि बालोऽध्यजीगपत्।
सूनूननूचानो वाचस्पतिरिवामरान्॥37

(त)स्यास्ये सङ्हितास सर्व्वास् सर्व्वज्ञानोत्तरादयः।
(सा)र्व्वज्ञयमिव दित्सन्त्योऽति स्थिरास्तस्थिरे धियो॥38

षड्द्विङ्वसूपात्तभुवो यश् श्रीराजेन्द्रवर्म्मणः।
(श्वे)तच्छत्रादिभोगाद्यां प्राप दोलां हिरणम(यीम्)॥39

(अ)ष्टाशीतिसहस्रर्त्विग्भाजामपि महीभुजाम्।
योऽर्च्चनीयतमो धौम्यः पाण्डवानामिवाध्वरे॥40

(गि)रीशस्यास्य गुरुणा लिङ्गस्य स्थापितस्य सः।
यथावद्वर्द्धयामास पूजां पूजितलक्षणः॥41

(स)र्व्वाण्युक्तानि पुण्यानि सर्व्वत्रैवाकरोद्गुरुः।
तेनान्तेवासिवर्य्येण सार्द्ध वर्द्धित बुद्धिना॥42

(ते)नेमौ स्थापितौ देवौ चतुरास्यचतुर्भुजौ।
(द)क्षिणोत्तरयोरत्र गुरुशासन वर्त्तिना॥43

(ते)षु देवेषु धर्म्मस्य मूर्त्तस्यावस्थितस्य सः।
(र)क्षामभिलषन् साधून्ब्रवीतीति वचोऽमृतम्॥44

(ध)र्म्मश्चनुष्पात् प्राग्घ्रासं ह्रासं प्राप्यैकपात्कलौ।
(रा)ज्ञां शक्तित्रयेणास्तु चतुष्पात् पालितः पुनः।।45

अर्थ- शिव को नमस्कार है जिनके चरण रूप सौ पत्ते वाले कमल की धूल देवों दैत्येन्द्रों के सिर समूह से शोभित है।।1

कमल नयन विष्णु पुनः-पुनः अतिशय रूप से जीतते हैं जिनका तेज अतिशय दुखों से जीतने योग्य है। दैत्य के गर्व रूप लकड़ी की जलन से उठे धुएँ ध्वजा के समान सोहते हैं।।2

ब्रह्मा के ताँबे के समान लाल नखों के अग्र भाग तुम्हारी रक्षा करें। हृदय रूप घर से छोड़े हैं सभी प्रेमों को जिसने ऐसे रास्तों के समान।।3

उमा को नमस्कार करता हूँ जिनका मुख शिव के दर्शन में मुस्कान से युक्त है। मानो आधे चन्द्र जो उनके सिर पर है उसकी निन्दा करने के लिए उमा का मुख पूर्ण चन्द्र सा है।।4

सब जगह व्याप्त सरस्वती को प्रणाम करता हूँ जिनकी वाणी बार-बार निकलती रहती है। अमृत मुख पूरे चन्द्र का सोलहवाँ भाग है अमृत बरसाती रहती है।।5

श्री शिवलिंग नाम से विख्यात् विश्व के कल्याण करने वाले शंकर की वन्दना करता हूँ। इन आठ सिद्धि रूप गुणों जो अनिन्दनीय हैं इनसे अनिन्दित है स्थान जिसका ऐसी भवानी की पुरी है।।6

दुख से जीतने योग्य राजाओं का स्वामी श्री इन्द्रवर्मन हुआ था.... ....श्री कम्बुज का राजा...........।।7

जीते हुए सभी तेजों वाले मेरे तेज से अग्नि कहाँ? वह केवल शीघ्रगामी है। विलीन हो गया यह जो तेज............दिशाओं में गया.......... बाण के तुल्य मानो।।8

मानो धोए हुए यश रूप रत्नों से सदा दान के जल की धारा से जिस विशेष शुद्ध यश रूप रत्न की हरण करने वाली आज भी दिशा रूप स्त्रियाँ होती हैं।।9

काम की कान्ति कहाँ है? जले कामदेव की यह कान्ति हो। यह

उसकी स्थिर आश्रिति= आश्रय स्थिति के लिए मानो ब्रह्मा ने निडर राजा का निर्माण किया।।10

फूटे हाथी के सिर से जिसके द्वारा मुक्ता निकाली गयी वह रक्त से बिखरी है। मानो रक्तचन्दन और जल से युक्त मुक्ता फूलों की वर्षा के समान युद्ध में मालूम पड़ती है।।11

उसका बेटा जिसके गुण विश्व द्वारा गाये गये राजाओं का राजा श्री यशोवर्मन नाम का शत्रु रूप गज का सिंह था।।12

........कुल रूप आला वाल में= थाला में जो तेज अग्नि से जले शत्रु रूप लकड़ी में...कीर्ति रूप पेड़ बढ़ा सभी विश्व को ढका था।।13

............युद्ध रूप अग्नि में, शस्त्र रूप धुएँ में, रक्त रूप उज्ज्वल घी में,.........शत्रु के यश रूप हव्य=हवनीय पदार्थ अपने अतिशय यश से युक्त स्थापित हुआ।।14

जो शत्रु रूप गजेन्द्र के मस्तक के कुम्भों से युद्ध में मौक्तिक छूट कर गिरा.......दिशाओं की ओर शीघ्र जाने वाले जिसके यश की माला के समूह से लगे थे।।15

मानो कामदेव के अंगों के समान अपने अंगों के जल जाने की शंका से जो.....अमृत के समुद्र हृदय में सहज मित्रता करने लगा था।।16

उसका पुत्र बहुत लक्ष्मीवान् श्री विष्णु सा पराक्रमी श्री हर्षवर्मन नाम का था जो सभी राजाओं का अधीश्वर था.......।।17

.......शिव के सिर के समान श्वेत यश था...........जिसका यश गंगा के जल के समान सोहता था।।18

...........धारणा करता हुआ समुद्र तक सोहता है।...........कला से युक्त जो दूसरे चन्द्र के तुल्य है।।19

...........इन्द्र विष्णु कमल नयन........दूसरे........................।।20

A few words only of vv. 21-24 are legible.

शुद्ध यशोधरपुर में इस ईश्वर के लिंग की स्थापना करके उसे भी भद्राश्रम में फिर दूसरे लिंग की स्थापना की थी।।25

उसने भद्रावास में दो शिव लिंग और सरस्वती की प्रतिमा भी स्थापित की थी। शिव पर्वत की चोटी पर भी तीन शिव लिंग की स्थापनाएँ

की थीं।।26

और भीमपुर में, अमोघपुर में दो लिंग स्थापित किये फिर लिंग की दो स्थापनाएँ भी माता के साथ अनिन्दितपुर में की थीं।।27

........लिंगपुर में, शम्भुपुर में, शिवपुर में,............पुर में वककाकेश्वरपुर में श्रीमान् के आश्रमों का निर्माण किया था।।28

उसने पंचलिंगपुर में कृतज्ञरुद्र पर्वत पर जलांगेश्वरपुर में वादित्यपुर में इन दोनों में आश्रमों को बनवाया।।29

श्रीमत् सिद्धेश्वरपुर में शिव के चरणों के पूरब और पश्चिम....... और देवाश्रम देश में भी आश्रमों को बनाया था।।30

श्री चम्पेश्वर धाम में श्री पुण्डरीकाक्ष धाम में श्री पद्मनाभ निलय में भी उसने आश्रमों का निर्माण किया था।।31

उसने लिंगपुर में रुद्राणीधाम में, स्थिरपट्टन में और अन्यत्र भी आश्रमों का निर्माण किया था, पूजा की विधि के लिए और विविध विधान किये थे।।32

उसका अन्तेवासी (वह छात्र जो गुरु समीप रह कर अध्ययन करे) था जो सभी अन्तेवासियों में श्रेष्ठ था, थोड़ा और सार बोलने वाला (वाग्मी) था जो इन प्रशंसित राजाओं का भी उसी के तुल्य आचार्य था।।33

श्री ईशानवर्मन का जो योग्य, हवनकर्ता श्री जयवर्मन का फिर श्री हर्षवर्मन, उसके पुत्र इन्द्र के समान तेज वाले का।।34

बचपन से बुढ़ापे तक जो शैवाचार्य भी था शुद्ध वैष्णव वंश में उत्पन्न जिसने हृषीकेश नाम पाया था।।35

नैश्वासमण्डली दीक्षा को, नैष्ठिक आचार्य तर्पण के विषय में शिवाचार्य नाम से आढ्य जिसने अभिषेक की विधि में नाम पाया था।।36

कठिन व्याकरण पढ़ने वाला, जो बचपन में भी पुनः पुनः अतिशय अध्ययन करता था राजा का पुत्र अवर्ण्य वाचस्पति के समान देवों का भी आदरणीय था।।37

जिसके मुख में सभी ज्ञानों के उत्तर आदि थे, सर्वज्ञता के तुल्य, बुद्धि के लिए अतिथि दान की इच्छा वाले ठहरते थे।।38

छः शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य= अन्य शुभ द्वेष, डाह) के जीतने से धन और धरती पाने वाले जिसके राजेन्द्रवर्मन के श्वेत छाते आदि भोगों से आढ्य सोने का डोला पाया था।।39

अठ्ठासी हजार यज्ञ कराने वाले ऋत्विजों वाले राजाओं के जो अतिशय पूजनीय धौम्य ऋषि जैसे पाण्डवों के यज्ञ के थे वैसे थे।।40

इनके गुरु से स्थापित लिंग की पूजा को पूजित लक्षण वाले ने यथोचित रूप से बढ़ाया था।।41

सभी कहे गये पुण्य देने वाले धर्म कार्य सर्वत्र गुरु द्वारा किये गये उस अतिश्रेष्ठ अन्तेवासी के द्वारा बढ़ी बुद्धि वाले छात्र के द्वारा साथ-साथ किये गये।।42

उसके द्वारा ये दो ब्रह्मा और विष्णु देव स्थापित हुए थे। दक्षिण और उत्तर की ओर गुरु के शासन मानने वाले के द्वारा।।43

उसने उन देवों के विषय में जो धर्म के मूर्त रूप अवस्थित थे रक्षा की इच्छा करता हुआ सज्जनों से वचनामृत कहा था।।44

धर्म चार पैरों वाला पहले था। एक-एक युग में एक-एक पैर के ह्रास होने से चार युगों में अब एक पैर बचा है। कलियुग में राजाओं की तीन प्रकार की शक्तियों से फिर चार पैरों वाला धर्म रक्षित है वह हमेशा रक्षित रहा करे।।45

८५

प्रसत त्रपन रुन अभिलेख

Prasat Trapan Run Inscription

कोंमपोन स्वे प्रान्त में यह मन्दिर स्थित है। यह अभिलेख शिव, विष्णु एवं ब्रह्मा की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। अभिलेख कवीन्द्र पण्डित की वंशावली का वर्णन करता है और उस परिवार के सदस्यों द्वारा बहुत से राजाओं- जयवर्मन द्वितीय, जयवर्मन पंचम तथा जयवीरवर्मन की सेवा की भी चर्चा करता है।

इस अभिलेख में कवीन्द्र पण्डित द्वारा विष्णु के एक मन्दिर को भूमि दान देने का भी वर्णन है। कवीन्द्र पण्डित का पुत्र कवीन्द्र विजय इस मन्दिर और मन्दिर से सम्बन्धित जायदाद का संरक्षक बना।

अभिलेख में कुल 58 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं।[1]

सिद्धि स्वस्ति ओं नमो भगवते वासुदेवाय।

येनाधिष्ठितमव्यक्तमलं सकलसृष्टये।

---

1. *BEFEO*, Vol. XXVII, p.58

पुरुषस् स यदीयाशो वासुदेवन्नमन्तु तम्।।1
यस्य नाभिभवाम्भोजजन्मनाम्भोजजन्मना।
ख्यातं परमकर्तृव्यं स्त्रष्ट्राशेषतनूभृताम्।।2
माहात्म्यमन्यद् यस्यास्तान्नाभिजाम्बुजसम्भवः।
मेरुर्य्यत् पद्मयोन्यादि देवानामादिरालयः।।3
पादाद् यस्य जगद्वन्धात् प्रभवन्ती सुरापगा।
त्रैलोक्यपावनी प्राह महत्त्वं परतोऽधिकम्।।4
वामनस्य त्रिभिर्ल्लोकान् क्रमतो विक्रमक्रमैः।
यस्या ग्राह्यस्वभावत्वं विद्वद्भिरनुमीयते।।5
बहुधापि विरुद्धानां यदीयाकारकर्म्मणाम्।
अर्थवद्विष्णुनाम्नैव श्रद्धेयत्वमुदाहृतम्।।6
अणुम्योऽणुतमोऽव्यक्तं यस् सर्व्वत्र प्रवेशनात्।
अन्तर्न्निवेशयन् सर्व्वं महद्भयोऽपि महत्तमः।।7
साम्यं सर्व्वत्र भूतेषु यस्य संसेव्यसेविनाम्।
अग्न्यादेरिव शक्तिस्तु वाञ्छिताप्त्यनवाप्तिकृत्।।8
पुरुषोत्तमनाम्नैव समस्तांस्त्यजता परान्।
सर्व्वतः स्फुटमाख्यातं परमत्वमकृत्रिमम्।।9
क्रमेण क्रामतो यस्य त्रिलोकीं रविरागतः।
मुहुर्ल्ललाटिकोरःस्थमणि हेमाङ्घ्रि पीठताम्।।10
यत्क्रोध संप्रसत्तिभ्यां रुद्राजौ संबभूवतुः।
नमस्ताद्भवतान्तस्यै विष्णवे प्रभविष्णवे।।11
नमध्वं शूलिनं यस्य त्रिशूलानि विरेजिरे।
युगपत् त्रिपुरज्जेतुर्जयस्तम्भा इव त्रयः।।12
हिरण्यरैतसा तप्तहिरण्य सदृशार्च्चिषे।
हिरण्यगर्भाय नमो हिरण्याक्षारिजन्मने।।13
आसीदावारिधेरुर्व्वी वहन् वेदार्धभूधरैः। (724)
राजा श्री जयवर्म्मेति महेन्द्राद्रिकृतास्पदः।।14
सोमान्वयप्रदीपो यस्सोमस् सज्जनजीवने।
सोमेश्वरे सदा भक्तः सोमसोभ्यो बहुश्श्रिया।।15

जयेन्द्रदासनामाभूद्र अनिन्दितपुरोद्भवः।
जयेन्द्रवल्लभाख्यां यस्तस्य भृत्योऽबहत्पुनः॥16
गोविन्दनाम्नो विप्रस्य वेदवेदाङ्गवेदिनः।
गोविन्दभक्तस्य सुतो यो गोविन्दनिमाकृतः॥17
आत्मदेशे तव्वङ्नाम्नि वलिकर्पूरनाम्नि च।
कुलदेवानरक्षद्र यस् स्वयञ्च समतिष्ठिपत्॥18
जयेन्द्रवल्लभभ्राता वासुदेवो जघन्यजः।
भृत्योऽभवद् यस्तत्सूनो राज्ञश् श्रीजयवर्म्मणः॥19
नृपेन्द्रवल्लभाख्यां यश् श्रीद्धां श्रीजयवर्म्मणः।
ततः प्राप पुनर्भृत्यो बभूव श्रीन्द्रवर्म्मणः॥20
तयोर्भ्राता कनिष्ठो यः प्रद्युम्नश् श्रीन्द्रवर्म्मणः।
भृत्यश् श्रीनरवीराख्यामद्याद् यो भर्तृभक्तितः॥21
श्रीन्द्रश्वरालये लिङ्गं शम्भोरर्धाम्बराष्टभिः। (802)
संस्थाप्य यो ददौ तत्र दासैस् सिद्धिपुरं युतम्॥22
भागिनेयवरस्तेषां यस् सङ्कर्षणनामधृक्।
श्रीन्द्रवर्म्मसुतस्याप्तश् श्रीयशोवर्म्मणोऽभवत्॥23
श्रीयशोवर्म्मणो भृत्यश् स राज्ञोस्तदपत्ययोः।
श्रीहर्षवर्म्मश्रीशानवर्म्मणौरपिचारकः॥24
सङ्कर्षणस्य तस्यापि भागिनेयो बभूव यः।
रविनाथाह्वयो भृत्यश् श्रेष्ठश् श्रीजयवर्म्मणः॥25
यस्ततः प्राप्तसन्मानो भृत्यस् सत्पुत्रयोरपि।
श्रीहर्षवर्म्मभूपाल श्रीमद्राराजेन्द्रवर्म्मणोः॥26
तस्य नप्ता बभूवार्य्यस् सात्वतस् समतस् सताम्।
पञ्चगव्याभिद्यानो यः पञ्चव्याकरणन्तगः॥27
शब्दार्थगमशास्त्राणि काव्यं भारतविस्तरम्।
रामायणञ्च योऽधीत्य शिष्यानप्यध्यजीगपत्॥28
कुलकर्म्मश्रुतिद्रव्यैरून्नतोऽपि स्वभावतः।
विनयाविस्मयाभ्यां यो नीचैराकृतिराबभौ॥29
जात्यन्धः पररन्ध्रेषु क्लीवः परगृहेषु यः।

कलौ चक्रे कृताचारमपि कालानुरूपवित्।।30
वाण्यामृतस्त्रुता यस्य सत्प्रीत्युदधिरेव न।
ववृधे सद्धदशमापि भासेवेन्दोर्हिमाद्रितः।।31
श्रीमद्राजेन्द्रवर्म्माग्रयसूनुर्य्यस् सूर्य्यसन्निभः।
राजा श्रीजयवर्म्मेति व्योमभाग्गष्टिराज्यभाक्।।32
महाविनीतो लक्ष्मीवान् द्विषन्निबुधविद्विषाम्।
अहीनभोगसद्मा यो बेभो विष्णुरिवापरः।।33
धर्म्मज्ञं बलिनं शूरं कृतविद्यं प्रियम्वदम्।
यं प्राप्यैकपतिं पृथ्वी जहास द्रुपदात्मजाम्।।34
कीर्ण्णाङ्सस्य रणे दृप्ताद्विषन्भुक्तैश् शिलीमुखैः।
स्त्रस्ताङ्गनाकचामोदलुब्धैर्व्वा यस्य भीस् सभा।।35
यस्य धूपितनेत्रैव कीर्त्तिर्यज्ञहविर्भुजाम्।
धूमैरभिद्रुता दिक्षु विवेशारिपुराण्यपि।।36
स पञ्चगव्यस्तस्यासीद्राज्ञश् श्रीजयवर्म्मणः।
अभिषेकक्रियाकारी तथाचार्य्यस् सदार्च्चितः।।37
स वैष्णवीभिमामर्च्चां विष्णुभक्तो विधानतः।
महीधरशशिद्वारैः पुरेऽस्मिन् समतिष्ठिपत्।।38
सक्षेत्रकिङ्करङ्ग्रामं सयशुद्रव्यसंयुतम्।
भक्त्या वाह्योपयशर्थ ददौ दानववैरिणे।।39
द्याता महासुतस्तस्य पञ्चगव्यस्य यो यतिः।
शैवसिद्धान्त निष्णातो विधिनातिष्ठिपत्कृती।।40
पितृभक्तया देशे पैतृके स पिनाकिनः।
लिङ्गं विनायकञ्चेमं विधिनातिष्ठिपत्कृती।।41
निश्शेषनम्रावनिपाल मौलि–
मालारजोरुक्षितरुक्मपीठः।
वेदार्धरन्ध्रैर्धरणीन्दधानो (वर्ष 924)
यो भूपतिश् श्रीजयवीरवर्म्मा।।42
दग्धः स्मरश् शीतकलः कलङ्की
कान्तिर्भवेत् कुत्रमदीयसर्गे।

इति स्वसर्गातिशयाभिषात्
कान्त्याधिको यो विदधे विधात्रा।।43
निर्धूतदोषा महतः प्रवृत्ता
विहाय भूभृन्निवहानख्याम्।
गङ्गेय विद्या यमनेकमार्ग्गो
जगाम् भूम्ना गुणरत्नसिन्धुम्।।44
नीलोत्पलश्यामरूयाम सीना-
माधूर्ष्षितानां समदन् द्विषद्भिः।
दृष्टौ दृशां वा हरिणेक्षणाभि-
र्वीर्य्योद्धतो यस् समधीर्ब्बभूव।।45
स्वबन्धुमध्ये पि गतारिसेना
ससाधनाप्यात्म सुहृद्धतापि।
एकेव निश्वासपरा समुग्धा
संस्मृत्य यं कामवशेष योषित्।।46
क्षोभं विद्यायोद्धतवाहिनीनां
जेतासकृतो युधि राजनागान्।
यशोमृतं लोकभुजां समक्ष-
ञ्जहार पक्षीन्द्र इवोरुसत्वः।।47
मत्कीर्त्तने प्येष विनम्रवक्त्रः
प्राक् सायिताया मम वञ्चितायाः।
किञ्जीवितेनेति रुषेव कीर्त्तिः
प्रियापि याता दशदिक्षु यस्य।।48
स पञ्जगणयस्तस्यापि नृपस्याचार्य्यपुङ्गवः।
बभूवातिमतो मन्त्री सदान्तः पुरदर्शनः।।49
कवीन्द्रपण्डिताख्यां स श्रीद्धां विभ्रदनून धीः।
दोलादिविभयैस्तेन सत्कृतः कम्बुभूभृता।।50
पुरस्तादस्य देशस्य क्षेत्रमेतत् कृतावधि।
तस्मिन् मन्त्रिवरे प्रादाद्धाम्नोऽर्थ स महीपतिः।।51
दत्तमेतत् क्षितीशेन क्षेत्रं किलाङ्कितं कृती।

स स्वयं स्थापिते प्रादाद्र भक्त्या कैटभविद्विषि।।52
सौजन्यजन्मभूर्व्विद्वान् कुलीनः कुलनन्दनः।
नारायणाह्वयस्तस्य सूनुस् सूरिगुणाकरः।।53
प्रेमणा प्रेयसि सत्सूनौ तस्मिन् स समकल्पयत्।
सक्षेत्रङ्किरग्रामन्देवतार्च्चेन पालनम्।।54
विविधैः पत्रगैर्लेख्यैर्द्विजशालारमगैश्च सः।
साक्षिभिर्नृपवाक्यैश्च कर्म्मैतत् कृतवान्दृढ़म्।।55
कवीन्द्रविजयाख्यां यश् श्रीमतीं श्रीपतिप्रियः।
वाग्मी नारायणो विद्वानाप्रवान् राजसम्मतः।।56
तेन देवकुलं रक्ष्यं सदासक्षेत्रपाशवम्।
पित्रयञ्चापि कुलं सर्व्वमिति पित्रा प्रकल्पितम्।।57
कर्त्तव्यनाना विद्ययातनानां
शिक्षाञ्चरद्भिर्यम किङ्करौद्येः।
लक्ष्मीकृतस् सोऽस्तु सदा युगान्ताद्
यो लङ्घयेत कल्पितमस्य सर्व्वम्।।58

अर्थ– जिसके द्वारा सकल सृष्टि के लिए अस्पष्ट को पर्याप्त रूप से अधिष्ठित किया गया वह पुरुष है जिसका अंश विष्णु है उसका नमन करो।।1

जिसकी नाभि से उत्पन्न कमल उससे जन्म लिया ब्रह्मा द्वारा ख्यात परम कर्ता का भाव सभी शरीरधारियों की सृष्टि करने वाले ब्रह्मा के द्वारा।।2

जिसकी दूसरी महत्ता है उसको नाभि से उत्पन्न कमल से पैदा हुए ब्रह्मा जी हैं। मेरु पर्वत स्वर्ग का है ब्रह्मा आदि वे दो लोगों का घर है।।3

जिसके पैर से निकली गंगा संसार के बन्धन से छुड़ाने वाली है। तीन लोकों को पवित्र करने वाली है उनने दूसरों से अधिक महत्त्व कहा है।।4

वामन के पराक्रम से चलने से तीन लोकों को तीन पगों (कदमों) से नापना प्रसिद्ध है। जिनका ग्रहण करने लायक स्वभावत्व विद्वानों से अनुमान करने योग्य है।।5

जिसके आकारों और कर्मों को बहुधा विरुद्ध देखने पर भी अर्थ वाले विष्णु नाम से ही श्रद्धेयत्व उदाहृत है।।6

जो अस्पष्ट रूप से अणु होकर अतिशय अणु रूप से सर्वत्र प्रविष्ट है। अन्दर में बैठा हुआ भी महान् से भी अतिशय महान् है।।7

समानता सभी प्राणियों में जिसके सम्यक् सेव्य और सेवा करने वालों के हैं अग्नि आदि के समान शक्ति तो मनोरथ पाने न पाने वाली है।।8

पुरुषोत्तम नाम से ही सभी दूसरों का त्याग से जाता है सबसे साफ कही गयी है वे बनावटी परमता विष्णु में है।।9

जिसके क्रम से चलने से त्रिलोकी में सूर्य आये। बार-बार ललाट हृदय पर स्थित मणि सोना पैर रखने की पीढ़ी है।।10

जिसको क्रोध और सम्यक् प्रसन्नता से रुद्र और ब्रह्मा जन्म लिये थे- उस विष्णु को नमस्कार होवे।।11

जिसके त्रिशूल शोभते हैं उस शिव को नमस्कार करो। एक बार ही त्रिपुर को जीतने वाले के विजय के खम्भे की नाई तीन शूल हुए।।12

हिरण्य रेता से तप्त हिरण्य के समान तेज वाले के लिए हिरण्यगर्भ के लिए हिरण्याक्ष के शत्रु को नमस्कार है।।13

समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का शासन करता हुआ श्री जयवर्मन राजा महेन्द्र पर्वत पर स्थान वाला था।।14

जो चन्द्रकुल का दीपक सज्जन के जीवन में सोम-सा सोमेश्वर शिव में सदा भक्त सोम-सा सुन्दर बहुत लक्ष्मी से युक्त था।।15

अनिन्दितपुर में जन्म लिया हुआ जयेन्द्र दास नाम वाला था और जिसका नौकर जयेन्द्र वल्लभ था।।16

गोविन्द नामक ब्राह्मण का जो वेदों और वेदांगों का ज्ञाता था- वह गोविन्द का भक्त था तथा उसका पुत्र जो गोविन्द निभाकृत नाम से ख्यात था।।17

आत्मदेश में तवङ् नाम के और वलि कर्पूर नाम के स्थान पर जिसने कुल देवों को रखा और स्वयं सम्यक् रूप से देव प्रतिष्ठा की थी।।18

जयेन्द्र वल्लभ का भाई वासुदेव था उसके बेटे राजा श्री जयवर्मन का नौकर था।।19

श्री जयवर्मन से लक्ष्मी से प्रदीप्ति नृपेन्द्र वल्लभ जिसने नाम पाया था वह फिर भी इन्द्रवर्मन का नौकर हुआ।।20

दोनों का छोटा जो भाई प्रद्युम्न श्री इन्द्रवर्मन का नौकर था जिसने स्वामी की भक्ति से श्री नरवीर नाम पाया था।।21

श्री इन्द्रेश्वर के मन्दिर में शिव के लिंग की स्थापना 802 ई. में करके सिद्धिपुर के साथ दासों का दान किया था।।22

उनका भागिनेय संकर्षण नाम का था जिसने श्री इन्द्रवर्मन के पुत्र श्री यशोवर्मन से नाम पाया था।।23

श्री यशोवर्मन का नौकर वह दोनों राजाओं की दो सन्तानों-श्री हर्षवर्मन और श्री ईशानवर्मन दोनों का नौकर था।।24

इस संकर्षण का भी जो भागिनेय रविनाथ नाम का था वह श्री जयवर्मन का बड़ा नौकर था।।25

जो इससे सम्मान पाने वाला नौकर था सज्जन पुत्रों से श्री हर्षवर्मन राजा श्रीमान् राजेन्द्रवर्मन दोनों से।।26

उसका नाती पंचगव्य नाम का जिसने पाँच व्याकरणों के अन्त तक पढ़ा-लिखा था।।27

शब्दशास्त्र, अर्थशास्त्र, आगमशास्त्र, कल्पशास्त्र, काव्य, महाभारत जो विस्तृत है और रामायण जिसने पढ़कर शिष्यों को भी पढ़ाया।।28

वंश, कार्य, गुरु से पाठ सुनना, द्रव्य से उन्नत रहने पर भी स्वभाव से विनय और अविस्मय जो नीचा आकार रखकर सोहता था।।29

दूसरों के दोषों के देखने में जन्म से ही अन्धे के समान आचरण करने वाला, न ध्यान देने वाला दूसरों के घरों की स्त्रियों के विषय में जो नपुंसक सा आचरण करने वाला इस लम्पटन रहने वाला कलियुग में सत्ययुग के आचरण को किया था तथापि वह समय के अनुसार ज्ञान रखने वाला था।।30

जिसकी वाणी रूप अमृत से अच्छी प्रीति का समुद्र बहता है

इतना ही नहीं बर्फ से भीगकर चन्द्र के तेज से सज्जन के हृदय रूप पत्थर भी बढ़ता था।।31

श्रीमान् राजेन्द्रवर्मन के ज्येष्ठ पुत्र सूर्य के समान तेजस्वी राजा श्री जयवर्मन आकाश मार्ग के आठ राज्य का भागी था।।32

महा नम्र लक्ष्मी वाला, शत्रु, देवता, पण्डित दानवों का द्वेषी पूर्ण भोग वाले मकानों से युक्त दूसरे विष्णु के समान सोहता था।।33

जिस धर्म के जानने वाले बलवान, शूरवीर और विद्वान् प्रिय बोलने वाले को पा करके जो एक चक्रवर्ती राजा को पा करके पृथ्वी ने द्रोपदी को हँसा कि पाँच पति वाली वह थी।।34

युद्ध में फैले कन्धे वाले के गर्वी शत्रु द्वारा छोड़े बाणों से गिरी स्त्री के केशों के पकड़ने के हर्ष के लोभ वाले जिसके भय समान हैं।।35

जिसकी कीर्ति यज्ञ की अग्नि के धुएँ से धूपित नेत्रों वाली सी धुओं से भरी सभी दिशाओं में धुएँ शत्रु के पुरों में भी पैठ गये थे।।36

वह पंचगव्य उस श्री जयवर्मन राजा का अभिषेक क्रिया करने वाला था तथा सदा पूजित आचार्य था।।37

उस विष्णु भक्त ने विधान से इस विष्णु सम्बन्धी पूजा को महीधर शशि द्वारों से इस पुर में भली-भाँति स्थापित की थी।।38

खेत, दास, ग्राम, पशु, द्रव्य से युक्त भक्ति से बाहरी उपचार के लिए विष्णु को दान दिया।।39

पंचगव्य का पुत्र कृती शैव दर्शन के सिद्धान्त में निष्णात संन्यासी ने शिवलिंग की विधि से स्थापना की थी।।40

पिता की भक्ति से पिता के देश में उसने शिवलिंग और गणेश की विधि से स्थापना की थी।।41

सभी विनीत राजाओं के मस्तकों के समूहों की धूल से छुए हुए सोने के चरण पीठ वाले शाके 924 में पृथ्वी का राजा श्री जयवीर वर्मन था।।42

दग्ध कामदेव, शीतल कला वाला, कलंक वाला चन्द्र है मेरी सृष्टि में कहाँ ऐसी कान्ति वाला हो ऐसा सोचकर ब्रह्मा ने अधिक कान्तिमान राजा की सृष्टि की थी।।43

धुले दोषों वाली, महान् से प्रवृत्त हुई, राजाओं को वन में छोड़ करके अनेक मार्ग वाली गंगा के समान विद्या जिस राजा के समीप गुण रूप रत्नों बहुत गुण रूप रत्नों वाले राजा रूप समुद्र में मिल गयी जैसे गंगा समुद्र में मिलती है।।44

नीले कमल के समान शोभा वाली तलवारों घूमती हुई शत्रुओं से सम्यक् प्रकार से दृष्टि में या आँखों के मृगाक्षियों के द्वारा समान बुद्धि वाला वीर्य बल से उद्धत जो राजा समान बुद्धि वाला हुआ था अर्थात् शत्रु के तलवार घुमाने पर मृगाक्षी के आँख घुमाने पर बराबर बुद्धि वाला ही रहा था।।45

अपने बन्धुओं के बीच भी गत है अरि की सेना ऐसी, साधन से युक्त रहने पर भी अपने मित्र से पकड़ी सी भी एक के समान निःश्वास लेने में लीन हुई मुग्ध हुई जिसकी याद करके स्त्री कामदेव के वश में हो जाती है।।46

उद्दण्ड सेनाओं का क्षोभ विधान करके राजा रूप गजों की लड़ाई में जीतने वाला लोक के भोगने वाले राजाओं के यश रूप अमृत को सामने में हरण किया बली गरुड़ के समान जिसने।।47

जिसकी कीर्ति प्रिय होने पर दस दिशाओं में चली गयी। कीर्ति ने सोचा कि मेरे कीर्तन में भी यह नीचा मुख करने वाला है पूर्व शापित मेरी वञ्चित है तो जीवन का क्या प्रयोजन? यह क्रोध करके मानो कीर्ति दस दिशाओं में गयी।।48

यह पंचगव्य उस राजा का भी श्रेष्ठ आचार्य था, अतिशय पूज्य मन्त्री था सदा अन्दर रहने वाला था।।49

उस कम्बुज के राजा के द्वारा डोला आदि ऐश्वर्यो से सत्कार पा करके बहुत बुद्धिमान लक्ष्मी से प्रकाशित वह कवीन्द्र पण्डित नाम पाने वाला था।।50

उस राजा ने इस देश के आगे यह खेत सीमा करके उस श्रेष्ठ मन्त्री को धाम के लिए दिया था।।51

प्रयत्नशील राजा ने कील से चिह्न करके यह खेत स्वयं स्थापित विष्णु को भक्ति से दिया था।।52

उसका पुत्र सुजनता रूप जन्मभूमि में उत्पन्न कुलीन वंश को आनन्दित करने वाला विद्वान् नारायण नाम का था जो विद्वानों के गुणों का समुद्र था।।53

प्रेम से अतिशय प्रिय अच्छे पुत्र को उसने वित्त, दास, ग्राम, देवता और उनका पूजन और पालन सब सहित दिया।।54

बहुत प्रकार के पत्रों पर लेखों से द्विजशाला के पत्थरों पर लिखकर उसने गवाहों से, राजा के वाक्यों से यह मजबूत कार्य किया था।।55

श्रीमान् कवीन्द्र विजय नाम को जिसने राजा का प्रिय होकर थोड़ा और सार बोलने वाला, विद्वान् नारायण राजा से सम्मति पाकर प्राप्त किया था।।56

सदा खेत, पशु सहित देव के कुल की रक्षा की जाये उसके द्वारा और पिता के सब कुल की रक्षा की जाये- यह पिता का आदेश था।।57

जो इन सब नियमों का उल्लंघन करे वह हमेशा नाना प्रकार की यातनाओं की शिक्षा का आचरण करता हुआ यम के दासों द्वारा चिह्न किया हुआ युग के अन्त तक यातनाएँ पावे।।58
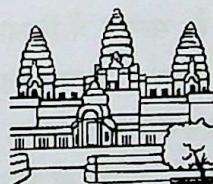
86

प्रसत खन अभिलेख
Prasat Khna Inscription

इस अभिलेख का स्थान म्लू प्री जिला में है। यह अभिलेख संस्कृत एवं ख्मेर दोनों भाषाओं में है। संस्कृत में लिखा अंश प्रायः नष्ट हो गया है केवल तीन पंक्तियाँ बची हुई हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सूर्यवर्मन ने गरुड़ पर बैठे कृष्ण को 963 वर्ष में कुछ दान दिया था।

इस अभिलेख में केवल 1 पद्य है जो नष्ट हो चुका है। अतः छन्द के विषय में भी कोई जानकारी हमें नहीं मिलती है।[1]

(ध्वा)द्धान्तध्वद्रजत प्रतिग्रहवरं रैविप्लुसद........हरम्।
हेमाङ्कञ्च करं सकोशकलशं श्रीसूर्य्यवर्म्मण्यदात्
कृत्वा तद्वचनात् कलेर्द्विजहरे कृष्णे त्रिकोशग्रहैः॥

अर्थ- अन्धकार विनाशक शुभ्र प्रकाशयुक्त चाँदी के श्रेष्ठ भेंट को तथा

1. *BEFEO*, Vol. XXVIII, p.43

बहुत सा सोना भगवान् शिव को तथा स्वर्णाभूषण, कोषयुक्त कलश एवं कर महाराजा श्री सूर्यवर्मन के आदेश से 953 शकाब्द में कलिकाल के दोष (द्विज) हरण करने वाले भगवान् कृष्ण की सेवा में।।

87

प्रसत तकेयो अभिलेख

Prasat Takeo Inscription

अंगकोर थोम के निकट पूर्वी बारे के पश्चिम में यह स्थित है। जिस मन्दिर में यह अभिलेख है उसे हम तीन नामों से जानते हैं– प्रसत ता केयो, प्रसत केयो तथा प्रे केव। यह अभिलेख संस्कृत एवं ख्मेर भाषाओं में है जो क्रमशः क, ख, ग, घ तथा ङ के रूप में पाँच समूहों में विभाजित है। ब्रह्मा के अंश में शिव की प्रार्थना के पश्चात् यह अभिलेख योगीश्वर पण्डित की वंशावली का वर्णन करता है। योगीश्वर पण्डित राजा सूर्यवर्मन के गुरु थे। इसके बाद विष्णु की प्रार्थना तथा सूर्यवर्मन की चर्चा है जिन्होंने 924 में राजगद्दी प्राप्त की।

इस अभिलेख से सम्भ्रान्त कुल के व्यक्तियों से अपील की गयी है वे योगीश्वर पण्डित की शिष्या जनपदा की सुरक्षा दे जो आगे चलकर ब्राह्मण केशव की पत्नी बन गयी। विष्णु के पुजारी होने के चलते उनके पुत्र एवं पौत्रों को बाद में

योगीश्वरपुर नगर दे दिया गया।

ख भाग के संस्कृत की एक पंक्ति में योगीश्वर पण्डित की सफलता के लिए भगवान् शिव की प्रार्थना का वर्णन है।

ग भाग में संस्कृत के तीन श्लोक बुरी तरह से नष्ट हैं। पहला दो केवल क भाग की पुनरावृत्ति है। ये सभी संस्कृत की पंक्तियाँ अपना स्वाभाविक रूप धारण किये हुए हैं।

घ भाग में संस्कृत के तीन श्लोक हैं जो ग भाग से मिलते-जुलते हैं।

ङ भाग के अभिलेख में हिज्जे की काफी गलतियाँ हैं और वे बुरी तरह नष्ट हो चुकी हैं। अभिलेख का उत्कीर्णन भी अच्छी तरह नहीं हो पाया है। फलस्वरूप अर्थ लगाना कठिन प्रतीत होता है। ये शिवाचार्य की वंश परम्परा, उनके धार्मिक स्थापत्यों का वर्णन करते हैं जो जयवर्मन पंचम के द्वारा गुणों एवं अवगुणों के निरीक्षक के रूप में बहाल किये गये। अभिलेख के इस अंश का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि सूर्यवर्मन के शासन-काल में जाति के विभाजन की चर्चा करता है। शिवाचार्य को सभी जातियों का अगुआ समझा गया और उनके वंशज कपिलेश के वंशगत पुजारी बने। हरिपुर की सीमा भी 929वें वर्ष में निर्धारित की गयी।

शिवाचार्य का पौत्र शिव बिन्दु के धार्मिक स्थापत्यों का वर्णन किया गया है। शिव बिन्दु को हेम श्रृंग गिरि का गुणों एवं अवगुणों के निरीक्षक के रूप में नियुक्त किया गया तथा कपिलेश्वर का पुजारी भी बनाया गया। माता की ओर से दूर के एक सम्बन्धी की मौत के पश्चात् जिन्हें क्षितिन्द्रोपकल्प के रूप में जाना जाता है, शिवबिन्दु को राजा सूर्यवर्मन के द्वारा यह उपाधि दी गयी। शिवबिन्दु, राजा के एक महत्त्वपूर्ण मन्त्री के रूप में तरक्की पाकर अपने यश को फैलाया था। बहुत-सी मूर्तियों की स्थापना के अतिरिक्त उन्होंने बहुत से पवित्र कार्य भी किये।

इस अभिलेख में कुल 52 पद्य हैं। क भाग में 18 पद्य सभी शुद्ध हैं। ख भाग में केवल एक पंक्ति शुद्ध है, शेष नष्ट हैं। ग भाग में 3 पद्य हैं जिनमें केवल पद्य संख्या 2 ही शुद्ध है। घ भाग में पद्य संख्या 3 है पर सभी नष्ट हैं। ङ भाग में पद्यों की संख्या 28 हैं, सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।

बार्थ[1] एवं आयमोनियर[2] के द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन किया गया था।

(क) नमश् शिवाय यच्चक्षो ऽनलोऽर्केन्दुर्विधाभवत्।
भुवनत्रय सन्दीपः शत्रुनाशाय पातु नः॥1
विष्णोर्द्विजस्य या पुत्र्यामलकस्थलसन्ततौ।
भूयाद्भूदय लक्ष्मीर्धीस्वामिनी परमेश्वरे॥2
सा नीत्युदयदक्षाढ्या शुभलक्षणसंयुता।
तस्याग्रमहिषी देवी यथा गौरी महेश्वरे॥3
देवामलकविन्यासं भूभृतम् सा मना गता।
चन्द्रमौलिजटायां हि मङ्गलत्वात् सुरापगा॥4
स्वामिन्याः परमेश्वरक्षितिपतेर्य्यां साग्रपौत्री तयो-
र्भूयात् सत्यवतीति भानुवरषिप्रेयोषिदर्हां तयोः।
श्री योगीश्वर पण्डितस् सुत इदं राजेन्द्रयानं शिवे
प्रादाद्धेमगिरेस् समापनकृतो राज्ञो गुरुस्थापकः॥5
श्रीसूर्य्यवर्म्मगुरुरुद्धत वीरवर्म्म-
नाम्ना व्यद्यत्त सह तद्भगिनीसुतेन।
स्तुक्कक्श्रुवा नृपगिरा स नरेन्द्रवर्म्मा-
ख्यातेन हेमगिरिवेश्मनि पञ्चशूलम्॥6
शैलेयञ्चीरचरणं प्रतिमे नन्दिकालयोः।
स एव स्थापयामास सिंहस्य प्रतिमाश्च ताः॥7
चतुर्भुजन्नमामो यो भूग दाशशङ्खचक्रधृत्।
सुरारातिगणाञ्जेता पातु नो दुरिताण्र्णवात्॥8
नमोमेऽस्तु नृपायेह लिप्सुर्य्यश् श्रीवसुन्धरे।
वेशानां रक्षताद्व्यन्तत्रास्तु फलमक्षयम्॥9
आसीच्छ्रीसूर्य्यवर्म्मेति वेदद्विविलराज्य भाक्।
श्रीन्द्रवर्म्मान्वयव्योम भानुज्योतिर्म्महीपतिः॥10
सिद्धिस्वस्ति भवेद्दवश्रीयोगीश्वर पण्डिते।
यस्य प्रशस्ते सुजनान् पाति योऽत्रास्तु सत्फलम्॥11

---

1. *BEFEO*, Vol. V, p.672
2. *Le Cambodge*, Vol. III, p.193

यशोधरपुरे चित्रे चतुर्द्वाराग्रमन्दिरे।
रत्नैरूप्यभाकीर्णे राज्ञोयस् समतोऽनिशम्।।12
स राजगुरुणा होत्रा मन्त्रिमुख्यैस् सभाधिपैः।
विप्रैः प्राञ्जलिभिः स्तोत्रैः स्तुत ईशस् सयावकः।।13
देवयोगीश्वरार्थाय धर्म्मसंरक्षणाय च।
भूमिद्रव्यादिरक्षार्थंश्लोकास्तेऽभिहिताश्च तैः।।14
देवयोगीश्वरस्यैषा निमादि प्रार्थिधार्म्मिकैः।
सती जनपदा शिष्या पाल्यतां सद्भिरुत्तमा।।15
कन्याग्रामात् समायातां सतीञ्जन पदाह्वयाम्।
योऽदिशद् विधिना पत्नी(˙) केशवाख्ये द्विजन्मनि।।16
पूर्व्वदिग्विषये जातं योगीश्वरपुरं पुरम्।
तस्यास् सुते च पौत्रे यो याजके चक्रिणोऽदिशत्।।17
वर्द्धयेयुरिदं पुण्यं ये स्वर्ग्गं प्राप्नुवन्ति ते।
लोपयेयुश्च नरकाना युगान्तात् महाभयान्।।18

(ख) नमश् शिवादिभ्यो गुरूभ्यः देवश्रीयोगीश्वर पण्डित स्योदय-सिद्धिरस्तु।

(ग) देवयोगीश्वरस्योत निमादिप्रार्थिधार्म्मिकैः।
पाल्यन्तान् तपसात्र ताः।।1
वर्द्धयेयुरिदं पुण्यं ये स्वर्ग्ग प्राप्नुवन्ति ते।
लोपयेयुश्च नरकेऽवीच्यादौ प्राप्नुवन्ति ते।।2
..........कल्पितमिदं ये चानुकुर्य्युस् स्थिता
.........तास्ते वर्द्धयेयुस् स्थिरम्।
..............घोरनरके ये पीड़यन्तस् स्थिताः
दण्ड.........तनूग्राः किङ्करैरुद्धतैः।।3

(घ) देवयोगी................................।
मङ्गला..............................आत्र ताः।।1
बर्द्धयेयु..............(स्वर्ग्ग) प्राप्नुवन्ति ते।
लोपयेयु.........................प्राप्नुवन्ति ते।।2
स्वर्गमेव.....................कुर्य्युस् स्थितास्
सार्द्ध सिद्ध..................येयुस् स्थिरम्।

लुम्पेयुर्म्म...................................

दण्ड लौह.................किङ्करैरुद्ध(तैः)।।3

(ङ) नमश् शब्दात्मने तस्मै शिवायाद्येव देहिनाम्।
अर्थसत्यैव सन्दृष्टो यो सन्नार्थेषु सत्यतः।।1
आसीद् कम्बुजराजेन्द्रो वेदद्विनगराज्य भाक्।
यस्मिन् राजभुजीराभा रम्या पूर्व्वेव संपदा।।2
ह्य पवित्राह्वया देवी तस्याग्रमहिषी सती।
देशो हारिपुराभिख्यो यस्यास् सन्तानसन्ततः।।3
ह्यङ्कर्पूराह्वयां तस्या दौहित्रीं कीर्त्तिविश्रुताम्।
रुद्रलोकेनृपो दद्याद्दिव्यन्तरतपस्विने।।4
अभूत् पुत्रवरस्तस्यां परमाचार्य्यनामधृत्।
जलाङ्गे शकपालेशहोता यो मुनिपुङ्गवः।।5
नप्रापि च तयोर्द्धीमान् देवयोर्याज्ञिको मुनिः।
शिवाचार्य्याह्वयो वाग्मी तपस्वी व्रतशीलवान्।।6
हेम शृङ्गगिरौ देवपूजावृद्ध्या अतिष्ठिपत्।
राजाश्रीजयवर्म्मा यं दर्शने गुणदोषयोः।।7
श्रीसूर्य्यवर्म्मणो राज्ये वर्ण्णभागे कृते पि यः।
संपदं प्राप्य सद्भक्त्या वर्ण्णश्रेष्ठत्वसंस्थितः।।8
श्री कपालेशहोतृत्वे स्वकुलं राजशासनात्।
स्थापयामास यः कृत्वा नित्यं विषयवर्जितम्।।9
याचिता यः पुनः क्षत्रं देशं ह्यरिपुराह्वयम्।
करोति सावद्यिं रुद्याह्विविलेन समन्ततः।।10
प्राच्यामीश्वरभेदान्ता याम्यामालेञ्जलालयात्।
प्रतीच्यामद्रिमाभूमिराचन्द्राय( ) तेथोत्तरे।।11
प्रताञ् हलोज् श्रीनरेन्द्राणीवल्लभान्तं नृपाज्ञया।
विश्रुतन्नाम यस्यास्ति सोवधिं समतिष्ठिपत्।।12
चिराय राजाधिपराज कुर्व्वन्तपाङ्सिशीतव्रतधारणोऽहम्।
विद्यासमावर्त्तनकृत् सविद्य युधिष्ठिरम्शूलधरस्यलिङ्गम्।।13
श्री सूर्य्यवर्म्मेश्वरपादपद्मं

धात्रि(त्री?) सु भक्तिश् शिरसा समूर्त्तिः।
.........तुर्न्निमा(ं) संस्थितभिस् सहैव
देवीभिरित्याभिरतिष्ठिपन्ताम्।।14
शिवगुणमणिमन्यं प्राप्तकामोऽवनीन्द्रस्
सुरपतिमहिमानं वापि भूमीश्वरत्वम्।
चिरभवतु स धर्म्मं ब्रह्मचर्य्याधिकारं
सकलकुललहितं मे श्री कपालेश्वराङ्घ्रौ।।15
तन्नप्रापि च सत्सूरिभाग्यभाग् भारतीरतः।
धीरो धामवता मान्यश् शिवविन्दरितीरितः।।16
श्रीकपालेश्वरं होता शास्ता यश् शङ्सितव्रतान्।
सन्नायायानल सन्तप्ता न्यायेन्धनगणो धिया।।17
श्री क्षितीन्द्रोपकल्पाख्ये मातृमातुलमातुले।
मृते तन्नाम तद् यस्मै दत्तं श्रीसूर्य्यवर्म्मणा।।18
अहिपत्राङ्कितां दोला लब्ध्वा यस्तदनुग्रहात्।
हेम श्रृंग गिरावाप दर्श्शनं गुणदोषयोः।।19
ततो राजमहामात्यो यस् सन्तानकुलप्रभुं।
ईश्वरार्च्चामुमार्च्चाञ्च मक्प्रिग्ग्रामे प्रतिष्ठिपत्।।20
भद्रेश्वराश्रमं कृत्वा गौरीशाश्रमभप्यलम्।
भद्रेश्वरतटाकाख्यं श्रीतटाकञ्चखान यः।।21
सरिद्भङ्गं महागाढ़मायतन्निर्भयं भयात्।
अध्वगानां सुखायैव यश्च कारांम्बुद्येस् समम्।।22
शास्त्रसन्दर्शनाभ्यासाद्वयतारीद् रामणीयकम्।
पुस्तकं यो विमानार्थं श्रीभद्रेशालयेश्वरे।।23
यमनियमयतात्मा सम्यगाराद्धितागिन-
र्निहतदुरितवृन्दोऽहर्निशं शम्भुभक्तिः।
मुनिवर समवृत्तिर्य्यो(ग) योगोपयोगात्
सकलकुलहितार्थं स व्यद्याद् राजसेवाम्।।24
मुनिगुणगणवन्द्यो यो(ग) योग्यस् सयत्नैस्-
सति भवति विद्यात्रा निर्म्मिते नाम यस्मिन्।

कृतसकलकलायस् संहतिर्लोललक्ष्मी-
व्यसति यदचलाशं शम्भुभक्तिस् सुशुभ्रा।।25
पद्मासने स्फाटिकमीश लिङ्गं
यस् स्थापयामास यथाविधानम्।
विघ्नेशचण्डीश्वरनन्दि कालान्
पुनर्यथा स्थानमतिष्ठिपत्।।26
सद्रत्नहेमनवपात्रमनेक रत्न-
राजद्धिरण्यरणमर्द्दन कण्ठिके च।
यश् श्रीकपालकटकस्थ शिवे स्नवाना-
माद्यारणन् दृढ़तमञ्च मुदा व्यतारीत।।27
विधिवदधिककान्तेऽतिष्ठिपत् पद्मपीठे
शिवशुभमणिलिङ्गञ्चण्डि विघ्नेश्वरौच।
य उपचरणपात्रं यद्धलानद्युमेन्द्रे
पुनरदित स एष श्रोक्षितीन्द्रोपकल्पः।।28

अर्थ-

(क) शिव को नमस्कार है जो त्रिनेत्र हैं अग्नि, सूर्य और चन्द्र के प्रकाश हैं। तीन भुवनों के प्रकाशक हैं। वे शत्रु के नाश के लिए हमलोगों की रक्षा करें।।1

विष्णु के द्विज, चन्द्र, पक्षी, त्रिवर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जो पुत्र यामलक स्थल सन्तति में हृदय लक्ष्मी की छवि होने परमेश्वर की स्वामिनी हैं।।2

वह नीति के उदय में दक्ष और आढ्य शुभ लक्षणों से संयुक्त उसकी पटरानी देवी जैसी श्री महेश्वर जी की गौरी जी हैं।।3

देव रूप आँवले का विन्यास राजा की वह पूजनीया गयी क्योंकि शिवजी की जटा से मंगल के लिए गंगा जी हैं।।4

परमेश्वर राजा की स्वामिनी की जो प्रथमा पौत्री उन दोनों में है। सत्यवती इस मानुवर ब्राह्मण की स्त्री के योग्य दोनों में श्री योगीश्वर पण्डित पुत्र यह राजेन्द्रयान शिव को दिया हेमगिरि के समापन किया हुआ राजा के गुरु स्थापक हैं।।5

श्री सूर्यवर्मन के गुरु उद्धत वीरवर्मन नाम से ख्यात उसके भांजे के साथ स्तुक्कक् सू से राजा के आदेश से वह नरेन्द्रवर्मन द्वारा हेमगिरि भवन में पाँचशूल को विधिपूर्वक रख सका।।6

शिला की साड़ी और चरण दो प्रतिमाएँ नन्दी की ओकाल की और सिंह की प्रतिमा इन तीनों प्रतिमाओं की स्थापनाएँ उसने कीं।।7

चतुर्भुज को नमस्कार करते हैं जो पृथ्वी, गदा, शंख, चक्रधारी हैं। राक्षस समूहों के जो जीतने वाले हैं। हमलोगों की पाप रूप समुद्र से रक्षा करें।।8

यहाँ राजा को मेरा नमस्कार है जो श्री वसुन्धरा=विष्णु पृथ्वी में लाभ की इच्छा करता है। वेशों की रक्षा करें, द्रव्य की रक्षा करें उसमें नहीं क्षीण होने वाला फल मिले।।9

श्री सूर्यवर्मन वेद द्विबिल राज्य का भागी था। श्री इन्द्रवर्मन के वंश रूप आकाश के सूर्य की ज्योति राजा था।।10

श्री योगीश्वर पण्डित के विषय में सिद्धि-सफलता स्वस्ति=कल्याण होवे जिसके प्रसिद्ध होने पर जो सज्जनों को पालता है। यहाँ अच्छा फल होवे।।11

चित्र विचित्र यशोधरपुर में जिसमें चार द्वार हैं आगे मन्दिर के रत्नों से रुपयों से या चाँदी से ढका है हमेशा राजा से जो सम्मत है।।12

वह राजगुरु से होता से, मुख्य मन्त्रियों से सभापतियों से ब्राह्मणों से अंजलि तोड़ने वाले से स्तोत्रों से अग्नि सहित शिव की स्तुति की जाती है।।13

देव और योगीश्वर के लिए धर्म के संरक्षण के लिए भूमि, द्रव्य आदि की रक्षा के लिए उनके द्वारा वे श्लोक कहे गये हैं।।14

देव योगीश्वर की यह निभा आदि प्रार्थी धार्मिकों द्वारा सती जनपदा शिष्या उत्तमा सज्जनों द्वारा पाली जाये।।15

कन्या ग्राम से लायी हुई सतीजनपदा नाम की विधि से जिसने आदेश दिया पत्नी को केशव ब्राह्मण के विषय में कि उसकी पत्नी होवे।।16

पूर्व दिशा में योगीश्वरपुर है उसमें पुत्र पौत्र जो यज्ञ करने वाले

के होवे विष्णु के हों ऐसा आदेश दिया।।17

जो इस पुण्य को बढ़ावें वे स्वर्ण पावें जो लुप्त करें युग के अन्त तक महाभयानक नरकों में जायें।।18

(ख) शिव आदि गुरुओं को नमस्कार है देव श्री योगीश्वर पण्डित का उदय हो- उनकी सिद्धि हो।।

(ग) देव योगीश्वर की निभा आदि प्रार्थी धार्मिकों द्वारा............पाली जायें तब से यहाँ वे स्त्रियाँ।।1

जो इसे पाले बढ़ावें इस पुण्य को वे स्वर्ग पावें, जो लुप्त करें वे अवीथि आदि नरक में जायें।।2

...........इस कल्पित की जो नकल करें यहाँ स्थित रह करके।.... ......वे (स्त्रियाँ) बढ़ावें स्थिर करें। ....भयंकर नरक में जो पीड़ित करने वाले हैं वे स्थित हों। दण्ड.......उद्दण्ड दासों द्वारा..........।।3

(घ) देवयोगी.............। मंगला...........यहाँ वे (स्त्रियाँ)।।1

बढ़ावें............वे स्वर्ग पावें। लुप्त करें.................पावें वे।।2

स्वर्ग ही को.............करें ठहरे हुए।

साथ.........स्थिर

लुप्त करें..............

दण्ड लोहे के..............उद्दण्ड दासों द्वारा।।3

(ङ) शब्द है आत्मा जिसकी ऐसे शिव को नमस्कार है। देहियों के जो आदि हैं- सत्य अर्थ में जो देखे गये हैं सत्य से जो रहकर भी अर्थों में न देखे जाते हैं।।1

कम्बुज के राजाधिराज एक सौ चौबीस राज्य के भागी थे जिसमें राजभुजी रामा रम्या पूर्व की भाँति सम्पत्ति से युक्त थी।।2

ह्यङ् पवित्रा नाम की देवी उसकी पटरानी सती थी देश हारिपुर नाम से ख्यात जिसकी सन्तान हमेशा रही।।3

ह्यङ्कर्पूरा नाम की इसकी पुत्री की पुत्री-नातिन जिसकी कीर्ति फैली थी उसे रुद्रलोक के राजा ने दिव्यन्तर तपस्वी को दे दिया।।4

उसमें श्रेष्ठ पुत्र परमाचार्य नाम का हुआ जलांगेश, कपालेश का हवन करने वाला मुनिश्रेष्ठ जो था।।5

दोनों देवों का नाती भी बुद्धिमान यज्ञ कराने वाला, मुनि शिवाचार्य नामक वाग्मी- सार और थोड़ा बोलने वाला तपस्वी और शीलवान था।।6

हेमश्रृंग पर्वत पर देवपूजा की वृद्धि के लिए देवस्थापना की थी जिसके गुण और दोष के दर्शन के लिए श्री जयवर्मन था।।7

श्री सूर्यवर्मन के राज्य में वर्ण विभाग करने पर भी जो सम्पत्ति पाकर अच्छी भक्ति से श्रेष्ठ वर्णता में सम्यक् रूप से स्थित हुआ था।।8

श्री कपालेश के हवन कार्य में राजा के आदेश से अपने वंश को नित्य विषयों से वर्जित करके स्थापित किया।।9

याचने पर जो पुनः क्षत्र देश द्वार पर दो पुर सीमा सहित छिद्र से सभी ओर से करता है।।10

पूरब में श्रीशवरभेद अन्तवाली दक्षिण में लेज्जलालय से पश्चिम में पहाड़ की भूमि से चन्द्र तक उत्तर में।।11

म्रताज श्लोज् श्री नरेन्द्राणी वल्लभ के अन्त तक राजा की आज्ञा से जिसका नाम प्रसिद्ध है वह सीमा अधिष्ठित की गयी थी।।12

चिर काल तक राजाधिराज तपों को करता हुआ शीलव्रत धारण करता हुआ मैं विद्या का समावर्तन करने वाला विधिपूर्वक युद्ध में स्थिर शिवलिंग को स्थापित करने वाला हूँ।।13

श्री सूर्यवर्मेश्वर चरण लिंग को धारण करने वाली सुन्दर भक्ति सिर से मूर्ति सहित.....निभा सांस्थितों के साथ ही देवियों इत्यादि से युक्त स्थापनाएँ कीजिए।।14

शिव के गुण रूप मणि दूसरी पाने की इच्छा वाले राजा इन्द्र की महानता अथवा पृथ्वी के स्वामित्व को चिर काल तक रक्षक रहे वह धर्म वाले ब्रह्मचर्य के अधिकार को सभी वंशों के साथ मेरे श्री कपालेश्वर के चरणों को पाले।।15

और उसका नाती भी उसके पाण्डित्य के भाग्य का भागी सरस्वती में लीन धीर धाम वालों से माननीय शिवबिन्दु नाम से ख्यात था।।16

श्री कपालेश्वर का हवन करने वाला शासन करने वाला जो

व्रतियों का था अच्छे न्याय रूप अग्नि से सन्तप्त न्याय रूप लकड़ी के समूह बुद्धि से था।।17

श्री क्षितीन्द्रोपकल्प नाम वाले माता के मामा के मामा के मरने पर उसका नाम वह जिसे दिया गया श्री सूर्यवर्मन द्वारा।।18

अहिपत्र से चिह्नित डोला को पाकर उसकी कृपा से जिसने हेम शृंगपुर पाया गुण दोष के दर्शन को।।19

तब राजा के महामन्त्री जिसने सन्तान कुल प्रभु को ईश्वर की अर्या को उमा की अर्या को मक् पिक् ग्राम में प्रतिष्ठापित की।।20

भद्रेश्वराश्रम बनाकर पर्याप्त रूप से गौरीश्वराश्रम को बनाया था। भद्रेश्वर तड़ाग नाम से ख्यात तड़ाग को और श्री तड़ाग को जिसने खुदवाया था।।21

सरिद्भंग जो बहुत गहरा और लम्बा चौड़ा भय से निर्भय राहगीरों के सुख के लिए ही जिसने समुद्र के समान खुदवाया था या बनाया था या किया था।।22

शास्त्रों के भली-भाँति देखने और अभ्यास से रमणीय रूप से वितरण किया था पुस्तक को जो विमान के लिए श्री भद्रेशालय घर मन्दिर में ऐसा हुआ।।23

संयम नियम से संयमी आत्मा वाला भली-भाँति अग्नि की आराधना करने वाला पाप को नष्ट कर चुकने वाला हमेशा शिव भक्ति करने वाला श्रेष्ठ मुनि से जीविका वाला जो योग उपयोग से सभी वंशों के हित के लिए उसने राजा की सेवा की थी।।24

मुनि के गुणों के समूह के बन्धन रखने वाला जो योग्य यत्न सहित विधाता से निर्मित जिसके विषय में सभी कलाओं के ज्ञान करने वाला जो चंचला लक्ष्मी को अचल करने की आशा से शिव भक्ति सुन्दर उज्ज्वल रूप करता था।।25

कमल के आसन पर स्फटिक निर्मित शिवलिंग विधानपूर्वक जिसने स्थापित किया था विघ्नेश गणेश, चण्डीश्वर, नन्दी, काल सभी की प्रतिमाओं को फिर जिसका जैसा स्थान होना चाहिए उन स्थानों पर उन्हें स्थापित किया था।।26

अच्छे रत्न सोना, नये पत्र, सोने के नये पत्र, अनेक रत्न सोहते, सोने के नये पत्र रणमद्रन और कण्ठिका जो श्री कपाल कटक में स्थित शिव को स्नान कराता हुआ अभिषेक के साथ सभी भावों से धारण करता हुआ अतिशय मजबूत रूप से हर्ष से जिसने वितरण किया था।।27

विधि से अधिक सुन्दर कमल पीठ पर शिव के शुभ मणि लिंग को चण्डी और विघ्नेश्वर को भी जिसने उपरण पात्र को जो हला नदी और उमा। इन्द्र उसने यह श्री क्षितीन्द्रोपकल्प नाम से ख्यात ने फिर दिया।।28

८८

प्रह खन अभिलेख

Prah Khan Inscription

प्रह खन का बड़ा मन्दिर कौमपोन स्वे प्रान्त में है। दूसरी तथा तीसरी चहारदीवारी के भीतर एक दूसरी श्रेणी के मन्दिर के दरवाजे पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। इस अभिलेख के प्रारम्भ में शिव एवं बुद्ध की प्रार्थना की गयी है। अभिलेख का शेष भाग सूर्यवर्मन की प्रशस्ति एवं उनकी भाष्य, काव्य, दर्शनशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में योग्यता की चर्चा करता है। उनके द्वारा निर्मित इस मन्दिर का भी वर्णन इसमें है।

इस अभिलेख का ऐतिहासिक महत्त्व इस बात से सिद्ध होता है कि यह उनके राजगद्दी पर एक राजा को हराकर आने की बात का जिक्र करता है। वह राजा दूसरे कई व्यक्तियों के साथ युद्ध में शामिल हुआ था।

इस अभिलेख में 9 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं।[1]

श्रीमत्पादाग्रलीलावनमितधरणीक्षोभ संक्षोभिताष्ठं

---

1. *BEFEO*, Vol. V, p.672

भ्राम्यत्क्रन्दत्सुरेन्द्रं भुजबल पवनैस् संस्खलत्सद्विमानैः।
स्वाङ्गैस् स्वल्पीकृताशं नवरसरुचिभिर्विस्फुरद्रश्मिमाल्यै-
नटियं ब्रह्मादिसेव्यं सुखयतु दयितानन्द्रन चन्द्रमौलेः।।1
नमो बुद्धाय सर्व्वज्ञशब्दो यत्रैव सार्थकः।
तस्यैव हि वचस् सत्यं प्रमाणेन निरूपितम्।।2
तदुक्तौ पारमीतन्त्रतथ्यौ तदतयोगिनः।
प्रयक्षरञ्जनिजज्ञानं गुरुपादयुगन्नमे।।3
श्रीद्धश् श्रीसूर्य्यवर्म्मा सीच्चतुर्भुज विलासकः।
यस् सूर्य्यवंशजो राज्ये चतुर्भुज विलासकः।।4
स्मरोऽनङ्गश् शशाङ्कोपि शशीति निरवधक-
मसृजद्यन्निवदं कर्म्म कान्ति सर्ग्गावद्यीच्छया।।5
भाष्यादिचरणा काव्यपाणिष् षड्दर्शनेन्द्रिया।
यन्मतिर्द्धर्म्म शास्त्रादि मस्तकाजङ्गमायता।।6
एतावतानुमेयं यद्वीर्य्य यद्रूढ़धीर्मुनिः।
रणस्थौ राजसंकीर्णाद्राज्ञो राज्यं जहार यः।।7
कालदोषानलाविष्टा यस्य सेकाम्बुनिर्ग्गमे।
तद्विनाशात् क्षणं लोकाः सुखायन्ते स्म सर्व्वथा।।8
युगहानेरयन्धर्म्मः पदहीनो जराकृशः।
यन्नीतिरसमासाद्य सत्पदस् स्म युवा यः यते।।9

अर्थ- जिनके परम पूज्य चरणों के अग्र भाग के विनोद से धरती झुक गयी तथा झुकी हुई धरती के क्षोभ से दिग्पाल संत्रस्त हो गये, चक्कर खिलाये जाते हुए रोते हुए देवराज इन्द्र जिसके भुजबल के आघात से अपने अच्छे विमान से नीचे गिर पड़े, जिन्होंने अपने विशाल शरीर से (शरीर के फैलाव से) दिशाओं को कम कर दिया तथा नौ रसों को प्रस्फुटित करने वाले नृत्य में संलग्न, ब्रह्मादि देवों से सेवित चन्द्रमौलि भगवान् शिव की प्रिया पार्वती के पुत्र श्रीमान् गणेश जी हमें सुखी करें।।1

सर्वज्ञ शब्द जिनके साथ सार्थक होता है उन भगवान् बुद्ध को नमस्कार है। उन्हीं का वचन प्रमाण के साथ अच्छी तरह निरूपित किया

जाता है।।2

उन्हीं भगवान् बुद्ध के कहे दोनों पारमीतन्त्रों में निष्णात योगी के ज्ञान को जो पार्वती से उत्पन्न हुआ है तथा गुरु चरणों में नमस्कार है।।3

भगवान् विष्णु के समान आनन्दोपभोग करने वाले सम्पदाओं से दीप्त महाराज श्री सूर्यवर्मन थे जो सूर्यवंशीय राजाओं के चारों दिशाओं में फैले राज्य का शासन किया।।4

चरम सौन्दर्य सागर की रचना करने की इच्छा रखने वाले ब्रह्मा ने काम को अनंग तथा चन्द्रमा को शशलांछित देखकर (उन्हें कम मानकर) बाद में इस राजा की रचना की।।5

भाग्यादि जिसके चरण हैं, काव्य हाथ हैं, षड्दर्शन छः इन्द्रियाँ हैं, धर्म जिसकी बुद्धि है तथा शास्त्रादि जंगम एवं आयतामस्तका हैं (विस्तृत बुद्धि हैं)।।6

उसके बल और मेधा का इसी से अनुमान किया जाये कि उस राजा ने रणभूमि में स्थित राजाओं के जमघट में से राजाओं के राज्य का हरण कर लिया था।।7

जिसके राज्याभिषेक होते ही कलिकाल के दोष आग में समा गये (नष्ट हो गये) तथा इसके नष्ट होते ही प्रजा जन सर्वथा सुखी हो गये थे।।8

कलिकाल के कारण धर्म की हानि होकर धर्मपादहीन, वृद्ध तथा दुर्बल सा हुआ था परन्तु जिसके सत् राजनीति से सत्पद को पाकर धर्म युवा जैसा हो गया था- वह राजा सूर्यवर्मन था।।9

८९
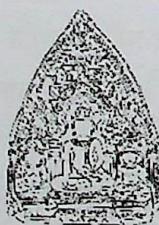
स्डोक काक थोम खड़े पत्थर अभिलेख

Sdok Kak Thom Stele Inscription

सि सोफोन से उत्तर-पश्चिम 15 मील की दूरी पर यह मन्दिर स्थित है। यहाँ से प्राप्त अभिलेख संस्कृत और ख्मेर भाषाओं में है।

यह अभिलेख 250 वर्षों तक एक पुजारी के परिवार द्वारा धार्मिक स्थापत्यों की चर्चा तिथि के साथ करता है। इस परिवार द्वारा भिन्न-भिन्न राजाओं (जयवर्मन द्वितीय से उदयादित्यवर्मन द्वितीय तक) की सेवा का विवरण इस अभिलेख में है। कम्बोडिया से प्राप्त अबतक के सभी अभिलेखों में यह सबसे महत्त्वपूर्ण अभिलेख माना जाता है।

इस अभिलेख में कुल पद्य की संख्या 130 है जिनमें पद्य संख्या 89 से 92, 94, 101, 102, 105 एवं 108 टूटने के कारण अपठनीय हैं। शेष सभी पद्य शुद्ध हैं।

फिनौट[1] एवं आयमोनियर[2] के द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन किया गया है।

नमः शिवायास्तु यदात्मभावोऽन्तर्व्यापिना सूक्ष्मजीवेनतन्वा(:)।
वाण्या विना प्राणभृतान्नितान्तमाख्यायते चेष्टयतेन्द्रियाणि।।1
विश्वं शिवः पातु हिमांशुभानुकृशानुनेत्र त्रितयेन यस्य।
व्यनक्ति साक्षित्वमनावृतात्मतत्वार्थ दृष्टौ परितोऽवदातम्।।2
वेद्याः समव्याद् भवतोऽमृताढ्यं कमण्डलुं स्फाटिकमिन्दुकान्तम्।
लोकेषु कारुण्य सुधापयोधेर्द्धत्तेऽधिकं बीजमिवादराद्यः।।3
लक्ष्मीपतिर्व्वोऽवतु यस्य लक्ष्मीर्वक्षस्स्थिता कौस्तुभभूषणाय।
स्निह्यामि साहं कठिनस्वभावेष्वप्याश्रितेष्वत्र सेदतिनूनम्।।4
आसीदशेषावनिभृद्धाङिघ्रर्जगद्भदम्भोजविबोधवृत्तः।
ध्वान्तन्निहन्ता वसुधाधिराजो द्याम्नोदयादित्य इति प्रतीतः।।5
सृष्टो मया रुचिविशेष विवेकभाजा यातो हराक्षिदहनेन्धनतां मनोजः।
इत्यात्मभूर्य्यमुपपाद्य सुधामयीभिर्म्मन्ये स्मरे रुचिमिरीश्वरतान्निनाय।।6
काहं हिमाद्रितनयेव शरीरयष्टेरर्द्ध मनोभवाहरस्य परिष्वजामि।
इत्युन्मना इवा मनोरथरङ्गभङ्गमालिङ्गतेस्म परितः किलयस्य लक्ष्मीः।।7
पद्मासनस्य चतुरास्य श्रुतार्थ सामादिमण्डितमतेर्भुवनोदयाय।
भारत्यनन्यगमना वदने नु यस्य वेद्योधिया द्युतिमतीं वसतिंव्यधत्त।।8
गुणेषु निष्णातधियो नु यस्य शिल्पादिषु प्रीतमना महत्त्वम्।
संख्यातुकामो जपनच्छलेन स्त्रष्टाक्षमालाभधुनेनापि धत्ते।।9
यो न्याययोगद्विषणो विषवत्परेषां दारान् विरागमतिरास निरीक्षमाणः।
केनापि नित्य सुरतिं स्म करोति कीर्त्तिश्रद्धादयाद्युतिषु धर्म्मविलासिनीषु।।10
या याः समाश्रितवती समुदीर्ण्णदुःखा खिन्ना विवेकिमति(श्) शोच्यवती प्रपेदे।
योऽधत्त मन्दरुचिभूधरशक्तिभिस्तां श्रोणीं सुखे महति ताभिर तुल्यवृत्या।।11
यत्कीर्त्ति मन्दार तरुः प्रथीयान् रूढस्त्रिलोक्यां स्तुति पुष्पकीर्ण्णः।
हिरण्यगर्भाण्डभिदाभियेव जगद्भदन्तर्व्विनि विष्टशाखः।।12
शिष्यान् यथा चेष्टयितोपदेष्टा यथात्मजान् वा जनकोऽपि यत्नात्।
नयेन संरक्षण पोषणाभ्यां तथा प्रजा यः स्वमवेक्ष्य धर्म्मम्।।13
भिन्नारिराजरुधिरारूणितं बभार खड्गं रणे स्फुरदुदीर्ण्णविकीर्ण्णभासम्।

1. *BEFEO*, Vol. XV, p.53; 2. Le Cambodge, Vol. II, p.250

यो मूर्द्धजग्रहबलादिव जातजोषमुल्को शकोकनदमाहृतमाजिलक्ष्म्याः।।14
सन्धुक्षितै रिपुसमाज समित्समृद्धया युद्धाध्वरे भुजबलानिलजृम्मणेन्।
तेजोऽनलव्यतिकरैर्द्दरिणच्छलेन तप्ता नु यस्य विद्युविम्ब्मुपाश्रितोर्व्वी।।15
यस्याङि्घ्र पङ्कजयुगं प्रणयिप्रियत्वं प्रख्यापयन्न रवमणिप्रतिबिम्बतानाम्।
वृन्दानि नम्रशिरसामवनी श्वराणां स्वाङ्गेन्यवेशयदुपासिदयालुमन्ये।।16
एतावता सिद्धिरनन्यसाध्या यस्यानुमेयाद्भुतधामभूम्नः।
यत्सप्रतन्तुर्व्वितततो बबन्ध लेखर्षभादीन निशन्ध्रुवासान्।।17
निर्व्वन्धवद्धाध्वरधूमकेतोर्धूमोद्ग मैर्ग्रस्तुवपुर्नु विष्णुः।
यस्यानिशं स्वं पदमाविशद्भिरानील भावंभजतेऽधुनापि।।18
दृप्ताद्विषद्भयः शतशोऽप्यभीतिं भीत्या न तेभ्योऽदितयोदवीयः।
केनापि नेदीय उपासिनः षट् क्षोदी यसोऽनीनशदेव शत्रून्।।19
न्यद्रास्यदम्भोरूहदृक समुद्रे स्वैरं कथं रक्षकृतक्षणश्चेत्।
अपालयिष्यत् क्षपितक्षतान् यो न मानवान्मानवनीतिसारैः।।20
कलाभिराह्लादितमण्डलो यः करं प्रदिम्नान्वित मादधानः।
नेता विबृद्धिं कुमुदं नितान्त रम्यस् स्तुतो राजगुणेनयुक्तम्।।21

शिशिरयति नितान्तं यद्यशोवारिराशौ
कलिदहन सदार्च्चिष्प्लोष बुद्धेयव लोकान्।
प्रशमित निज तेजः शङ्कया कालवह्निः
स्थगित तनुरद्यस्तादण्ड खण्डे विधातुः।।22

तस्यास देवादिजयेन्द्रवर्म्म-
नामादधानः किल यो यशस्वी।
गुरूर्गरीयान् उदितोदितेऽभृद्
द्वियोदितोऽनिन्दितवंशवर्य्ये।।23

यन्मातृ सन्तान परम्परा प्राक्
सूर्य्यादि संपीतकला कलापा।
अक्षीणभावा भुवनोदयाय
प्रादुर्ब्बभूवेन्दुमद्यो विधातुम्।।24

जयवर्म्ममहीभृतो महेन्द्रा-
वनिभृन्मूर्द्ध कृतास्पदस्य शास्ता।

कविरार्य्यवराङ्ग वन्दिताङ्घ्रिः
शिवकैवल्य इति प्रतीतिरासीत्।।25
हिरण्यदामद्विज पुङ्गवोऽग्रय धी-
रिवाब्जयोनिः करुणार्द्र आगतः।
अनन्यलब्धां खुल सिद्धिमादरात्
प्रकाशयामास महीभृतं प्रति।।26
स भूधरेन्द्रानुमतोऽग्रजन्मा
स साधनां सिद्धिमदिक्षदस्मै।
होत्रे हितैकान्त मनः प्रसत्तिं
संबिभ्रते धामविवृंद्वणाय।।27
शास्त्रं शिरश्छेद विनाशिखाख्यं
सम्मोहनामापि नयोत्तराख्यम्।
तत्तुम्बुरोर्वक्त्र चतुष्कमस्य
सिद्धयेव विप्रः समदर्शयत् सः।।28
द्विजः समुद्धृत्य स शास्त्रसारं
रहस्यकौशल्यधिया सयत्नः।
सिद्धिर्व्वहन्ती किल देवराजा-
भिख्यां विद्रघ्रे भुवनर्द्धिवृद्धैय।।29
स भूधरेन्द्रः सहविप्रवर्य्य-
स्तस्मिन् विद्यौ धामनिधानहेतौ।
वीतान्तरायं भुवनोदयाय
नियोजयामास मुनी श्वरन्तम्।।30
तन्मातृवशे यतयः स्त्रियो वा
जाता विद्या विक्रमयुक्तभावाः।
तद्याजकाः स्युर्न कथञ्चिदन्य
इति क्षितीन्द्रद्विजकल्पनासीत्।।31
भवपुरधरणीन्द्र दत्त भूम्यां
स विषय इन्द्रपुरे पुरा स्ववंशे।
विनिहितमद्यिकर्द्धि भद्रयोगि-

प्रकृतपुरेऽभिररक्ष शर्व्वलिङ्गम्।।32
पूर्व्वदिग्विषये क्षोणीं काञ्चिद् प्रार्थ्यमहीभृतम्।
स कुप्याख्यं पुरन्तत्र कृत्वा तत्र कुलन्यद्यात्।।33
अमरेन्द्रपुराभ्यर्ण्णभूमिं प्रार्थ्य तमीश्वरम्।
भवालयाख्ये स पुरे कृते लिङ्गमतिष्ठिपत्।।34
जयवर्म्मावनीन्द्रस्य तत्सूनोः सूक्ष्मविन्दुकः।
पुरोद्या शिवकैवल्यस्वस्त्रीर्योऽभूद् बुधाग्रयधीः।।35
क्षोणान्द्रिं शिवकैवल्यानुजन्मा तमयाचत।
रुद्राचार्य्योऽद्रिपादेऽद्रिं विषये कञ्चिदत्र सः।।36
ग्रामं प्रकृत्य संस्थाप्य विधिना लिङ्गमैश्वरम्।
विदध्रे भद्रगिर्य्याख्यां तस्याद्रेः स मुनीश्वरः।।37
श्रीन्द्रवर्म्मावनीन्द्रस्य सूक्ष्मविन्द्वनुजः कृती।
श्रीयशोवर्द्धनगुरुर्होता वामशिवोऽभवत्।।38
शिवसोमस्य तद्राजगुरोर्व्वाम शिवाह्वयः।
अन्तेवास्यात्मविद्यौद्य इव मूर्त्तौ बहिर्गतः।।39
शिवसोमः स तेनान्तेवासिना सहधर्म्यधीः।
कृत्वा शिवाश्रमन्तत्र शैवं लिङ्गमतिष्ठिपत्।।40
शिवाश्रमाभिधानौ तौ शिवसोमे मृते सति।
शिवाश्रमो वामशिवः शिवाश्रममवाप सः।।41
भूभुजः श्रीयशोवर्म्माभिख्यां संविभ्रतः कृती।
श्रीयशोवर्द्धनस्यासीद् गुरुर्व्वामशिवः पुनः।।42
स श्रीयशोधरगिरौ गिरिराज इव श्रिया।
शैवं संस्थापयामास लिङ्गे भूभृन्निमन्त्रितः।।43
गुरुर्भद्रगिरेर्भूमिमभ्यर्ण्ण स्थान्तमीश्वरम्।
दक्षिणामाददे प्रीत्या विद्वान् वै जयपट्टनीम्।।44
स भद्रपट्टनाभिख्ये तत्र भूम्यां कृते पुरे।
क्षोणीन्द्रः स्थापयामास गुर्व्वर्थं लिङ्गमैश्वरम्।।45
स भोगं प्रददौ तस्मै करङ्ककलशादिकम्।
गवादि द्रविणं भूरि दासदासीशतद्वयम्।।46

देशेऽमोघपुरे राजा वदन्यो वदतां वरः।
भूमि गणेश्वराभिख्यां ससीमां शम्भवेऽदिशत्।।47
स भद्रपट्टनक्षोण्यां भद्रावासपुरे कृते।
न्यद्यान्निमां सरस्वत्याः शिवाश्रम उदारधीः।।48
शिवाश्रमानुजो विद्वान् हिरण्यरुचिरग्रयधीः।
वंशह्रूदाख्यां पृथिवीमयाचत तमीश्वरम्।।49
पुरे तत्र कृते लिङ्गमैश्वरं स कृतीश्वरः।
स्थापयामास विधिना धन्यधीः कुलभूतये।।50
स्वस्त्रीयो तौ कुटीग्रामात् सोदर्य्यास्तिस्त्र आहूताः।
वंशह्रूदे न्यद्यातान् द्वे तामेका भद्रपट्टने।।51
शिवाश्रमस्य स्वस्त्रियो राज्ञः श्रीहर्षवर्म्मणः।
कुमारस्वाम्यभूद्धोता भूयः श्रीशानवर्म्मणः।।52
स कवीश्वर आचार्य्यः पराशरसुताग्रयधीः।
पुरीं पराशराभिख्याञ्चक्रे वंशह्रूदावनौ।।53
शिवाश्रमस्य भगिनीसुतानुरधीः।
आसीदीशानमूर्त्त्याख्यो होता श्रीजयवर्म्मणः।।54
भूमिं प्रसादतो लब्ध्वा तस्य राज्ञः स पण्डितः।
ख्मवाञ्पुरं कृतवान् मान्यो भक्त्या त्रिभुवनेश्वरे।।55
ईशानमूर्त्तिभगिनी सूनुराङ्गिरसामग्रयधीः।
बभूवात्मशिवो होता राज्ञः श्रीहर्षवर्म्मणः।।56
राजेन्द्रवर्म्मणो होता सोऽधाद् वंशह्रूदावनौ।
शान्याख्यं कटुकाभिख्यं पुरं ब्रह्मपुराह्वयम्।।57
हरस्य प्रतिमा विष्णुर्निमां सारस्वतीं निमाम्।
स ग्रामत्रितये तत्र स्थापयामास भूतये।।58
आसीदात्मशिवाख्यस्य भागिनेयीसुतोऽग्रयधीः।
शिवाशयः शिवाचार्य्यो होता श्रीजयवर्म्मणः।।59
श्रीसूर्य्यवर्म्मणो राज्ये सोऽर्च्चा शङ्करशार्ङ्गिणोः।
सरस्वत्याश्च विधिना निदधे भद्रपट्टने।।60
समधिकद्धिषणास्ते सूरिवर्य्यास्तदा तैः

धरणिपतिभिरम्यण्र्णार्हणाम्यर्हणीयाः।
नगरनिहित संस्था देवराजस्य नान्ये
सयमनियमयत्नाः प्रत्यहञ्चक्रुरर्च्चाम्।।61
इति प्रवीणोदय मातृवंशोद्भवश् शिवाचार्य्यकभागिनेयः।
सदा शिवाधार सदाशयो यस् सदाशिवाख्यः प्रथितोबभूव।।62
यो देवराजार्च्चनशिष्ट शीलो ललामसन्तान परम्परायः।
श्री सूर्य्यवर्म्मावनि भृत्पुरोधाः पुरोधसाम् मान्यतमाश्र्योऽभूत।।63
निरन्तर स्मृत्यमृतेन नित्यं विशेषसन्तोषित एव शर्व्वः।
नीरूग्रमुत्सार्य्य तरांसि यस्य स्वान्तं परीयाय निरन्तरायम्।।64
कस्मिन्न कोपादितमांसि वासे वसन्ति यस्मिन् सततं वसेयम्।
इतीव यत्स्वान्तमतामसाशो धर्म्मोऽध्युवासाद्व्यनयं परार्द्धयम्।।65
बभूव यो धर्म्मधनस्य कोष्ठश्चारित्ररत्नस्य विदूरदेशः।
आचारसिन्धोः खलु सिन्धुराजश् शौरीर्य्यवीजस्य निवापभूमिः।।66
अतन्द्रिताभ्यस्त विचार्य्यशास्त्रसारम् समध्यापिवाश्च काले।
योऽदात्स्वयं प्रत्यहमष्ट पुष्पीन्तनूनपातोऽष्टनोश्च तुष्ट यै।।67
हृदम्बुजे यस्य नितान्तबोधे शब्दार्थशास्त्रादि सुगन्धितेपि।
न सेभिरे सुस्थितिलाभमन्य प्रश्नालयः पाटवणायुनुन्नाः।।68
सादाश्रयो यः पुरुषोत्तमस्य गम्भीरभावादि निधानभूतः।
महाहितस् सद्रुचिरत्न दीप्रो दध्रे महाम्भोधिसमानभावम्।।69
द्युम्नानि रत्न प्रमुखान्य सङ्गन्दाता सदाप्यर्थिगुणि द्विजेभ्यः।
तेषां मनोप्रधनं पटिष्ठो(ष्ठः) कृत्वात्मसाद् योऽन्यदुरापरागः।।70
सद्दर्शने नेत्रमतिर्नयेऽभून्मीमांसकेऽनन्यजह्यीविशुद्धेः।
ग्राह्ये च धर्म्मे विषयानुरागो न यस्य शब्द प्रमुखेन्द्रियाग्रे।।71
श्रीशक्ति कीर्त्तिश्रुतिशीलकर्म्मधर्म्मैरुदारोऽपि गतस्मयोयः।
गन्धर्व्व विद्याविदधीत शिल्पहोराचिकित्सादिकलो विधिज्ञः।।72
सभासदां शिक्षित शिष्ट सार्थस् सर्व्वीय गान्धर्व्वेगुणेगरीयान्।
दाक्षिण्य सम्पादित पञ्चनद्धैर्यो हारयामास मनांस्यजस्त्रम्।।73
श्रीवीरलक्ष्म्या भगिनी महिष्याश् श्रीसूर्य्यवर्म्मावनिपेन यस्मै।

गार्हस्थ्यधर्म्मे विधिना नियुज्य प्रादायि वह्निद्विजसन्निधाने॥74
जयी कवीनां गुणिनां गुणेशः श्रुते पटिष्ठो नृपतयः प्रसक्तया।
सत्यार्थवद् देवजयेन्द्रनाम श्रियाधिकं यो धृतपण्डितान्तम्॥75
श्रीसूर्य्यवर्मेश्वर सुप्रसक्तया संवीतभावोऽद्भुतभाग्यभूमिः।
कर्म्मान्तराद्यक्षतयान्वितं यो हिरण्यदोलाद्रिमवाप भोगम्॥76

वसतिराधिकधाम्नां भद्रयोगादिदेशे
निहित सुर सपर्य्यामन्द्रपुर्य्यादिसंस्थे।
व्यधित बहुविद्यार्द्धि यस्तटाकादिकर्म्मा-
प्यद्यित च विधिहृद्यं शर्व्वलिङ्गादिदेवान्॥77

यो भद्रपट्टने लिङ्गं प्रतिमे द्वे विधानतः।
संस्थाप्य शर्करामयप्राकारं बलभिन्दद्ये॥78
देवत्रयार्हणम् सर्व्वन् द्युम्नान्दासादिसंयुतम्।
दत्त्वा चक्रे सारिद्भङ्गं तटाकन्तत्र भूतये॥79
भद्रावासे सरस्वत्यै संस्कृत्यादाद्धनं बहु।
चक्रे तटाकं सोद्यानं सरिद्भङ्गञ्च योऽग्रयधीः॥80
वृद्ध्या संवर्द्धय भद्राद्रिदेवे योऽदिक्षदाश्रमम्।
कृत्वा शालाञ्च गोपर्ण्णा व्यद्याद् भङ्गं सरित्स्त्रुतेः॥81
वंशहृदे यस् संवर्द्धय देवे सर्व्वधनन्ददौ।
दीर्घिकां स सरिद्भङ्गां तटाकं भूतयेऽकरोत्॥82
अमोघपुरदेशे यः काञ्चिद् भूमिञ्चं काह्वयाम्।
श्रीसूर्य्यवर्म्मनृपतेर्लेभे मातृकुलर्द्धये॥83
अमोघपुरदेशे यो महारथतटाकतः।
व्यक्रीणात् पूर्व्वतो भूमिं-काञ्चिन्नद्याश्च पारतः॥84
ता एता धरणीर्लब्धाः प्रसादाद् विक्रयादपि।
वंशहृदस्थदेवेशकुल योर्वितततार यः॥85
अमोघपुरसन्ताननागसुन्दरभूमिषु।
प्रकृत्याद्यमदाद्ग्रामं शम्भोर्य्यो भद्रपट्टने॥86
सरस्वत्या निभां ब्रह्मपुरे संस्थाप्य दत्तवान्।
दासाद्यकार्षीद्यो भङ्गन्तटाकञ्च सरित्स्त्रुते॥87

पुरे संस्कृत्य कुट्याख्यै प्रासादे यो न्यद्यात्कृते।
लिङ्गमैशभदिक्षञ्च द्युम्नन् दासाद्यनेक शः।।88
बाहुयुद्धमहीन्नष्टां पालितां सूर्य्यवर्म्मणः।
लब्ध्वा............सर्व्वां कुटीशकुलयोरदात्।।89
शास्त्रेष्वधीत्य..........दू वागिन्द्रकविपादतः।
........शास्त्रादिषु कुलं योऽभवत् पितृवंशतः।।90
तस्यात्मजो............स्थापनादिकरौ धनैः।
पूर्ण्णं कृत्वाश्रमन्तत्र गुर्व्वर्थं यश् शिवेऽदिशत्।।91
द्याम्नो जयादित्यमहीभुजो यो
ज्यायान् गुरुत्वेन विशेषजुष्टः।
द्यूल्यङ्घ्र................नाम
वर्म्मान्तमापाग्र्यमनन्य लब्धम्।।92
धियोदयादित्यमहीधरन्तं योऽध्यापमयां सूरिभिरास सेव्यः।
शिष्टार्थशास्त्रादि समस्तशास्त्रदेवेन्द्र चन्द्राविव कश्यपात्री।।93
विजयादीम........त्रवृत्त समधीत्यावनीपे श्वरस् स हृष्टः।
विधिनाखलु दीक्षितोऽतिदक्षो यमुपास्यर्हयदग्रदक्षिणाभिः।।94
तदनन्तरमात्म मन्दिरे यन्धरणीन्द्रोऽर्हणया यथानियोगम्।
मुदितः परितोषयाम्बभूवाद्भुत भोज्याद्यतिहृदया सयत्नः।।95
परिकल्पितशैलरूपरम्यं परमं मोदकमात्त शिल्पमालम्।
ललनाभिरलंकृतं यदासीत् कथभीहेत विवक्षुरन्यशोभाम्।।96
मुकुटवेणिका हृद्या ललित कुण्डलद्वयम्।
केयूरकण्ठ सूत्रादिभूषणं सोर्म्मिकाशतम्।।97
चामीकरकरङ्काणि चामरन्तारपीठकम्।
त्रिशिरोहिमयी स्वर्ण्णदोला शुभ्रातकपत्रम्।।98
प्रोज्ज्वलत्पद्मरागादिरत्नराशीस् सहस्रशः।
सुवर्ण्णकलशामत्रपुटिका करशोधनम्।।99
करङ्करकामत्रपुटिकाकर शोधनम्।
सप्रतिग्रहभृङ्गारं तानि ताराण्यनेकशः।।100
ताम्रभाजनभृङ्गारास् स.........दा......प्रति।

प्रत्येक प्रति भक्तनिन तानि तानि सहस्रशः।।101

सहस्रन्त्रापुषामप्राण्ययनी....................।

गजाहम्बिरवस्त्राणि शतं वृहतिका शतम्।।102

चतुस्सहस्त्रं वस्त्राणामम्बराणां चतुश्शतम।

कस्तूरीकट्टिकास्तिस्त्र एका कस्तूरकट्टिका।।103

खारिका पञ्चद्या जातिफलानान्दश खारिकाः।

कक्कोलानां मरिचानां खारिकाः खलु विन्शति।।104

एका तुलैव हिङ्गूना मना........खारिकैकद्या।

वृचीबलानां शोण्ढीनां विंशति पञ्च खारिकाः।।105

खारिके दीप्यमाने द्वे पारिशेलवखारिका।

कोष्ठानां पिप्पलीनाञ्च खार्य्येकैकशः किल।।106

साराश्चन्दनजा भारः कृष्णागुरूभवा अपि।

तरुष्कसिंहमूत्राणां एकैकं पञ्च कट्टिकाः।।107

नखानां द्वितयो द्रोण एलानां पञ्च खारिकाः।

लवङ्गभङ्गपिण्डानां सहस्त्रं (गुञ्ज?)........।।108

कटकङ्कटघन्टाभिर्युक्ताः करिकरेणवः।

साङ्कुशद्योरणारूढ़ाः द्विशतं समदद्विपाः।।109

श्यामकर्ण्णहयप्रायास् सप्तयस् सादिसंयुताः।

सखलीणा रथोद्वाहाः कङ्कनीराणिताश् शतम्।।110

सवत्सानां गवां पञ्च शतानि च ककुद्यताम्।

महिषार्द्धशतं मेषवराहाणां शतं शतम्।।111

सभूषोत्तमनारीणां तन्त्रीदालियुजां शतम्।

वीणादीनां सवेणूनां शतां स्वरमनोहरम्।।112

कंसताल मृदङ्गादितूर्य्याङ्गानां शतार्द्धकम्।

दासदासीसहस्त्रेण प्रयो ग्रामां प्रपूरिताः।।113

वलवद्धुर्य्ययुक्तानां शकटानाञ्चतुश्शतम्।

तिल मुद्राभिपूर्ण्णानां धारिसारथिभिर्युजाम्।।114

सत्परश्वधरवुर्द्धाल परशूनां सुदण्डिनाम्।

एकैकशस् सहस्त्राणि शक्त्याद्यस्त्राण्यनेकशः।।115

तण्डुलानां सहस्राणि धान्यानामयुतं किल।
सर्व्वाणि तान्यदीयन्त दक्षिण यस्य भूभृता॥116
यत्रैकदापि दानेषु भूभुजो गणनेदृशी।
नित्यं विभाणने संख्या कथं शक्येत् वेदितुम्॥117
कृतनित्याभिवादो यो यत्नभाजा महीभुजा।
वस्त्रान्न पानगन्धादिसत्क्रियान्यर्हितोऽन्वहम्॥118
मणिकनकमयादिद्युम्नजातं वदन्यस्
सततमदित देवे भूरि भद्रेश्वरादौ।
कृतवसतितटाकादिः परार्थैकवृत्तिः
पथिषु पथिकसार्थान् प्रीणयां यो बभूव॥119
धरणीभृदुदारधीस् स तस्य प्रतिष्ठापयिषोरिह स्वभूम्याम्।
कृतभद्रनिकेतनाख्यदेशे निदधे लिङ्गभिदं महोपट्टारम्॥120
आस्तामियं भ्रदनिकेतनाख्यां प्राग् भद्रयोग्यादिपुराभिद्याङ्का।
सुवर्ण्णरत्न द्विरदेन्द्रवाजिवृन्दा दिदानेन तदर्थ मैषीत्॥121
जयेन्द्रवर्म्मैश्वर एष शर्व्वो ज्यायो निजज्योतिरजस्रदीप्तम्।
प्राभूतहानेरिह सार्हणर्द्धि दवान्तं निहन्तुं परितस्तनोतु॥122
भृङ्गार कन्यार्द्धधराम्बुधारि कुचाम्बुचार्य्यम्बुधरस्तनाब्जम्।
यातेषु सूर्य्यादिषु चापलग्ने भवोऽत्र वदाद्रिविलैरतिष्ठित्॥123
बहिस् स्वभूमेः परितस् ससीमामिन्द्रादिदिक्षु क्षितिमात्तमानाम्।
भक्त्योदयादित्यमहीधरश् श्रीजयेन्द्रवर्म्मेश्वर शम्भवेऽदात्॥124
राजानमाह्लादिरुचिप्रकर्षैर्भ्राजिष्णुं मुद्वीक्ष्य जयेन्द्रवर्म्मा।
मनः प्रसक्तिं प्रथयांबभूव वीतान्त रायर्द्धिकरीं यथात्रिः॥125
गाम्भीर्य्यवान् वारिजहंससङ्गहार्य्यच्छवारिस् स वृहत्तटाकः।
तेन द्विजाद्यर्थनदानरम्यश्चक्रे सरिद्भङ्ग इवात्मभावः॥126
हितधीरन् राहिरण्यदामविम्बं शिवकैवल्य शिवाश्रमाख्यरूपम्।
निदधे विना स धातृशौरित्रिदृशान्धामाभिरात तुल्य भावम्॥127
इदमिह वसुधाद्यं वीक्ष्य संश्रुत्य वास्ता-
धमभय कृत चेताः पुण्यचिन्तश्च कश्चित्।
शिवधनम शिवायाहर्त्तुकामे क्षणे पि

प्रभवति बहुधद्धर्या धातुकामे शिवाय।।128
(भ्मतम विससवॅ्र जीम पितेज ज्ञीउमत ज्मगज)
राजहोता यतीन्द्रो वा देवसंरक्षणेर्हति।
शीलश्रुतिगुर्णैयुक्तः कुली वा धर्म्मतत्परः।।129
भूरैरज दासादीन्नाशयन्तश् शिवस्य ये।
वाग्बुद्धि कर्म्मभिर्यान्ति ते लोकद्वय यातनाम्।।130

अर्थ- उस शिव को नमस्कार है और वह शिव हमारे तथा सबके कल्याण के लिए हों जो आत्मा के भाव से युक्त अन्दर व्यापने वाले शरीर के सूक्ष्म जीव के द्वारा बिना वाणी के प्राणियों की इन्द्रियों की चेष्टाओं को अतिशय कथन करता है।।1

श्री शंकर जी विश्व भर की रक्षा करें जिनके चन्द्र, सूर्य और अग्नि तीन नेत्र हैं और सब ओर से नहीं ढके हुए आत्मतत्व के अर्थ की दृष्टि से उज्ज्वल साक्षित्व व्यक्त हैं।।2

जो ब्रह्मा प्रकाशमान अमृत से पूर्ण स्फटिक निर्मित चन्द्रकान्त मणि के समान कमण्डलु लोकों में दया रूपी अमृत के समुद्र से मानों अन्दर से बीज को धारण करते हैं।।3

लक्ष्मी के स्वामी विष्णु जी तुम्हारी रक्षा करें जिनके वक्षस्थल पर लक्ष्मी जी बसती हैं। कौस्तुभ मणि रूप भूषण के लिए लक्ष्मी का कहना है कि वह मैं कठिन स्वभाव वाले को भी निश्चित रूप से सदा प्रेम करती हूँ कि इनके आश्रित कठिन स्वभाव के भले ही हैं- मैं सदा स्नेह करती हूँ।।4

उदयादित्य नाम से प्रसिद्ध सभी राजाओं के राजा द्वारा जिसके पैर धारण किये गये और संसार के राजा रूप कमलों के खिलाने के लिए तत्पर हैं। सभी के अन्धकार को दूर करने वाला पृथ्वी का अधिराज अपने तेज से प्रसिद्ध था।।5

ब्रह्मा ने यह समझा कि मुझसे रुचि विशेषपूर्वक विवेक से पैदा किया हुआ कामदेव शिव के तीसरे नेत्र रूप अग्नि से लकड़ी के समान जलाया गया अतएव पुनरपि अमृतमयी रुचियों से कामदेव को जन्म देकर मानता हूँ राजा के रूप में परिणत कर दिया है।।6

क्या मैं गिरिजा के समान कामदेव के नाश करने वाले शिव के

शरीर के आधे भाग को आलिंगित करूँ? इस प्रकार उन्मना सी होकर जिसकी लक्ष्मी निश्चित रूप से सब ओर से मनोरथ रंग अंग का आलिंगन करने वाली थी।।7

चार मुखों वाले कमलासन के श्रुत के अर्थ साम आदि शोभित बुद्धि वाले सभी जगत् के उदय के लिए जिसके मुख में ब्रह्मा की बुद्धि से धैर्य वाली निवास की स्थिति को दूसरे से नहीं संगम करने वाली वाणी (सरस्वती) ने जिसके मुख में निवास किया था।।8

गुणों में निष्णात बुद्धि वाले जिस राजा के शिल्प आदि में महत्त्व को प्रसन्न मानस होकर गिनने के लिए जपने के छल से ब्रह्मा अक्षमाला को आज भी धारण करता है।।9

जो राजा न्यायशास्त्र और योगशास्त्र की बुद्धिवाला, विष के समान दूसरों की स्त्रियों को विराग की बुद्धि से देखता था। किसी के द्वारा (राजा के द्वारा) कीर्ति, श्रद्धा, दया, धैर्य, धीरता रूपी धर्म स्त्रियों में नित्य संगम किया जाता था।।10

राजा के जो जो पृथ्वी दुख से खिन्न हो होकर आश्रय में आयी विवेकपूर्ण बुद्धि वाली सोचने वाली आयी उस पृथ्वी को जिस राजा ने मन्द प्रकाश वाले राजाओं की शक्तियों से उस पृथ्वी को अतुलनीय वृति से उन अपनी शक्तियों द्वारा महान् सुख में रख छोड़ा था।।11

जिसकी कृति रूप स्वर्ग वृक्ष मन्दार अतिशय प्रसिद्ध हैं तीनों लोकों में प्रख्यात हैं, गड़ा हुआ है, जिसकी स्तुति रूप पुष्प छींटे हुए हैं। सुवर्ण के अण्डे से जन्म लेने वाले ब्रह्मा के मानो भय से जगत् के धारण करने वाले ने उस वृक्ष की डाल को अन्दर विशेष रूप से बहुत भीतर तक गाड़ दिया।।12

जैसे शिष्यों के उपदेश देने में चेष्टा करने वाला गुरु या पिता पुत्र के उपदेश की चेष्टाओं में यत्नशील होता है वैसे ही प्रजापालन पोषणों द्वारा नीति से जिसने धर्म को भली-भाँति देख करके प्रजा पालन में तत्परता प्रदर्शित की थी।।13

कटे शत्रु राजाओं के रुधिरों से लाल तलवार को युद्ध में फड़कती चमक जो बिखरी हुई थी वैसी तलवार को जिसने केश पकड़ने

के बल से मानो उत्पन्न प्रेम से खिले हुए लाल कमल को मानो रण-लक्ष्मी का आहरण किया था।।14

शत्रुओं के समाज रूप लकड़ियों को जलाते हुए रण रूप यज्ञ में बाहुबल रूप अग्नि की जँभाई से तेजरूप वायु के झोकों से हरिण के छल से जिसकी पृथ्वी तप्त हुई सन्तप्त होकर जिस राजा के चन्द्र-बिम्ब की शरण में गयी थी।।15

जिसके दोनों चरण रूपी कमल के प्रणयी का प्रियत्व प्रख्यात करते हुए नखों रूपी मणियों से प्रतिबिम्बित राजाओं के समूह जिन राजाओं के सिर लबे हुए हैं उन्हें अपने अंग में निवेशित कर लिया जिस राजा ने क्योंकि यह राजा अपनी उपासना करने वालों पर दयालु जो है, प्रणत पाल है-यह मैं मानता हूँ।।16

इससे, जिस राजा की दूसरों से नहीं साधने योग्य अतएव अनन्य साध्य, सिद्धि अनुमान करने योग्य है क्योंकि यह राजा आश्चर्यकारी विशेष तेजस्वी है। विस्तृत होकर सात समुद्र रूप सूत्रों से लेख लिखने में श्रेष्ठ आदिकों- लिपिकों को सर्वदा बाँधा था।।17

नहीं बाँधने योग्य बँधे हुए यज्ञ की अग्नि के धुओं के ऊपर उड़ने से विष्णु धूमिल हो गये हैं जिस राजा के सर्वदा अपने पद पर आविष्ट होने से अभी भी विष्णु इसी कारण श्याम-कृष्ण होकर दीख पड़ते हैं।।18

सैकड़ों गर्वीले शत्रुओं से अभीति को प्राप्त करने वाला, गर्वीले सैकड़ों अशत्रुओं के अभय को प्राप्त करने वाला जो दूरस्थ होकर भी भय से उनको नहीं दे सका, अपनी भक्ति आदि किसी निकटस्थ द्वारा उपासित हुआ, जिस राजा ने छः काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, अन्य शुभ द्वेष, डाह रूप छः शत्रुओं को चूर-चूर करके धूल में कण रूप से मिलाकर नष्ट कर डाला।।19

यदि समुद्र में अपनी इच्छा से स्वच्छन्दतापूर्वक राक्षसों द्वारा किये गये क्षण उत्सव के कारण या लड़ाई के क्षण होने के कारण कैसे कमलनयन विष्णु सोने चले गये? मानवों की नीति है सार जिनका वे मानव नीतिसार कहे जाते हैं उनके द्वारा जो राजा घाव वाले, क्षत वाले, कटने वाले मानवों की रक्षा नहीं हो सकी।।20

आह्लादकारी मण्डल वाला चन्द्र के समान जो राजा या चन्द्र अपनी कोमल कलाओं से कर को सभी ओर से धारण करता हुआ, राजगुणों से युक्त कमल को अधिकाधिक रूप से बढ़ाकर उनसे सुन्दर समझा मानकर प्रशंसित हुआ था।।21

जिसके यश रूप जल की राशि में कलि रूपी अग्नि की ज्वाला शान्त होकर लोगों को शीतलता प्रदान करने वाली हुई। अपने तेज के मन्द पड़ने से काल रूपी अग्नि शंका से शिथिल शरीर वाला नीचे ब्रह्मा के ब्रह्माण्ड रूप में स्थगित होकर रह गया।।22

जो यशस्वी देव हैं आदि में जिसके ऐसे जयेन्द्रवर्मन, देव जयेन्द्रवर्मन नाम को धारण करने वाला, अतिशय विशाल भारी उगे हुए राजाओं के वंश में उगने पर बुद्धि से अनिन्दितपुर के श्रेष्ठ वंश में जन्म लिया था।।23

जिसकी माता की सन्तान की परम्परा पहले सूर्यवर्मन आदि के द्वारा या सूर्य आदि द्वारा कलाओं के समूह के पी लेने पर पूर्ण भाव से जगत् के उदय के लिए मानो चन्द्र को नीचा दिखाने के लिए जन्म लिया था।।24

जयवर्मन राजा के महेन्द्र राजा द्वारा सिर पर आस्पद के धारण करने वाले का शासक कवि आर्यों के श्रेष्ठ अंग मस्तकों से वन्दित चरण वाला शिवकैवल्य नाम से प्रसिद्ध हुआ था- जो राजकवि शिवकैवल्य था।।25

हिरण्यदामन नाम का श्रेष्ठ ब्राह्मण जो अग्रगण्य बुद्धि वाला था वह ब्रह्मा के समान था करुणा से आद्र था- वह आया। अनन्यलब्धा ऐसी सिद्धि को आदर से राजा के प्रति प्रकाशित किया उसने।।26

वह राजाओं के इन्द्र द्वारा अनुमति पाने वाला ब्राह्मण साधना से युक्त सिद्धि को इसे दिखाया उसे जो होता था उसे एकान्त मन से हित होकर प्रसन्न होकर तेज के बढ़ाने के लिए ऐसा किया था।।27

उस ब्राह्मण ने मानो अपनी सिद्धि के द्वारा इस शास्त्र के चार नाम वाले मुख शिरच्छेद, विनाशिख, सम्मोह और नयोत्तर को भली-भाँति दिखलाया था।।28

उस ब्राह्मण ने शास्त्रों के श्रेष्ठ अंश को सम्यक् प्रकार से उद्धृत

करके यत्नपूर्वक गोपनीयता की कुशलता की बुद्धि से सिद्धि देवराज के नाम को प्राप्त करती हुई विश्व की दौलत, धनराशि की वृद्धि के लिए थी।।29

उस राजेन्द्र ने श्रेष्ठ विप्र के साथ उस विधि में जो विधि धाम के निधान कारण है उसमें अड़चन के नष्ट होने पर विश्व के उदय के लिए उन मुनीश्वर महानुभाव की नियुक्ति की थी।।30

उसकी माता के कुल में संन्यासी लोग या स्त्री समाज जो जन्म लिये सभी विक्रम से युक्त भाव वाले हुए उनके यज्ञ कराने वाले किसी प्रकार दूसरे नहीं होवें ऐसी कल्पना राजा और ब्राह्मण की थी।।31

भवपुर के राजा के द्वारा दी हुई पृथ्वी पर उसने पहले अपने कुल में इन्द्रपुर में विशेष रूप से रखी हुई ऋद्धि- दौलत, धनराशि के कल्याणकारी योगी द्वारा निर्मित प्रकृत ईशपुर में शिवलिंग की सभी भावनाओं से रक्षा की थी।।32

पूर्व दिशा में पृथ्वी की याचना किसी राजा से प्रार्थना करके उसने कुटीपुर नामक नगर बसाकर वहाँ अपने कुल को रखा।।33

उसने उस राजा की प्रार्थना करके अमरेन्द्रपुर के निकट की भूमि माँग कर भवालयपुर नामक नगर में शिवलिंग की स्थापना की थी।।34

जयवर्मन राजा एवं उसका पुत्र सूक्ष्मविन्दु के पुरोहित शिवकैवल्य का भांजा जो पण्डितों का अग्रनेता था।।35

उस शिवकैवल्य के बाद जन्म लेने वाले ने जो रुद्राचार्य था उस राजा से पहाड़ के चरण में किसी पर्वत की याचना की थी।।36

ग्राम को बसा करके शिवलिंग स्थापना विधिवत करके उस पर्वत का नामकरण भद्रगिरि नाम से प्रख्यात किया था उस मुनियों के श्रेष्ठ ने।।37

श्री इन्द्रवर्मन राजा सूक्ष्मविन्दु छोटा भाई जो प्रयत्नवान था श्री यशोवर्धन का गुरु हवन करने वाला, अग्निहोत्री, वामशिव हुआ था।।38

उस राजगुरु शिवसोम का वामशिव नामक निकट रहकर गुरु के आश्रम में रहकर पढ़ने वाला छात्र वेदान्त दर्शन समूह के समान मूर्ति में बाहर गया।।39

उस शिवसोम ने उस अन्तेवासी छात्र से साथ-साथ धर्मयुक्त बुद्धिवाला वहाँ शिवाश्रम बना करके शिवलिंग की स्थापना की थी।।40

शिवाश्रम नाम से ख्यात वे दोनों शिवसोम की मृत्यु हो जाने पर उसने शिवाश्रम नामशिव शिवाश्रम को प्राप्त किया था।।41

श्री यशोवर्मन नाम वाला प्रयत्नवान श्री यशोवर्धन का गुरु वामशिव था।।42

उसने राजा से निमन्त्रित हो करके श्री यशोधर पर्वत पर जो लक्ष्मी और शोभा से गिरिराज के समान था, वहाँ शिवलिंग स्थापित किया था।।43

विद्वान् गुरु ने भद्रगिरि के समीप में स्थित ईश्वर को जयपट्टनी दक्षिणा प्रीति से पायी थी।।44

उसने भद्रपट्टन नाम की भूमि पर पुर बसाकर राजेन्द्र ने गुरु के लिए शिवलिंग की स्थापना की थी।।45

उसने उसके लिए भोग प्रदान किया था, करंक, कलम आदि बहुत गाय आदि धन, बहुत दो सौ दास-दासी आदि।।46

अमोघपुर स्थान पर दाता के गुणों से युक्त राजा ने जो वक्ताओं में बड़ा था सीमा सहित गणेश्वर नाम की भूमि शिव के लिए दान स्वरूप दिया था।।47

उस उदार बुद्धि वाले शिवाश्रम ने भद्रपट्टन पृथ्वी पर भद्रावासपुर बसा करके सरस्वती की निभा की स्थापना की थी।।48

शिवाश्रम का छोटा भाई विद्वान् जो हिरण्यरुचि नाम वाला और अग्रगण्य बुद्धिमान था उसने वंशहृदा नाम की भूमि की याचना उस राजा से की थी।।49

वहाँ पुर बसाने पर उस प्रयत्नवान ईश्वर जो धन्य बुद्धि वाला था उसने अपने कुल के ऐश्वर्य के लिए विधि से शिवलिंग की स्थापना की थी।।50

भांजे ने दोनों को कुटीग्राम से तीन बहनों को लाया था। वंशहृद में उनको, दो को वंशहृद में और एक को भद्रपट्टन में रखा था।।51

फिर शिवाश्रम का भांजा राजा श्री हर्षवर्मन के कुमार का स्वामी

हुआ और फिर श्री ईशानवर्मन का होता हुआ था।।52

उस कवीश्वर आचार्य पराशर के पुत्र अग्रगण्य बुद्धि वाले ने वंशह्रद भूमि पर पराशर नाम की पुरी की स्थापना की थी।।53

शिवाश्रम की बहन का पुत्र बड़ा बुद्धिमान ईशानमूर्ति नाम का था जो श्रीजयवर्मन का होता था।।54

मान्य उस पण्डित ने उस राजा की प्रसन्नता से भूमि पाकर भक्ति से त्रिभुवनेश्वर में ख्यवाज़पुर की स्थापना की थी।।55

ईशानमूर्ति की बहन का पुत्र अंगिरा के वंशजों में अग्र बुद्धिमान राजा श्री हर्षवर्मन का होता आत्मशिव नामक था।।56

उस राजेन्द्रवर्मन के होता ने वंशह्रद नाम की भूमि पर शानी नामक कटुका नामक ब्रह्मपुर नामक पुर की स्थापना की थी।।57

उसने ऐश्वर्य के लिए शिव की प्रतिमा विष्णु की निभा सरस्वती की निभा वहाँ तीनों ग्रामों में स्थापित की थी।।58

आत्मशिव की बहन की पुत्री, बहन की पुत्री का पुत्र अग्रगण्य बुद्धिमान शिवाशय नामक शिवाचार्य था जो श्री जयवर्मन का होता था।।59

श्री सूर्यवर्मन के राज्य में उसने महादेव, विष्णु और सरस्वती की पूजा विधि से भद्रपट्टन में की थी।।60

तब सम्यक् कोटि की अधिक बुद्धि वाले वे विद्वानों में श्रेष्ठ उन राजाओं से समीप पूजनीय थे, देवों के राजा के नगर में अपनी सम्यक् स्थिति रख चुकने वाले प्रतिदिन पूजा किया करते थे दूसरे नहीं वे ही संयम, नियम और यत्न सहित पूजा करते थे।।61

इस तरह प्रवीण उदय मातृवंश में उत्पन्न शिवाचार्य की बहन के पुत्र सदाशिव को ही आधार मानने वाले अच्छे आशय के भाव वाले जो थे वे सदाशिव नाम से विख्यात हुए थे।।62

जो देवता के पूजन में शिष्ट फल की साधन के अंश में भ्रम से हीन एवम् अच्छे स्वभाव वाले सुन्दर सन्तान रूप सोपान स्वरूप थे वे श्री सूर्यवर्मन राजा के पुरोहित सभी पुरोहितों के अतिशय माननीय आशय वाले थे।।63

लगातार स्मृति रूप अमृत से नित्य ही महादेव जी विशेष रूप से

उनके द्वारा प्रसन्न किये गये थे जिनका मन, हृदय दोषहीन था जिससे वेगों को दूर करके अड़चन से हीन था।।64

किसी पर कभी क्रोध आदि अन्धकारों का प्रयोग नहीं करके जहाँ वास कर सदैव वहीं रहने वाले हैं। मानो इसी तरह नामहीन समान आत्मभाव में पूजनीय धर्म निवास करता था।।65

धर्म ही है धन जिसका ऐसे धर्म धन का जो कोठा है सच्चरित्रता रूप रत्न का विदूर देश है, आचार रूप समुद्र का जो समुद्रों का राजा है और स्वच्छ जल का जो निवास भूमि है।।66

आलस्य से हीन होकर जो अभ्यास किये हुए विचार करने योग्य शास्त्रों के श्रेष्ठ अंश का अभ्यासी है तथा शास्त्रों को पढ़ाता था। जो स्वयम् प्रतिदिन शिवजी की प्रसन्नता के लिए अष्टपुष्पी आठ फूलों के समूह को पूर्ण प्रणत भाव से चढ़ाया करता था।।67

शब्दशास्त्र व्याकरण और शब्दों के अर्थशास्त्रों से सुगन्धित एवं नितान्त बोध से पूर्ण जिसके हृदय रूप कमल में चतुरता रूप वायुओं से प्रेरित दूसरे दूसरे प्रश्नों के समूह नहीं घर कर पाते थे।।68

अच्छों का आश्रय जो विष्णु का आश्रय, गहरे भावों आदि का घर रूप महाहित अच्छी रुचि रूप रत्नों से प्रकाशित महासागर के समान भावों का भण्डार जिसका हृदय रूप महासागर था।।69

सदा ही याचक गुणी ब्राह्मणों को आसक्तिरहित होकर द्युम्न आदि प्रमुख रत्नों का दान करने वाला, उनके मन में रक्षित धन अतिशय चतुर, आत्मसात् अपना बनाकर जो दूसरों से दुख से पाने योग्य राग वाला था।।70

अच्छे दर्शन में जिसके नेत्र की गति न्याय पर हुई जिज्ञासा में, मीमांसा दर्शन में जिसमें कर्म की यज्ञ प्रमुखता है अद्वितीय बुद्धि की विशुद्धता थी। ग्रहण करने योग्य धर्म में विषय का अनुराग था शब्द आदि इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करने योग्य विषयों के आगे अपनी आसक्ति नहीं थी।।71

जो आश्चर्य से रहित श्री शोभा, लक्ष्मी, शक्ति, कीर्ति, वेद श्रवण, कान, शील, अच्छे स्वभाव, कर्म, धर्म सब में उदार था। गन्धर्व

विद्या, संगीतशास्त्र, शिल्पशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, वैद्यक आदि कला ज्ञाता विधियों का ज्ञाता था।।72

सभासदों के मध्य शिक्षित और शिष्ट की चरितार्थ वाला, सार्थक करने वाला सहायक था, शिवजी के गान्धर्व गुण में अतिशय विशाल गुरु था, निपुणता से पंच शब्दों को सम्पादित कर चुकने वाला जिसने सर्वदा सब के मन को शिव गुणगान द्वारा अपनी ओर से आकृष्ट कर हर लिया था।।73

पटरानी श्री वीर लक्ष्मी की बहन को राजा श्री सूर्यवर्मन ने जिसे गार्हस्थ्य धर्म में विधि से नियुक्त करके अग्नि और ब्राह्मण के समक्ष प्रदान कर दिया था।।74

जो कवियों के बीच न्यायी, गुणियों के बीच गुणेश, वेदशास्त्र श्रवण करने वालों के बीच अतिशय चतुर प्रसक्ति से राजा सच्चे अर्थ को सार्थक करने वाला श्री देव जयेन्द्र पण्डित नाम से ख्यात था।।75

श्री सूर्यवर्मन राजा की सुन्दर प्रसक्ति से आश्चर्यकारी भाग्य का भागी सभी भावों से विरक्त दूसरे कर्मों की अध्यक्षता से युक्त जिसने हिरण्यदोलाद्रि, सुवर्ण के दोले वाले पर्वत का भोग पाया था।।76

अधिक धामों के वास भद्र योग आदि देश में इन्द्रपुरी आदि में स्थित देव पूजापूर्वक बहुत प्रकारों के तड़ाग आदि कर्म धन दानों के साथ विधि से सुन्दर शिवलिंग आदि देवों की प्रतिष्ठा रूप कर्म करने वाला था।।77

जिसने भद्रपट्टन में विधान से एक शिवलिंग और दो प्रतिमाएँ स्थापित की थीं। शर्करा ही शर्करा वाले प्राकार निर्माण किया था और बल भी धारण किया था।।78

तीनों देवों के सब पूजन की सम्पत्ति वैभव, दास आदि युक्त देकर ऐश्वर्य के लिए वहाँ सरिद्भंग तड़ाग खुदवाया था।79

सरस्वती के लिए कल्याणकारी आवास सम्यक् प्रकार से बनाकर उसमें बहुत धन दिये थे। फुलवारी, उपवन सहित तड़ाग और सरिद्भंग अग्रगण्य बुद्धि वाले ने बनाया था। उस राजा से याचना की थी उस भूमि की जिसका नाम था वंशह्रद।।80

जिसने भद्रादि देव के विषय में आदिष्ट आश्रम की वृद्धि द्वारा सम्यक् रूप से बढ़ाकर और गायों चौपायों से पूर्ण भवन निर्माण करके नदी के सोते का भंग किया, जलाशय खुदवाया था।।81

जिसने वंशहृद में सम्यक् प्रकार से बढ़ाकर देवता के निमित्त सभी प्रकार के धनों का दान किया एवं एक बहुत बड़ा जलाशय सरिद्भंग तड़ाग खुदवाया था। अपने ऐश्वर्य के निमित्त यह कीर्ति उसने की थी।।82

चं का नाम की कोई भूमि जिसने अमोघपुर में श्री सूर्यवर्मन राजा से जिसने मातृकुल की दौलत के लिए धन पायी थी।।83

जिसने अमोघपुर में महारथ तड़ाग से पूर्व से किसी नदी के पार वाली भूमि को बेची थी।।84

वे इतनी इस प्रकार की भूमि बिकने के बावजूद भी प्रसन्नता से वंशहृद में स्थित प्रतिष्ठित देवेशों के दो कुलों को जिसने वितरित की थी।।85

अमोघपुर नामक सुन्दर भूमियों में स्वाभाविक ऐश्वर्यशाली धनी ग्राम का दान श्री शंभु भद्रेश्वर के निमित्त भद्रपट्टन में दिया था।।86

ब्रह्मपुर में सरस्वती की निभा, प्रतिभा को संस्थापित कर उनके निमित्त दान स्वरूप दे दिये थे। दास आदि नदी के सोते के भंग रूप तड़ाग खुदवाया था।।87

कुटी नाम की कुद्याख्यपुरी में संस्कार करके देवमन्दिर जिसने बनवाये थे- शिवलिंग स्थापना की थी। धन, दौलत, दास आदि अनेक प्रकार के जिसने दिये थे।।88

बाहु युद्ध से नष्ट मिट्टी को सूर्यवर्मन द्वारा पालित जमीन पाकर. ....सभी दो कुटीश कुलों को दे डाला था.....।।89

शास्त्रों में पढ़ करके............वागीन्द्र कवि के चरणों से........ शास्त्र आदि में कुल जो था पितृवंश से........उसका पुत्र।।90

धनों से स्थापना आदि करने वाला वहाँ पूर्ण परिश्रम करके गुरु के लिए जिसने शिवलिंग को बैठाया और दान दिये थे।।91

जो जयादित्य राजा का जो सबसे बड़ा गुरुत्व से विशेष रूप से जुष्ट धूल्यंघ्रि नाम.....दूसरे के द्वारा लभ्य नहीं हो सकने वाले मायाग्रया

वर्मा नाम या मायावर्मन।।92

बुद्धि से उस उदयादित्यवर्मन राजा को जिसने पढ़ाया था जो विद्वानों से सेवनीय है शिष्ट अर्थ वाले शास्त्र आदि समस्त शास्त्र इन्द्र और चन्द्र के समान थे मानो कश्यप और अत्रि मुनि से।।93

विजय आदि.......पढ़ करके राजा प्रसन्न हुआ विधिपूर्वक निश्चित रूप से अति दक्ष राजा दीक्षित हुए अपने उपास्य योग्य अग्र दक्षिणाओं से दीक्षा पायी।।94

उसके बाद अपनी आत्मा रूप मन्दिर में राजा ने नियोग के अनुसार पूजा से प्रसन्न किया सुन्दर आश्चर्यकारी भोजन योग्य पदार्थों अतिशय मनोहर खाद्यान्नों से पूर्ण प्रयत्नशील होकर।।95

पर्वताकार परम रमणीय शिल्प समूहों से युक्त मिठाई के पर्वत महिलाओं से युक्त सुशोभित देखकर दूसरी शोभा के वर्णन की इच्छा कैसे हो सकती है?।।96

सुन्दर मुकुट वेणिका, दो कुण्डल, केयूर, कण्ठसूत्र आदि भूषण 'हार' सौ उर्मिकाओं से दिये।।97

चामीकार, करंक, चामर तार पीठक सहित त्रिशिरोहिमयी स्वर्ण दोला डोली, उजले छाते।।98

हजारों हजार उजले पद्मराग आदि रत्नों के ढेर सुवर्ण कलश पुटिका हाथ धोने के लिए एवं हाथ शुद्ध करने वाले।।99

एक जगह सोने के कलश वाली पुटिका कर शोधन के लिए दूसरी जगह करंक कर का वाली पुटिका (पुड़िया) कर के शोधन के लिए दिये गये थे। जो प्रतिग्रह सहित श्रृंगार थे। वे अनेक रूप से तरल थे।।100

ताँबे के पात्र भृंगार........स......दा.......प्रति. वे सभी हजार रूपों में विभक्त सभी अलग-अलग थे।।101

रांगे के हजार.........सौ राजा के योग्य सभी वस्त्र बहुत बहुत सैकड़ों।।102

चार हजार वस्त्रों और पीताम्बर (आदि) चार सौ दिये गये थे। कस्तूरी तीन कट्टी और कस्तू एक कट्टी।।103

पाँच खारी जायफल, दस खारी काली मिर्च, बीस खारी गोल

मिर्च दी गयी।।104

हींग एक तुला............एक खारी वृचीवल, सोंठ पच्चीस खारी।।105

दो चमकते कोठ, पीपल एक एक खारी।।106

कृष्ण, गरु वाले चन्दन तरु एक, सिंहमूत्र एक-एक खारी पाँच कट्टी।।107

नखों का दो द्रोण, इलायची पाँच खारी, लवङ्ग और भंग पिण्ड एक हजार।।108

कनपट्टी (हाथी की), कड़कट घण्टा से युक्त हाथी और हस्तिनियाँ अंकुश के साथ ऊपर चढ़े हुए महावतों से युक्त दो सौ हाथी दिये थे।।109

श्याम कर्ण घोड़े के समान घोड़े सादियेयुक्त खलीन रथ हाँकने वाले कंकनी शब्दायमान सौ घोड़े दिये थे।।110

ककुदों से युक्त किलहौर, पाँच सौ बछड़ों सहित गायें, पचास भैंसे, भेड़, सूअर सौ-सौ दिये गये।।111

सुन्दर आभूषण सहित नारियाँ जो वीणा से युक्त थीं एक सौ दी गयीं। वेणु से युक्त वीणा जिनके मनोहर स्वर थे सौ दिये।।112

कंस, ताल, मृदङ्ग, आदिवूर्य अंग, पचास हजार दास-दासियों से युक्त तीन गाँव दिये थे।।113

बलवान भार खींचने वाले जानवरों से युक्त घोड़ों से युक्त चार सौ गाड़ियाँ जो तिलों और मुद्राओं से पूर्ण धारण करने वाले सारथियों से युक्त गाड़ियाँ।।114

अच्छे-अच्छे फरसे और अच्छी-अच्छी कुदालें सुन्दर दण्डा वाले फरसों के एक-एक हजार एवं शक्ति आदि अस्त्रों के समूह अनेक प्रकार के अनेक हजारों हजार दिये गये थे।।115

चावलों के बहुत हजार और धान्यों के दस हजार निश्चित रूप से जिसकी दक्षिणा में राजा द्वारा दिये गये थे।।116

इस प्रकार की गिनती राजा की थी कि जहाँ एक बार भी दानों में जो तय हो वही बार-बार भी संख्या बनी रहे क्योंकि रोज विभाजन में कैसे

जान पाते।।117

जो राजा प्रतिदिन नियमतः यत्न करके वस्त्र, अन्न पेय पदार्थ, गन्ध, धूप, चन्दन, इत्र, सुगन्धित पदार्थ मात्र देव योग्य आदि सत्क्रियाओं से युक्त होकर प्रणाम, पूजा दान आदि करते थे।।118

मणि और सुवर्ण निर्मित इसी कोटि के अन्यान्य पदार्थों से रचित मकान, औदार्यपूर्वक भद्रेश्वर आदि देवों को सतत काल बहुत-बहुत संख्याओं में राजा दान स्वरूप देते थे। परमार्थ ही वृत्ति जिस राजा की थी वह ग्राम बसाकर तड़ाग आदि खुदवाकर मकान आदि बनवाकर पथिकों को तृप्त करते थे।।119

उस उदार बुद्धि वाले राजा ने भद्रनिकेतन के समीप अपनी दो भूमि पर या स्वयं होने वाले शिव की प्रतिष्ठा की इच्छा वाले दो भूमि से शिवलिंग की स्थापना की थी।।120

यह भद्रनिकेतन नाम की भूमि पूर्व काल में भद्र योग्य आदि नाम से अंकित थी, सुवर्णों, रत्नों, गजेन्द्रों, घोड़े के समूह आदि दान करके उसके लिए इच्छा की थी।।121

यह जयेन्द्रवर्मेश्वर शिवजी बड़े हैं ये अपनी ज्योति से नित्य प्रकाशित हैं प्राणियों की हानि से लेकर पूजन वाले धन की हानि नहीं हो अतः ये (शिवजी) सब ओर अन्धकार मिटाने के लिए तेज बिखेरा करें।।122

कुम्भ, कन्या आदि राशियों में सूर्य आदि के घरों में जाने पर धनु लग्न में श्री शिवलिंग की स्थापना 974 शाके में की गयी थी।।123

भक्ति से उदयादित्यवर्मन श्री जयेन्द्रवर्मन श्री शिवजी के निमित्त अपनी भूमि से बाहर सब ओर पूर्व आदि जिनके इन्द्र आदि देवता हैं सभी दिशाओं में सीमा निर्धारण के साथ पृथ्वी मात्र मान वाली भूमि दी थी।।124

राजा को आह्लादयुक्त दीप्ति के प्रकर्षों से ज्योति पूर्ण देखकर जयवर्मन ने शत्रुओं के नष्ट हो जाने पर धन की वृद्धि करने वाली मानसिक प्रसक्ति को प्रथित किया जैसे अत्रि मुनि ने किया हो।।125

उसने गहराई वाला, कमल, हंस के संग वाला स्वच्छ जल वाला

बहुत बड़ा तड़ाग द्विज आदि के अर्थ दान से रम्य सरिद्भंग के समान आत्मभाव से खुदवाया था।।126

हित बुद्धि वाले उसने सुवर्ण की माला के समान बिम्ब वाले शिवकैवल्य शिवाश्रम नाम रूप वाले ब्रह्मा, विष्णु और देवों को धामों के साथ तुल्य भाव से स्थापित किया था।।127

यह यहाँ भूमि आदि देखकर प्रतिज्ञा करके यम के भयचित्त में करने वाला कोई पुण्य की चिन्ता करने वाला श्री शिवजी के धन को अकल्याण के लिए हरण करने की इच्छा वाले क्षण में भी बहुधा धन से श्री शिव के निमित्त कल्याण के लिए धारण करने वाले राजा के रहने पर कोई राजा रक्षा करे।।128

राजा का होता या यतियों में श्रेष्ठ देव के सम्यक् प्रकार से रक्षण में योग्य हो सकता है। जो शील, वेदों और शास्त्रों के श्रवणों एवं गुणों से युक्त या अच्छे कुल वाला जो धर्म में तत्पर हो।।129

श्री शिवजी के पृथ्वी, धन, चाँदी, नौकर, नौकरानी आदि के नाश करते हुए जो दुष्ट होंगे वे वाणी, बुद्धि, कार्य आदि से नाश करना चाहेंगे तो दोनों लोकों में यातनाएँ प्राप्त करें।।130

९०

फुम दा खड़े पत्थर अभिलेख

Phum Da Stele Inscription

कोंमपौंग चनाम प्रान्त में फुम दा नाम का एक छोटा गाँव है। रहस्यपूर्ण दार्शनिक शब्दों में यह अभिलेख भगवान् शिव की प्रार्थना प्रस्तुत करता है। अभिलेख के शब्द उपनिषद् से लिये गये हैं। संस्कृत मूल लेख में एक योगिन ज्ञानप्रिय और आर्यमैत्री के द्वारा लिंग की स्थापना की चर्चा है।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 9 है जो सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।

बर्गेगने के द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन किया गया है।[1]

ओं नमश् शिवाय।

जितमीशेन यन्मूर्द्धबालसोमं वराकरम्।
ईड़ेऽहमात्मनो रंभा बालसोमं वराकरम्।।1
शुक्रताराप्रभावाय नमस्ते जातिविन्दवे।
योऽसौ महेश्वरो भूत्वा सर्ग्गधृत्यै महातनुः।।2

---

1. *JA (1882), pt. I,* p.208

नमोऽसतु विन्दुगर्भाय विन्दूत्तज्वालितौजसे।
सरतिर्व्विन्दुवासी यो विरतिव्विन्दुनिर्गतः।।3
ज्ञानप्रिया रूपेन तपस्विनेदं
संस्थापितं षड्नगरुध्रशाकैः।
लिङ्गं शिवध्यानगता गुहास्थाः
क्षमध्वमस्मिन् शिवतत्त्वभूतम्।।4
सर्व्वेभ्य एभ्यो जगदीश्वरेश-
सुज्ञाननैयोग समाश्रितोऽसौ-
सत्पुण्य सत्रं परिपालनार्थं
ददौ तदाहृत्य शरीरकोष्ठात्।।5
साक्षान्नाथोऽयमित्युक्त्वा सर्व्वे सत्पुण्यसंभृताः।
अस्मै प्रीतिन्ददुर्नित्यं योगिने मोक्षकांक्षिणे।।6
मैत्रयादि परशुच्छिन्नाः षड्वैरितरवोऽभवन्।
सत्वाम्बुधौ च निक्षिप्ताः निष्फलायस्य केवलम्।।7
शुद्धान्वयोऽसौ कृतकृत्यवीर्य्यो
निर्व्वाणसंभावित शुद्धचेताः।
षड्वैरितापाभिहतो न याति
ध्यानालयं वन्यमपण्डितो हो।।8
ज्ञानप्रियार्य्य मैत्रीति द्वे नाम्नी परमेश्वर।
अन्वर्थीभक्तान्नित्यं यावद्भावगतस्य मे।।9

अर्थ- प्रणव सहित शिवजी को नमस्कार है। भगवान् के द्वारा जिसको जीता गया है वह सौन्दर्य की खान बाल चन्द्रमा जिसके मस्तक पर विराजता है उन भगवान् शिवजी को, शिवजी की शक्ति पार्वती की तथा सौन्दर्य की खान रूप बाल चन्द्रमा की मैं वन्दना करता हूँ।।1

संसार की उत्पत्ति के केन्द्र रूप, शुक्र तारा के समान भास्कर उज्ज्वल वर्ण वाले तथा इस सृष्टि को धारण करने के लिए महेश्वर रूप से विशाल शरीर धारण करने वाले शिवजी को नमस्कार है।।2

बिना प्राकृत रति के भगवान् के भृकुटी से उत्पन्न होने वाले तथा प्रेम के वशीभूत होकर योगियों के भृकुटी मध्य बसने वाले सृष्टि के गर्भ

रूप शिवजी जो सृष्टि के अन्त में अपनी भृकुटी से योगाग्नि को प्रज्ज्वलित करते हैं, उन्हें नमस्कार है।।3

गुहास्थ ध्यान में लीन ज्ञान प्रिय नामक योगी ने 760 शाके में इस शिवलिंग की स्थापना की त्रुटियों के लिए इस शिव तत्त्वभूत योगी को क्षमा करें।।4

सभी के लिए, इनके लिए तथा इस सत्पुण्य यज्ञ के परिपालन के लिए, ब्रह्मज्ञान तथा योग को आश्रय किये हुए इस योगी ने अपने शरीर कोष्ठ से निकाल कर इस शिवलिंग को दिया।।5

सभी पुण्यवान लोग, ये साक्षात् शिवजी ही हैं ऐसा कहकर नित्य सम्मान तथा प्रेम दिया।।6

मैत्रयादि परशुओं के द्वारा जिसके छः वैरी (लोभ, मोह, काम, क्रोध, मद, मात्सर्य) रूप वृक्ष काट दिये गये हैं तथा सद्ज्ञान के सागर में डुबोकर निष्फल बना दिये गये हैं।।7

ये शुद्ध वंशोद्भव, कृतकृतवीर्य निर्वाण प्राप्ति के कारण शुद्ध चेता है परन्तु छहो वैरियों के ताप से संतप्त, जंगली, मूर्ख, निन्दनीय लोग ध्यानालय को नहीं जाते हैं।।8

ज्ञानप्रियार्थ और मैत्री इन दो नामों वाले परमेश्वर अपने नामों के अनुरूप मुझ भक्त के अनुकूल हों।।9

९१
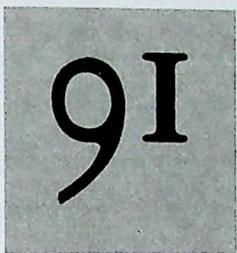
पौन प्रह थ्वर गुफा अभिलेख

Pon Prah Thvar Cave Inscription

नोम कुलेन पर्वतश्रेणियों के पूर्वी भाग में यह एक गुफा है। इस गुफा की दीवारों पर बहुत से चित्र बनाये गये हैं जिनमें निम्नांकित महत्त्वपूर्ण हैं-

1. केन्द्र में खड़े चित्र पाँच सिर के साथ प्रत्येक का चार चारों तरफ और पाँचवाँ चोटी पर।

2. दाहिनी तरफ दूसरा चित्र आठ बाँहों का

3. बायीं तरफ के चित्र को छब्बीस बाँहें हैं।

4. इस केन्द्रीय चित्रों के दो तरफ राजसिंहासन पर बैठे केन्द्र की ओर चेहरा किये तथा हाथ जोड़े भक्तों की दो कतारें हैं।

इस अभिलेख से हमें यह जानकारी मिलती है कि शंभु की गुफा को धर्मवासा के द्वारा बनाया गया जो एक ऋषि थे। उनका जन्म धर्मवासापुर में हुआ था और पवित्र धर्म उनके अन्दर वास करता था। उनके द्वारा निकट का तालाब खोदा गया

था तथा उन्होंने ही व्योमतीर्थ को दृष्टिगोचर बनाया था। इसके पहले वह अदृश्य समझा जाता था। देवताओं तथा ऋषियों की मूर्तियाँ भी उन्हीं के द्वारा बनायी गयीं।

आर.सी. मजूमदार मानते हैं कि धर्मवासा सम्भवतः उस धर्मवासा से मिलते-जुलते हैं जिनको फुम दा के खड़े पत्थर पर के अभिलेख के ख्मेर मूल लेख में वर्णन किया गया है।

इस अभिलेख में कुल पद्य 7 हैं जो सभी शुद्ध एवं स्पष्ट हैं।[1]

नमश् शिवाय यज्ज्योतिरुज्ज्वलद् विश्वतो भृशम्।
निकृन्तति जगद्दृष्टितिरस्कृतिकरन्तमः।।1
धर्म्मावासपुरे जात्या धर्म्मावासाभिधानभृत्।
शुद्ध धर्म्माधिवासो यो बुधो धर्म्म इवाभवत्।।2
जन्मभूभूरिविभवे भवत्यप्यविशद् वनम्।
यो भिक्षावृत्यहोचित्रं महतामीहितं बत।।3
इमां शम्भुगुप्तभिख्यां स गुहां स्वगुणोक्तये।
व्यात्तास्यश्रियमस्योर्व्वीधरस्येव व्यधाद्बुधः।।4
तटाकमाश्ममेवच्च भोगिभोगद्यूताच्युतम्।
तपस्तेज स्तनूभूत दुग्धाब्धिमिव सन्नयद्यात्।।5
पावनाय प्रणयिनां व्योमतीर्थाभिधानकम्।
इदन्तीर्थमदृश्यं स दृश्यतामनयन्मुनिः।।6
भस्मपात्रमिदं पात्रप्रतिपादितकोशकः।
अकरोत स सुरर्षीणामिमाश्च प्रतियातनाः।।7

अर्थ- उन भगवान् शिवजी को नमस्कार है जिन्होंने अपनी ज्योति से विश्व को बार-बार उज्ज्वलित किये हैं, जो जगत् में ज्ञान का विस्तार किये हैं तथा अज्ञानान्धकार को दूर करते हैं।।1

धर्मावासपुर में श्रेष्ठ कुलोत्पन्नता के कारण धर्मावास नाम धारण करने वाले शुद्ध धर्म के अधिवास रूप तथा जो विद्वानों के लिए साक्षात् धर्म रूप हुए।।2

बहुत भूमि, धन सम्पत्ति में जन्म होने पर भी जो वन में प्रवेश कर गये तथा जिन्होंने बड़े लोगों के लिए तुच्छ साथ ही विचित्र ऐसे

---

1. *BEFEO*, Vol. XI, p.399

भिक्षावृत्ति को स्वीकार किया है।।3

उन्होंने इस शम्भुगुहा नामक गुहा को अपनी कीर्ति के लिए बनवाया। इसका सब धन सम्पत्ति उस राजा का ही है जिसे उस विद्वान् ने यहाँ रखा है।।4

पत्थर के घाटों से बँधे इस तालाब को तथा कालिय नर्तन भगवान् श्रीकृष्ण (शेषनाग पर सोने वाले भगवान् विष्णु) को तप के तेज से दुग्धाब्धि के तरह हुए शरीर वाले उस राजर्षि ने संस्थापित किया (पत्थर के घाटों से बँधे इस तालाब को तथा शेषनाग पर सोने वाले भगवान् विष्णु को तप तेजोत्पन्न शरीर वाले उस राजर्षि ने क्षीर सागर ही हो मानो इस तरह से स्थापना किया)।।5

भक्त जनों को पवित्र करने के लिए उस मुनि ने लुप्त हुए व्योमतीर्थ की पुनः स्थापना की।।6

उसी ने इस भस्मपात्र को, पात्र प्रतिपादित कोश को तथा देवर्षियों के इन प्रतिमाओं की रचना (स्थापना) की।।7

९२

प्रह नोक खड़े पत्थर अभिलेख

Prah Nok Stele Inscription

अंगकोर थोम के प्रह नोक नामक बौद्ध मन्दिर में एक खड़े पत्थर के चारों तरफ यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यह बहुत ही क्षतिग्रस्त स्थिति में है।

सेनापति संग्राम के विजय तथा धार्मिक स्थापत्यों का यह लेख वर्णन करता है तथा उसके परिवार द्वारा सेवित बहुत से राजाओं के नाम तथा महिला की ओर से वंशावली की चर्चा भी करता है। सेनापति के अरविन्दाह्द के विरोध में विजयपूर्वक आक्रमण का भी वर्णन इस अभिलेख में है। अरविन्दाह्द दक्षिणी इलाके का एक शक्तिशाली राजा था जिसे हराकर सेनापति ने लोगों को शान्त किया तथा वहाँ तीन आश्रमों की स्थापना की। यही सेनापति संग्राम था जिसने विद्रोही सेनापति कम्बो के विरोध में चढ़ाई की तथा उन्हें मारकर पृथुशैल नामक पर्वत पर भगवान् शिव के मन्दिर के लिए दान दिया। वहाँ उन पर शल्वट के द्वारा आक्रमण हुआ। उसने शल्वट को भी प्रशान वरैरमट नामक स्थान पर हराया तथा आश्रमों की स्थापना की जिसे शिव-भद्रेश्वर को समर्पित किया गया।

माधव के मन्दिर के पास इस सरदार को दूसरा युद्ध करना पड़ा। यहाँ भी वह विजयी हुआ। जब कैदियों और लूटे गये सामानों के साथ वह राजधानी लौटा तो राजा ने लूटे गये सामानों में से एक बड़ा हिस्सा उसे दे दिया। उस सेनापति ने इसे लेने से इन्कार कर दिया और राजा से प्रार्थना की कि इसे शिव एवं राजा के उपलक्ष्य में स्वर्ण का लिंग बनाने में खर्च किया जाये।

इस अभिलेख में राजा का नाम भी था पर केवल उनके नाम का अन्तिम शब्द वर्मन पढ़े जाने योग्य बचा है। आर.सी. मजूमदार का विचार है कि राजा उदयादित्यवर्मन द्वितीय होंगे।

इस अभिलेख में पद्यों की संख्या 161 है जिनमें पद्य संख्या 1 बिल्कुल ही नष्ट हो चुका है। पद्य संख्या 2 से 60 एवं 77 से 91 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।[1]

Verse 1 lost.

............................वेदद्विगिरिराज्यभाक्।
....॥2
........................समास्त्री मल्लिकाह्वया।
....॥3
............धर्म्म........विक्रान्तविषयास्थितम्।
..........स्तुक्स्लानाम्..........................॥4
(म)धुसूदनसद्विप्रः प्राज्ञो राजपुरोहितः।
तस्यामजीजनत् पुत्रौ सावर................॥5
(ह)रिशर्म्मा मतो राज्ञो.......(मू)लञ्चामरचारिणाम्।
दामोदरस्य सावित्री पत्नी या............॥6
(च)त्वारस् सूनवस्तस्या.........येऽम्बुजनेत्रिके।
चारुनेत्रे स्त्रियौ सोमशर्म्म...................॥7
.......राज्याभोगसम्भारैः पुत्रीन् ताम्बुजेक्षिकाम्।
विधिना च श्रीपृथिवीनरेन्द्र..................॥8
.........हन्तौ तु पुरुषौ पौरुषैः क्षत्रवल्लभौ।
तत्प्रीत्या प्रापतुर्र्व्योङ्पुरञ्चे...............॥9
(महे)न्द्रागिरिमारूढे धरेन्द्रे तेऽनुयायिनः।

1. *ISC*, p.140

प्रापुश चंप्रिनमि पुरं पुरञ्च...............॥10

(सात)त्राम्बुजनेत्राख्या पुत्री प्राप पवित्रिकाम्।

मादेव्द्धाख्याञ्च रुचिरां देवव्र...............॥11

..........पवित्र संज्ञाञ्च स्वस्त्रीया..........।

............पतिञ्च श्रीपृथिवीनरेन्द्रो..........॥12

.........(सु)गत भावाख्यो..................।

.................अन्विता कन्या सुभद्रा......॥13

(नरे)न्द्रलक्ष्मि रुद्राणी......................।

............शवाख्यगन्धाख्यास्ते..............॥14

(नरे)न्द्रलक्ष्मिका राज्ञो.....................।

............महिषी वपुषा भाग्य..........॥15

(अ)सौ सुगतभावाख्यौ...................।

..........इव श्रीरण केसरिसंज्ञ...........॥16

दुर्धमानां द्विडिन्द्राणां.....................।

..........दारुणाभिख्यो गिरा राज्ञो रतः पुनः॥17

(अ)मू चमूपती धीरौ......................।

........यातां कुलैस् सार्द्धमारूढं क्ष्माद्यरोत्तलम्॥18

शैलतलं प्राप्य..................................।

म्नकव्वांस्नाम नवग्राममध्यासातं कुलैस् स(ह)॥19

वि............यानजितानन्यै (स्)..........।

ग्रामं संग्रामतः प्राप्तं संग्रामाभिख्यमा......॥20

सुभद्रावल्लभ.............स्वामि............।

...........त्र भारतीति स्त्रीर्व्वीरधर्म्मोमृताम्बुधि॥21

श्रीन्द्रवर्म्मावनिपतेश...........................।

.....(वीर) धर्म्मामृताख्यास्ते मूलञ्चामरचारिणा(म्)॥22

(का)न्तान् र(त्नो) रूसौभाग्यां...........।

प्राज्यै रैरूप्यभोगैस्ते श्रीन्द्रवर्म्म............॥23

श्रीस्तु केशवविप्रस्त्र...........................।

मोन्नामा श्रीयशोवर्म्मक्ष्माभृतश्चा..........॥24

वैष्णव..।
श्रीहर्षवर्म्मदेवस्य भारती.....................॥25
वृहस्पति..।
य..............श्रीजयवर्म्मक्ष्माधरस्य......॥26
....।
वि................ब्रह्मलोकस्य उनी........॥27
....।
शचत्यसू...................................॥28
तत्सुत..।
नवात्मजास् सुवीम्.................नोम॥29
श्री..।
अमृतोति पुमांसस्ते सौदर्य्यास् लिग्धमानसाः॥30
....।
शूरश् श्रीजयवर्म्मेश सैन्येशस् सद्यशा भुवि॥31
....।
द्विडिन्द्रान(न्व)यात्सेनापतिश् श्रीजयवर्म्मणः॥32
....।
सोधिक.............राज्ञः परितो द्वादशाशमत्॥33
..........................सनि संभतः।
देववं................विख्यातो विद्यया भुवि॥34
.......................यौरिमर्द्दने।
श्री सू(र्य्यवर्म्मदेवस्य) वल्लभो ध्वजिनीपतिः॥35
................स् सोप्लभाख्योऽति वल्लभः।
तस्य...........भ.............(भु)वनाधिपः॥36
.........................स् सन्नर्य्य सूत सा।
शिवव्या............प्र..........गन्धसंज्ञकान्॥37
..............सो नवात्मजान्।
णेसंज्ञासूत तनयां केनाम्ना प्रियदर्शनाम्॥38
....यि।

तस्य सेनापती राज्ञो............न्द्राभसानवान्।।39

Only a few letters are legible of vv. 40-49.

रवाविवोदिते यस्मिन् मनोम्भोजरुहा समम्।

....।।50

सुखोदये यस् सकलो लोकाह्लादलसद्द्युतिः।

....।।51

Only a few letters are legible of vv. 52-55.

.....................शर्व्वी वीरोऽस्त कोविद(:)।

.......आस् स प्राक् सङ्ग्रामाख्यो महामः.....।।56

..........तने शीघ्रश् शस्त्राणां मोक्षरोध(ने).....।

............सव्यसाचीव सव्यवामेन सो ऽस्त्र(कृत?)।।57

(अनन्य)प्रतिमो युद्धे परैरपि पुरस्कृतः।

(यः कृष्णो) वार्जुनो वेति भुवि वीरो न तत्समः।।58

............र्थपरो वीरो वीरारिभ्यस् सुरस्त्रियः।

(जेष्य)न् स्वागत्य ताञ्छक्तया प्रीजहीर्षून्दि(शोन)यत।।59

..........राज्ञा महावीर्य्यो महासेनापतीकृतः।

(रक्षणे) राजलक्ष्म्या यो लोकानाञ्चात्मतः प्रति।।60

(आसी)द् रामाद्रि रन्ध्रैर्य्यो द्विडिन्द्रो दुर्द्दमो मृद्ये।

(अर)विन्द ह्रदाभिख्यो दारुणो दक्षिणापथे।।61

(धनुर)शशास्त्रार्थविद् धीरो वशी वीरबलो बली।

(स) दृप्तो दक्षिणाशायां धाम्ना दध्रऽर्द्धमेदिनीम्।।62

देवथ्पल्फस्ग्ञाङ्लयोः स्पोत् ख्मोज्जवद्धय पुरादयः।

यूथपा हर्तुमजिता राज्ञा युयुधिरे रिपुम्।।63

सर्व्वेपि प्रवरा वीर्य्यैर्व्वपुर्द्यामायुद्धैस् स्वकैः।

बलोद्यैस् सबलारातिं निहन्तुन्नशकन् रणे।।64

ध्वस्तानेकमहासेनेश्वरे तस्मिन् महारियौ।

प्रणम्याधिपतिञ्चाह सङ्ग्रामाख्यचमूपतिः।।65

प्रसक्तिं कुरु राजेन्द्र दुर्ज्जयन्तं रिपुं परैः।

शक्तोस्मि तव शक्त्याजौ विजेतुं मां नियोजय।।66

इत्युक्तस्तेन राजेन्द्रो द्दष्टस्तं प्रत्यभाषत।
साधु साध्विति हो वीर कुर्य्यां काममंयथामतम्।।67
इत्युक्तस् सबलस् सेनापति सङ्ग्राम नाम धृत्।
प्रणतः प्रययौ तूर्णं यत्रारीन्द्रौऽतिदुर्द्दमः।।68
गत्वा वैरिगणानुग्रान् नगेन्द्रानिव दुर्ग्गमान्।
निजगाद गिरा वाग्ग्मी भीष्मया पृथ(त)नाधिपः।।69
द्यामधूमध्वजन् ध्वस्तद्विषत्कक्षन् धरापतेः।
स्पर्द्धयन्नचिरन्नाशं लप्स्यसे शलभो यथा।।70
धरित्री वीरभूपेन्द्रपाल्येयं क्वासि कातरः।
संरक्षणा क्षमः क्वेति मोहान् नो मन्द(?)मन्यसे।।71
दुर्बुद्धे चेन्मृद्ये धृष्टः प्रतीक्षस्व क्षणन्त्विषम्।
मृत्युं प्रणेष्यतोऽद्य त्वां ममेषोर्दृर्निवारिताम्।।72
इत्युक्तो दुर्म्मदोऽरन्द्रिो मृद्ये दृढ़पराक्रमः।
प्रचण्डः प्रत्युवाचेद्ञ्चण्ड दण्डञ्चभूपतिम्।।73
मा मा भायय युद्धं हि विद्धयस्फुटजयं पुरा।
क्ष्मामिभाञ्चास्फुटपतिं तस्मान्नो भावमन्यसे।।74
प्रत्युक्तवत्यरातीन्द्रे सङ्ग्रामाख्येन दुस्सहः।
निर्द्दग्धुन् द्विषदिन्द्रैधान् वाणवह्निर्व्यकीर्य्यत।।75
सोऽरविन्द द्वाभिख्यो द्रुतश्चम्पापुरङ्गतः।
सङ्यामाख्यो दुत्तेऽरीन्द्रे राजतीर्थेश्वरं ययौ।।76
....।
....................य तेजः पुज्जमिवात्मनः।।77
....त्।
तत्स्थित्यै शम्भुभक्तस् स रुचिरौ मत्तवारणौ।।78
....म्।
कषोः भूमिञ्चतुर्दायैद्रशभिस्त्रपुभाजनैः।।79
....द्धमे।
स्वशिल्पनिर्म्मितं कान्तमाश्रमं शुभलक्षणैः।।80
....तेन तु।

स्नापिते स्नानसम्भारैर्नतस्वत्रेश्वरेऽदिशत्।।81
.............................द् दशशर्तेग्गेंवाम्।
दासैः पूजाङ्गयोग्यानि प्रत्यहं यान्यकारयत्।।82
........................सार्द्धं सैन्यैश्चमूपतिः।
दुर्वृत्तीनां नराणाञ्च शासने क्ष्माद्यरोपरि।।83
..............................प्रयातेऽमिततेजसि।
सुरद्विषो यथा तस्मिन् राघवे दण्डकाननम्।।84
..............................न्तीव्रोपद्रवभाजिनाम्।
विपक्षध्वस्यमानानां स समृद्धिं पुनर्व्यधात्।।85
......................प्राप्य तत्रान्तर्ग्रहमादद्ये।
रैरूप्य रञ्जिताम्भोज वितानेनोपशोभितम्।।86
.........थतीर्थस्य संशीर्गस्य निरम्भसः।
भूयो गभीरशुभ्राम्भश् शोभते तत्तदोजसा।।87
..............क्तरतस्तत्र विपुलां विदधे समाम्।
ईश्वरे शुद्धभक्तिर्य्यो रुचिरं मत्तवारणम्।।88
...........तेंश् शुक्लचैत्रादौ चन्द्रवारे ससाद्य सः।
त्रैणन्भूमिमिभेन्द्रेण जने व्रः बलयाह्वये।।89
...........द्रांनाम सकुले महिषेन्द्रद्वयेन च।
त्रिंशद्वहत्पटै रूप्यभाजनेन त्रिकदृना।।90
...........पत्रेण भिन्नाण्ड वृषाणां विङ्श्कैर्व्यद्यात्।
तत्राश्रमं शिवाभ्याशतटाकोदक् सचाश्रमम्।।91
(स्नाप)यित्त्वेश्वरं स्नान सम्भारैरदितानतः।
तस्मै रैरूप्यभोगैग्गोंसहस्त्रञ्चाश्रमौ मुदा।।92
(आसी)च्चारोऽतिरुचिरश्चतुरो राजवल्लभः।
शूरो वीरः कंवौनामा राज्ञा सेनापतीकृतः।।93
(य)न्महोबृंहितमहन्मोहोमोही कदाचनन।
तद्द्रोहहृदयः प्रायान्नगर्य्यास् स्वगणैस् सह।।94
(व)पुर्द्यामायुधैर्बुद्धया द्यामिमस् स वसुन्धराम्।
वादि(धि)तुं सकलामेकस् समर्थस् सर्व्वथामतः।।95

तस्य सेना महावीर्य्या महास्त्रा दृढ़विक्रमाः।
संख्यातीताः प्रतिदिशं विभक्ता दुर्दृशान्तगाः।।96
बलोद्यैस् सायुधैस् सार्द्धञ्जि धृक्षुर्म्मानुषस् सुरान्।
अशेषान् स चचारोर्व्वी वीरो यत्रे(थे)व रावणः।।97
देवस्त्रौव्लोङ्ण्नुर्गचेङ् स्त्रौचंनत्राञ्ञ्खभोज्ञ् समाह्वयाः।
सेनाधिपतयश्चान्येऽनेका राज्ञो महाभता(टा):।।98
ते विजेतुं महौजस्काः रिपुं राज्ञा नियोजिताः।
तान्विजित्वा(त्य) रिपुजनस् समाजाजौ जयश्रिया।।99
दृतेषु तेषु राजेन्द्रो जगाद ध्वजिनीपतीन्।
भर्तृभक्ता भता(टा) लक्ष्म्या सेवितास् स्वस्त्रियामृताः।।100
यतध्वं सायुद्यैस् सैन्यैस् स्वकैस् सेनाधिपा(:)क्षणम्।
इत्युक्तः प्रत्युवाचेदं सङ्ग्रामाख्यश्चमूपतिः।।101
अपीन्द्रादिसुरा राजन् रणेऽद्भुतपराक्रमाः।
त्वत्तरो न सहिष्यन्ते क्षणं किमुत जन्तवः।।102
स्वस्थतिष्ठ महाराज त्वत्तरोभिस् सुदुर्जयम्।
परैरपीन्द्रग (श)रणं निश्चितं नाशयामि तम्।।103
सादरस्तं स नृपतिः प्रत्युवाच चमूपतिम्।
सुष्ठु सत्यं वचो जाने यथेष्टन्ते तथैव मे।।104
इतीरितस् स सङ्ग्रामनामा भूयो नतोनतः।
तूर्ण ययौ स सबलौ यत्रारीन्द्रोऽतिदुर्जयः।।105
वीरोपि सबलो वैरी वीर्य्यवित् पृतनापतेः।
पक्षीन्द्रेन्द्रादसून् मोक्तुं माल्यवानिव दिग्गतः।।106
तदा सेनापतिप (म?)तिस् सङ्ग्रामाख्यो बलाधिपैः।
अन्वियाय प्रहारेप्सुस् सबलौद्यं महारिपुम्।।107
पृथुशैलशिवं प्राप्य सम्यगाराध्य सो (स)धिया।
दत्त्वा रैरूप्यनागेन्द्रानरीन्द्रा प्रिम याचत।।108
प्रधानवन्नप्य सुस्थित्यै कालपाशेन पाशितः।
सङ्ग्रामाख्यं प्रतिययौ युयुत्सुस् सबलौ रिपुः।।109
दृष्ट्वा परस्परं दृष्टौ जिदीर्षू विजयश्रियम्।

अभिदुद्रवतुर्व्वीरौ तौ यथा रामरावणौ।।110
स्वबाहुबलवीर्य्येण द्वन्द्वयुद्धैषिणोरपि।
तयोस् सेनाधिपतयः श्रणता इदमब्रुवन्।।111
हे नाथ हे महावीर वी (वि)रमाशु रणं प्रति।
वरिस्यामुष्य विक्षपे समर्थान् नः प्रयुङ्क्ष्व भोः।।112
इत्युक्त्वास्त्रद्यरास् सर्व्वे मृद्ये तत्पुरतस् स्थिताः।
यथाप्रवीणवीर्य्य प्राग्(क्) प्रमुखन्ते प्रजह्निरे।।113
प्रेङ्खद्(त्) खड्गशतदृनीशशूलशक्त्यादि शस्त्रकैः।
गतागतैरूभयतो दिद्युते द्यौर्द्रुतं पुनः।।114
वैरी(रि)जस् शुभता(टा)स् शस्ताश् शिश्यिरेऽनेकतोभृताः।
सान्द्र सक्तास्त्रदिग्द्याङ्गास् सङ्गिनश् शृङ्गिणो यथा।।115
सङ्ग्रामाख्यस् स वैरीन्द्रन्धनुषपाणिमुपस्थितम्।
उदाराभिर्ग्गभीराभिर्व्वाग्मी गीर्भिरभाषत।।116
दुष्टचित्त कुचारित्र ची(चि) रमन्वेषितो मया।
केन गन्ता भयान् मुक्तो मत्तोपीन्द्रसमाश्रितः।।117
तिष्ठ तिष्ठ महावीर मयि वीर्य्य प्रदर्शय।
त्वद्वीर्य्यव्यक्त मुद्वीक्ष्य नेष्यामि त्वां यमक्षयम्।।118
इत्युक्तो विस्मितो गर्व्वो स वीरः प्रत्युवाच तम्।
मा भीषयस्व मा वीर वीर्य्य द्रक्ष्यसि मेऽचिरात्।।119
एषति(ती)क्ष्णश् शरश् शीघ्रमुत्सृष्टस् स्फुटपौरुषः।
यमक्षयं प्रणेष्यन् त्वां चटुना चेन्निवार्य्यताम्।।120
भीष्मामुभाव भाषेतां भाषामन्योन्य भीषणात्(म्)।
प्रस्पर्द्धया ध्वनयतान्धनुर्लब्ध बलं युधि।।121
कंवौनामा तिरुचिरे चापे चेतस्समान्नते।
शरान् सन्धाय सैन्येशदंष्ट्रादौ स चखान तम्।।122
स सैन्येशश् शरैस्तीक्ष्णैर्धृ(र्वृ?)ष्ट पुष्पैरिवाहतः।
वारिवर्षैरिवाद्रीन्द्रो न चकम्पे कदाचन।।123
स्वरदि्भष वह्लयस्त्रनप्तैस् सत्पत्रिभिस्त्रिभिः।
स शिरोग्रीव(वा) वसस्तु (स्मु?)शत्रभाश(श्व)खनत्सभम्।।124

तीक्ष्णेषुभिः क्षतः क्षोण्यान् द्विषन्न(न्नि) पतितः क्षणम्।
चुक्रोशोच्चैरनुचरान् वेदनां वेदयन्निव॥125
यमक्षयङ्गतेऽरीन्द्रे सबले सबलाधिपे।
सुरास् सर्व्वे परे हृष्टाः जयशब्दं समञ्जगुः॥126
प्रत्यागतस्तु संप्राप्य पृथुशैलस्थितं शिवम्।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ सोऽदस्तस्मै स्वमात्मना॥127
तत्रेशे तार शृङ्गारं भोगिभोगाभनीरदम्।
रौप्यं पञ्चदशकट्टिसकरङ्कं प्रतिग्रहम्॥128
अशीति परिमाणाङ्कां निकाशकनकोर्म्मिकाम्।
कान्तां षोडशकर्षापां नानारत्नोपशोभिताम्॥129
भूरिभोगीन्द्रभोगाम शोभितो भयतोमुखम्।
दोलायानं मायूरेण स्वर्णदण्ड शलाकिना॥130
अष्टाष्टनवभिः कृष्णमाद्योमाह्नीनवारके।
दत्त्वा मात्रे लवङ्नाम्न्यै वर्त्वच् नाम्नोधनानि जुः॥131
रूप्यं पञ्चपणा(ण?) पत्र पुरन्ताम्रप्रतिग्रहान्।
वेदान् त्रिदशकट्टीङ्श्च पञ्चनिष्काङ्श्च माधवान्॥132
तत्र यूथपनाथोथ स्थितवान् वतिथस्ति...........।
एकदा देहिनान्दूराद्विश्वतश् शुश्रुवे वच(:)॥133
एषौऽसौ सल्वत्समाह्वानो महावीर्य्योऽतिदुस्सह(:)।
महोत्साहो महामायः कूटयुद्धेऽति कौशलः॥134
सिद्धिकाराभिद्यानोन्यस् सुभटस् सोदरानुजः।
सगा(शा?)न्ति भुवनाह्वानो वीरोऽन्योरणदुर्म्मदः॥135
एकैकोपि स्ववीर्य्येण स्वबलौद्येन गर्ब्बधृत्।
कंवौनामाद्यिको युद्धे कलेष्टा लोकान्त(नक्?)लिप्रभः॥136
स सेनाधिपतिश् श्रुत्वा वाचस्तदनुकम्पया।
यूथपान्सुविभज्याशु विजेतुन्तान् समभ्ययात्॥137
दृष्ट्वा सदायुद्योद्वृष्टं स्ल्वत्संज्ञं सबलं बली।
लीलयाभिलषापोच्चैश्चतुरो रणरङ्गवित्॥138
महाच्चित्रम हो वीर सिङ्हो भृगयते मृगम्।

प्रागद्य तु मृगो राजसिङ्हं मृग(यते)खयम्॥139
इत्युक्तस्तेन सबलस् स्लवत्संज्ञः प्रीतिमान् पटुः।
धृष्टेन वचसोवाच चमूपतिमभीतवान्॥140
मृगो गर्व्वी मृगपतेरभीतोऽहञ्च दू(रतः)।
श्रुत्वा त्वद्‌भुजवीर्य्यन्त द्रष्टुं साक्षात् प्रयामि वः॥141
परस्परविवादे तु स्ल्वत्संज्ञस् स बलाधिपम्।
शरशक्त्यादिशस्त्रैस्त्सै निकन्निचखान च॥142
बाणैरन्यैश्च चिछेद चापज्यान्तस्य सद्‌भुजौ।
समं सङ्ग्रामसंज्ञोऽन्यान् सिद्धिकारादिकान् भयन्॥143
दूरात् प्रद्यावतो बाणाङ् दीप्तद्युति समप्रभान्।
क्षणं प्रोद्वीक्ष्य सभयात् तेऽपलायन्त शत्रवः॥144
द्विषतः प्रदुतान् प्राणान् मोक्तकामान्दिशोगतान्।
स सेनाधिपतिश् श्रीमान् सेनाभिस्तान् समन्वयात्॥145
प्रशान्व्रैम्म्र्यत्प्रमाणन्तु सम्प्राय पृतनाधिपः।
दुर्जयारिजनाञ्जेतुन्तत्रस्थानव्यु(ध्यु?) वास ताम्॥146
अष्टाष्टनवभिर्भूमिः प्रशान् वैम्म्र्यणप्रदेश के।
साधिता तिङ्किनिमूल पुष्पमूलाख्य देहिनोः॥147
रूप्यपत्रपुटेनाष्ट पणेनैकतुलैस्तया।
ताम्रप्रतिग्रहैर्व्वेदैष् षष्टिभिस् सद्‌वृहत्पटैः॥148
तत्राश्रमौ शुभावाद्यौ धनधान्यादि पूरितौ।
सद्विमानाविवानीतौ तेन भूमिभुवा(ं) दिवः॥149
श्रीभद्रेश्वरशम्भौ तो सद्‌भक्त्या गोसहस्त्रकम्।
दासानाञ्च द्विशतकं विङ्शकं सोऽदितालना॥150
ततस्तव्स्थानरीञ्जित्वा कृत्वा सर्व्वं यथोदितम्।
धृष्टस् स सबल सेनापतिस्तान् पुनरन्यि(न्व)यात्॥151
जलामलकसन्धानमाधवम् ध्वजिनीपतिः।
समेत्याराध्य सुधिया धाम्नास्वस्थाज्जहार तान्॥152
हरये चतुरा योगान् सोऽदाद्रूप्य प्रतिग्रहम्।
भाजनं राजतं घन्टायुगं पञ्च कदा(टा) हकान्॥153

माधवं स्नापयित्वा स स्नानभोगैर्नतोऽदिशत्।
शौरये गोसहस्त्राणि तानि सर्व्वाणि चात्मना।।154
लोकातीतापदानञ्च धैर्य्यञ्च सोऽनुकम्पया।
दर्शयञ्छृङ्खलैर्ब्बद्ध्वा धराभर्गेऽदित द्विषः।।155
क्षोणीभृतः क्षितिमिभां रिपुपावकेन
प्लुष्टाञ्चिरं प्रशमयन्निव विप्रकीर्णाम्।
वस्वम्बवनेक विद्यमाहृतमेष दिग्भ्यस्
सद्भक्त्ये भृतिमदादवनीन्द्रनाथे।।156
एष क्षितीश्वरपतिः प्रणतञ्जितारिं
सेनाधिपं करुणयार्द्रमना बभाषे।
वीरेन्द्र हे मम हितं तव कर्म्म युक्तं
तद्वीरतामनुपमां मयि भक्तिमाह।।157
सर्व्वन्धनन्तव हृतं पुनराहरेया-
श्येमानि में तव वसूनि हि कल्पितानि।
त्वद्भक्त्योऽतिरुचिरा रमयन्ति नित्यं
मामेव नेदृशव सूनि वसूपमौजः।।158
वीरेश्वरो नृपमुवाच कृपा कृपात्म-
ञ्चेन्मे सुवर्णमियलिङ्गं गतेश्वरे ते।
सूक्ष्मान्तरात्मः निधनानि हृतानि भक्त्यास्
साफल्यमद्य मम कर्त्तुंभिमानि दिश्याः।।159
क्षोणीपतिः प्रणमता प्ततनाद्धिपेन
प्रत्युक्त एवमनुचिन्त्य चिरादुवाच।
वाढं महाभटपते तव भक्तिरीदृक्
पूर्णेन्दुविम्बरुचिरा प्रथितायुगान्तात्।।160
योधाद्धियो युधि कृतारिजयोऽधिगन्तुं
भूतिं क्षितौ क्षितिमृता मणितस्तथेवम्।
बद्धाञ्जलिः प्रणत उत्थितवान् प्रसन्ने-
स्तच्छासनैरिथ(व) रघुर्न्नितरां रराज।।161

अर्थ- ....राज्यके भागी...

......।।2

.........समान स्त्री मल्लिका नाम की..

.....।।3

..............धर्म..........विशेष रूप से विषयों से भरा हुआ............

....।।4

पण्डित मधुसूदन नामक राजपुरोहित अच्छे ब्राह्मण ने उस........ दो पुत्र...........जन्म लिया।।5

देवों के से आचरण करने वालों के मूल रूप हरि शर्मा, राजा से पूजित..........वह दामोदर की पत्नी सावित्री...............।।6

उसके चार पुत्र थे................जो दोनों कमल से आँखों वाली सुन्दर आँखों वाली दो स्त्रियाँ............सोम शर्मा..............।।7

राज्य के समन्तात् भाव से भोगों के सम्भारों से उस कमलनयना बेटी को.......और ब्रह्मा से श्री पृथ्वी नरेन्द्र............................।।8

............हन्तौन्तु ....दो पुरुष क्षत्रियों के प्रिय पुरुषार्थों से...... ...उसकी प्रीति से दोनों ने पाया था..................................।।9

महेन्द्रगिरि पर चढ़े हुए राजा के वे अनुयायी थे। जिनने चम्प्रि नामक पुर को पाया था और पुर को.................।।10

वहाँ उस कम्बुज नेत्रा नाम वाली ने पवित्रि का नाम वाली बेटी को पाया था।........।।11

.............और पवित्र नाम वाली को जो बहन की बेटी............. ....और पति को श्री पृथ्वी नरेन्द्र...........।।12

..........सुगत भाव नाम वाला.............युक्त कन्या सुभद्रा.......... ....।।13

नरेन्द्रलक्ष्मी रुद्राणी............शव नामक गन्ध नामक........वेदों.... ....।।14

नरेन्द्रलक्ष्मी का राजा की..................पटरानी शरीर से भाग्य..... ....।।15

वह सुगत भाव नाम वाला................तुल्य श्रीरणकेसरी नाम..... ....।।16

दुर्धमों के शत्रु राजाओं के..................दारुण नाम वाला राजा की वाणी से फिर रत रहने वाला।।17

वे दो सेनापति जो धीर थे..........गये प्राप्त हुए, कलों से साथ चढ़े ऊँचे पर्वत पर।।18

पर्वत की तलहटी पाकर........कूर्व्वस् नाम नवग्राम..................
...........।।19

वि.....यान दूसरों से जीते हुओं के.........संग्राम नाम वाले ग्राम को युद्ध करके पाया था।।20

सुभद्रा के प्रिय..........स्वामी..........त्र भारती नाम की स्त्री जो वीर के धर्मरूप अमृत के समुद्र तुल्य।।21

श्रीन्द्रवर्मन राजा की..........वीरधर्मामृत नाम वाले वे अमरतुल्य आचारियों के मूल रूप।।22

सुन्दरों को रत्न के समान जंघा के सुन्दर भाग्यवाली.......बढ़े हुए धन, रुपये और भोगों से वे श्रीन्द्रवर्मन.............।।23

लक्ष्मी तो केशव ब्राह्मण..........मौन नामक श्रीयशोवर्मन राजा के................।।24

वैष्णव..........श्री हर्षदेव राजा की वाणी....................।।25

बृहस्पति..........श्री जयवर्मन राजा के........................।।26

..................वि..........ब्रह्मलोक की उनी..................।।27

...........शचत्यस्...।।28

.........उसका पुत्र.............नये पुत्र........सुवीम.........नोभ।।29

.........श्री..........अमृता यह नाम.........वे पुरुष सहोदर..... स्नेहिल मानस वाले........।।30

................पृथ्वी पर शूरवीर श्री जयवर्मन राजा के सेनापति अच्छे यश वाले.......।।31

................शत्रु राजा के कुल से...............श्री जयवर्मन के सेनापति................।।32

...........वह अधिक ....राजा के चारों ओर..........सब ओर.... ....बारह........।।33

..............सनि सम्मत............देव...........पृथ्वी पर विद्या से विशेष प्रसिद्ध था।।34

..............जो शत्रु के मर्दन करने में..........श्री सूर्यवर्मन राजा का प्रिय............।।35

...........स्.........नाम का अतिशय प्रिय..........उसका........भ.... ......भुवन का पति...।।36

..........स् सन्नरि को उसने जन्म दिया......गन्ध नाम वालों को जन्म दिया था।।37

...........पुत्रों को...........पो नाम की पुत्री को.............नाम से जन्म दिया।।38

.........उस राजा के सेनापति...........इन्द्र की आभा के समान आभा वाले नव को।।39

उसके सूर्य के समान उदय होने पर मनरूप कमल से उत्पन्न तुल्य................।।50

सुख के उदय होने पर जो सब लोगों के आनन्द से शोभित प्रकाश वाला..........।।51

महादेव का वीर अस्त्र में पण्डित..........वह पहले संग्राम......... ....।।56

...........तने शीघ्र.........शस्त्रों के छोड़ने और रोकने में.......... अर्जुन के समान दाहिने और बाएँ दोनों हाथों से वह शस्त्र चलाने वाला था।।57

युद्ध में अद्वितीय प्रतिभा वाला वीर शत्रुओं से भी अग्रेसर माना जाने वाला आदरणीय.............जो कृष्ण या अर्जुन पृथ्वी पर उसके समान वीर न थे।।58

............वीर वीर शत्रुओं से देवांगनाएँ.........जय करता हुआ, स्वागत करके उन्हें शक्ति से प्रहार करने की इच्छा वालों को दिशाएँ न जो।।59

............राजा द्वारा महावीर्य, बली, सेनापति बनाया गया था...... ...राजलक्ष्मी के रक्षण में जो लोगों की आत्मा के प्रति............।।60

जो युद्ध में दुखों से दमन करने योग्य शत्रुओं का राजा शाके 913 में था, दक्षिणापथ में भयंकर अरविन्दह्रद नाम वाला था।।61

धनुःशास्त्र के अर्थ का ज्ञाता, धीर, इन्द्रियों को वश में रखने वाला, वीर, बली, उसने दक्षिण दिशा में तेज से आधी भूमि को अधिकार में किया था।।62

देवथ्, पल्ख, गजाहलंपो, स्योन पुर आदि यूथप लोग हरने अजित राजा द्वारा शत्रु से युद्ध किया गया था।।63

सभी वीर्य बल से प्रकृष्ट श्रेष्ठ अपने शरीर, तेज शस्त्रों से एवं बलों के समूहों से सबल शत्रु को रण में न मार सके।।64

उस अनेक महासेनापतियों के ध्वंस करने वाले उस महा शत्रु के, संग्राम नामक सेनापति ने प्रणाम करके राजा से कहा।।65

हे राजे! प्रसक्ति करें, दूसरों से दुख से न जीतने योग्य शत्रु को तेरी शक्ति से युद्ध में विजय के लिए मैं शक्त हूँ मुझे नियुक्त किया जाये।।66

उसके द्वारा यह कहने पर राजा प्रसन्न होकर उससे कहा- अच्छा, अच्छा, हे वीर! तुम्हारे कथनानुसार यथेच्छ करूँ।।67

राजा के यह कहने पर सबल सेनापति संग्राम नाम वाला प्रणाम कर शीघ्र गया जहाँ अतिशय दुर्दम शत्रु था।।68

जो पर्वतेश्वर समान दुर्गम थे उन उग्र शत्रुओं को जा करके उन्हें भयंकर वाणी से थोड़ा और सार बोलने वाले वाग्मी पृतना के राजा ने बात कही।।69

राजा के तेज और धर रूप धुएँ की ध्वजा वाले शत्रु के कक्ष को ध्वस्त कर चुकने वाले के होड़ लेते हुए शीघ्र फतिंगे के समान नाश को प्राप्त करोगे।।70

यह भूमि वीर भूपेन्द्रों द्वारा पालन योग्य है तू तो कायर ठहरा! तू कहाँ और वीर भूपेन्द्र कहाँ? तू तो कायर है, वे वीर राजाओं के स्वामी हैं। सम्यक् प्रकार से रक्षा में समर्थ वे कहाँ?-यह बात मोह से रे मन्द बुद्धि तू नहीं मानता?।।71

हे दुर्मते! यदि तू युद्ध में ढीठ है तो तू क्षण भर तेजस्वी प्रतीक्षा

कर, तेरी मृत्यु का प्रणयन निकट भविष्य काल में करने वाले मेरे बाणों की अमोघता-अचूकता अतएव अतिशय अनिवार्यता देख ले!।।72

ऐसा कहने पर शत्रु राजा जो प्रचण्ड था लड़ाई में मजबूत बली अतिशय पराक्रमी था। वह प्रचण्ड इस प्रकार तीव्र दण्ड देने वाले अतएव चण्ड दण्ड सेनापति से वाक्य बोला था।।73

पहले अपनी हार जान ले क्योंकि अभी अस्फुट रूप में है। युद्ध को मत प्रकाशित कर मत प्रकाशमान कर, ऐसी बात मत बोल इससे तेरी हार निश्चित है जो अभी अस्पष्टतया प्रतीयमान हो रहा है।।74

शत्रु राजा के जिसका नाम था संग्राम उसके दुख से सहने योग्य प्रत्युत्तर सुन करके शत्रु राजाओं के समूह रूप लकड़ियों को जला डालने के लिए बाणों के समूह रूप आग छींटने लगे थे याने तीरन्दाजी प्रारम्भ की थी।।75

जो अरविन्दह्रद इस नाम से ख्यात था- वह शीघ्र दौड़ा हुआ चम्पापुर गया था। संग्राम नाम के शत्रु राजा के भागने पर राजतीर्थेश्वर को प्राप्त हुआ था।।76

..........अपनी आत्मा के प्रकाशों तेजों के समूह की नाई।।77

....उसकी स्थिति पालने के लिए शिव के भक्त उसने सुन्दर दो मतवाले हाथी दिये थे।।78

.................द्वये................।।79

अपनी शिल्प कुशलता द्वारा निर्मित शुभ लक्षणों से युक्त सुन्दर आश्रम को।।80

उसके द्वारा..........................।।81

नम्र उसने स्नान के सम्भारों तड़ाग आदि सम्भारों स्नान विधि विविधता सम्भारों से युक्त ईशलिंग स्थापित करके उस स्थान पर वहाँ ईश्वर के विषय में यह आदेश दिया।।82

.........और सैन्यों के साथ राजा..........दुर्वृत्ति मानवों के शासन में........।।83

अमित तेजस्वी के युद्ध यात्रा करने पर जैसे राक्षस लोग उस राम पर दण्डक वन में टूट पड़े थे वैसे ही अति तेजपुंज राजा के प्रयाण

प्रकाशित होने पर लोहे से लोहे बजाना चाहता था।।84

..........तीव्र उपद्रवियों के शत्रु द्वार समृद्धि के ध्वंस किये जाते हुए देख करके उसने पुनरपि समृद्धि का विधान किया था।।85

..........पा करके वहाँ गृह के अन्दर........धन और रुपयों से रंजित कमल के वितान से समीप शोभित किया था।।86

...........उस तीर्थ के सम्यक् प्रकार से जीर्ण-शीर्ण होने पर निर्जल स्थान होने पर फिर भी तालाब गम्भीर गहरे सफेद पानी वाला उस ओज से शोभते हैं। उस राजा के उस बल से पुनरपि गहरा स्वच्छ जल वाला जलाशय वहाँ शोभायमान है।।87

........वहाँ विशाल सभा की थी। जो ईश्वर में श्रद्धा-भक्ति वाला है उसने सुन्दर मतवाले हाथी को प्रदान किया था।।88

.........चैत्र शुक्ल पक्ष के आदि में सोमवार को उसने साधना की थी। श्रैणान भूमि का दान गजेन्द्र के साथ वलय नामक विषय में किया था। उसने कुल में.........दान किया था।।89

उसने तीस विशेष धन, रुपयों के बर्तन पात्र से तीन कट्टी संख्या में दान किया था।।90

.......पत्र से बीस भिन्न-भिन्न साँड़ के साथ दान का विधान किया। वहाँ आश्रम को शिवजी के निकट तड़ाग जल वाला उसने खुदवाकर आश्रम को दिया।।91

ईश्वर को स्नान के सम्भारों से स्नान कराकर दिव्य प्राणी ने दान किया था और ईश्वर को धन, रुपये भिन्न-भिन्न भोगों से हजारों संख्या में दो आश्रम खुशी से बनाये थे।।92

राजवल्लभ नामक एक अतिशय शोभायमान गुप्तचर था जो शूरवीर था। कम्बौ नामक था जो राजा के द्वारा सेनापति बनाया गया था।।93

जिस उत्सव के बढ़े हुए महामोह वाला मोही कभी उसके अपकारयुक्त हृदय होकर नगरी से अपने समूहों से युक्त भाग निकला।।94

वह शरीर, तेज हथियारों से बुद्धि के द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी को बाधा पहुँचाने के लिए अकेला सभी प्रकारों से समर्थ माना गया था।।95

उसकी सेनाएँ महावीर्य, बल वाली, बड़े हथियारों वाली मजबूत पराक्रम वाली थीं असंख्य रूप की प्रतिदिन विभक्त होकर बुरी दृष्टि के अन्त तक चली गयी थीं।।96

बलों के समूहों से हथियारों से युक्त आयुधों के साथ मनुष्य होकर देवों को ग्रहण करने का इच्छुक था। सभी देवों को पकड़ने के लिए रावण के समान वीर वह समूची पृथ्वी का चप्पा-चप्पा छान चुका था।।97

देवस्त्रौ लोङ् नुर्ग चेङ् स्त्रौचं नत्राञ्ञ्ख्भोज्ञ्स नाम के उसके सेनापति लोग थे और अन्य अनेक राजा के योद्धा थे जो महाभट्ट थे।।98

वे विजय के लिए महान् बल वाले शत्रु को जीतने के लिए राजा के द्वारा नियोजित थे। उन पर विजय पा करके शत्रु लोग संग्राम में जयलक्ष्मी के साथ आ जुटे थे।।99

उनके मरने पर राजा बोला सेनापतियों से स्वामिभक्त योद्धा वीर लोग लक्ष्मी से सेवित हुए, अपनी स्त्री से युक्त मृग हुआ।।100

हथियारों सहित सैनिकों, जो अपने सैनिक हैं, उनके साथ सेनापति लोग एक क्षण यह कहने पर उत्तर दिया संग्राम नाम वाले राजा ने।।101

हे राजन्! इन्द्र आदि देव लोग भी जो रण में आश्चर्यकारी पराक्रमी हैं, वे भी त्वत्तर नहीं सहेंगे एक क्षण भी और प्राणी क्या सह सकते हैं? उनकी क्या बात है।।102

स्वस्थ होकर ठहरिये महाराज त्वतरों से सुन्दर रीति से दुख से जीतने लायक शत्रुओं द्वारा भी इन्द्र की शरण निश्चित है उसे जरूर नष्ट कर दूँगा।।103

आदरपूर्वक उस राजा ने उस सेनापति को प्रत्युत्तर दिया था सुन्दर सत्य वचन जानता हूँ जैसी तेरी इच्छा है वैसी मेरी भी इच्छा है।।104

यह कहने पर वह संग्राम नामक राजा फिर नम्र हो करके शीघ्र बल से सेनाओं से युक्त होकर वह वहाँ गया जहाँ अतिशय दुर्जय शत्रु था।।105

वीर भी सबल वैरी वीर्य का ज्ञाता पृतना पति का गरुड़ पक्षीन्द्र इन्द्र से प्राणों को छोड़ने के लिए माल्यवान् के समान दिशा को गया

था।।106

तब सेनापति संग्राम नाम वाला बल के आधिपों (सेनापतियों) के साथ बल सहित समूहों को प्रहार करने का इच्छुक हो करके महाशत्रु के पीछे गया था।।107

पृथुशैल पर शिव को पा करके सम्यक् रूप से उनकी आराधना करके उसने बुद्धि से धन, रुपये और गजेन्द्र दे करके शत्रुओं की प्राप्ति की याचना शिवजी से की थी।।108

खूब दौड़ता हुआ भी सुन्दर स्थिति के लिए काल के बन्धन से बँधा हुआ युद्ध का इच्छुक सबल शत्रु संग्राम नाम के प्रति गया था।।109

वे दोनों आपस में हर्षित विजयलक्ष्मी के हरण के इच्छुक सब ओर दौड़ पड़े थे जैसे आमने-सामने राम और रावण दोनों के दोनों अभिमुख दौड़ पड़े थे।।110

अपने बाहुबल के वीर्य से मल्ल युद्ध के इच्छुक भी हो करके लड़े थे दोनों ही उन दोनों के सेनापति लोगों ने पैरों पड़ करके यह कहा था. .।।111

हे नाथ, हे महावीर! शीघ्र युद्ध के प्रति वीर को यह कहा था कि इस वीर के फेंकने में समर्थ हम सबको प्रयुक्त किया जाये।।112

यह कह करके सभी हथियारधारी लोग युद्ध में उसके आगे स्थित हुए थे जैसे पहले प्रवीण वीर्य वाले के प्रमुख को वे प्रहार करने लगे थे।।113

चमकते एवं फड़कते हुए अस्त्रों जैसे तलवार, सैकड़ों घातक बन्दूक, शूल, शक्ति आदि शस्त्रों के द्वारा दोनों ओर गत और आगत हथियारों से चमके हुए आकाश की ओर पुनः शीघ्रता से भाग खड़े हुए थे।।114

वैरी की शुभता और प्रशस्तता हुई थी, अनेक मरे थे। रक्त से लथपथ अंगों वाले बने थे जैसेशृंगी के संगी हों।।115

उस संग्राम नामक ने उपस्थित धनुर्धारी शत्रुओं को उदार एवं गम्भीर वाणी (थोड़े और सार बोलने वाले) वाग्मी की भाँति कही थी।।116

हे दुष्ट चित्त, कुत्सित निन्दित चरित्र वाले बहुत समय तक मेरे द्वारा तू खोजा गया है किससे जानने वाला भय से मुक्त होकर मतवाले होकर भी भाग कर इन्द्र की शरण ली है।।117

ठहर, ठहर महावीर! मुझपर वीर्य बल का प्रयोग प्रदर्शित कर तेरे वीर्य जो व्यक्त है उसे देखकर तुझे यम क्षय को ले जाऊँगा मार डालूँगा (जिस अक्षय लोक को ले जाऊँगा)।।118

इस बात के कहने पर आश्चर्यचकित होकर वह गर्वी उससे बोला था (प्रत्युत्तर), मत डरा, धमका, मत भय दे, हे वीर शीघ्र मेरा वीर्य तू देखेगा कि मैं कैसा बली हूँ।।119

यह तेज बाण शीघ्र छोड़ा गया जिसका पुरुषार्थ स्पष्ट प्रतीत है जो तुझे यम क्षय को (नाश को) पहुँचाता हुआ नष्ट कर देगा यदि झटपट हो सके तो इसका बचाव (निवारण) कर ले।।120

दोनों भयंकर वीरों ने परस्पर भयंकर वाणी दोनों से अपनी-अपनी खरी-खोटी भयंकर वाणी कही। होड़ लेने के क्रम में धनुष से लब्ध बल को युद्ध में धनुष के टंकार को ध्वनित किया।।121

कम्बु नाम के अति सुन्दर धनुष पर चित्र के समान बल बांकरे के उसने बाणों का सन्धान करके सेनापति के दाँत आदि में उसे खन डाला था।।122

उस सेनापति ने तेज बाणों से फूलों की वर्षा के समान बाण बरसाये थे, चोटें पहुँचायी थीं। जल की वर्षा के समान अद्रीन्द्र कभी न काँप सका था, सहन करता ही रहा।।123

तब शब्दायमान तीन अग्नि बाण अभिमन्त्रित करके उसने उसके सिरों, गर्दनों, छातियों में शीघ्र साथ-साथ बाण मारे थे।।124

एक क्षण तेज बाणों से कटकर पृथ्वी पर शत्रु गिर पड़ा था ऊँचे स्वरों से अनुयायियों को आह्वान रुलाई के साथ वेदना का ज्ञान कराता हुआ मानो बोला था।।125

शत्रु के मर जाने पर जो शत्रु सबल था और उसके सेनापति भी साथ थे (मरने पर) सभी देव लोग परम प्रसन्न होकर जय शब्द साथ-साथ गाने लगे थे।।126

पृथु शैल पर लौटकर पृथु शैल पर स्थित शिवजी को दण्डवत् प्रणाम करके उसने उन्हें धन दिये थे।।127

उसने उस स्थान के शिवजी के विषय में तार,शृंगार भोगी के भोग की आभा की नाई जल देने का उपकरण रुपये पन्द्रह कट्टी परिमित और करंक दान दिये थे।।128

अस्सी परिमाण के चिह्नों वाली निकास सोने की ऊर्मि वाली सुन्दरी सोलह कर्षों की नाना प्रकार के रत्नों से समीप शोभायमान रूप से दान में अर्पित की।।129

बहुत-बहुत फणीन्द्रों के फणों की आभाओं से शोभित दोनों ओर मुख वाला डोलते हुए मयूर निर्मितों से स्वर्ण के दण्डों की शलाका वाले पदार्थ दिये थे।।130

988 शाके में माघ कृष्ण तृतीया तिथि के दिन में माता के लिए जिसका नाल वङ् था उसे वर्व्वच नाम के धन दिये थे।।131

रुपये, पाँच पण, पत्र, पुर, ताँबा के दान दिये थे; चौंतीस कट्टी पाँच निष्क मधु के समान मीठे पदार्थों का दान दिया था।।132

वहाँ यूथपनाथ (सेनापति) ठहरा.......एक बार शरीरधारियों का दूर से विश्व से वचन सुना उसने।।133

यह वह था जिसका नाम स्ल्वत् नाम वाला अतिशय दु:सह वीर्य-बलशाली महान् अध्यवसायी (उत्साही) बड़ी माया वाला कूटयुद्ध में अतिशय कुशल था।।134

उसका छोटा भाई सिद्धिकार नाम का था दूसरा सुयोद्धा (जो उसका सहोदर छोटा भाई था), वह शान्ति भुवन नाम का वीर दूसरा जो रण में दुर्मद था।।135

एक एक भी अपने वीर्य से अपने बलों के समूह से गर्वीला था। कम्बौ नाम का अधिक युद्ध में क्लेश देने वाला लोगों का अन्त करने प्रभाहीन करने वाला था।।136

उस सेनापति उसकी अनुकम्पा से युक्त वाणियों को सुनकर सेनापतियों को शीघ्र विभाजित करके उन पर विजयार्थ उनके निकट गया था।।137

उस बली ने सर्वदा हथियारों से लैस स्ल्वत नाम के सबल को देख करके चतुर और रणरंग का ज्ञाता ऊँचे स्वर से खेला से कहा था।।138

महान् विचित्र बात यह है कि वीर सिंह मृग को खोजता है पहले आज तो मृग राज सिंह (राजा रूप सिंह) को खुद खोजता है।।139

उसके यह कहने पर स्ल्वत नामक सबल प्रीतिमान और चतुर ढिठाई से वचन बोला निर्भय होकर सेनापति से।।140

गर्वी मृग सिंह से निडर मैं तो दूर से तुम्हारे बाहुबल को सुन करके उसे देखने के लिए साक्षात् तुम्हारे समीप प्रयाण युद्ध यात्रा करता हूँ।।141

बाणों की शक्ति से बाणों से शक्तियों से उसके सैनिक को खनने लगा था।।142

संग्राम नामक ने बाणों और दूसरे हथियारों से धनुष को डोरी को और उसकी बाँहों को साथ ही साथ दूसरे सिद्धिकार आदि योद्धाओं का काट डाला।।143

दूर से दौड़ते प्रकाशित प्रकाश की प्रभा वाले बाणों को क्षण भर देख करके डर से वे शत्रु लोग भाग खड़े हुए थे।।144

भागे हुए शत्रुओं के प्राणों को छोड़ने के इच्छुकों को दिशाओं में गये देख करके वह सेनाधिपति श्रीमान् सैनिकों के साथ उनके पीछे-पीछे चल पड़ा था।।145

वह पृतनाधिप प्रशान् वैगर्यत् प्रदेश तक पहुँच करके दुर्जय शत्रुओं को जीतने के लिए वहाँ उस स्थान पर रहने लगा था।।146

उसने 988 शाके में प्रशान् व्रैगर्यत प्रदेश में तिंकिनी मूल और पुष्पमूल दो देहियों (शिवों) का साधन।।147

रूपे के पत्ते के पुटक (पूड़े) (दोने) से आठ पणों से एक तुलों से साधन किया था चार ताँबे के दानों से और साठ अच्छे बहुत बड़े कपड़ों से।।148

वहाँ दो आश्रमों को जो शुभदायक थे धनों से आढ्य थे, धन-धान्य आदि से पूरित थे। अच्छे दो विमानों के समान उसके द्वारा लाये गये थे उस भूमि के मानव द्वारा आकाश से (स्वर्ग से)।।149

श्री भद्रेश्वर शम्भु दोनों शिव को हजार गायें, दो सौ दास, अच्छी भक्ति से आत्मा से उसने प्रदान रूप समर्पित किये थे।।150

तब वहाँ स्थित शत्रुओं को जीत करके जैसा पूर्व गया। सब करके ढीठ वह सबल सेनापति उनके पीछे फिर चला (जो शत्रु थे)।।151

जलामलक सन्धान माधव भगवान् को प्राप्त करके वह सेनापति जाकर आराधना करके उस पण्डित ने अपने तेज से उस स्थान पर रहने वालों का हरण किया था।।152

विष्णु भगवान् के लिए चार आयोग रूपों के दान, चाँदी के बर्तन, दो घण्टे, पाँच कड़ाहा दिये थे।।153

माधव भगवान् की स्थापना करके नम्र होकर सुन्दर स्नान और भोगों से पूजने का आदेश दिया। भगवान् को हजार गायें और वे सब जो कहे गये हैं, आत्मा से दिये थे।।154

लोगों के द्वारा लाया गया पवित्र आचरण, मान्य कार्य और धैर्य को उसने अनुकम्पा से दिखलाता हुआ सीकड़ों के द्वारा बाँध करके (शृंखलाबद्ध रूप से) राजा को समर्पित किये (बाँधे हुए शत्रुओं के समूह)।।155

राजा की इस भूमि को शत्रु रूप अग्नि से चिर काल तक जलायी, झुलसायी गयी, विस्तृत चौड़ी तितर-बितर की गयी भूमि को जो धन, जल अनेक प्रकार से आहृत सब ओर हरण किया गया (हरी गयी) भूमि को इसने दिशाओं से अच्छी भक्ति के लिए नौकरी (दासता) के मद से राजा की दखल में करा दिया था।।156

यह क्षितीश्वरपति शत्रु के जीतने वाले पैरों पड़े (प्रणत) सेनाधिप से दया से बोले- हे वीरेन्द्र! तेरा कार्य मेरे हितकर युक्तियुक्त है, वह वीरता अनुपम है मुझमें तेरी माँ कहती है।।157

सब धन हरण किया हुआ था जो पुनः तुमने आहरण किया है (या करोगे, या करो) और ये धन जो मेरे हैं सब तुमको मैं देता हूँ। तुम्हारी भक्तियाँ अति सुन्दरी हैं नित्य मुझे प्रसन्न करती हैं। मुझको ही ऐसे नहीं ऐसे धन इन्द्र के समान बली के ये धन हैं।।158

वीरेश्वर ने राजा से कहा था हे कृपात्मन्! आपकी कृपा है ये धन

सुवर्णमय लिंगत ईश्वर (श्री शिवजी) के है। जो शिवजी आपके हैं। सूक्ष्म अन्तरात्मा में हरे हुए धन भक्ति की सफलता के वास्ते आज मेरा कार्य है कि इन धनों को शिव के लिए दिया गया ऐसा आप आदेश दें।।159

राजा प्रणाम करते हुए पृतनाधिप के द्वारा प्रत्युत्तर देने पर इस प्रकार पश्चात् सोच करके बोला था- ठीक है, स्वीकृत है, अस्तु, हे महामह! तेरी ऐसी भक्ति है जो पूर्ण चन्द्र के समान सुन्दर है वह भक्ति युगों के अन्त तक रहेगी।।160

योद्धाओं का अधिप युद्ध में शत्रु पर विजय पा चुकने वाला जानने के लिए ऐश्वर्य को पृथ्वी पर राजा के द्वारा कहा गया वैसा इस प्रकार प्रसन्न होकर अंजलि बाँध करके प्रणत (पैरों पड़कर) उठा, उसके शासनों से (मानो) जैसे राजा रघु अतिशय शोभित हुए थे।।161
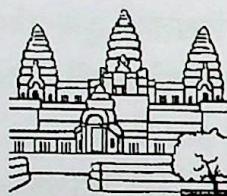
93

प्रसत प्रह क्षेत अभिलेख

Prasat Prah Khset Inscription

अंगकोर क्षेत्र में प्रसत प्रह क्षेत नाम का एक छोटा मन्दिर है। इस अभिलेख में कोई प्रार्थना नहीं है। इसमें वासुदेव तथा राजा की बहन के पुत्र शंकर द्वारा लिंग की पुनर्स्थापना की चर्चा है। इस वासुदेव का एक उपनाम द्विजेन्द्रवल्लभ भी था। शर्मा नाम के एक मन्त्री ने इस लिंग को राजा सूर्यवर्मन को पहले दिया था जिन्होंने भूमि और नौकरों के साथ इस लिंग को शंकर को सुपुर्द किया। कम्बौ के विद्रोह के समय यह लिंग नष्ट हो गया था। ऐसा माना जाता है कि शंकर के इस लिंग के साथ ब्रह्मा, विष्णु एवं बुद्ध की मूर्तियाँ भी जोड़ दी गयीं। इस सम्पूर्ण समूह को चतुर्मूर्ति कहा गया और शिव को समर्पित कर दिया गया।

इस अभिलेख में कुल 7 पद्य हैं जो पद्य संख्या 7 को छोड़कर सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।[1]

1. *ISC*, p.140

लिङ्गं सरामसचिवेन समध्यदेशं
श्रीसूर्य्यवर्म्मनृपतौ स्वयमेव दत्तम्।
तन्मध्य देश विदितेप्युदयार्क्के वर्म्म-
भूपस्य बान्धववरे सजनं स चादात्।।1
कंवौसमाख्यातरिपु प्रभिन्ना-
त्तस्मात् प्रतिष्ठापितमत्र येन।
लिङ्गं मुदेदं वसुमूर्त्त(र्त्ति) रन्ध्रै-
स्तस्योदयार्क्कार्वा(न) पस्य राज्ये।।2
य श्च पद्मोद्भवाम्भोजनेत्र बुद्धानतिष्ठिपत्।
नवमूर्त्तिविलेऽत्र द्वौ वङ्शारामे तथापरम्।।3
कार्य्यभेदादभिन्नोऽपि भिन्नश शिव इतिश्रुतम्।
येन भक्त्या चतुर्मूर्त्तिश् शैवी संस्थापिता मुदा।।4
द्विजेन्द्रवल्लभाख्यस्य वासुदेवस्य यस् सुतः।
वासुदेवाकृतिज्येष्ठ इदम् रूपमतिष्ठिपत्।।5
संकर्षाख्योऽनिरुद्धो योऽधर्म्मसंकर्षणात् प्रियः।
उदयार्क्कवर्म्म भूपाल भागिनेयस् स नीतिमान्।।6
संकर्षनाम्नस् सुकृतस्य यत् फलं
तस्यैव पित्रोरिव संप्रदीयताम्।
धर्म्मे स्थिता तस्य मतिर्भवत्वद्या-
न्निवृत्तिरस्या.....................भक्तता।।7

अर्थ- राम के साथ सचिव के द्वारा स्वयं ही मध्यदेश सहित श्री शिवजी के लिंग को श्री सूर्यवर्मन राजा को दिया गया। उदयार्कवर्मन राजा के बन्धु श्रेष्ठों में उस मध्यदेश की सूचना होते हुए भी उसने प्रजाजनों के सहित मध्यदेश को दिया।।1

जिसके द्वारा कम्बुज में विख्यात शत्रुओं के छिन्न-भिन्न किये जाने के उपलक्ष्य में हर्ष से उदयार्कवर्मन के राज्य में यहाँ 880 शाके में इस शिवलिंग की प्रतिष्ठापना की गयी।।2

तथा जिसने पद्मोद्भव कमल नेत्र बुद्धों को स्थापित किया और बाद में उसी ने 890 शाके में यहाँ इस वेणुपवन (बाँस के बगीचों) में दो

बुद्ध मूर्तियों की स्थापना की।।3

तथा उनके द्वारा ही शिवजी जो अभिन्न होते हुए भी कार्यभेद से भिन्न कहे जाते हैं उनकी चार मूर्तियाँ भक्तिपूर्वक सहर्ष यहाँ स्थापित की गयीं।।4

द्विजेन्द्रवल्लभ नामक वासुदेव के उसी ज्येष्ठ पुत्र ने इस मूर्ति की स्थापना की।।5

अधर्म संकर्षण के कारण सर्वप्रिय, संकर्ष अनिरुद्ध नाम से प्रसिद्ध वह महाराजा श्री उदयार्कवर्मन का नीतिमान भांजा है।।6

संकर्ष नाम वाले की सुकृतियों का जो पुण्यफल है वह उसके माता-पिता के लिए दिये गये। उसकी बुद्धि धर्म में स्थित हो, उसकी निवृति..........भक्तता।।7

94

प्रसत खन अभिलेख

Prasat Khan Inscription

कलू प्री जिले में प्रसत खन एक मन्दिर है। एक खड़े पत्थर के चारों तरफ अभिलेख उत्कीर्ण है। इसमें शिव, विष्णु एवं ब्रह्मा की प्रार्थना के साथ-साथ सूर्यवर्मन प्रथम की लम्बी प्रशस्ति है। राजा सूर्यवर्मन प्रथम के शाला नामक एक नौकर को जयेन्द्र पण्डित की उपाधि तथा व्याकरण के आचार्य की नियुक्ति मिली। वह आगे चलकर पुजारी बन गया। इस पुजारी का शिष्य फलप्रिय कवीन्द्र पण्डित की प्रतिष्ठा तक पहुँच गया। उसने इस अभिलेख की रचना की।

राजकीय पंखे को ढोने वाला कार्यालय का राजकीय चिह्न के रूप में उदयादित्यवर्मन का एक स्वर्ण निर्मित लक्ष्मी की मूर्ति के उपहार का भी वर्णन है। वागीश के द्वारा स्थापित यह पद परिवार का वंशानुगत था तथा जयवर्मन द्वितीय से सूर्यवर्मन प्रथम तक लगातार 13 राजाओं के शासन काल तक यह जारी रहा।

इस अभिलेख में कुल 125 पद्य हैं जो खण्ड 'अ' और खण्ड 'ब' में बँटे हुए हैं। खण्ड 'अ' में 3 पद्य हैं जो नष्ट हो चुके हैं तथा खण्ड 'ब' में 122 सभी शुद्ध हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

(अ) इष्टं व्योमाम्बुनिधिगुणितं संहृतन् त्रिर्भवत्वे-
वेष्टेनैतेन शरशुणितेन............................।
....
.....त्वात् ख्यातन्....वि.....मलंवन्द्यमाद्यन्नमध्वम्।।1
इष्टं व्योमारिरामैर्गुणितमपहृतन्तेन संवर्द्धितेनै-
वेष्टेन द्विद्द्(ड्) गुणाभ्यामपि गगनचतुर्भिश शराम्भो निधिभ्याम्।
...........................अप्येव लब्धै-
रुक्ताश् शक्ति(क्ती)र्विदित्वा नमत तदघ्रिपान मुक्तिभुक्त्युक्तभावाः।।2
येषां वर्गा नवाहर्निशशरदुदयान्यङ्क हाराणि लब्धै-
स्थिथ्यादीष्टन्न विघ्नं हृतमल मुदितन्तत् सशेषोऽङ्कहार....
....
स्त्रिथ्याद्यं वान्यमार्गस्त्रिहृति पदवशास्ते पिशम्भोः पदानि।।3

(ब) नमश् शिवाय यस्याङ्शास् सदा शर्व्वादिलक्षणाः।
नियोक्त्रात्मादिभावेन वेदितव्या मुमुक्षुभिः।।1
नमश् शिवाय येनान्तः प्रधान ग्रन्थिवासिनाम्।
ज्ञानानुरोधतो बन्धमोक्षायेशो नियुज्यते।।2
शिवान्ते कालवह्नयादावेकाहं यद्ग तागतम्।
एकविंशतिसाहस्त्रं षट्शतन्तं शिवन्मने।।3
नमश् शिवाय यस्यात्मभावो भावेषु देहिनाम्।
मोचकेश् शक्तिबद्धानां ह्रियेव ज्ञातमात्रकः।।4
विष्णुन्नमध्वं यद्वक्षोऽनुकरोति सको(कौ)स्तुभं।
मध्यभागोप्तमाणिक्य महानीलोश्रियः।।5
अजन्नमामि यो वक्ति समं वेदांश्चतुर्मुखैः।
चतुष्पयोधियुगप्ह्वानस्यानु कृतेरिव।।6
आसीच्छ्री सूर्य्यवर्म्मेति राजा राजीवलोचनः।
सदानुकृत पद्मर्द्धि विध्यादिदिन कृद्गुणः।।7

1. *IC*, p.197

सर्व्वानवद्यं यं वीक्ष्य द्यातेव्याकुलमानसः।
अहो अहं बृहन्मोहः कान्तकामधिया ध्रुवम्।।8
यस्माद् वपुष्मतो नूनञ्चेदविद्राविता रतिः।
वाचाप्यशोचन्नात्मीयभर्त्तारममृतोत्थितम्।।9
धात्रा हृतार्द्ध देहाभ्यां पृक्तयोश् शर्व्वशार्ङ्गिणोः।
महोवीर्य्यं महिम्ना यस्तयोस्तुल्यो नु निर्म्मितः।।10
ह्यादतापैकनिलयो यो योगेनन्दु सूर्य्ययोः।
क्षत्रधर्म्मस्य रक्षार्थन्निर्मितोन्वब्जयोनिना।।11
विद्या दमून सोऽन्यत्र स्थिता शोकात् कृशाध्रुवम्।
तद्वद्दूहामृतं पीत्वा पुनः पुष्टास यत्र तु।।12
हृत्सरस्यागमसुद्याशुद्धे हंसगतिं ध्रुवम्।
यस्यावसन्मुखाम्भोजे सरस्वत्यमुकुर्व्वती।।13
सर्व्वथा सर्व्वदालोक्य प्रजानां योऽपिमोचयन्।
सर्व्वाः पराहतीर्न्नित्य शिवतत्वावलोकनः।।14
नूनमन्योन्यविकृता यस्य त्रिस्त्रिय ईदृशः।
शान्ता श्रीश्च भृशं पटी वाक् कीर्त्तिर्य्यत्सदागतिः।।15
यस्याङ्गतश्च्युते वारिविन्दौ राज्याभिषेचने।
सर्व्वा महीं विहायाशु तापोऽगाद्द्विषतांमनः।।16
कामं सूर्य्याभिधानेन य(स)द् भृत्याम्भोज भूतयः।
उद्यता बर्द्धिता येन बाधितं वैरिकौमुदम्।।17
यद्यात्रोद्धूत द्यूलीभिर्भुवने सान्द्यकारिते।
अविशेषाणि भूतानि प्राक् सृष्टेरभवन्निव।।18
यथा सर्व्वान वद्याङ्गी रमणी सुमनोरमा।
रतये विधिना दत्ता तथा यस्यारिवाहिनी।।19
पूर्ण्णाकृष्टद्यनुर्म्मध्यस्थितं यमिव धूर्ज्जटिम्।
त्रिपुरान्तेऽरयो वीक्ष्य मेनिरे नाशमात्मनः।।20
विजीगीषो रणे यस्य शस्त्रराशिः परेरितः।
औत्सुक्याभिमुखीकर्त्ता कान्तापातितमाल्यवत्।।21
तीक्ष्ण सर्व्वप्रहारो यस् सर्व्वप्राण कृतः परैः।
स्त्रीदन्तनखपीड़ास् स यमवेदयदाहवे।।22
कदलीदलवद् वैरिवीरान् कृन्तन् रणे कृती।

दम्भोलिमय देहांस्तां बलीच्छेत्तुमियेष यः।।23
रिरंसोर्य्यस्य लक्ष्म्याजावङ्के खड्गो द्विड्डाहितः।
पटीयांश्चोदयाम्भावमास दन्त इव स्त्रियाः।।24
समुद्रा दुत्थितो वह्निर्भूतानान्दहनक्षमः।
यथा तथाजि समये यद्रोषाद् वीरविद्विषाम्।।25
दिद्यक्षन् कालहुतभुक् प्रायः प्राक्संहृतेरिव।
मात्राचितचिताञ्जन्तूनाजौ यत्खड्गमावसत्।।26
यद्भिन्नेभपतिर्भेदवेगोत्कर्षमुदेव तम्।
असेवत द्विधातन्वा पार्श्वयोराशु संयुगे।।27
तत्काले गगना यस्मै प्रौढ़ोच्छेदारिमूर्द्धभिः।
राह्वामैस्त्राभितस् सूर्य्यः क्रोद्धेवान्तर्द्धिभागभूत्।।28
पुनर्म्मिश्रेषु खण्डेषु वेगच्छिन्न महाद्विषाम्।
शैथिल्ये क्लोवमाशङ्क्य तत्रसुस् स्वबलानियम्।।29
एको विष्णुर्यथा नीरैकार्ण्णवे महिमोत्तमः।
जन्ये यो भिन्नवीरारिलोहितैकार्ण्णवे तथा।।30
यत्ते जोगरूड़ास्येन परानीक निषादके।
जग्धे सशरणो यावांस्तावान् मुक्तो द्विजोयथा।।31
अश्रान्तान्योन्य शस्त्रौद्य प्रहारे पक्षयोर्ब्बले।
द्वन्द्वयुद्धे निनादेन योऽभग्नत्परवाहिनीम्।।32
राज्ञामनश्यद् यं प्राप्य तेजोऽर्कन्तम् सामिव।
सिंहञ्च करिणान्ताक्ष्यमहीणां शिखिनोवनम्।।33
यस्य तेजस्स भुवने वितततेषु द्विषद्गणाः।
विललीना यथार्क्कस्य चन्द्रस्य तमिराप्यपि।।34
भस्मशेषो यथा काष्ठो ज्वालावन्तं हुताशनम्।
नामशेषास्तथा वैरी प्राप्य यन्तततेजसम्।।35
दिव्याकारेण मुञ्चन्तमस्त्रमाजौ यमुद्धतम्।
द्विषो वीक्ष्य महेशादिमूर्त्तिं मत्त्वा प्रदुद्रुवुः।।36
यदूढ़ां यान्द्यरान्दूरे बलाद् भूपा जिघृक्षवः।
निरीक्ष्य तं सर्व्वगुरुं तां स्वमौलिभिरार्च्चयन्।।37
विहायक्ष्माभृतो लक्ष्मीर्जितानाजौ यमागता।
दुस्साध्येन्दुमिव प्रातस् सुतरां तीक्ष्णतेजसम्।।38

लक्ष्म्या ननन्द न तथा कान्दिशीकेन दत्तया।
यथात्तद्वन्द्वयुद्धेन भिन्नस्वाङ्गेन योऽरिणा।।39
आत्मोद्भवाब्ध्यतुलितैर्द्येर्य्यै भूपैर्नु रक्षिता।
चला श्रीर्य्येन तत्तुल्यधैर्य्यणाचलतान्त्वगात्।।40
कालेयागस(सि?) दुर्ग्गाब्धौ मज्जन्तीमुद्धरन्धराम्।
योऽपि द्विषद्भिर्म्मधुमितस्तुतोऽलं शक्तिचोदितैः।।41
वर्ण्णस्थालङ्कृता यस्य मन्त्रियोग गुणान्विताः।
धाम्नेशस्याभिमतदाः प्रजा मन्त्रा इवोर्ज्जिताः।।42
भास्वन्मूर्त्तिः पटुरुचिर्योऽपि सद्भिरुदीरितः।
भृत्येष्वमृत सारौघवर्षी राजेन्दुरोजसा।।43
यस् सूर्य्येन्दुभयो लोकन्ध्यामतीक्ष्णाङ्शुदीपितम्।
कृपयेव यशश्चन्द्रशोचिषाह्लादयत् समम्।।44
रामार्जुनरणादूर्ध्वमन्तकं सुबुभुक्षितम्।
सोपवासमिवाजौ यस्तोषयामास वैरिभिः।।45
आभागर्ग्गाद्धिदिपि करैरानी तैः करदायिभिः।
यो वदन्योऽर्थिनोऽन्विष्य निश्शेषं समकल्पयत्।।46
सम्राजि यत्र सुप्तानां नृणामेकाकिनामपि।
नारण्ये केनचिद्धस्तात् सहसा रिक्थमाहृतम्।।47
श्रुत्या येनारयो नीतास् सवाह्याभ्यन्तराहतिम्।
विवस्वता तमांसिन्कूव देहभाग्माञ्जि भानुभिः।।48
सानुक्रोशस्य सम्राजो यस्याल्पापि प्रजाविपत्।
बबाधे स्वधृतीस् सर्व्वाः पीड़ा तीब्रेव रुग्मणा।।49
संलक्ष्येण समुन्नीताः सेविनो येन सम्पदाः।
करस्पर्शेन पद्मानि प्रोज्जृम्भामिव भानुना।।50
दुःखानि साधुभृत्यानां यो मनागपि न क्षमः।
हन्तुं सद्वीपभूसारैरपि नालमनन्दन्त।।51
गुणेन केनचिञ्जातु लक्षिता येन सद्गुणाः।
गुणि सत्कारकालेषु गुणगृह्येण नास्मृताः।।52
सुधास्त्रुतमिवोक्तिं यं मुञ्चन्तमनुशासने।
भक्तिनो मेनिरे भृत्या गुरुं ता पितरावपि।।53
दातुर्य्यस्याप्यविच्छिन्नं प्रादुरासन् पुनः पुनः।

दानौर्ज्जित्यार्ज्जितानीव वसूनि वसुवेश्मसु।।54
विघ्रसाशी वशी भक्तकाले पिक्षामकुक्षिकान्।
भृत्यान् संभोज्य भोज्याग्रैः पश्चादश्नान् मितञ्च यः।।55
सुपर्व्वसूपवासी यो भारतादिकधारतः।
प्रायेण त्रीणि चाहानि ध्यानाहारो महेश्वरः।।56
बाल्ये पि कुर्व्वते कञ्चिद् गुणं यो गुणवत्सलः।
धनान्यतर्क्यलाभानि विविधानि ददौ मुदा।।57
चारित्रमन्त्रवीर्य्येण यस्य जानपदादिकाः।
आकृष्टस्वीकृता नैच्छन् प्रतिगन्तुं स्वदेशकान्।।58
साधूनां गुणवात्सल्यात् सानुकम्पो गतायुषाम्।
यः प्रदिष्टैर्धनैर्य्यज्ञङ्कारयामास मान्यधीः।।59
यो नाशकट्टणी दातुमुत्तमर्णाय रिक्थकम्।
ऋणमुक्त्यै धनन्तस्मै योऽदात् प्रायोऽनुकम्पया।।60
शिवपूजा विशेषोऽपि शास्त्रोक्तश् श्रुतमात्रकः।
धिया विरचितो यस्य शिवाङ्शस्यखिलोचितः।।61
(स) महाभ्यागतपूजादीन्धर्म्माचारान् यथाविधि।
सर्व्वशास्त्रार्थ कुशलो लोकैः सर्व्वैरकारयत्।।62
मौलोऽपि भक्तियुक्तोऽपि महासंपद्विबर्द्धितः।
त्यागिना येन सन्त्यक्तः कृपणः कृतदोषवत्।।63
स्वोपभोग्यसमानानि सर्व्वभोज्यानि योऽदिशत्।
शिवाय साग्नये सर्व्वरसवन्त्यनुवासरम्।।64
समृद्धो योऽपि पूर्व्वेभ्यो भूपेभ्यो धनसञ्चयम्।
प्रायः प्रायच्छदर्थिभ्यो दारुपात्रावशेषभाक्।।65
यो दानयुक्तरिक्थानां हारिणां विपरीतकृत्।
प्रियोऽपि रिपुवत् त्यक्तस् स येन त्यागशौर्य्यतः।।66
सेनापतीन् महावीराननुकूलान् यशोधनान्।
योऽनयत् संपदां भूम्ना भूपतेस्तुल्यभोगताम्।।67
ब्रतस्थं शिवभक्तं यो दोषवन्तं प्रमादतः।
शिवभक्ति परः प्रायो दण्डयन्दण्डादमोचयत्।।68
यथावृद्धं यथाभक्तं यथावंशं यथागुणम्।
प्रीणीतास् सेविनो येन न परस्परबाधिनः।।69

न्यायवादान्निरस्तस्य हेतुना येन केनचित्।
न्यायगृह्येण सहसा विमुक्तिर्भयतः कृता।।70
द्वयं शिवाकुलं येन द्वौ शक्त्या प्रापितौ सदा।
आनम्रो भूपती राज्यमनानम्रो महावनम्।।71
कर्त्तुमुक्तवते धर्म्ममपि मिथ्याप्रयोगतः।
अतीवधर्म्मतात्पर्य्याद् योऽदात् प्रायोऽर्थितन्धनम्।।72
यथामरेन्द्रे वज्रित्वं शूलित्वं शङ्करे हरौ।
चक्रित्वमर्थ्यमीडयं वैत्यागित्वं यत्र सत्तथा।।73
शिवार्च्चनाग्निहोत्रादितपस्यासाद्यनानि यः।
मन्त्रतन्त्राणि संशोध्य विद्ययेऽरञ्जयद्धिया।।74
शैवञ्ज्योतिरजाद्यैर्य्यस् सयत्नैर्लब्धदर्शनम्।
सूक्ष्मशर्व्वप्रसादेन सदापश्यदयत्नकम्।।75
युक्तमुक्तो महेशो यस्तपस्यासाधनं विधिम्।
साधु कृत्यकृतोद्योगैर्योगिभिर्य्यदकारयत्।।76
यच्चारित्रसुधास्वादविवार्द्धितबला विधौ।
सुदुश्चराणान्तपसान्नायासं योगिनोऽस्मरन्।।77
भक्तिनिष्ठाश्च भूयिष्ठा विप्राद्याः कवयो जनाः।
स्वयत्नार्ज्जितपुण्यानां फलं यस्मै न्यवेदयन्।।78
सर्व्वशास्त्रेषु शीर्णानि विधेयानि चिराय यः।
पुनः संस्थापयामास यथावत् कर्त्तृवद्धिया।।79
अभक्तिर्निर्गुणः कामो दग्धः कान्तस्त्रिशूलिना।
इतीव सृष्टो यो धात्रा शैवो रूपी कलालयः।।80
निर्व्विण्णमिव भुञ्जानमन्तकं वैरिवाहिनीम्।
तीव्रमत्वरयञ्जन्ये यद्धनूरवरौद्रवाक्।।81
पृथ्वी पृथ्वी पराक्रान्तेर्दूरक्षापि महाद्यिया।
परीता परितो येन पाणिगेव सुपालिता।।82
य ऐच्छत् प्रार्थिभिर्दाने कृच्छ्रम् न गमितस्सकृत्।
वैकर्त्तनादिवच्च (द्ध)र्म्म पूर्व्वयाचनमर्थिनाम्।।83
तत्सूरिरासीद् यो बुद्धया त(स्)द्विराङ्गिरसोपमः।
शशासाशेषशास्त्राणि शक्राशाश्रमशाब्दिकान्।।84
शालाभिधानः कविजित् प्रज्ञया नाम द्यौतया।

श्री जयेन्द्रादि यः प्राप पण्डितान्तन्नृपाज्ञया।।85
अदृष्टापूर्व्वशास्त्राणान्दुर्बोधानां परैर्भृशम्।
यथावद्भक्ति यस् स्मार्थमद्यीतानां यथाबलात्।।86
उच्चैरासनमास्थाय शिष्याणां बोधनं महत्।
चक्रे योऽनुदिनं रूच्या भास्वानम्मोरूहामिव।।87
शास्त्रेषु शाब्दिकाश् श्रुत्वा यस्यान्याधिकमूहनम्।
तत्कर्त्तैवन्नु शक्तोऽयं व्याख्यातुमिति मेनिरे।।88
संदिग्धार्थपरिक्लिष्टा यङ्गुरूं विबुधाश् श्रिताः।
श्रेयोलोभाय निश्शङ्का दमूनसमिवापरम्।।89
चोदितोऽध्येतृक कुलैर्म्मेधीरो यस्तदुत्तरम्।
चक्रे क्षिप्रं यदि प्रश्नो गमितस् स्यान्न साधुताम्।।90
महाप्रश्नमहीध्रेण यस्य धीदुग्धनीरधिः।
प्रादादपूर्व्वभिष्टार्थमथितो विबुधाकरैः।।91
शब्दैर्व्विद्या विवादोत्थैः शाब्दिकानां यदालयः।
पापान्यपाकृतानीव घोषयामास सर्व्वदा।।92
(द) यथोक्तयाकुलो योऽपि विप्रपूर्व्वसपर्य्यया।
शिवाङ्घ्रिशश् शिशुशीताङ्शुशेखरं शश्वदस्मरत्।।93
साराणि भारतादीनां श्रुत्वोक्तानि मुदं ययौ।
येनाभिजातवचसा वल्गुगीतिश्रुतेर्व्वरम्।।94
वचनं युक्तिमत्प्रायः पाङ्शुक्रीड़च्छिशोरपि।
यस्य सद्मन्यतिथयश् श्रुत्वा विस्मयमागताः।।95
मतानां यो नृपतिना पदार्थोट्टापटीयसाम्।
शास्तृणामपि लोकानां गुरूणां परमो गुरुः।।96
पण्डितानां वपुः कान्तमिच्छतां शाश्वतं यतः।
एकान्तकान्तकरणङ्करणङ्घ्र्यपद्ययोः।।97
सुमनोहारिणी यस्य विशदा गुणरञ्जिता।
हृद्या वाग् दिव्यमालेव भूषायै केन नोद्यृता।।98
न केवलं कवित्वेन मान्यो यस् सज्जनैरपि।
राजाज्ञायाज्जयानर्थ मोचिन्यापीष्टदानतः।।99
दग्धैनसं सत्यवाचन्धृतशैवं सदार्च्चिषम्।
आत्मसाम्यमुदेवाग्निं योऽन्वहं हविषाजुहोत्।।100

विद्यार्थिसम्भृतैर्व्वित्तैर्व्वितीर्णैरपि सन्ततम्।
पात्रानुरोधतस् सत्सु कोष्ठो यस्याक्षयीकृतः।।101
आर्त्विजीनः कृतो राज्ञा गुणगृह्येण यो गृही।
गृहीतशास्त्रसारेण मरवेष्वखिल सिद्धिदः।।102
साधुवृत्त्या जनान् सर्व्वान् वाचामृतरसस्रुता।
योऽन्नपानादिदानेनानन्दयद् गौरवान्वितः।।103
नीरद्यात्रीति भवने पद्मनाभस्य देहिनाम्।
शरण्यः प्रार्थनादानात् तन्नाथ इव यस् सदा।।104
योऽर्च्चनीयोऽर्च्चितो भोगैस् स्वभोग्यैरपि भूभृता।
मनस्विमान समगीनक्रीणान्निष्क्रयैर्नयैः।।105
तस्यासीच्छिष्यवर्य्यो यः फलप्रिय इतीरितः।
श्री कवीन्द्रादिनामाप पण्डितान्तन्नृपाज्ञया।।106
सिद्ध्यर्थपाटवोद्भासिभूषां विद्यामयोजयत्।
वपुषानन्यलब्धेनालमहो योऽर्हयुक्तते।।107
शिवाग्निगुरुपूजासु निपुणः पुण्यसाधने।
निभृतस् साधुभृत्यानां विनेता नयकोविदः।।108
विद्वद्वृद्धजनोपासी साधुवृत्तिहितोद्यतः।
दयालुरनसूयश्च वदन्यो योऽतिथि प्रियः।।109
उक्त प्रयुक्तभावेन चिरेण स्वान्तहारिणी।
अपि वाङ्मधुरा येन प्रकृतेवान्वमीयत।।110
गुर्व्वर्थञ्चेद् गताः प्राणाः कृतार्थायेनसंमताः।
महान्तो हि परन्धर्म्म बध्नन्ति ध्वङ्सिजीवितात्।।111
साधुत्वादात्मना साध्ये परार्थे मङ्गले विद्यौ।
गुरूरात्म प्रतिनिधिं प्रायः प्रायुक्त यं प्रियम्।।112
तीव्रार्त्तिपीडितो योऽपि शिवभक्ति परायणः।
शिवमभ्यच्चर्य भुक्तेस्म यदि शौचविद्यिक्षमः।।113
सूक्ष्मार्थप्रच्छिपटवे प्रत्युक्तिं प्रौढ़पाटवः।
प्रादात् प्रतीक्ष्य यः प्रश्नं कथमप्यासमापनात्।।114
द्विर्वा त्रिर्वोक्तमन्येन सुग्रहं हितकामुकैः।
व्याख्येयन् तत्त्वतो येन त्वेकवारंमहाधिया।।115
पद्मानाम्धिषणावद्भिरर्थन्तुर्वेद्यमप्यरम्।

उक्तयन्तेन समं वाग्मी यस् स्म व्याख्याततत्त्वतः॥116
गुरोर्नियोगतस्तेन शिक्षितो यः कलाविधौ।
लेखाद्ये शास्त्रसारान्तगमनान्ते सुकौशलः॥117
श्रीशङ्करकवेः प्राप्तगुह्यज्ञानस् सदस्सु यः।
सौजन्यजन्मनिलयात् सार्व्वात् सूरिपुरस्रात्॥118
वदन्याद् धन्यवृत्तादयाद् धर्म्मशीलाउदारगोः।
राज्ञः कृतज्ञस् सगुरोस् सद्वृत्तांशमिमञ्जगौ॥119
मन्त्री वागीशनामास छोक्त्रक्वानपुरवान् वशी।
सुमन्त्र इव रामस्योदयादित्यमहीभृतः॥120
आरभ्य श्रीजयाख्याद्धरणधरपतेरेक शुभ्रातपत्रा-
दासूर्य्याख्यन्नृपाणां व्यजनवरधरन् त्र्युत्तराणान्दशानाम्।
वित्सोरोङ्देङ्महाजाजयनजस दयच् नाभमूलं कुलं सद्
भूभर्त्तुर्व्वल्लभञ्च प्रथित......यशस्तस्य किञ्चिद्(ब)भूव॥121
संसिक्तः पुण्यनीरै........अविकलैस्तूदयादित्यराज्ये
तन्मूलो वङ्शवीरूद्दरूशवहुतभुग् भूपसद्भक्तिसारः।
धर्म्माचारोरूशारवश् श्रितसुजन विपत् त्राण पुष्यो यशस्य-
स्वर्ग्गीयेहाफलाख्यः परिचरणपद प्राप्त सौवर्ण्ण लक्ष्मीः॥122

अर्थ-

(अ) (खण्डित श्लोक है) प्रस्तुत पद्य द्वारा शिव को नमस्कार किया गया और निर्विघ्नता का आशीर्वाद माँगा गया है।।1

दूसरा श्लोक भी बीच में खण्डित है, अतः इसका सारांश दिया जा रहा है- शक्तियों के अधिपतियों को प्रस्तुत पद्य द्वारा नमस्कार किया गया है और भोग मोक्ष की उत्सुकता वालों द्वारा नमन करने का आग्रह किया है।।2

तीसरा श्लोक भी खण्डित है पर इस श्लोक द्वारा शिव के चरणों का नमन किया गया है। ये तीनों श्लोक मंगलाचरण के हैं।

(ब) जिसके अंश सर्वदा आदि लक्षणों से युक्त हैं उस शिव को नमस्कार है। मोक्षार्थियों द्वारा नियोजन करने वाला आत्मा आदि भाव से जानने योग्य है।।1

शिव को नमस्कार है जिससे अन्दरूनी प्रधान गाँठ में बसने

वालों के ज्ञान के अनुरोध से जन्म-मरण रूप बन्धन और मोक्ष रूप छुटकारे के लिए ईश्वर शिव नियुक्त किये जाते हैं।।2

शिव के समीप अग्नि आदि में एक दिन जो यातायात होता है उस इक्कीस हजार छः सौ शिव को नमस्कार है।।3

शिव को नमस्कार है जिसका आत्म भाव शरीरधारियों के भावों से है जो शिव शक्ति द्वारा बँधे हुओं को ज्ञात होने मात्र से लज्जा से मानो मोक्ष को छुड़ाने वाले हैं।।4

तुम लोग विष्णु को नमस्कार करो जिनका वक्ष कौस्तुभ मणि से युक्त है जो बिचले भाग कहे गये माणिक्य, महानील, महानीलमणि की लक्ष्मी और शोभा का अनुकरण करती है।।5

ब्रह्मा को नमस्कार करता हूँ जो साथ-साथ चार मुखों से वेदों को बोलते हैं। एक बार चार समुद्रों की ध्वनि के मानो अनुकरण किये जाने के समान हैं।।6

श्री सूर्यवर्मन कमल के समान आँखों वाले राजा जो सर्वदा अनुकरण करने वाला है (था) लक्ष्मी की समृद्धि का और विधि आदि सूर्य के गुणों का अनुकरण करने वाला है।।7

सर्वांग को अनिन्द्यसुन्दर देखकर ब्रह्म व्याकुल मन वाले हो गये-यह आश्चर्य है। महान् मोह हो गया उन्हें निश्चित ही यह सुन्दर कामदेव हैं ऐसा प्रतीत हुआ ब्रह्मा जी को राजा श्री सूर्यवर्मन को देखकर।।8

जिससे शरीरधारी निश्चित रूप से कामदेव रूप समान समझकर रति कामदेव की स्त्री विशेष रूप से द्रवित की गयी और उसने वचन से भी सोचा समझा मेरे ये आत्मीय भर्त्ता (स्वामी, पति) हैं जो अमृत से जी उठे हैं।।9

ब्रह्मा के द्वारा हरण किये हुए आधे दो देहों से एक साथ जुटे दो देव शिव और विष्णु दोनों के पूज्य वीर्य बल की महिमा से जो राजा उन दोनों के समान हैं और रचे गये हैं।।10

शीतलता, आह्लादकता और सन्तप्तता दोनों के एक घर राजा योग से चन्द्र, सूर्य दोनों के और क्षत्रिय के धर्म की रक्षा के लिए ब्रह्मा द्वारा निर्मित हैं(थे)।।11

विद्या पहले से दुबली-पतली निश्चित रूप से शोक से अन्यत्र स्थित थी वह फिर जहाँ उसी प्रकार तर्क रूप अमृत पीकर हृष्ट-पुष्ट अंगों वाली हो गयी।।12

जिसके हृदय रूपी सरोवर में जो शास्त्र के या शास्त्र रूप अमृत से शुद्ध हैं उसमें निश्चित ही हंस की सी गति वाली सरस्वती जिसके मुख रूप कमल में अनुकरण करती हुई रहती है।।13

सभी प्रकारों से सर्वदा देख करके प्रजाओं और प्रजाजनों को छुड़ाता हुआ जो राजा सभी दूसरों की चोटों को छुड़ाने वाला था। सभी प्रकार के प्रहारों को जो पहाड़ पर शत्रु द्वारा दिये गये प्रहारों को नित्य शिव के तत्त्व का अवलोकन करने वाला राजा था। सब कुछ कहता हुआ अभी शिवतत्त्वावलोकन करने वाला था।।14

निश्चित ही परस्पर विकारग्रस्त जिसकी तीन स्त्रियाँ हैं वे ऐसी हैं कि शान्त रूप से रहने वाली लक्ष्मी और वाणी और कीर्ति जिसकी सदा चलने वाली हैं।।15

राज्याभिषेक के समय में जिस राजा के अंगों से चूकर जल की बूँदों में सभी पृथ्वी को छोड़कर शीघ्र ताप सन्ताप शत्रुओं के मन में।।16

जैसी इच्छा हो उतनी श्री सूर्यवर्मन नामक राजा के द्वारा सज्जन नौकर रूप ऐश्वर्य उद्यत किये गये, बढ़ाये गये। एक शत्रु रूपा चन्द्रिका-चाँदनी बाधित हुई थी।।17

यदि यहाँ आज उठी धूलों से भुवन में अन्धकार छाने पर सृष्टि के पहले जिस प्रकार अन्धकार भरे संसार की सृष्टि का आरम्भ हुआ वैसे ही मानो विशेष रूप से प्राणियों की रचना का आरम्भ होने वाला सा दीखा था।।18

जैसे सभी अंगों से अनिन्द्य सुन्दरी रमणी सुन्दरी मनोरमा सी रति के लिए ब्रह्मा ने दी वैसे जिस राजा की सेना भी थी।।19

पूर्ण कान तक खींचे हुए धनुष की डोरी पर बाण के धनुष के मध्य में स्थित रखने वाले शिव के समान त्रिपुर नामक असुर के मरने पर शत्रु लोगों ने जब देखा राजा को तब वे अपना नाश अपनी आत्मा का नाश समझ गये।।20

जिस विजय की इच्छा वाले राजा के रण में दूसरे शत्रुओं द्वारा फेंके गये शस्त्रों का समूह उत्कण्ठा से आमने-सामने करने वाला प्यारी स्त्री द्वारा पहनाये गये पुष्पमाला के समान।।21

तीखे सभी प्रहारों को जो जानने या करने वाला दूसरों शत्रुओं द्वारा सब के प्राणों को करने वाला स्त्री के दाँत और नख की पीड़ाओं को उसने जिसे मालूम कर दिया युद्ध में।।22

वैरी वीरों को केले के पत्ते के समान काटता हुआ युद्ध में प्रयत्नवान जो बलवान वज्रमय देह वाले उन्हें काटने के लिए राजा ने इच्छा की थी।।23

जिसके युद्ध में लक्ष्मी से रमण करने की इच्छा वाले के अंग में तलवार शत्रु द्वारा चलायी गयी और अतिशय चतुर राजा ने स्त्री के दाँत के समान प्रेरित किया तलवार को।।24

जैसे समुद्र से उठा हुआ बड़वानल सभी प्राणियों के जलाने में समर्थ है वैसे युद्ध में जिसके क्रोधानल से वीर शत्रु जलने लगते हैं।।25

जलाने की इच्छा करता हुआ कालरूप अग्नि प्रायः प्रलय के पहले ही प्रलय करना चाहता है ऐसा लगा था उस समय। माता से इकट्ठे किये गये या मात्रा से आसमान्त भाव से आचित किये गये प्राणियों को लड़ाई में जो तलवार में आकर बस गया था।।26

जो फाड़े चीरे हुए हाथी के सिर के कुंभ के स्वामी सिंह के गजकुंभ फाड़ने विदारण करने के वेग के उत्कर्ष के हर्ष से ही मानो उसकी सेवा की लड़ाई में शीघ्र दोनों बगलों से दो आधे शरीर से सेवा की।।27

उस समय में आकाश में प्रौढ़ के उच्छेद करने से शत्रुओं के सिरों से जो सिर राहु की आभा वाले थे उनसे सूर्य ढक गया मानो क्रोध से ही छिप गये हों।।28

फिर सभी खण्डों को मिल जाने पर वेग से कटे महाशत्रुओं की शिथिलता में नपुंसकता की आशंका से अपने बलों को भूलकर डर गये थे।।29

एक विष्णु जेसे जल के एकार्णव में अपनी महिमा से उत्तम हैं

वैसे ही जो राजा वहाँ जन्म लिया जहाँ कटे वीर शत्रु के शोणित से एकार्णव हुआ था।।30

शत्रुओं या दूसरों के सैनिक के नाशक गरुड़ के समान मुँह वाले के द्वारा जो तेज नष्ट किया गया शरणागत मुक्त होकर जितना उतना जैसे द्विज पक्षी मुक्त हुआ वैसा ही मालूम पड़ता था।।31

नहीं थके हुए परस्पर शस्त्रों के समूह के प्रहार में दोनों पक्षों के बल में द्वन्द्व युद्ध में आवाज से जिसने शत्रु सेना को काटा था।।32

सूर्य का तेज अन्धकार को जिस प्रकार नष्ट करता है वैसे ही जिसे पाकर राजाओं का तेज नष्ट हुआ वैसे ही सिंह हाथियों को, गरुड़ साँपों के मयूर ने वन को किया था।।33

पृथ्वी पर जिसके तेजों के बिखरने पर सूर्य चन्द्र के तेज को देखकर जैसे अन्धकार बिल में छिप जाता है।।34

लपट वाली आग को पाकर लकड़ी जैसे भस्म मात्र बचती है वैसे फैले तेज वाले राजा को पाकर शत्रु नाम से बच रहा था केवल नाम मात्र शेष बचा।।35

दिव्य आकार से अस्त्र को युद्ध में छोड़ने वाले उद्दण्ड को देखकर शत्रु लोग महेश आदि की मूर्ति मानकर दौड़ पड़े थे।।36

व्याही समझकर राजा लोग जिस भूमि को लेना चाहते थे बलपूर्वक दूर पर वे लोग सर्वगुरु उस राजा को देखकर उस जमीन की पूजा अपने मस्तकों के द्वारा करने लगे थे एवं राजा की भी पूजा प्रणाम करते हुए करने लगे थे।।37

जिसके आने पर लड़ाई में जीते हुए धन को छोड़कर राजा लोग दुःसाध्य चन्द्र के समान सवेरे तीव्र तेज वाले को भली-भाँति छोड़ भागे।।38

लक्ष्मी न प्रसन्न हुई किस दिशा में या किस दिशा में नहीं इसके निश्चय न रहने से वैसे ही द्वन्द्व युद्ध से अपने अंगों के कटने पर शत्रु द्वारा प्रसन्नता न प्राप्त हुई।।39

अपनी आत्मा से उत्पन्न समुद्र के समान अतुल धीरता में राजाओं के द्वारा रक्षित की हुई चंचल लक्ष्मी जिसके द्वारा उसके समान धीरता से

अचलता को प्राप्त हुई।।40

समय पर अपराध दुर्ग समुद्र में- सर्पयुक्त दुर्ग समुद्र में डूबती हुई पृथ्वी को पर्याप्त शक्ति से प्रेरित शत्रुओं से विनय करने पर जिसने उद्धार किया था।।41

प्रजा और मन्त्र दोनों पर घटने वाला यह श्लोक है। वर्णस्थ चारों वर्णों में स्थित प्रजा, वर्णों-अक्षरों में स्थित मंत्र अलंकृत सुशोभित जिसके मन्त्री के योग से गुणयुक्त ईश्वर के धाम से अभिमत देने वाली प्रजा, मनोरथ देने वाले मन्त्र के समान बल और प्राणों से वृद्धि को प्राप्त हुए प्रजाजन और मन्त्र।।42

राजाओं में चन्द्र के समान अपने बल से प्रकाशमान मूर्ति राजा और चन्द्र चतुर प्रकाश सज्जनों द्वारा कहे हुए नौकरों में अमृत के सार भागों के समूह की वर्षा करने वाला यह राज चन्द्र था।।43

जिस सूर्य और चन्द्र से युक्त लोक को अपने तेज धाम की किरणों के द्वारा प्रकाशित जन को मानो कृपा करके साथ ही साथ यश रूप चन्द्र की किरणों से प्रकाशित किया था।।44

राम और अर्जुन की लड़ाई के बाद यम बहुत भूखा था उसको वैरियों से उपवास के बाद पारण के समान तृप्त किया जिस राजा ने।।45

कर देने वालों के द्वारा लाये गये आधे करों से भी जो दाता के गुण वदान्य गुण से युक्त राजा ने खोजकर याचकों को निःशेष किया खूब दान दिये थे।।46

सम्राट के विषय में यह बात है कि जहाँ सोये लोगों में अकेले रहने पर भी जंगल में किसी के द्वारा हाथ से एकाएक सम्राट के हाथ से धन नहीं छीना गया था।।47

सुनने से जिसने शत्रुओं को बाहरी-भीतरी चोटें दीं। जैसे सूर्य अन्धकार को वैसे ही अपनी किरणों से देहियों को तोड़ा-फोड़ा।।48

सम्राट की प्रजा को छोटी भी विपत्ति को निन्दा के साथ राजा ने बाधा दी। अपनी धैर्यो को सभी पीड़ाओं को तीव्र रोग से उत्पन्न की नाई दूर कर दीं।।49

सम्यक् लक्ष्य के साथ-साथ ले जायी गयी जिसके द्वारा सम्पति

सेवित होकर हाथ किरण के स्पर्श से कमलों की भाँति मानो सूर्य द्वारा कमल खिले वैसे ही राजा के कर स्पर्श से प्रजा प्रसन्न हुई।।50

सज्जन, नौकरों के दुखों को जो थोड़ा भी नहीं समर्थ हैं द्वीप सहित भूमि के भारों से भी दुख के दूर करने में नहीं पर्याप्त प्रसन्न था। सज्जनों ने नर समूह को प्रसन्न किया था।।51

कभी किसी गुण से लक्षित अच्छे गुण गुणियों के सत्कार के समयों में जिस गुणग्राही राजा के द्वारा नहीं स्मरण किये गये।।52

अमृत के चूने के समान अनुशासन में छोड़ी वाणी को भक्ति से नौकर लोग माँ-बाप, गुरु की वाणी के समान मानने लगे थे।।53

धन के भाण्डागारों में धन दानों से बढ़कर अर्जित किये हुए धन की नाई बार-बार दाता राजा के धन में बढ़ती होने लगी थी।।54

वश में इन्द्रियों को रखने वाले भोजन के समय खाली पेट नौकरों को पूर्ण भोजन कराकर सबसे पीछे स्वयं थोड़ा सा खाता था।।55

सुन्दर पर्वों में जो उपवास करने वाला महाभारत आदि की कथाओं में रत होकर शायद तीन दिनों तक ध्यान ही है आहार जिसका ये महेश्वर के समान रह सके थे।।56

बचपन में भी जो गुण का प्रेमी किसी गुण को आहत करते थे विविध धन-धान्य से तर्क करके लाभों को हर्ष से देते थे।।57

सुन्दर चरित्र रूप मन्त्र के बल से जिसके देशवासी प्रजाजन आदि लोग आकृष्ट होकर स्वीकार करने वाले अपने देश लौटने के लिए नहीं चाहते थे।।58

सज्जनों के गुण के प्रेम से दया सहित राजा ने जिनकी आयु समाप्त हुई थी उन्हें माननीय बुद्धि वाले राजा ने अपनी ओर से धनों से यज्ञ कराया था।।59

जो खद्दुक महाजन को ऋण न दे सकता था दया से उसे धन ऋण छूटने के लिए प्राय: जिसने दिया था।।60

विशेष रूप से शिव की पूजा शास्त्र से कही हुई सुनते ही बुद्धि से विरचित जिसका शिवांश सब उचित था।।61

(स) महाअभ्यागत के सत्कार आदि पूजा धार्मिक आचार विधिपूर्वक

सभी शास्त्रों के अर्थों के निपुण ज्ञाता ने सभी लोगों से करायी थी।।62

मूलभूत भक्ति से युक्त होकर भी महासम्पत्ति से युक्त जो सम्पत्ति बढ़ी हुई है जिस त्यागी राजा के द्वारा किये हुए दोष अपराध के समान कृपण होकर सब त्यागा था।।63

अपने उपभोगों को समान सबके भोगने योग्य अग्नि सहित जो आदेश दिया शिव के लिए सभी रसों वाले प्रतिदिन सामान दिये गये थे।।64

पूर्वतन राजाओं द्वारा समृद्धि से पूर्ण किया हुआ धनों का संचय था सब कुछ याचकों को राजा ने दे डाला केवल काठ के पात्र अवशिष्ट बचे थे।।65

जो दान से युक्त धन हरण करने वाले ने उस धन को प्रिय भी समझकर शत्रुवत् त्याग किया उसने अपनी दानवीरता का परिचय दिया था।।66

सेनापतियों को जो महावीर थे, अनुकूल आचरण करने वाले थे, यश ही उनका धन था उन्हें सम्पत्तियों की अधिकता से राजा के तुल्य भोग के भागी राजा ने बनाया था।।67

जो व्रत में स्थित शिव का भक्त असावधानी से अपराधी होकर शिव भक्ति में रत रहता था वह यदि दण्ड के योग्य भी होता था तो उसे दण्ड से राजा छुड़ा देता था।।68

जो जैसा बूढ़ा, जैसा भक्त, जैसे वंश में उत्पन्न, जैसे गुणों वाला, सेवक लोगों के आपस में कोई किसी को किसी प्रकार की बाधा आपसी बाधा न देते थे, वृद्धता, भक्ति वंश में उत्पत्ति, गुणवत्ता को मद्दे नजर रखते हुए सेवकों के लिए विधान जिसके द्वारा बनाये गये।।69

न्यायवाद से निरस्त हुए जिस किसी कारण से न्याय से ग्रहण करके एकाएक भय से विशेष रूप से मुक्त कर दिये जाते थे।।70

सदा जिसके द्वारा दो को शक्ति से प्राप्त कराते थे जो नम्र राजा था वह राज्य कर पाता था और जो विनम्र न था वह महावन की राह होता था।।71

झूठमूठ भी धर्म कार्य के लिए कहने वाले याचकों अतिशय धर्म में तत्परता से जिसने प्राय: याचकों को याचित धन दिये थे।।72

जैसे इन्द्र में वज्र धारण सामर्थ्य, शंकर में शूल धारित्व, विष्णु में चक्रधारित्व, याचने योग्य स्तुतियोग्य, त्यागित्व जहाँ सभी गुण थे।।73

जिस राजा ने जो शिव की पूजा, अग्निहोत्र आदि तपस्या के साधन, तन्त्र-मन्त्र सबका सम्यक् शोधन करके बुद्धि से ब्रह्मा को प्रसन्न किया था।।74

शिव से सम्बन्धित ज्योति को ब्रह्मा आदि देवों द्वारा प्रयत्न सहित दर्शन प्राप्त थे सूक्ष्म शिव की प्रसन्नता से बिना यत्न के ही सब कुछ राजा ने देखा था।।75

मुक्ता से युक्त महादेव जी ने जो तपस्या के साधन और विधि बतायी अच्छी तरह कृत्य में किये गये उद्योगों से योगियों द्वारा सब कुछ कराया गया था।।76

जो सच्चरित्रतारूप अमृत के आस्वाद से विशेष बढ़े बली विधि में बहुत दुःखों से आचरण करने योग्य तपस्याओं के परिश्रम को योगियों ने स्मरण किया था।।77

भक्तिनिष्ठ अतिशय बड़े ब्राह्मण आदि कवि लोग अपने यत्नों से अर्जित पुण्यों के फल जिस राजा को सबने सब कुछ निवेदित करने वाले थे।।78

सभी शास्त्रों में चिर काल से जो उत्तम पुराने कर्तव्य हैं सबों की पुनरपि स्थापना यथोचित रूप से कर्ता के समान बुद्धि से की थी।।79

भक्तिहीन, गुणहीन कामदेव, सुन्दरतम शिव के द्वारा जला दिया गया था इसी बात को ध्यान में रखकर विधाता के द्वारा जो शिवभक्त रूपी कलाओं का घर राजा द्वारा रचा गया था।।80

शत्रु की सेना मारते हुए यम को दुखी सा देखकर जो धनुष के भयंकर टंकार के समान वाणी वाला शीघ्र शीघ्रता की प्रेरणा देने वाला राजा था जो बहुधा बहुतों को यमघाट पहुँचाने वाला राजा था।।81

पृथ्वी पृथ्वी में परायण राजा द्वारा आक्रान्त होने पर दुख से रक्षा करने योग्य है, पृथ्वी दुख से रक्षणीय है तथापि महाबुद्धिशाली राजा द्वारा चारों ओर से विपद्ग्रस्त पृथ्वी को करामलकवत् सुन्दरतया पायी गयी थी।।82

जिसने चाहा प्रार्थियों से दान के विषय में कठिनता को पास नहीं फटकने दिया जाये, सूर्य का पुत्र कर्ण आदि की भाँति याचकों की पूर्व याचना को धर्म समझा जाये।।83

राजा कैसा विद्वान् था कि उसकी बुद्धि देवगुरु बृहस्पति की बुद्धि सी है उससे अशेष शास्त्रों के अनुसार शासन 'शक्राशाश्रम' वैयाकरणों को शब्दशास्त्रों को शासन में रखा गया था।।84

नामत: 'शाला' कवि को जीतने वाला, धोई हुई बुद्धि द्वारा श्री जयेन्द्र आदि जिसने प्राप्त किया था पण्डितों को उस राजा की आज्ञा से।।85

जिन शास्त्रों को पूर्वज देखा भी था वे अदृष्टपूर्व शास्त्र थे उनके दूसरों या शत्रुओं से अत्यन्त दुख से जानने योग्य शास्त्रों के अवलोकन करने वाले के समान ही अर्थ कहते थे जो राजा जैसे पढ़े हुए को बलपूर्वक याद करके अर्थ निकालना स्वाभाविक ही तो है।।86

वे सुशिक्षिततम हैं। ऊँचे आसन पर बैठकर शिष्यों को महान बोध देने वाले प्रतिदिन रुचि से जैसे सूर्य कमलों को खिलाते हैं।।87

शास्त्रों में वैयाकरण लोग जिसके अधिक तर्क को सुन करके यह माना कि उस शास्त्र के कर्ता या ईश्वर ही इस प्रकार कर सकते हैं ऐसी व्याख्या दूसरा कौन कर सकता है राजा को छोड़कर केवल यह राजा ही महाविद्वान् है दूसरा नहीं।।88

सन्देह वाले अर्थ जो बहुत कठिन हैं उनके समाधानार्थ पण्डित लोग की शरण लेते थे। कल्याण के लोभ के लिए शंका ही न होकर यह ऐसा है इस प्रकार है समझा देते थे।।89

अध्येता (पढ़ने वाले) के समूहों द्वारा प्रेरित होकर मेरे प्रश्न का जो धीर उत्तर दे यदि जल्द वह प्रश्न शुद्ध है या नहीं इसका निर्णय राजा कर देते थे।।90

महाप्रश्न के उत्तर देने वाले जिस राजा की बुद्धि रूप दूध का समुद्र विलक्षण (मीठा अर्थ या अपूर्व इष्ट मनोवांछित) अर्थ मथकर विद्वान् रूप समुद्रों को मथकर बताते थे।।91

विद्या के विवाद से उठे हुए शब्दों से व्याकरण जानने वालों का

घर नष्ट हुए पापों के समान सर्वदा घोषते हैं (थे)।।92

(द) जैसा कहा गया है शास्त्रों में वैसा जो भी पूर्व ब्राह्मण की पूजा से शिव के अंश राजा बच्चे चन्द्र हैं सिर पर जिसके ऐसे चन्द्रशेखर शिव के ध्यान में स्मरण में सर्वदा रहा करते थे।।93

महाभारत के सारों को सुनकर कहे गये विषयों से प्रसन्न होते थे जिस विनीत वचन से अल्पज्ञ के गीत सुनने से यह तो श्रेष्ठ है ऐसा समझते थे।।94

युक्ति से युक्त बात प्राय: छोटे खेलने वाले बच्चों के मुँह से सुनने पर भी जिसके घर में आश्चर्य से आते थे अतिथि लोग "बालानदपि सुभाषितम् ग्राह्यम्" बालक से भी सुन्दर वाणी ग्रहण करने लायक है- इस नियम को अक्षरश: पालते थे।।95

पदार्थों के तर्क करने में अतिशय चतुर लोगों के मतों के जो राजा द्वारा तर्क होता शासन करने वाले लोगों के गुरुओं के परम गुरु राजा थे।।96

क्योंकि पण्डितों के शरीर की सुन्दरता की चाह वाले पण्डितों के सनातन रूप से तीव्रता से एकान्त सुन्दर करना और अनवरत गद्य-पद्य रचना करना पसन्द करते थे।।97

सुन्दर मन को हरने वाली जिसकी शुद्ध गुण से रंगी हुई मनोहर वाणी सुन्दर माला के समान अपने आभूषण के लिए कौन नहीं लेता एवं चाहता था कि मिल जाये तो मैं भी अपना अलंकार सजा सकूँ, सभी चाहते थे।।98

न केवल कवित्व से ही सज्जनों द्वारा मान्य थे। राजा की आज्ञा में भी इच्छित दान से अर्थ छोड़ने वाली धन दान देने वाली बात भी थी।।99

जल गये हैं पाप जिसके ऐसे को, सत्य बोलने वाले को शिव की भक्ति धारण करने वाले को सदा घी से हवन करने वाले को, सदा लपट वाले अग्नि को अपनी आत्मा की समता के हर्ष से मानो पूर्वोक्त प्रकार के अग्नि को प्रतिदिन तृप्त करने के लिए हविष से होम द्वारा प्रसन्न करते थे।।100

विद्यार्थियों को दिये धनों से जो वितरित किये जाते थे सर्वदा सत्पात्र के अनुरोध से सज्जनों में दिये जाने के विषय में जिसका कोष्ठ

आलय था।।101

राजा द्वारा जो गृहस्थ गुणग्राही राजा द्वारा यज्ञ कराने वाला बनाया गया था। शास्त्रों के सारों के ग्रहण करने वाले राजा द्वारा यज्ञों में सभी सिद्धियों के देने वाले को प्रसन्न किया जाना स्वयं सभी सिद्धियों को देने वाले थे राजा।।102

सज्जन की वृत्ति से सभी जनों को अमृत रस बहने वाले वचनों से जो यहाँ अन्न और पेय जलादि के धनों से गौरवयुक्त होकर आनन्द देने वाले राजा थे।।103

जो सर्वदा जल की धात्री समुद्र रूप भवन में विष्णु के शरीरधारियों के शरण देने वाले प्रार्थना दान से है उनके भी नाथ के समान राजा था।।104

जो पूजने योग्य अपने भोग के योग्य भोग्य पदार्थों से राजा द्वारा पूजित होकर मनस्वी के मानस रूप मणि को या मनस्वी= मानी लोगों को मानस रूप मणियों को नीतियों से मानो खरीद लिया था राजा ने।।105

उसके श्रेष्ठ शिष्य थे जो 'फलप्रिय' इस नाम से प्रसिद्ध थे। उनके श्री कवीन्द्र आदि नाम पाया था राजा की आज्ञा से आदि में कवीन्द्र अन्त में पण्डित इस प्रकार नाम श्री कवीन्द्र फलप्रिय नाम प्राप्त किया था।।106

सिद्धि के अर्थ के चातुर्य को प्रकाशित करने वाले अलंकार रूप विद्या को जोड़ा था दूसरों द्वारा न लाभ करने योग्य शरीर से पर्याप्त विद्या योग्य की युक्ति के लिए आश्चर्य है।।107

शिव, अग्नि, गुरु की पूजाओं में पुण्य साधन में निपुण एकान्त सेवी सज्जन नौकरों के विशिष्ट नेता थे नीति को जानने वाले पण्डित थे।।108

विद्वान् और वृद्ध लोगों की उपासना करने वाले सज्जन की वृत्ति वाले हित में उद्यत रहने वाले, दयालु और गुण में दोष का आरोपण करने वाले दाता के गुण वदान्य गुण से युक्त अतिथि को प्यार करने वाले थे।।109

उक्ति प्रत्युक्ति के भाव से चिरकाल तक मन को हरने वाली

मीठी वाणी भी जिसके द्वारा प्राकृतिक ही है ऐसा अनुमान किया गया था।।110

गुरु के लिए प्राण गये जिसके द्वारा ऐसा समझकर सम्मति दी गयी क्योंकि महान् लोग सबसे बड़े धर्म को बाँधते हैं इस क्षणभंगुर शरीर से।।111

सज्जनता से अपने द्वारा साधने लायक दूसरों के लिए मंगल कार्य में गुरु जी अपने स्थानापन्न प्रतिनिधि रूप से जिसके प्रिय समझकर प्रयुक्त करते थे।।112

जो शिव भक्ति में तत्पर तेज दुखों से पीड़ित होकर भी शिव की पूजा करके ही भोजन करता था यदि शुद्धता करने की विधि में सामर्थ्य रहती थी तब अशक्त रहने पर तो नहीं कोई कर पाता।।113

सूक्ष्म अर्थ पूछने में चतुर को प्रौढ़ चतुर जो प्रत्युत्तर देता था प्रश्न को खोजकर समाप्ति पर्यन्त ठीक उत्तर बता देता था।।114

दो बार या तीन बार दूसरे सुलभतया ग्रहण करने योग्य हितैषियों द्वारा कहने पर महाबुद्धिमान अपनी महती बुद्धि से एक बार ही तत्त्वतः व्याख्या कर देते थे।।115

बुद्धिमानों द्वारा पद्यों के अर्थ जो दुख से जानने योग्य भी थे उन्हें शीघ्र ही थोड़ा और सार बोलने वाले वाग्मी राजा तत्त्वतः व्याख्यान तभी कर देते जब बोलने का अन्त होता था तुरन्त ही व्याख्या पद्य की कर देते थे।।116

गुरु के आदेश से उसके द्वारा जो कला की विधि में शिक्षित हुआ था लेख आदि में शास्त्र को सार के अन्त में गमन के अन्त में सुन्दर कौशल वाला पूर्ण शिक्षित था।।117

श्री शंकर कवि से प्राप्त गोपनीय ज्ञान वाला जो सभाओं में सुजनता रूप जन्म के घर से ऐसे गुरु से जो शिव भक्त थे और सभी पण्डितों में अग्रसर थे उनसे सीखा था।।118

दाता के गुणवदान्य गुण युक्त धन्यवृतों के धनी धार्मिक उदार वाणी वाले गुरु से राजा से कृतज्ञ होकर अच्छे छन्द के इस अंश को सीखा था।।119

वागीश नाम वाला मंत्री, इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला राजा राम के सुमन्त्र के समान सूर्यवंशी राजा एवं विक्रमादित्य राजा के समान था।।120

श्री जयवर्मन से प्रारम्भ करके राजाओं के राजा एक चक्रवर्ती सूर्यवमन तक राजाओं की पंक्तियों में श्रेष्ठ पंखे को धारण करने वाला तेरह के वित्सोंरोङ् देङ् महायज्ञ करने वाले महाजाजयन जस दयच् नाम मूल है जिस कुल का अच्छे राजाओं के प्रिय प्रसिद्ध यश वाले उस राजा के कुल में जन्म लिया था।।121

पुण्य जलों से सम्यक् सिक्त हुआ........ज्यों के त्यों उदयादित्यवर्मन के राज्य में उसके मूल वंश रूप लता रूप लकड़ी रूप लाशों के अग्नि रूप राजा की अच्छी भक्ति है सार धार्मिक आचरण ही है शाखा डाल जिसकी शरण में आये सज्जन की विपत्ति से रक्षा रूप फूल यश देने वाला, स्वर्गीय इच्छा के फलों से भरा पूरा दासता पद पर प्राप्त करने वाले सुवर्ण रूप लक्ष्मी को रखने वाले थे।।122

95

पल्हल खड़े पत्थर अभिलेख

Palhal Stele Inscription

मौन रूसी प्रान्त में पल्हल नामक एक ग्राम है। यहाँ यह अभिलेख संस्कृत और ख्मेर भाषा में पाया गया। संस्कृत भाग में भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग तथा बहुत सी व्याकरण की अशुद्धियाँ हैं जिस कारण बड़ी कठिनाई से समझा जा सकता है।

एक व्यक्ति के द्वारा त्रिभुवनेश्वर देवता की स्थापना का यह अभिलेख वर्णन करता है। जयवर्मन द्वितीय के समय में इस व्यक्ति के पूर्वजों का वर्णन किया गया है। पहले बतलाये गये सेनापति संग्राम से इस परिवार का सम्बन्ध माना जाता है। अभिलेख से हमें इस विषय का पता लगता है कि ब्राह्मणों ने अपने स्वाभाविक पुजारी के पेशे के अतिरिक्त हाथी के महावत, राजकीय रखेलिन तथा कलाकारों का पेशा भी अपनाया। यह अभिलेख इस बात को संपुष्ट करता है कि पृथ्वीनरेन्द्र एक महत्त्वपूर्ण मन्त्री का नाम था न कि जयवर्मन द्वितीय का दूसरा नाम जैसा कि बार्थ ने कहा है।[1]

1. *Quoted by R.C. Maju*mdar in IK, p.411

इस अभिलेख में कुल 55 पद्य हैं। पद्य संख्या 1 से 3, 5 से 7, 10 से 14, 16, 30 से 32 एवं 51 अंशतः नष्ट हैं।[2]

.....वेश्वरं वन्दे यस्यात्मा पञ्चधा स्थितौ।
चतुर्द्धा बहुधा भेद एकधा तद्गतोऽचलः।।1
.......त्मा केशभेदो यः केशान्तः केशकर्म्मत्रः।
विदेको विदे.........क्री........र्व्वन्निद्यैकधिः।।2
........खं द्विजस्थं यद्दुःख वातवाहनम्।
तत् सर्व्वहेतुं संस्तुत्य वक्ष्ये जातिभिमान्नृणाम्।।3
(इन्द्र)पुराख्ये नगरे राजासीत् परमेश्वरः।
संशास्ता मनुवद् बुद्धया धम्म्र्याल्लोंकान् उपायतः।।4
.........वे युधं योधाधीर्विद्विङ्धीर मुद्धरम्।
ईशो योऽमोघशक्त्याशु सगुणं निर्गुणं व्यधात्।।5
....वृत्तिर्व्वने वासी यद्रिपुर्युद्धविद्रुतः।
आमृत्योर्मृगवद् यातो नेतो मानुषलक्षणम्।।6
............ङ्क भङ्गिनो यस्य धर्म्ममित्रस्य नित्यशः।
सुखतस् स्वकर्म्म कृन्ना पालने तुल्यभावनः।।7
(लोक)पालो यथेन्द्रो यो विश्ववेत्ताम्बुवर्षदः।
भिन्नभूभृद्भयो भूमौ बभौ भुभृज्जयध्वजः।।8
(दे)दीप्यमाने यत्तेजो जगद्धिक्षु द्रुतन्तुलम्।
विदारयद् द्विषद्ध्वान्तं प्रसमं भानु भानुवत्।।9
.........न्या याचनं भूतं भाभिर्धर्म्माय यस्य तु।
राज्ये समृद्धिमन् नृणां ततोऽन्यन्नास्ति याचनम्।।10
व्याधपुरे वैक्रपासव्रैरूङ्ग्रामस्था नराः स्त्रियः।
तद्वल्लभास्तु सन्मादे वाचने सान्वयाः स्तुताः।।11
.........शिवकैवल्यो परो यः शिवन्दिकः।
तयोः स्त्रीरनुजा स्वामिनी ह्यङ्मृतनामधृक्।।12
.......शव्य स नृपो महेन्द्रगिरिराज भुक्।
शभितुं विषयान् सर्व्वान् मन्त्रिमुख्यान्नियोजयेत्।।13

---

2. BEFEO, Vol. XIII (6), p.27

..........प्रताञ् श्री पृथिवीनरेन्द्रो-
ऽनलाय मानोऽरिगणेन्धनेषु।
ताभ्याञ्जनाभ्यां सहवीरयुक्तो
मल्याङ्पदं यद् गतवांस्तदा यः।।14
भक्ता नरा दान्ता तद्गत्या करदाः सदा।
सर्व्वाम् भूमिं मनोभीष्टां दृष्ट्वा जग्मुस् स्त्रियः।।15
........निवेद्य सुकरं गतिकर्म्म च तद्भवम्।
तीर्थनाथादि भूषितां प्रार्थितां मुख्यमन्त्रिणा।।16
गर्य्याग्भूमिन्तु तां ताभ्यां स राजादात् यथामतम्।
परमेशराज्ञा दत्तां साब्धित्रिगिरिभिः शकैः।।17
दक्षिणतश्चोत्तरस्या भूमेआयामं उच्यते।
सहस्रं शतपञ्चाशत् पञ्चोत्तरमिति स्मृतम्।।18
पूर्व्वपश्चिमविस्तारं स्त्रिशार्द्धोत्तर षट्शतम्।
ताभ्यां नृभ्यां गर्य्याग्ग्रामः कृतस्तत्र कुलास्स्थितिः।।19
विष्णुलोकावनीशे तत्कुलं भो वल्लभो तदा।
एको यः कण्ठपाशश्च द्वितीयो ब्रह्मराशिकः।।20
व्याधपुरग्रामसंस्थो नृप हस्तिग्रहाधियो।
स राजा विष्णुलोकाख्यश्चतुरङ्ग बलान्वितः।।21
यम् वस्नावनते ताभ्यां यातो जाग्राम हस्तिनः।
तृहस्तिनं तदा लब्ध्वा श्वेतेभश् श्वेतपुच्छकः।।22
वैशिनामतृतीयश्च मुक्तास्ते हस्तिनस्त्रयः।
सीतान्नदिनदीञ्चेमामवतीर्य्य मल्याङ्गताः।।23
तेनानुयाता राजाभ्यां नृभ्यां सह गजा.........।
तं भूपमागतं नाह्वातौ गर्य्याम् ग्राम संस्थितौ।।24
दृष्ट्वेमावागताबुचुर्म्मादृतो मे कुलंन्विति।
गृहीत्वा लोहितदन्तं गजं निदद्वन्द्वदेशजम्।।25
नीत्वात्र बन्धिनंदग्रामे गर्य्याक् नामाकरोन्नृपः।
नृपो नृभ्यश्चतुर्भ्यस्तां भूमिं भूयोऽव्यदाबत्तदा।।26
त्रः त्रैदेशोस्थितं लिङ्गं पुनरून्मीलितं ततः।

द्वौ स्त्रीजनौ पुमानेक ईश्वराज्ञोऽभवत् सुतः।।27
नृपेन्द्रदेवी संज्ञाया तेन् ह्यं अमृतयोषितः।
दय् सान् संज्ञे पवित्राख्यो नरा एके गर्य्याक्स्थिताः।।28
राजहस्ति ग्रहे ताभ्यां हस्तिपोऽनुगतस्ततः।
अञ्चेन्देशे पुनर्लब्ध्वा प्रकार गिरजै गतान्।।29
थ्पल्क्रसाङ्संज्ञके..............................।
व्लेङ्..।।30
तेङ् सान्नार्य्याश्च पुत्रास्ते व्रः उमासंज्ञके स्त्रियौ।
पवित्राख्यो नरोऽभूवन् देप्संज्ञायाश्चतु...........।।31
श्रीब्रह्मसंज्ञो पुरुषौ देह्यंकर्पूर संज्ञके।
उमास्त्रियोऽभवन् पञ्च सुताः......हस्धर्म्मसंज्ञकौ।।32
पुरुषौ द्वौ स्त्रियस्तिस्त्रः व्रः व्रैब्रह्नसंज्ञकाः।
परमशिवपदाख्यं नृपन्तु हस् इतस्तदा।।33
परिचरणेन धर्म्माख्यः प्रतिदारकाधियः।
झोक्ग्रग्यर्नाम विषये भद्रां भूमिमदान्नृपः।।34
द्विशतं सहस्त्रमेषं भूमेर्व्विस्तरमुच्यते।
सहस्त्रमेकमायामं ग्रामन्तत्राकरोज्जनः।।35
स्वाय्जोक् देशेपि तद्भार्य्याग्रामेऽस्मिन् स्थापिता भवेत्।
परमिवीराख्य भूपे स धर्म्माख्योऽपि वल्लभः।।36
शिल्पवित्तमुपश्लिष्टः परिचरणेन्वभृत(म्)।
तदाज्ञया तदा शिल्पी भूत्वा धर्म्माह्वयो नरः।।37
द्विकन्ये तत्कुलं द्यिसावित्रीसंज्ञे नृपप्रिये।
रचनाधार गन्धेनां प्युपश्लिष्टे तदा नृपम्।।38
श्रनामा गुरुदेवाख्यसुहृत्प्रियतमोऽभवत्।
ऋषि कम्बुनामदेवं तेन नीत नृपाज्ञया।।39
सन्तच्वरय् नामदेशे तं संस्थाप्य पुनरागतः।
धिनामद्येयास्य पुत्रो वशेजाख्यः शुभभृतः।।40
व्रः व्नं कन्ताल्लुनार्नामा लिङ्गपुरे लिङ्गयाज्ञकः।
चतुरो भूमिभागश्च लब्ध्वा सर्व्वधनैः शकैः।।41

चन्द्रवेदवीलैस्तत्र पञ्चाशद्वा (स) संस्थितः।
व्रः प्राक्द्वट्कव्यक् सीमात्रवाङ्ख्यङ्नां ग्रामतः।।42
लिङ्गेऽस्मिन्नाश्रमं कृत्वा पूजां दधाद्दिनं प्रति।
तस्यानुजो मादविद्योऽप्युपेन्द्राख्यस् सलब्धवान्।।43
गृहीतां राजकुलस्त्रया राजेन्द्राश्रमसंस्थया।
तस्या असाना(म) धेयाया उपकल्पाख्य पुत्रकः।।44
विशेषनामधेयस्य रौसंज्ञा यानुजा तटः।
धिसंज्ञोऽभूत् सुविद्यो राजकुलस्त्रिपतिश्च सः।।45
दुर्द्धसंज्ञस्य व्रौसंज्ञो ज्येष्ठभ्राता मदाबलः।
गच्छाच्छ्रीसूर्य्यराजाङ्घ्रिजो योऽनगतस्तदा।।46
सावित्रीनामधेयाया याश्चतस्त्रस् स्त्रियोऽभवन्।
देप्सानसंज्ञौ च पुरुषौ सत्कर्पूर उमा स्त्रियः।।47
सभायते ब्रः सन्ताचद्राय् नाम्नो भार्य्याभवत्।
हृदयाख्यो ततः पुत्रौ रूत्कर्पूर उमा स्त्रियः।।48
मुनिलिङ्गपुरे लिङ्गपूजने तौ विशेषकौ।
तयोस्त्रिरनुजा विजसंज्ञा स्वाय्च्वङ्नरप्रिया।।49
कर्पूरनार्य्याश्च सुताः जन्त्यक्त्रः संज्ञाका(:)स्त्रियः।
त्यक् संज्ञा या स्ततोऽभूवन् चङ्सान् अस्संज्ञकास्त्रियः।।50
....।
ते च लिङ्गपुरे लिङ्गयजने सिलिनोरतः।।51
जनसंज्ञायाः पञ्चपुत्रा द्वे स्त्रियो पुरुषास्त्रयः।
नराय्-से-सं-संज्ञास्तु वाङ्छ्भार संज्ञेस्त्रियौचयौ।।52
सुरुङ्गं पूर्व्वतस् स्थानात् षड्ढस्तेनोच्छृतिकतम्।
प्राकारदीर्घिकाकृद्यान् कृत्वा तत्र द्विलिङ्गकम्।।53
द्विवृष परमेशार्च्यां स्थापयित्वा सदेविकाम्।
श्रीहर्षवर्म्मराज्ये ये कर्म्मिणः पुरुषा(:) स्त्रियः।।54
नरायिहाख्यः गर्य्याक्नामा केनामाख्लोज्कणम्यङ्वरः।
मृतयोस्तयोरूचायौ वङ्छ्भर पुत्रगतौ तदा।।55

अर्थ- ....ईश्वर की वन्दना करता हूँ जिनकी आत्मा पाँच प्रकारों से पालन में चार और बहुत प्रकारों से भेद है एक प्रकार से उसमें गत है अचल है।।1

..............केश का भेद है जो है केशान्त और जो केश कर्मा है... ....एक ज्ञाता है। जो.......एकाधी है।।2

....................आकाश, द्विज में स्थित जो दुःख रूप वायु वाहन है। उस, सब के कारण की सम्यक् स्तुति करके कहूँगा मानवों की इस जाति को।।3

इन्द्रपुर नगर में परमेश्वर नाम का राजा था। वह बुद्धि से मनु के समान सम्यक् शासन करने वाला था, धर्म से युक्त होकर लोगों के लिए शासन उपाय से करने वाला था।।4

युद्ध को योद्धा की बुद्धि वाला शत्रु की बुद्धि और धीरता दिखाता हुआ उद्दण्ड रूप से जो ईश्वर अचूक शक्ति से शीघ्र सगुण को निर्गुण विधान करने वाला था।।5

...........जीविका वाला, वन में वास करने वाला, जो शत्रु युद्ध में शीघ्र दौड़ता है। मुत्युपर्यन्त मृत की नाई चलने वाला, यहाँ से मनुष्य के लक्षण को जो न सीख सका।।6

...........भंग करने वाले जिस धर्म मित्र के नित्य ही सुख से अपना करने वाला मानव पालन में तुल्य भावना वाला था।।7

जैसे लोकपाल इन्द्र हैं और विश्व के ज्ञाता और जल वृष्टि देने वाले हैं वैसे ही भिन्न-भिन्न राजा को भय देने वाला राजा भूमि पर जयध्वज है।।8

पुनः-पुनः अतिशय प्रकाशमान जिसका तेज है विश्व की सभी दिशाओं में शीघ्र जाने वाला बराबर है ऐसे राजा शत्रु रूप अन्धकार को चीरता हुआ हठ से सूर्यवत् किरणों वाला था।।9

..........जिसकी याचना बीती हुई प्रकाशों से धर्म के लिए है राज्य में समृद्धिशाली लोगों की इससे बढ़कर याचना नहीं थी (है)।।10

व्याधपुर में 'वैक्रपास' वैकङ् ग्राम के रहने वाले नर-नारियाँ उनके प्रिय लोग सज्जन के मद में (अच्छे वाद-विवाद में) वाचने में वंश

सहित प्रार्थित हुए थे।।11

............शिव ही मोक्ष देने वाले हैं ऐसी धारणा वाला शिवभक्त शिवकैवल्य और दूसरा जो शिवविन्दुक था दोनों की स्त्री छोटी बहन स्वामिनी ह्यङ्मृत नाम से प्रसिद्ध थी।।12

............वह राजा महेन्द्र गिरिराज को भोगने वाला सभी विषयों की शान्ति के लिए मुख्यमन्त्रियों को नियुक्त करे।।13

..........मताज् श्री पृथ्वी नरेन्द्र शत्रु रूप सूखे काठों में जो अग्नि के समान जलने वाला उन दोनों मानवों से वीर साथी से युक्त मल्याङ् पद को तब प्राप्त हुआ।।14

भक्त लोग इन्द्रियों के दमन करने वाले उस गति से हमेशा कर देने वाले सभी भूमि को मन की चाह के अनुसार देखकर स्त्रियाँ चली गईं।।15

...............निवेदन कर सुलभ गति और उससे उत्पन्न कर्म तीर्थ नाथ आदि से अलंकृत मुख्य मन्त्री से प्रार्थित को।।16

उस गर्य्याग् भूमि को तो उन दोनों से उस राजा ने अपनी यथोचित राय से परमेश्वर राजा द्वारा दी हुई 934 शाके में ले ली।।17

पृथ्वी की दीर्घता, लम्बाई दक्षिण उत्तर की भूमि से है एक हजार पाँच सौ पाँच है।।18

पूरब और पश्चिम का विस्तार छह सौ पन्द्रह है। उन दोनों मनुष्यों से गर्य्याग् ग्राम में अपने वंश की स्थिति वहाँ बनायी गयी थी।।19

विष्णु लोक नामक राजा के विषय में उसका कुल तब प्रिय हुआ। एक जो था वह कण्ठपाश और दूसरा ब्रह्मराशिक हुआ।।20

व्याधपुर ग्राम में रहने वाला राजहस्ति महाधिप था, वह राजा विष्णुलोक नाम का चतुरंगिणी सेना के बल से युक्त था।।21

जिसको वरत्त से अवनत होने पर दोनों से प्राप्त किये गये हाथी तब तीन हाथी पाकर 'श्वेतेभ' और श्वेत पुच्छक नामक हाथी।।22

वैशि नाम का तीसरा हाथी तीनों हाथी मुक्त हुए। इस सीता नदी को पारकर माल्याङ् गये।।23

उससे उसके पीछे गये दो राजाओं मनुष्यों के साथ हाथी............

उस आये हुए राजा को गर्य्याक् ग्राम रहने वाले दोनों।।24

इन दोनों को आये हुए देखकर बोले- मेरी माता से मेरा कुल है। लोहित दन्त हाथी को लेकर निद्वन्द्व देश में उत्पन्न हाथी को।।25

ले करके यहाँ बन्धिनम् ग्राम में गर्य्याक् ग्राम नाम राजा ने रखा था। तब राजा ने चार मनुष्यों को फिर भूमि दी थी।।26

तब ब्र: ज्रै देश में स्थित लिंग को पुन: निकाला गया था। दो स्त्रियाँ एक पुरुष (ईश्वर की आज्ञा) ईश्वराज्ञ पुत्र हुआ।।27

नृपेन्द्र देवी नाम के उससे ह्यं अमृत स्त्रियाँ थीं। देय सान् नाम के पवित्र नाम का मनुष्य एक गर्य्याक् में रह गया था।।28

तब राजा से हाथी ग्रहण करने में उन दोनों के पीछे गये हस्तिप: हस्ती के पालने वाला गया पीछे अञ्चेन् देश में पुन: पाकर प्रकार गिरे गे गये हुओं को।।29

थ् पल् साङ् नाम के............व्लेङ्...........।।30

तेङ् सान् स्त्री के बेटे ब्र: उमा नाम की स्त्रियाँ थीं। पवित्र नाम का मनुष्य हुआ दे प् नाम के चार......।।31

श्री ब्रह्म नाम का दो पुरुष देह्य कर्पूर नाम की उमा स्त्री के पाँच पुत्र हुए.......इस् धर्म नाम के।।32

दो पुरुष तीन स्त्रियाँ ब्र: व्रौ ब्रह्म नाम के परमशिवपद नामक राजा को तो इस् इतस् तब।।33

परिचर से धर्म नाम का प्रतिदारकोधिप था। चोक गार्गयर नाम के विषय में भद्रा भूमि राजा ने दी।।34

पृथ्वी का विस्तार एक हजार दो सौ था। एक हजार दीर्घता में ग्राम उस आदमी ने बसाया था।।35

स्वाय जोक् देश में भी उसकी स्त्री के ग्राम में इस ग्राम में स्थापित थी। परमी वीर नामक राजा के समय में वह धर्म नाम का भी वल्लभ था, प्रिय था।।36

शिल्प वित्त से नजदीक सटा हुआ परिचरण में अमृत था। उसकी आज्ञा से तब शिल्पी होकर धर्म नामक आदमी।।37

दो बेटियाँ वह कुल धि सावित्री नाम की नृप प्रिय नाम की तब

राजा को रचनाधार गन्ध से इसे नजदीक रखने पर।।38

श्रीनाम के गुरुदेव नाम के मित्र अतिशय प्रिय हुए। ऋषि कम्बु नाम देव को उसके द्वारा ले जाया गया राजा की आज्ञा से।।39

सन्त च्त्वरय नामक देश में उसे रखकर फिर आया। धि नाम के पुत्र ब्रशेज नाम का शुभभृत था।।40

ब्रः व्नं कन्ताल्लुनार नाम कलिंगपुर में लिंग यज्ञ करने वाला याज्ञक था। पृथ्वी के चार भाग पाकर सभी धनों से युक्त।।41

941 शाके में वहाँ पचास नौकरों को रखा था। व्रः पूर्व, द्वट् द्वय कव्यक् सीमात्रवाङ्ख्यङ् ग्राम से।।42

प्रतिदिन इस लिंग के समीप आश्रम बनाकर पूजा देवे। उसके भाई छोटे माद विद्य भी उपेन्द्र उसने पाया था।।43

ग्रहण की गयी राजकुल की स्त्री से राजेन्द्राश्रम रहने वाली से उसके असानाम से उपकल्प नामक पुत्र हुआ था।।44

विशेष नाम वाले के रौ नाम की जो छोटी बहन थी तटः। धिनाम का सुन्दर विद्या वाला हुआ राजकुल की स्त्री का पति भी वह था।।45

दुर्द्ध नाम के व्रौ नाम का ज्येष्ठ भाई मदावल था। तब श्री सूर्य राजा के चरण की धूल का जो अनुगामी था।।46

सावित्री नाम वाली की जो चार स्त्रियाँ हुई दोसान नाम के दो पुरुष रुन् कर्पूर उमा स्त्रियाँ थीं।।47

सभापति ब्रः सन्ताच् द्राय नाम की स्त्री हुई। हृदय नाम का तब दो पुत्र रुन् कर्पूर उमा स्त्रियाँ।।48

मुनिलिंगपुर में लिंग के पूजन में वे दोनों विशेष रूप से रहे। उन दोनों तीन छोटे भाई विजनाम के स्वाय् च्वङ् जनप्रिय थे।।49

कर्पूर नारी के बेटे जन् त्यक् त्रः नाम की स्त्रियाँ। त्यक् नाम के तब हुए चङ् सान् अज्ञ् नाम की स्त्रियाँ।।50

...............और वे लिंगपुर में लिंग के पूजन में शील वाले रत रहा करते।।51

जो जन् नाम के थे उनके पाँच पुत्र दो स्त्रियाँ तीन पुरुष थे। नशच्-से-सं नाम के वाङ्छ्मार नाम की दो स्त्रियाँ।।52

पूरब से सुरुङ्ग षद्ध उससे उच्चृति किया छह हाथ ऊँचा किया प्राकार आदि करके वहाँ दो लिंग स्थापित किये गये।।53

दो बैल परेश की पूजा के स्थापित करके देवी सहित को। श्री हर्षवर्मन के राज्य में जो नौकर पुरुष स्त्री जन।।54

नरायिह नाम का गर्य्याक् नाम के ख्लोञ् कण्भ्यङ्वर=श्रेष्ठ दोनों के मरने पर उपाय वङ्छ मार पुत्र गत हुए दोनों तब।।55
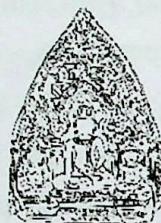
प्रसत स्रलौ अभिलेख

Prasat Sralau Inscription

प्रओक जिले में प्रसत स्रलौ है। यहाँ यह अभिलेख पाया गया जो प्रारम्भ में त्रिदेवों की प्रार्थना तथा राजा हर्षवर्मन की प्रशस्ति का वर्णन करता है। इसके बाद इस अभिलेख में यह लिखा है कि जयवर्मन पंचम के शासन काल में व्रह दमनय नगर की स्थापना हुई और उसे उदयादित्यवर्मन के शासन काल में एकदम उजाड़ दिया गया। नरपतीन्द्रवर्मन के द्वारा पुनः इसे बसाया गया जो वरई कनलोन परिवार के थे।

संस्कृत एवं ख्मेर के मूल पाठ से हम यह जानते हैं कि हर्षवर्मन शक संवत् 987 में गद्दी पर बैठा। इस अभिलेख में कुल 15 पद्य हैं जिनमें केवल पद्य संख्या 9 ही अस्पष्ट है।

जॉर्ज सेदेस द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन हुआ है।[1]

---

1. *IC*, p.221

।।ॐ नमः शिवाय।।

जीयान्नेत्र वराङ्गाभ्यान्दद्यद् वह्निविधू भवः।
कर्म्म कुर्व्वनिव स्वैरन्दाहाह्लादनशक्तिजम्।।1
वन्दे विष्ण्वङ्घ्रि माक्रान्तभुवनं गङ्गयोद्धृतम्।
सपत्न्या जनकाद्रीन्द्र तुङ्गताक्षेपनादिव।।2
वेद्यसन्नामभिस् सार्थैस् स्वयम्भूस्त्रष्ट्टपूर्व्वकैः।
आदिकारणमाख्यातन्न मद्धन्धूत संशयः।।3
राजा श्रीहर्षवर्म्मासीत् सन्नयायागमभूषणः।
असमुद्रमहीन्द्राद्रि मूर्द्धारूढाङ्घ्रिसुद्रुमः।।4
सप्रासुविवरैर्योऽलं सप्रप्रकृतिमण्डलम्।
सप्तद्वीपमिव व्याप सप्तसप्तिरिवांशुभिः।।5
तेजस्विनो जगज्जातरज्जनेनोर्ज साजयत्।
तीक्ष्णान्मृदूनणून् स्थूलान् योऽग्नीन्दूङूनिषांशुभान्।।6
नापुः प्रकृतयस्त्रासं परतोऽपि किमु स्वतः।
यस्य कान्त्याश्रिता कान्ता केनाप्यकलयत्स्मरम्।।7
दग्धदृप्तद्विषद्वीप दीपिताजिनिशोऽनिशम्।
यत्तेजोदहनो दीप्त्या जयश्री दर्शनादिव।।8
विधिवत्कर्म्मकुशलः पक्षिहिंस्रोऽपि संयु(गे)।
..........द्विणमांस पिण्डेन यः काकादीनतर्प्पयत्।।9
तस्य शूरश् शुचिर्मौली मन्त्री मन्त्रिगुणोचितः।
चतुर्णाम् राजकोशानां यस्तृतीयं प्रतिप्रभुः।।10
ब्रैकन्लोङ्साधुसन्तान सन्तानकफलोदयः।
यस्त्यक्तजड़ सङ्गोऽपि सङ्गोपित वृषप्रियः।।11
यः श्रीनरपतीन्द्रादिवर्म्मान्तन्नाम नामतः।
सान्तानिकमभूद् भूमिपतिना तेन लम्भितः।।12
वीरेन्द्रवर्म्मविहितं भूपेश्रीजयवर्म्मणि।
उदयादित्य राज्ये तु शून्यं यद् व्रःदंनप्पुरम्।।13
श्री हर्षवर्म्मधरणीपतिशासनेन
तस्मिन् कृते स पुनरर्पितबन्धुवर्गो।

लिङ्गं द्विहस्तपरिमाणमजद्वयस्य
विष्णोर्भवस्य विधिना प्रतिमेव्यधत्त।।14
तत्पुरभवति श्रीनरपतीन्द्रवर्म्मव्यमेय मुदिहर्षिः।
स्वीकुरु रक्षण दक्ष क्षम मिदाभिति वदनमव्वादीत्।।15

अर्थ- ।।प्रणव सहित शिवजी को नमस्कार है।।

भगवान् के दाहक तथा आह्लादक दोनों शक्तियों से एकत्रित रूप में उत्पन्न, मनमानी करते हुए कामदेव को जिन्होंने अपने नेत्र तथा मस्तक (पर स्थित चन्द्रमा) से आग और अमृत दोनों प्रदान किये हैं उन भगवान् शिवजी की जय हो।।1

भगवान् विष्णु के उन चरणों को नमस्कार करता हूँ जो वामनावतार के समय सभी भुवनों को आक्रान्त कर लिये थे तथा स्वर्ग गंगा से भी जो ऊपर उठे हुए थे मानो पत्नी सहित पर्वतराज सुमेरु की सर्वोच्चता को कम कर रहे हों।।2

सृष्टि करके स्वयम्भू ब्रह्मा जिन्होंने अपने वेद्यस नाम को सार्थक किया है उन आदि कारण रूप में प्रसिद्ध ब्रह्मदेव को संशयहीन होकर नमस्कार करता हूँ।।3

आसमुद्र हिमाचल तक के सभी राजे जिनके चरणों में नतमस्तक थे ऐसे न्याय एवं आगम जैसे सद्विद्याओं से अलंकृत राजा श्री हर्षवर्मन थे।।4

सातों प्राण विवरों से (आँख, नाक, कान, ब्रह्मरन्ध्र तथा मुख से) जिन्होंने सातों प्रकृतियों के मण्डल को (स्वामी, अमात्य, पुर, राष्ट्र, कोष, दण्ड तथा सुकृत- इन सातों प्रकृतियों के समूह को) पूर्ण कर देने वाले इन्होंने सातों द्वीपों को सूर्य की किरणों की तरह व्याप्त कर रखा था।।5

जिन्होंने अग्नि, चन्द्रमा, तारागण तथा सूर्य के क्रमशः तीक्ष्ण, मृदु, अणु और स्थूल तेजों को अपनी तेजस्विता, प्रजारंजन तथा शक्ति से जीत लिये हैं।।6

जिसके प्रजाजन शत्रुओं से भी कष्ट न पा सके वहाँ अपनों से कष्ट पाने की बात ही क्या? उनके सौन्दर्य पर आश्रिता (सौन्दर्य से

आकर्षिता) किसी भी स्त्री ने कामदेव को गिना ही नहीं (सुन्दरों में गिना ही नहीं)।।7

जिसके तेज रूपी अग्नि के निरन्तर जलने से युद्ध में जले हुए गर्वोन्त शत्रु द्वीपों के प्रज्वलित प्रकाश में ही मानो वे जयश्री के दर्शन करते हों।।8

किसके साथ कैसा व्यवहार किया जाये इस विषय में कुशल राजा, पक्षी तथा हिंस्र पशुओं के सम्बन्ध में भी व्यवहार कुशल होने के कारण युद्ध में काकादि हिंस्र पक्षियों को शत्रु शरीर के मांसपिण्डों से जिसने संतृप्त किया।।9

उनका वीर, पवित्रों में श्रेष्ठ, मन्त्र्योचित गुणों से पूर्ण मन्त्री था जो चार राजकोषों में से तीसरे का मालिक था।।10

व्रैकन्लोङ् का सज्जन सन्तान जो संस्थानिक पद को प्राप्त हुआ था वह मूर्खों के संग छोड़ने पर भी वृषप्रिय भगवान् शिव द्वारा अच्छी तरह रक्षित था।।11

जो उस राजा के द्वारा नियुक्त किये जाने पर अपने नाम के आगे नरपतीन्द्र तथा नाम के पीछे वर्मन यह उपाधि धारण कर संस्थानिक हुआ।।12

वीरेन्द्रवर्मन द्वारा विहित, महाराजा श्रीजयवर्मन के पूर्वांचल राज्य के शासन-काल में व्रांदनपुर जो शून्य (जन या शासन शून्य) हो चुका था उस व्रांदनपुर को।।13

श्री हर्षवर्मन राजा के शासन के द्वारा पुनः उनके बन्धुवर्ग में अर्पित कर दिया गया तथा दो हाथ ऊँचे दोनों देवों श्री शिवजी तथा श्री विष्णु की मूर्तियाँ, मूर्ति स्थापन विधि से प्रतिष्ठापित की गयीं।।14

उस व्रन्दनपुर की जो रक्षा करते हैं वे महाराजा श्री इन्द्रवर्मन रक्षा करने में दक्ष तथा सक्षम हैं ऐसा सब लोग स्वीकार करें यह कहकर बाजा बजा दिया।।15

९७

लोनवेक अभिलेख
Lonvek Inscription

लोनवेक एक शहर का नाम है जो उसी नाम के जिले का मुख्य स्थान है। अभिलेख एक खड़े पत्थर पर उत्कीर्ण है। यह अभिलेख इस स्थान से देश की राजधानी नोमपेन्ह में सुरक्षित है। सत्यदेव कुल नाम के एक परिवार द्वारा कई एक धार्मिक स्थापत्यों की चर्चा यह अभिलेख करता है। इस परिवार का प्रथम सदस्य रुद्रवर्मन था जिसकी पत्नी का नाम नरेन्द्रलक्ष्मी था। इस पैतृक परिवार का अन्तिम सदस्य शंकर था। शंकर, शंकर पण्डित तथा यतिशंकर एक ही व्यक्ति का नाम था जो तीन राजाओं का पुरोहित था। ये तीन राजा थे- सूर्यवर्मन, उदयादित्यवर्मन तथा हर्षवर्मन।

यह अभिलेख हर्षवर्मन के राज्य में शंकर द्वारा द्विरददेश में शिव की मूर्ति की स्थापना का वर्णन करता है।

इस अभिलेख में 59 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 1 एवं 28 से 30 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।

आयमोनियर ने इसका सम्पादन किया है।[1]

........उज्ज्वलत्तमसः परम्।
तद्व्यापि च न तत्स्पृष्टमाभाति भुवने.........।।1
.........न् क्षेत्रे वेशनिस्सृतिभाग् विभुः।
अक्षीणभोगमोक्षार्थ मेघेऽक्र्क इव राजते।।2
(नमाम्यु)मापतिं कान्तां काये सामि विभर्त्तियः।
विश्वेषां पितरौ भावं प्रत्यक्षं प्रथयन् विभुः।।3
चतुरास्यन् नमस्यामि शङ्कुजागर्त्ति योऽनिशम्।
वीक्ष्यं विष्णुं श्रिया सुप्तं क्षीराब्धौ सृष्टिरक्षया।।4
नमो मुरारये ज्यायस् स्ववीर्य्यन्दर्शयान्निव।
स्वर्व्वासिवैरिणो दैत्यां(त्यान्) स्त्रीरूपेण जघान यः।।5
सरस्वतीन्नमे हंसी दुर्ग्रहा लीलयामला।
लोला शब्दगुणे स्वच्छमानसे या रता भृशम्।।6
आसीत् पुन्नागवर्म्माख्यश् शक्तिमान् रुद्रवर्मणः।
नरेन्द्रलक्ष्म्याञ्जातोऽद्रिपुत्र्यां गुह इवेश्वरात्।।7
पुंसां वीर्य्याद्युगदो यो देहत्राणसहो युधि।
यतत् पुन्नागवर्म्मेति सूरिभिस् स्म निरूच्यते।।8
सप्तदेव कुलग्रामः क्षोण्या सक्षेत्रसंसदि।
पितृसीमिकदत्तायां येनाकारि समन्ततः।।9
ग्रामे रुद्रालयाख्ये यः कृते किङ्करपूरिते।
श्री भद्रेशासनलिङ्ग(ं) स्थापयामास कल्पितम्।।10
यः प्रासादादिभिर्भूयस् समृद्धैस्तं समस्तकरोत्।
तुङ्गन्तटाकमखनत्तत्रोल्लासित लाञ्छनम्।।11
विष्णवङ्शस्य पितुस् सप्त विष्णु प्रतिकृतीर्व्यधात्।
भक्त्या योऽनेकदेशस्था भुवनोदीर्ण्णशक्तिवाः।।12
द्विरदपुर निवासं पूजयोन्मील्यं शम्भुं
कृतविबुधविभूतिं शक्तिमान् प्राङ्गनेयः।
सविहतिनिजरूपं मातृरूपञ्च देव्या

---

1. *Le Cambodge*, Vol. I p.215

अतुलमहिमहानेस् स्थापयामास मूर्त्तिम्।।13
तस्य मात्रन्वये जातस् संविदाचार रञ्जितः।
धर्म्मार्थकामधौरयेस् सर्व्वीयो गुणसंपदा।।14
महेन्द्राद्रिस्थितेः प्रेयान् भृत्यश् श्रीजयवर्म्मणः।
उदितोदितवंशो योऽधिपो व्यजनधारिणाम्।।15
ससेवानीयते यस्मै वाल्लभ्यास्मयचेत से।
सर्व्वत्र निजदेशेऽन्यां भूयो भूमिन्ददौ नृपः।।16
तन्मात्रन्वयजश् श्रीमान् वासुदेव इव द्विषः।
बभूव वासुदेवाख्यः कुलत्राणपराक्रमः।।17
श्रीन्द्रवर्म्माख्यनृपतेश् श्रीयशोवर्म्मणश्च यः।
अ(नुष्ठेय) विद्यत्तेस्म राजनीतिविशारदः।।18
तन्मात्रन्वयजाश् श्रेष्ठा धर्म्मिष्ठाः पुरुषास्त्रयः।
अपालयन् कुलान् न्याय्यमक्षीण क्षेमरक्षणात्।।19
श्रीहर्षवर्म्मणो राज्ये ये च श्रीशानवर्म्मणः।
अनुतस्थुरनुष्ठेयङ्क माच्छ्रीजयवर्म्मणः।।20
त्रयाणां योऽग्र(त्र?) धिषणो मनोरूढ़ निजाशयः।
शिवश् शरण्यं मेऽस्तीति मनश्शिव इतीरितः।।21
यो वल्लभो भागिनेयीं राज्ञो राजेन्द्रवर्म्मणः।
रूपाचारामी(मि) रामाङ्गीं प्राणाख्यां स्वामिनींव्यधात्।।22
भागिनेयौ महात्मनौ सर्व्वशास्त्रेष्वधीतिनौ।
अकरोद् याजकौ यश् श्री राजेन्द्रेश्वर लिङ्गयोः।।23
शिष्टान्वयाचारगुणा मृते राजेन्द्रवर्म्मणि।
साप्यभ्यन्तर लेखि(खी) नामधिपा जयवर्म्मणः।।24
उदितोदितवंशौ द्वौ कवी श्रीजयवर्म्मणा।
न्ययुज्यता शेमुषीद्धौ हेम शृंगेशयाजकौ।।25
उदीर्ण्णकीर्त्तयस्तेषामासुर्म्मात्रन्वयोदिताः।
बल्लभा पञ्च पुरुषा भृत्याश् श्रीजयवर्म्मणः।।26
तेषां कवीश्वराख्यो यो ब्रह्मचारी महामतिः।
त्ययुज्यताग्नी(ग्नि) कार्य्येषु श्रेष्ठश्श्रीजयवर्म्मणा।।27

अथ श्री सूर्य्यवर्म्मासीत् सम्राड् राजन्वतीधरः।
मात्रन्वयोदितस्तस्य.................................॥28
रोषानलाद् ध्रुवं शम्भोरनङ्गं वीक्ष्य मन्मथम्।
कान्तोपमां नयन् धाता निर्म्ममे नु............॥29
तेजस्विभूभृज्जितये यस्य याने मिया ध्रुवम्।
रविरन्तर्दधे शैला गजव्याजेन वा............॥30
धूमौ यस्याध्वरे धर्म्म्यान्धुरं धृतवतो भुवः।
नैवामलिनयद् ब्योमयशोऽपि ख्यातीभूभृता(म्)॥31
कृष्णाग्राही कुलहिते पातयन् भष्ममाहवे।
युक्तं योऽप्यर्ज्जुनयशाः भीमसेनाऽहितास्त्रकृत्॥32
अहो योऽथर्व्वनिष्णातो योगासक्तमना भृतम्।
बबन्ध निश्चलं लोकान् निश्शेषान् सप्ततन्तुभिः॥33
पाणिनीयमते विद्वान्नितरामपि सत्तमः।
परार्थोत्पादने द्रव्ये जातिमुत्सृजतिस्म यः॥34
यत्कीर्तिरेकविक्रान्ता चेदाक्रंस्यत् पुरा ध्रुवम्।
त्रैलोक्यं व्रीड़या विष्णुर्नाक्रंस्यत् तत्त्रिविक्रमः॥35
विहित विबुधबोधो वन्दिताङ्घ्रिर्म्महेशैस्
समधिकधिषणाशीर्व्वाहु वीर्य्योद्धराशः।
निरतिशयरयद्विड्वेगरोधी स्वंधर्म्म
सुरपतिरिव सम्राड् यो ऽन्वशाच्छान्त बाधम्॥36
श्री सूर्य्यपर्व्वतस्थस्य शम्भुलिङ्गस्य यानकः।
कवीश्वरश् श्रुतधनस्तेनायुज्यत शुद्धधीः॥37
कवीश्वरश् समावृत्तो वित्तविधायशस्विनः।
भागिनेयीमुदवहच्छ्रीवागीश्वरमन्त्रिणः॥38
तद्भागिनेयस् संशुद्धः कविश् शङ्करपण्डितः।
तस्य होता क्षितिपतेरभ्यर्हिततरोधिया॥39
यथावत् संस्कृतस्तीर्थाच्छब्दशास्त्रादिवाङ्मयम्।
योध्यगीष्टाचिरं सम्यग् विहितोत्सवदक्षिणम्॥40
बाल्यतश् शिष्टसभयो वर्णी व्रतपरायणः।

योऽकरोद् गुरुशूश्रुषास्त्रिविद्या गुरुवासतः।।41
अर्घ्य वक्त्रसहस्त्रेण पा(प) तञ्जलिरसङ्शयम्।
भाष्यार्थ व्यवृणोद् यस्तु तथैकास्येन विस्मितः।।42
द्रव्यं विधाय सामान्ये विशेषे गुणकर्म्मणी।
धर्म्मसाधनवित्त प्रोक्तो योऽपितर्क्कै कना(णा)दवत्।।43
सर्व्वशास्त्रेषु योगज्ञश्चतुष्कालेषु योगकृत्।
(नि)त्यं रतोऽपि शीले यो यमेनावर्त्तयद् गतिम्।।44
इद्धार्थरत्नशास्त्राब्धीन् पिवतो यस्य कृत्स्नशः।
क्रोधादिज्वलनो जाड्यतमश्च नु न मानसे।।45
सन्तानस् सत्रसा(स)र्व्वीयश् शिष्टश्श्वश्श्रेयसस्तुतः।
यत्रोदर्क्के समुदिते ज्यायस्ताकोटिमध्यगात्।।46
उदयादित्यवर्म्माथ क्षोणीन्द्रः क्षणदाकरः।
कीर्त्तिज्योत्स्नाभिरूर्व्वीन्द्र वंशक्षीरार्णवेऽभवत्।।47
योषितो वपुषा योधात् वीर्येण विबुधान् गुणैः।
लोकाञ्छत्तया द्विजान् दानैः वशं योऽयोजयत्तराम्।।48
गुणैकराशिद्यौरेयस् स्वर्ग्गते सूर्य्यवर्म्मणि।
(म)न्त्रिभिश्चक्रवर्त्तित्वे योऽभि(ष्य)षिय्यत सन्तराः।।49
वीक्ष्य मध्यस्थ हेमाद्रिजम्बुद्वीपं सुरालयम्।
अन्तस्स्वर्णाद्रिमकरोत् स्वपुरीम् स्पर्द्धयेष यः।।50
तस्मिन् स्वर्णाद्रिशिखरे दिव्ये जाम्बुनदे रुचा।
प्रासादे कालद्यौतं यश् शैवलिङ्गमतिष्ठिपत्।।51
राज्ञोदितोदितस्तेन धीरश् शङ्करपण्डितः।
न्ययुज्यत गुरूर्व्वीक्ष्य सत्रसत्कृतताभिनाम्।।52
त्रैलोक्य तिलके शैले स्वर्ण्णलिङ्गस्य याजकः।
स शुक्लाश् शुक्लपक्षेण तेनायुज्यत् भूभृता।।53
अथ श्रीहर्षवर्म्मासीदनुजो हर्षयन् प्रजाः।
सोदर्य्यस् स्वर्ग्गतौ भूप उदयादित्यवर्म्मणः।।54
तस्मिन् राज्येऽभिषेक्तायं गुरूश् शङ्करपण्डितः।

मन्त्रिभिस् स्थापयामास वशिष्ठो राघवं यथा।।55
ग्रहीतुमशकद्राजशक्तिद्वारैर्नगाधिजः।
नन्दिनीं गान् तु यो द्वन्द्ववृत्त्या तैर्व्वशमानयत्।।56
कलितापज्वरार्त्ताः प्राक् सिद्धिसाराधिकः प्रजाः।
चतुर्जातिक्रियायुक्त्या यश् शान्तिप्रापयन्तराम्।।57
क्षोणीश्वरो महिमभिर्भुवनेप्यतुल्यो
मान्यं पुरोधसमवाप्य स शङ्कराख्यम्।
आमुष्टि कौट्टिक समीहितासिद्धि कोटि-
न्धौम्यं युधिष्ठिर इवाति सुखेन लेभे।।58
सप्तदेवकुल मातृवंशजो भूधरत्रय पुरोहितो यतिः।
शङ्करश् शिविकयान्वितान्निभां सोऽदिशद् द्विरददेशशङ्करे।।59

अर्थ- ....उनके अन्धकार से परे। उसमें व्याप्त रहने वाले उससे छूकर प्रकाशमान भुवन में...।।1

.............क्षेत्र में वेश से निकले व्यापक। पूर्ण भोग एवं मोक्ष के लिए मेघ में सूर्य के समान शोभते हैं।।2

उमापति को नमस्कार करता हूँ अपनी उमा के शरीर में आधे भाग के रूप में जो धारण करने वाले हैं विश्व के माता-पिता व्यापक प्रत्यक्ष भाव को बिखेरते हुए।।3

चतुर्मुख ब्रह्मा को नमन करता हूँ जो सर्वदा लक्ष्मी के साथ सोये हुए विष्णु को क्षीरसागर में सृष्टि की इच्छा से देखते हैं।।4

मुरारि को नमन है जो बड़े हैं अपने वीर्य बल को दिखलाते से सब के वैरी दैत्यों को स्त्री रूप से जिसने मार डाला।।5

सरस्वती को नमस्कार करता हूँ। लीला से निर्मल दुख से ग्रहण करने योग्य हंसी के समान चंचला स्वच्छ मानस वाले आकाश में जो बहुत रत हैं।।6

नाम से पुन्नागवर्मन था जो शक्ति वाला था, रुद्रवर्मन का पुत्र था। नरेन्द्र लक्ष्मी में जो जन्म लिया था। जैसे पार्वती में शिव से कार्तिकेय हुए थे।।7

पुरुषार्थ से वीर्य बल आदि में जो उदार है युद्ध में शरीर की रक्षा

सहने वाला है। पुन्नागवर्मन इस नाम से ख्यात विद्वानों द्वारा कहा गया था।।8

सात देवों के कुल का ग्राम पृथ्वी के खेत सहित सभा में पिता द्वारा सीमा वाली दी गयी भूमि में सब ओर से जिसके द्वारा ग्राम बसाया गया।।9

रुद्रालय नामक ग्राम में जिसने दासों से पूर्ण किया था। श्री भद्रेशासन लिंग को कल्पित करके स्थापित किया था।।10

फिर जिसने प्रासाद आदि से समृद्धिशाली समस्त को किया था। (ऊँचे) तुंग तड़ाग खुदवाया था, वहाँ उल्लसित रूप से चिह्नयुक्त किया था।।11

विष्णु के अंश पिता की सात विष्णु प्रतिमाएँ बैठायी थीं। भक्ति से जो अनेक देशों में स्थित सारे विश्व में प्रसिद्ध शक्तियों वाली।।12

जिसने द्विरदपुर में निवास करके पूजा से शिव को उन्मीलन करके देवों के ऐश्वर्य को करके प्रांगण में शक्तिमान विहार के साथ अपने रूप को और देवी के माता रूप को अतुल महिमा वाली मूर्ति को स्थापित किया था।।13

उसकी माँ के कुल में जन्म हुआ ईश्वर के आचार से शोभित धर्म, अर्थ, काम में अग्रगण्य शिवभक्त गुण रूप सम्पत्ति से युक्त था।।14

महेन्द्र आदि की स्थिति से अतिप्रिय श्री जयवर्मन के दास उगे हुए उदित – वंश वाला जो पंखे धारण करने वालों का स्वामी था।।15

राजा ने फिर भूमि दी दूसरी सर्वत्र अपने देश में सेवा सहित नीति के लिए जिसे प्रियता और मुस्कान भरे चित्त वाले को।।16

उसकी माँ के वंशज श्रीमान्, शत्रु के लिए वासुदेव कृष्ण के समान वासुदेव नामक वंश रक्षा के पराक्रम वाला था।।17

जो श्री इन्द्रवर्मन नामक राजा के और श्री यशोवर्मन के बताये कार्य करता था तथा राजनीति में वह विशारद था।।18

उसकी माँ के वंशज श्रेष्ठ धार्मिक तीन पुरुष थे, कुलों का पालन किया था न्याययुक्त रूप से पूर्णक्षेम की रक्षा से।।19

और श्री हर्षवर्मन के राज्य में जो श्री ईशानवर्मन के पीछे ठहरने

वाले थे श्री जयवर्मन के कार्य को क्रम से करते थे।।20

तीनों के जो अग्र बुद्धि वाले थे मन में पैदा हुए अपने हृदय की बात- आशय वाले थे। 'मेरे शरण देने वाले शिव हैं' यह सोचने वाला 'मन शिव' नाम से ख्यात थे।।21

राजा राजेन्द्रवर्मन की भान्जी जो रूप और आचरणों से सुन्दरी थी प्राणा नाम की उसे स्वामिनी बनाया था जो वह राजा का प्रिय था।।22

दो भान्जे महान् आत्मा वाले सभी शास्त्रों के पढ़ने वाले थे, उन्हें श्री राजेन्द्रेश्वर के दोनों लिंगों के पूजा करने वाले थे।।23

शिष्ट लोगों के आचरण और वंश के आचरण रूप-गुण वाली राजेन्द्रवर्मन की मृत्यु होने पर वह भी जयवर्मन की अभ्यन्तर लेखी लोगों की स्वामिनी हुई थी।।24

दो उगे उदितवंश वाले दो कवि श्री जयवर्मन द्वारा हेमश्रृंगेश के याजक रूप से दो बुद्धिमान कवि नियुक्त किये गये।।25

प्रसिद्ध कीर्ति वाले उनकी माता के वंश में जन्म लिये प्रिय पाँच पुरुष श्री जयवर्मन के नौकर थे।।26

उनमें जो कवीश्वर नाम वाला ब्रह्मचारी महाबुद्धि वाला था अग्निकार्यों में जो श्रेष्ठ था, उसे श्री जयवर्मन द्वारा नियुक्त किया गया था।।27

इसके बाद श्री सूर्यवर्मन राजाओं का राजा सम्राट् था। माँ के वंशज से उदित उसके...।।28

शिव के क्रोध रूप अग्नि से निश्चित जले कामदेव को अनंग देखकर अपनी प्यारी समान सुन्दर रचना ब्रह्मा ने की थी.........।।29

तेजस्वी राजा के जीतने के लिए चढ़ाई में भय से निश्चित रूप से सूर्य छिप गये। सभी पर्वत हाथी के छल से..............।।30

पृथ्वी के धर्मयुक्त भार को धारण करने वाले राजा के यज्ञ के धुएँ आकाश को मलिन नहीं कर सके और प्रसिद्ध राजाओं के यश को भी मलिन नहीं कर सके थे।।31

कृष्ण को ग्रहण करने वाले वंश के हित में युद्ध में भस्म गिराते हुए युक्त ही उचित ही जो अर्जुन के यश के समान यशस्वी भीमसेन शत्रु

के अस्त्र या अहित करने वाले अस्त्र का निर्माण करने वाला था।।32

आश्चर्य है अथर्ववेद में निष्णात पारंगत योगी ने सभी लोकों को निश्चल रूप से सात तन्तुओं से बाँधा था।।33

पाणिनीय व्याकरण के मत में अतिश्रेष्ठ बहुत बड़ा विद्वान् भी दूसरों के लिए द्रव्य उत्पादन में जो जाति का त्याग करता था।।34

जिसकी कीर्ति एक विक्रम से युक्त है यदि पहले निश्चित आक्रमण किया होता, तीनों लोकों को लज्जा से विष्णु ने आक्रमण किया, सो वे त्रिविक्रम कहलाते हैं।।35

विद्वानों को बोध दे चुकने वाला पूज्य चरण महाराजाओं द्वारा अधिक बुद्धि, आशीर्वाद, बाहुबल, वीर्य में धुरन्धर आशा वाले अति वेग वाले शत्रु के वेग को रोकने वाले अपने धर्म को इन्द्र के समान जो सम्राट् बाधाओं को शान्त करके अनुशासन करने वाले थे।।36

श्री सूर्यपर्वत पर स्थित शिवलिंग के याजक कवीश्वर मुनी विद्या ही धन है जिसका ऐसा श्रुत धन शुद्धि वाले उस राजा के द्वारा नियुक्त किये गये थे।।37

समावर्तन के बाद कवीश्वर ने धन विद्या यश वाले श्री वागीश्वर मन्त्री की बहन की पुत्री का पाणिग्रहण किया था।।38

उनके भान्जे सम्यक् शुद्ध कवि शंकर पण्डित थे उनके हवन करने वाले, बुद्धि से राजा के अतिशय प्रार्थना के पात्र थे।।39

यथोचित रूप से संस्कार किया हुआ तीर्थ से पहुँचे पण्डित से शास्त्र आदि के वाङ्मय वाणी को जिसने शीघ्र पढ़ लिया, भली-भाँति उत्सव और दक्षिणा देकर पहले पढ़ने वाले उत्सव करते गुरु निकट रहकर गुरुदक्षिणा भी देते थे।।40

बचपन से शिष्ट विवेक वाला, उत्तम वर्ण वाला, व्रत में रत रहने वाला जिसने गुरु समीप पास करके अन्तेवासी बनकर तीन प्रकार की गुरु सेवाएँ की थीं।।41

भगवान् पतंजलि ने हजार मुखों से पाणिनि के सूत्रों के अर्थ भाष्य नाम से ख्यात का विवरण किया था उनके अर्थ जो एक मुख से कहे आश्चर्यित हो करके।।42

सामान्य में द्रव्य का विधान कर, विशेष में गुण और कर्म का विधान कर धर्म के साधन के ज्ञाता भी जो तर्कशास्त्र में कणाद मुनि के समान था।।43

सभी शास्त्रों में योग का ज्ञाता, चारों कालों में (बारह घण्टों-तीन घण्टे का एक प्रहर) योग करने वाला, शील में प्रतिदिन रहने वाला जो गति को इन्द्रियों के संयम से आवर्तित करने वाला था।।44

प्रकाशित अर्थ रूप रत्नों वाले शास्त्र रूप समुद्रों को कठिनता से जिस क्रोध आदि अग्नि पीने वाले के मन में मूर्खता जड़ता नहीं थी।।45

शैव की सन्तान शिव यज्ञ से सम्बन्ध रखने वाला, शिष्ट कल्याण के लिए सवेरे स्तुति करने वालों से प्रार्थित राजा लोग और अन्य लोग अपने कल्याण के निमित्त स्तुति करते हैं, ऐसे अन्धकार को चीरकर सूर्य के समान उग गये थे।।46

इसके बाद राजा उदयादित्यवर्मन चन्द्र के समान कीर्ति की किरणों से राजाओं के वंश रूप पक्षी समुद्र में हुए।।47

स्त्रियों को शरीर की सुन्दरता से, लड़ाई करने वालों को वीर्य बल से, विद्वानों को गुणों से, लोकों को शक्ति से, ब्राह्मणों को दानों से जिसने अपने वश में कर लिया था।।48

गुणों के एक ढेर उसके भी आगे गिने जाने वाले सूर्यवर्मन के स्वर्ग जाने पर मन्त्रियों द्वारा चक्रवर्ती पद पर जो अभिषिक्त किये गये थे।।49

स्वर्ग में बीचों-बीच स्वर्णपर्वत, जम्बू द्वीप, सुरालय आदि देखकर जिसने अन्दर सोने वाला पर्वत अपनी पुरी को बनाया था मानो इन्द्र के स्वर्ग से भी बढ़ने की होड़ लेने के समान ही यह कार्य किया था।।50

उस स्वर्णाद्रि के शिखर पर सुन्दर जाम्बु नद पर प्रकाश से प्रासाद देवमन्दिर या राजसदन पर सुवर्ण के शिवलिंग स्थापित की थी।।51

राजा के कहने पर उगे हुए धीर शंकर पण्डित गुरु देखकर सत्र के इस सत्कार को उस राजा के द्वारा नियुक्त किये गये।।52

त्रैलोक्य के तिलक पहाड़ पर स्वर्णलिंग के यजक वे श्वेत शुक्ल पक्ष से उस राजा से नियुक्त किये गये।।53

इसके बाद श्री हर्षवर्मन उदयादित्यवर्मन के सहोदर भाई (छोटे) जो प्रजाजन को प्रसन्न करने वाले थे। उनके सहोदर के स्वर्गीय होने पर राजा हुए थे।।54

उनके राज्य में अभिषेक करने वाला जो गुरु शंकर पण्डित थे मन्त्रियों द्वारा स्थापित किये गये थे। जैसे वसिष्ठ ने राम को राज्याभिषेक किया था।।55

जिन वसिष्ठ जी को राजशक्ति द्वारा गाधि के पुत्र विश्वामित्र न पकड़ सके थे। नन्दिनी गाय को जिसने द्वन्द्व युद्ध से वश में करना चाहा था, हार गये थे।।56

कलि के ताप रूप ज्वर से दुखी प्रजाजन को पहले ही सिद्धि के सार अधिक वाले चार जातियों की क्रिया की युक्ति से जिसने शान्ति प्राप्त करायी थी।।57

उस राजा ने महिमाओं से पृथ्वी में अतुलनीय शंकर नामक मान्य पुरोहित को पाकर ऐहलौकिक और पारलौकिक कोटि मनोरथों की सिद्धियाँ धौम्य ऋषि से युधिष्ठिर के समान अतिशय सुख से पायी थी।।58

सात देवकुल की माता के वंशज तीन भूधर राजा भूधर पहाड़ के पुरोहित संन्यासी शंकर शिविकायुक्त निभा को उसने आदेश दिया हाथी के देश के शंकर के विषय में।।59

९८

नोम सिसर अभिलेख
Phnom Cisor Inscription

यह स्थान बटी प्रान्त में है। इस अभिलेख का संस्कृत भाग भीनाकल नामक एक साधु द्वारा दान देने की चर्चा करता है। सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा इस साधु का सम्मान 1038 ई. में किया गया था।

अभिलेख में कुल छः पद्य हैं जो सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया था।[1]

वन्दध्वन्ध्वान्तविध्वङ्समौलीन्दूज्ज्वलन प्रभम्।
प्रभूतभूति संभावितमर्त्याकारमीश्वरम्।।1
श्रीद्धश्रीसूर्य्यवर्म्मासीद् भूपतीन्द्रेण वन्दितः।
श्री सूर्य्य इव हन्ता यश् श्रीद्वारिपटलानि तु।।2
श्री सूर्य्यवर्म्मणा मान्यो यो योगी निष्कलङ्कधीः।
स्वनेक विद्याकुशलः कल्याणपद्माश्रितः।।3

1. *IC*, Vol. II, p.137; cf. Aymonier, Le Cambodge, Vol. II, p.192

भिन्नाचलाभिधानो यो वसुवह्निरवचन्द्रकैः।
ग्रामभृत्यादिकं क्षेत्रसञ्चयन्तन्ददौ शिवे।।4
श्रीसूर्य्यपर्व्वते दतं भूपालोऽपि विशेषतः।
न विनाशयति द्रव्यं किमुतान्योऽपि मानवः।।5
सन्दीप(प्य) यावदनेकपापि-
पापान्तकौ रौरववह्निरुगः।
तावत् स एषो भवतु प्रतापं
योऽस्यैव पुण्यस्य विनाशहेतुः।।6

अर्थ- अन्धकार विनाशक प्रभाव वाले चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करने वाले, अग्नि के समान प्रकाशमान अनेक विभूतियों से सम्भावित गोकर्ण के समान आकार वाले श्री शिवजी को प्रणाम है।।1

संसार के बड़े-बड़े राजाओं से पूजित श्री सूर्यवर्मन देव के समान ही शत्रु राजाओं के पटलों का विनाश करने वाले श्रीसम्पन्न श्रीमान् सूर्यवर्मन नामक राजा थे।।2

जो योगी महाराज श्री सूर्यवर्मन से सम्मानित हैं वह निष्कलुष बुद्धि वाला अनेक उत्तम विद्याओं में कुशल तथा कल्याण पद प्राप्त है।।3

उस भिन्नाचल नाम वाले योगी ने 831 शकाब्द में ग्राम, सेवक, खेत आदि संचय कर श्री शिवजी की सेवा में प्रदान किया।।4

श्री सूर्यपर्वत पर योगी द्वारा दान किये गये द्रव्यों का विनाश विशेषतः बड़े-बड़े राजा लोग भी नहीं करते हैं तब दूसरे मनुष्य क्या करेंगे?।।5

जो इस पुण्य का विनाशक हो या विनाश का कारण बने वह तब तक रौरव नामक नरक की यातना भोगे जब तक यमराज द्वारा रौरव नरक की तेज आग में पापी लोग जलाये जाते रहें।।6

९९

त्रपन दोन खड़े पत्थर अभिलेख
Trapan Don Stele Inscription

अंगकोर थोम के उत्तर-पश्चिम और प्रसत कोक पो से 3 मील की दूरी पर एक तालाब है जिसका नाम त्रपन दोन ऑन है। इस तालाब के निकट एक खड़े पत्थर के चारों ओर यह अभिलेख उत्कीर्ण है।

इस अभिलेख में भगवान् शिव की प्रार्थना तथा सूर्यवर्मन की एक संक्षिप्त प्रशस्ति है। यह लेख एक ऐसे व्यक्ति की चर्चा करता है जिसका नाम स्पष्ट नहीं है। पर आर.सी. मजूमदार यह मानते हैं कि इस व्यक्ति का नाम नमश्शिवाय है।[1] भिन्न-भिन्न रूपों में उसने हर्षवर्मन, जयवर्मन षष्ठ, धरणीन्द्रवर्मन प्रथम तथा सूर्यवर्मन द्वितीय नामक राजाओं की सेवा की। उसने जितना भी धन प्राप्त किया था उसे शिव, विष्णु तथा देवी की मूर्तियों की स्थापना तथा और दूसरे धार्मिक दानों में खर्च कर डाला। उसने तालाब भी बनवाये। ये सभी उसके परिवार के सदस्यों के संरक्षण में था जिन्हें पण्डित कहा जाता था। यह अभिलेख यह

---

1. *IK No. 170*, p.83

बतलाता है कि इस नियम का उल्लंघन करने वाला उतने ही पाप का भागी होता है जितना गुरु की हत्या करने वाला।

लिंगपुर के शिव और पृथुशाला, श्री चौपेश्वर के विष्णु तथा वर्णाश्रम के जीन को दिये गये भिन्न-भिन्न दानों की भी चर्चा है। ये मन्दिर उसके परिवार के संरक्षण में नहीं थे बल्कि उन्हें क्षेत्राधिप के अधीन रखा गया था।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 32 है जिनमें पद्य संख्या 7 एवं 29 अंशतः नष्ट हैं।

जॉर्ज सेदेस[2] एवं आयमोनियर[3] ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।

नमश् शिवाय यच्छक्तिाराधा पुरुषसंगता।
प्रकृतिस्था द्वितीया वा याभ्यां व्याप्तमिदज्जगत्।।१
अभिव्या(व्य)क्तो ययाप्येको दृश्यतेऽनेकधा शिवः।
चन्द्रः प्रतिमयेवाव्यात् सा शक्तिश् शाम्भवी जगत्।।2
आसीदासिन्धु समात्तवसुधो वसुधाधिपः।
श्री सूर्य्यवर्म्म देवाख्यो भानुमद्रन्नदेङ्सि(शि)तः।।3
यो यामाप्य हताशेषरिपुराजौ जये दिशाम्।
तया वा नाचलदिवादिशत् सद्भयो मुदंश्रिया।।4
भवादि कल्य संभूत भूमिभृद्वरसंपदाम्।
युगपदृष्टये धाता यत्संपन्मकरं व्यधात्।।5
भक्तिमान भवंद्भृत्यस्तदीयो गोपनायकः।
यशोदया रतो लोके नन्दगोप इव स्तुतः।।6
भद्रचिन्तारतो राज्ञो नमस्कृतशिवस् सदा।
यो न्यधादपि बौद्धादेर्जित्वा यं..........त कारणम्।।7
योगेप्यष्टादशाब्देनवयसा यो नियोजितः।
देवद्विजो पचारार्थमुदयादित्यवर्म्मणा।।8
श्रीहर्षवर्म्म देवा देरभिषेक विधौ यतः।
परितो मन्दिरं येन धेनुरानायिचाग्रतः।।9
यो राजगोपाधिपतिः कृतश् श्रीजयवर्म्मणा।

---

2. *IC*, Vol. III, p.180
3. Le Cambodge, Vol. II, p. 380

राज्ञा श्रीधरणीन्द्रेण विश्वासादेवमर्पितः।।10
श्रीसूर्य्यवर्म्म देवस्य राज्ञः करुणया गवाम्।
कालनष्टामपि भुवञ्चकार पुनरादिवत्।।11
यो राजकरुणालब्धैर्व्वं सुभिर्वान्यथार्ज्जितैः।
साधयित्वा भू(भु)वं कृत्वासीमान्देवानतिष्ठिपत्।।12
सप्तैकशून्य रूपाब्दे तृतीये माधवस्य यः।
भार्गवेऽहनि वृद्धेन राजहोत्रेशमर्पयत्।।13
रूपवह्नियुचन्द्राब्दे वैशाखासित पञ्चमे।
आदित्ये विष्णु देव्यौ यः श्री रुद्राख्येन चार्पयत्।।14
इष्टापूर्त्त फलार्थी य इष्ट्रा यज्ञैर्व्यधादिमान्।
तटाकन्देववापीञ्च सेतूश्च क्रमध्वनि।।15
पक्षयोस् सुरपूजार्थं क्षेत्रदासानकल्पयत्।
होतृयाज कदासानां व्यभवि(व)ज्जीवितां भुवः।।16
रवार्य्यश्चतुर्दशैकश्च द्रोणः प्रस्थास्त्रयोदश।
कुदुवो यत्र तत्क्षेत्रं सितपक्षेऽदिशत् सुरे।।17
कृष्णपक्षे व्यधादेवं यः क्षेत्रमथ पिण्डितम्।
षट्सहस्त्रैर्नवशतैः षड्विंशै(:) कुदुवैर्भितम्।।18
देवत्रये सवह्नौ यस्तण्डुलादकद्वयान्।
ऊणा(ना)न्द्विकुदुवेनैव प्रत्यहं समकल्पयत्।।19
नवदासात् सिते पक्षे स्त्रियष् षट्पुरुषास्त्रयः।
कृष्णपक्षे चतस्त्रस्तु स्त्रियष् षट्पुरुषा अपि।।20
एकोन्नविङ्शतिन्दा(र्दा) साश् शिवलिङ्गादिसोमपे।
स्वदेश स्थापिते येन दत्तास्ते क्षेत्रभागिनः।।21
तद्यथा सत्रयष् षष्टिसहस्त्रस्य प्ररोहणः।
कुदुवानां सिते दासकेदारस्तेन कल्पितः।।22
कृष्णपक्षे तथैवास्ति कुदुवानां सपक्षयोः।
सषड्द्विव्ङ्शैकशतद्विसहस्त्रस्- प्ररोहणः।।23
कुदुवानां शतान्यष्टौ नवभिस् सहसप्ततिः।
संभवन्त्यर्च्चकक्षेत्रे येनैव परिकल्पिते।।24

होत्रे सप्तशतैस् सैकचत्वारिङ्शद्भिरर्पितम्।
कुदुवानाञ्च केदारमहाद्यः पक्षयोरपि।।25

देवभूदासकेदारा धवे पण्डितमत्कुले।
आयत्ता देवपूजार्थमराक्या अन्यथाप्तये।।26

इत्युक्त्वेत्यशपत् सर्व्वान् यः स्वकल्पितनाशनान्।
यो हन्यात् कल्पनामेतां स गुरुद्रोहपापभाक्।।27

अथाष्टवेद शून्येन्दौ फाल्गुणासित पक्षके।
शुक्रेऽदाधौ भुवं पञ्च दासा(सां) लिङ्गपुरेश्वरे।।28

(पृ)थुशेलशिवे..........न्दासत्रयं.........महात्।
योऽपि दासयुतां भूमिं श्रीचाम्पेश्वरशार्ङ्गिने।।29

वङ्श(शा) रामजिने प्यस्ति दास क्षेत्रं यदर्पितम्।
भक्त्या राज्ञे शिवैकत्वदर्शनात् फलदत्तये।।30

येनैवोक्तमिमे दासा नायत्ता मत्कुलादिके।
तत्क्षेत्राधिपवाण्यैव देवेष्वक्षतदायकाः।।31

एकार्थ शून्य मनसा परकीर्त्ति कथाश्रुतो।
बद्धकक्षेण धर्मार्थं तेनेदं लेखितं विदा।।32

अर्थ- शिव को नमस्कार है जिनकी शक्ति आधा पुरुष से युक्त है अथवा और दूसरी शक्ति प्रकृति में स्थित है जिन दोनों से विश्व व्याप्त है।।1

अनेक प्रकार के शिव जिस शक्ति से अभिव्याप्त होकर एक दीखते हैं वह शम्भु की शक्ति शाम्भवी शक्ति जैसे चन्द्र अपनी प्रतिभा से रक्षा करते हैं, वैसे ही शिव की रक्षा करें।।2

श्री सूर्यवर्मन राजा नाम से ख्यात किरणों वाले रत्न से दंशित सिन्धु पर्यन्त समस्त पृथ्वी के पृथ्वीपति थे।।3

जो जिसे पाकर अशेष शत्रु समूह के मारने वाले दिशा की जय में अथवा उस शक्ति से जैसे नहीं चला ऐसा आदेश दिया लक्ष्मी से हर्ष भय सहित है।।4

भव आदि कल्प से उत्पन्न राजा की श्रेष्ठ सम्पत्तियों का एक बार देखने के लिए ब्रह्मा ने जो सम्पत्ति के मगर रचा था।।5

उनके नौकर गोपनायक भक्तिमान हुए थे। लोक में यशोदा से रत नन्द गोप के समान प्रार्थित थे।।6

राजा की कल्याणकारी चिन्ता में रत हमेशा शिव को नमस्कार कर चुकने के बाद बौद्ध आदि को जीत कर जो..........कारण को।।7

योग में 18 वर्ष की अवस्था से जो नियोजित हुए थे उदयादित्यवर्मन द्वारा देवता, ब्राह्मण के उपचार के लिए नियुक्त थे।।8

क्योंकि श्री हर्षवर्मन राजा आदि के अभिषेक की विधि में चारों ओर से जिसके द्वारा मन्दिर बनाया गया और आगे से धेनु लायी गयी।।9

जो श्री जयवर्मन द्वारा राजगोपाधिपति बनाये गये थे राजा श्री धरणीन्द्र से विश्वास से इस प्रकार अर्पित किया गया था।।10

श्री सूर्यवर्मन राजा की दया से गायों का जो काल से नष्ट थीं, पृथ्वी ने उसे फिर आदिवत् बनाया था।।11

जो राजा की दया से प्राप्त धन थे उनसे अन्यथा अर्जित थे उनसे साधन करके पृथ्वी को करके देवों को स्थापित कर चुका था।।12

1017 वर्ष में तीसरे वैशाख में शुक्र के दिन बूढ़े के द्वारा राजदोत्रेश को अर्पित किया गया था।।13

1019 वर्ष में वैशाख कृष्ण पंचमी को रवि के दिन श्री रुद्र नाम के द्वारा विष्णु और देवी को अर्पित किया गया था।।14

इष्टापूर्त फल का याचक ने बहुत यज्ञों को करके इसका विधान किया था। तड़ाग, बावली, बहुत से रास्ते पर पुल बनाये थे।।15

कृष्ण-शुक्ल दोनों पक्षों में देवता की पूजा के लिए खेत, दास बहुत से दिये गये थे। होता, याजक, दासों की पृथ्वी से जीविका चलती थी।।16

शुक्ल पक्ष में देव के लिए चौदह खारी एक द्रोण तेरह प्रस्थ जहाँ कुदुव एवं खेत दिया गया था।।17

कृष्ण पक्ष में इस प्रकार विधान था जो खेत पिण्डित छः हजार दो सौ छब्बीस कुदुवों के बराबर दिया गया था।।18

अग्नि सहित तीनों देवों के लिए दो आढ़क चावल दिया गया था। बचे दो कुदुव से ही प्रतिदिन प्रकल्पित था।।19

शुक्ल पक्ष में नौ दास, तीन स्त्रियाँ, तीन पुरुष; कृष्ण पक्ष में चार स्त्रियाँ और छः पुरुष भी।।20

इक्कीस दास शिवलिंग आदि सोमप के लिए स्वदेश में स्थापित किये गये जिसके द्वारा दिये खेत के भागी वे हुए।।21

सो जैसे साठ हजार तीन प्ररोहण पेड़ शुक्ल पक्ष में कुदुवों के दास के द्वारा उसके द्वारा कल्पित था।।22

कृष्ण पक्ष में वैसा ही है दोनों पक्षों में कुदुवों के दो हजार एक सौ छब्बीस प्ररोहण।।23

कुदुवों के सात हजार आठ सौ नौ अर्चक क्षेत्र में जिसके द्वारा प्रकल्पित था।।24

होता के लिए सात सौ इकतालिस दिये गये। कुदुवों के केदार महाधनी दोनों पक्षों में दिये गये थे।।25

देव, पृथ्वी, नौकर, केदार (खेत), पण्डित वाले कुल के विषय में अधीन देव पूजा के लिए अशक्ति से दूसरे उपायों से प्राप्ति के लिए।।26

यह कहकर सबको शाप दिये गये जो अपने द्वारा कल्पित के नाशक हों, जो इस कल्पना को नष्ट करे वह गुरु से अपकार के दोष का भागी हो।।27

1048 फाल्गुन कृष्ण पक्ष में शुक्र दिन कुछ सामान, पृथ्वी, पाँच नौकर लिंगपुरेश्वर के लिए दिया गया था।।28

पृथु शैल शिव के लिए........तीन दास......जो भी दास से युक्त पृथ्वी को श्री चाम्पेश्वर और विष्णु के लिए।।29

बाँस, वाटिका 'जिन' के लिए भी है, दास और खेत जो अर्पित है। भक्ति से राजा के लिए एक शिव के दर्शन से फल देने के लिए।।30

जिसके द्वारा कहा गया था ये नौकर लोग मेरे कुल वालों आदि लोगों के अधीन नहीं हैं। उस खेत के मालिक की वाणी से ही देवों के लिए अक्षत देने वाले।।31

दूसरे की कीर्ति की कहानी सुनने में एक अर्थशून्य मन से वृक्ष कक्ष से धर्म के लिए उस विद्वान् के द्वारा यह लिखा गया था।।32
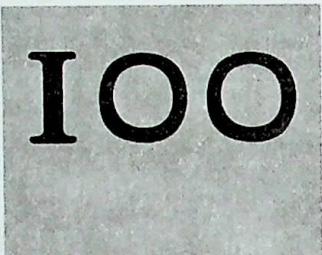
वट फू खड़े पत्थर अभिलेख

Vat Phu Stele Inscription

जैसा कि हम जानते हैं मेकांग नदी पर बसाक के निकट वट फू है। इस अभिलेख का संस्कृत मूल लेख राजा सूर्यवर्मन तथा भद्रेश्वर देवता की चर्चा करता है। इससे हमें सूर्यवर्मन के राजगद्दी की तिथि की जानकारी होती है जो 1035 है। इस राजा की वीरता का यह प्रमाण है कि इस राजा ने पुनः दो राज्यों को मिला दिया था।

अभिलेख में केवल एक ही पद्य है जो नष्ट हो जाने के कारण स्पष्ट नहीं होता है।

आयमोनियर ने सर्वप्रथम हमारा ध्यान इस अभिलेख की ओर दिलाया है।[1]

...............................भिर्वाणाग्निपंक्तिभिः।
श्रीसूर्य्यवर्म्मदेवोऽधाद्राज्यन् द्वन्द्व समासतः॥1

---

1. *Le Cambodge*, Vol. II, p.381

अर्थ- एक हजार पैंतीसवें वर्ष से श्रीमान् सूर्यवर्मन ने युद्ध और सन्धि से राज्य को धारण किया।।1
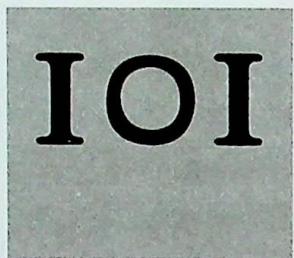
बन थट अभिलेख
Ban That Inscription

बसाक के 20 मील दक्षिण-पश्चिम बन थट नाम का एक गाँव है जहाँ एक मन्दिर के खड़े पत्थर के चारों ओर यह अभिलेख उत्कीर्ण है।

संस्कृत का मूल लेख साधारणतः नष्ट हो चुका है जो तीन सर्गों में बँटा हुआ है।

प्रथम सर्ग भगवान् शिव की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। इस सर्ग के रचनाकार एक मुनि हैं जिनके विषय में यह कहा जाता है कि भगवान् ने उन्हें तथा उनके परिवार को लिंग के उच्च पुजारी का पद वरदान स्वरूप दिया था जो भद्रेश्वर पर्वत पर स्थापित होने वाला था। इस अभिलेख में वर्णित एक कथा के अनुसार हम यह जानते हैं कि कम्बुज के राजा एक योग्य पुजारी की खोज में थे और उन्हें यह पुजारी मिल गया। मुनि उनके पास नावों के समूह में गये और राजा के उत्सव में शामिल हुए। दक्षिणा-स्वरूप मुनि को राजा ने भद्रेश्वर पर्वत के नीचे स्थान दिया जहाँ उन्होंने एक लिंग की स्थापना की। यह ऐसा पवित्र स्थान है जहाँ देवता

लोग भी प्रार्थना करने आते थे।

द्वितीय सर्ग में इन्द्र के नेतृत्व में देवताओं का एक प्रतिनिधिमण्डल मुनि को बधाई देने के लिए आया था। उन देवताओं ने अपने साथ मुनि को स्वर्ग जाने का निमन्त्रण दिया पर मुनि ने इसे स्वीकार नहीं किया। इसके बदले मुनि ने एक वरदान माँगा कि उनके वंशज जिन्हें स्वयं शिव ने लिंग की पूजा का भार सौंपा है, समय की समाप्ति तक वहीं रहे। मुनि की यह इच्छा स्वीकार हो गयी और उनके द्वारा बनायी मूर्ति एक बड़ा धार्मिक केन्द्र बन गया जिसे बहुत से राजाओं ने सुन्दर बना दिया। अपनी बहन के लड़के को अपना उत्तराधिकारी बनाकर मुनि स्वर्गवासी हो गये।

तृतीय सर्ग में तिलका की गहन विद्वता का वर्णन है और वागीश्वरी भगवती की उपाधि उसे दी गयी तथा उसका विवाह नमश्शिवाय जो भगवान् शिव का एक भक्त था- उससे करने का वर्णन है। उन दोनों से सुभद्र नामक एक पुत्र पैदा हुआ जिसे मूर्द्ध-शिव भी कहा जाता है -जिसे राजा जयवर्मन षष्ठ ने भूपेन्द्र पण्डित की उपाधि प्रदान की थी। यह भूपेन्द्र पण्डित इस राजा तथा इसके उत्तराधिकारी धरणीन्द्रवर्मन द्वारा बहुत से उच्च नागरिक एवं धार्मिक पदों को प्राप्त किया था।

इस अभिलेख में इन मन्दिरों के समूह का भी वर्णन है जिन्हें काफी बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है। कहा जाता है कि महाभारत की घटनाओं का चित्रांकन मन्दिरो के दीवारों पर है। दान में दी गयी वस्तुओं की एक लम्बी सूची भी यहाँ दी गयी है जिसमें सभी शास्त्रों की हस्तलिपि सम्मिलित है।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 129 है जो चार सर्गों में विभक्त है। अन्तिम चौथे सर्ग में कुल 14 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 5 से 14 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।

प्रथम सर्ग में कुल 52 पद्य हैं। पद्य संख्या 1 से 15, 18, 19, 21, 39 अंशतः नष्ट हो चुके हैं। पद्य संख्या 16,17, 20, 22, 26, 28, 29, 30, 32, 33, 34 से 41, 47 से 49 एवं 51 अंशतः खण्डित हैं। पद्य संख्या 42 से 46 तथा 50 की भी यही स्थिति है।

द्वितीय सर्ग मे कुल पद्यों की संख्या 28 है। पद्य संख्या 2 से 5 तथा 26 से 28 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।

तृतीय सर्ग में कुल पद्य 35 हैं। पद्य संख्या 12 एवं 13 अंशत: नष्ट हैं। चतुर्थ सर्ग में कुल पद्य 14 हैं जिनमें 5 से 14 अंशत: नष्ट हो चुके हैं।[1]

प्रथम सर्ग–

Verses 1-15 are missing

(य)स्यात्मशक्त्यैव वि(वर्त्तमानः)

प्रधानमेकस्त्रिगुणात्मकत्वात्।

(हि)रण्यगर्भोऽथ हरि ....

च्छक्त्यापि तन्निर्विकृतिन्त(मीड़े)।।16

.....सां द्विधार्थं प्रकरिष्यमा(नो)

विवर्त्त्य मूलप्रकृतिं स्वशक्त्या।

(कृ)तार्थतां प्राप्य निवर्त्तते(तत्)

प्रधानमसोः प्रभुमेतमीड़े।।17

VV. 18-19 very mutilated

.....धातरमथत्रयीञ्च...........।

.......नादिरुक्तः परमर्पिसंघैः........।।20

V. 21 missing

इति प्रसाद्य स्तुतिभिस्तमीशं

विलोचना..................वितृप्तिः।

स वत्सलो भक्तिमति स्मितोऽभू–

रनुग्रहार्थं ....माञ्जगाद्।।22

सहान्वयायेन स(दा) नियोक्षे

त्वां दे(वका)र्य्ये भुवि पावनार्थम्।

भद्रेश्वराद्राविह कम्बुदेशे

संस्थापयिष्याम्यह(मा)त्मलिङ्गम्।।23

तत्पूजयन्तं स्वमनीषया त्वां

संप्रापयिष्यामि भवाद्विमुक्तिम्।

यदीश्वरो बन्धनमोक्षयोस्तन्

मुमुक्षुभिस् सोऽहमभिप्रसाद्यः।।24

मदर्च्चनार्थमहनीयवृत्ति–

1. *BEFEO*, Vol. XII (2), p.1

रासंहृतेस्ते कुलस(न्ततौ स्यात्)।
अचिन्त्यमेवं वचनं स्मरारेः
कथं करोमीत्यचलन्मनो मे।।25
ममापि यो(गं) दधातश्च.........
ज्योतिः परन्देवममुं दिदृक्षो।
स्वान्तन्तदालोचनहर्षपूर्ण्णन्
न प्राविशद्देशवियोग(शो)कः।।26
भवामि कीटोप्यथवा पतङ्गो
भवाज्ञयान्यस्य तु शासनेन।
राज्यन् त्रिलोक्यामपि न (व्रजेयम्)
यथा(भि)मन्योरिति निश्चयो मे।।27
ज्ञातञ्च सत्यञ्जगदस्वतन्त्रं
सर्व्वत्र नस्योतगवो...........।
महेश्वरप्रेरितमेव गच्छेत्
स्वर्ग्गं मतं श्वभ्रमथाप्यनिष्टम्।।28
गुरोस्त्रिलोकस्य हिते...........नं
स्वार्थं वृ.......स्य पिनाकपाणेः।
ज्ञात्वाञ्जसा व्याहृतिमेव स....
प्रत्यै.........कालस्तद्...........।।29
...........(सू)नोरभिषेचनार्थं
पर्य्याकुलः कम्बुजभूमिदे(वः)।
शुद्धिश्रुताचारकुलोप(पन्न)-
स्यान्वेषणे होतुरनिन्द्यवृत्तेः।।30
आनेतुमर्थं पथि सत्क्रियाभि-
र्नौकानिकायैश्च विमान(तुल्यैः)।
मामृष्य शृङ्गं विनयज्ञमाप्तं
स प्राहिणोत् प्रागिव लोम(पादः)।।31
द्वीपान्तरायातनरेन्द्र.............
..........................तराजमार्गे।

निश्शेषदेशोचितशिल्पभेद-
संपादितापूर्वमहोत्स(वोऽभूत)।।32
ध्वजप्रतानैर्ग्गगनोल्लसद्भि-
रामन्द्रतूर्य्यध्वनिभिश्च भीमैः।
समीक........................
............प्रतीतस्तिमिता बभूव।।33
ममागमाशङ्कनयातजाति
........सान्द्रान्धकरोपमा.........।
..........य्यागमो (मे) प्रतिपद्यमानः
(क्ष)पाकरस्येव तदाविरासीत्।।34
....
कम्बुदेशा(धि)पराजसूनोः।
...........तीर्थायतनानि दृष्ट्वा
शिवाङ्घ्रि.....(ण्डा)द्रि........।।35
कुशस्थलीति प्रथिते प्रदेशे
स्थला...............................।
....
चोक्फ्साङ् इति प्राहु......सं यम्।।36
मही......निवेश्य..........जामातृ
शर्व्वाभिहि......................।।37
तत्रापि ....सत्क्रियाढ्ये।
......................................।।38
V. 39 missing
....
.......................मत्प्राप्तकालः।
...........परमेश्वरस्य.............
प्राप्नोम्यहन.........वतस् सकाशम्।।40
तुष्टेन दृष्टे..........................
तत्रैव विद्यावरणेऽतिपुण्ये।

कुशस्थलीनाम्नि नि(वा)स्य बन्धून
निर्द्धूतपापेऽत्र शिवं (सिपेवे)।।41
VV. 42-46 badly mutilated.
भक्त्यु(त्)सुकानां परमेश्वरस्य.........।
आकांक्षतो यद्गुणिनं................।।47
समागमे ते मम हर्ष............।
अस्मास्वधीनं हि गुणानु(वृत्तिः)।।48
अस्माद् गिरेरुत्तरतः प्रदे(शः)
....।
आपूरितस् संहतिभिर्धनाना(ं)
सहान्ववायस्य तवास्तु वश्यः।।49
V. 50 missing
अथ पशुपतिलिङ्गस्थापने कार्य्यशेषं
(व्य)धित विधिवदीशात् प्रत्य.....।
स समकनकलोष्टो भूभृद्...........
तदुपकृतिधिया तत्प्रत्यगृह्णाद् वितृष्णाम्।।51
शिशिरकिरणमौलेर्लिङ्गमूर्त्ते.............
प्रणयितनुभृतां श्रेयस् सपर्य्यां विधातुम्।
त्रिदिववसतयः प्रापुश् श्रियाभ्र (यां भ्रा)(जमानाम्)
वरमुनिरपि दृष्ट्वा वि(स्मितो) विस्मयेन।।52

द्वितीय सर्ग-

अथाभिषेकाच्छुचितीर्थधारया
शिवस्य लिङ्गस्य विधानतोऽर्चनात्।
अतन्द्रयोगाभ्यसनाच्च योगिनो
विभाकरस्येव विभा दिदीपिरे।।1
ततस् सुरेन्द्रप्रमुखद्युवासिनस्
सविस्मयं वीक्ष्य तरस्विनं मुनिम्।
तपोविशेषाहृतगौरवा इदम्
..........यित्वा ददिरे कृतादराः।।2

अयं गिरिर्लिङ्गमिदञ्च शाम्भवं
सुतीर्थधारा च भवांश्च धीनिधिः।
...........(पु)ण्यतरञ्जगत्त्रये
किमस्ति लोकैरभिगम्यमादरात्॥3
भवांस्त्रयाणामपि पावनं............
.........................णं यथा मुने।
इहात्मसंस्कारकृता पदे गति-
र्न शाब्दिकानामिव नो विहन्य(ते)॥4
...............स्य वृषध्वजेन ते
भवेदनभ्यर्हण.............कथम्।
महेश्वरेच्छामनुयान्ति सो...........
...............स्येव गतिं हि तारकाः॥5
समीक्षमाणास्तव तेजसा सतीं
महेश्वराराधनतस् समुन्नतिम्।
विदन्ति तन्नाभ्युदयाप्तिकारणं
महेश्वरानुग्रहतुल्यमस्ति यत्॥6
समुन्नतिर्व्वैनयिकी परा मता
निसर्ग्गजा या नितरां समुन्नतेः।
निसर्ग्गजैश्वर्य्यजुषां हि नो मुने
ऽभिपूजितो वैनयिकर्द्धिभागसि॥7
वयं द्युवासा इव वेश्मरक्षिण-
स्तपोविशेषोर्ज्जिततेजसो हि ये।
इमे भजेयुर्दिवि संपदाकरां-
स्तदेहि सूरे सुरसद्मरञ्जकः॥8
द्युवासिवाण्येव नवाम्बुदाम्बुना
द्रुमोऽभिषिक्तः स जहर्ष संयमी।
कृताञ्जलिश्च प्रतिपूज्य तानिद-
ञ्जगाद वाक्यं परमार्थकोविदः॥9
भवादृशां संस्मरणादपि क्षणा-

दनल्पकल्पोपचिताङ्हसां हतिः।
विलोकनेऽस्मिं पुनराप्तपावनो
विजानतात्मा बहु मन्यते मया।।10
मनोवचोङ्गैरपि संभृतानि मे
तपांसि साक्षात् सफलानि संप्रति।
यतोऽनघा यूयममोघदर्शना:
प्रयाथ मे दृष्टिपथं घृणार्द्रिताः।।11
पदं स्वकीयन्ददतामनुग्रह-
ङ्गतं परां कोटिमवैमि वो मयि।
अहन्तदात्मव्यतिरिक्तमाददत्
(कथन्न)जिह्रेमि सतामनात्मवित्।।12
मया च योगे भवभीरुणायता
क्रियेत रागे रतिरुत्पथे कथम्।
विशेषतो मे निजलिङ्गपूजने
महेश्वरेणैव कृतन्नियोजनम्।।13
अवेक्ष्य शम्भुं भुवनैककारणं
मयि क्षमध्वन्न निदेशकारिणि।
न केवलं मे भवतामपि ध्रुवं
प्रसादनीयस् स हि लिङ्गसंस्थितः।।14
इतीरयित्वा पुनरर्घमादरात्
प्रदाय देवेषु कृताभिवादनम्।
अवाप्य लज्जामिव तेष्ववाङ्मुखं
मुनिन्तमूचुस्त्रिदिवेश्वराः पुनः।।15
भवादृशेष्वेषु मुमुक्षुपु स्फुटं
हितैषिणान्नावसरो वरस्य नः।
गुणानुरागेण तु दातुमर्थिता
न कामवृत्तिर्हि पदं विमृश्यति।।16
वरेण नस् स्वार्थमनर्थितापि ते
कुलार्थमर्थी यदि त्वं वृणीष्व नः।

स्वधर्म्मरक्षाधिकृतेषु बन्धुषु
ध्रुवं गरीयो हि ममत्वमात्मनः।।17
उवाच वर्णी मदनुग्रहेण वस्
स लोकपाला इति युज्यतेऽभिधिः।
परानुकम्पाव्यसनं स्फुटं सता-
मयं वरस् संप्रति संप्रदीयताम्।।18
यासौ स्वलिङ्गयजनेऽधिकृता शिवेन
शैवाङ्घ्रिशैलनिकटेऽत्र कुशस्थलीति।
देशे मदीयकुलसन्ततिरायुगान्तात्
तस्यास् स्थितिर्भुवि भवेद् भवतां प्रसादात्।।19
वंशे प्यनेककविसन्ततिपावनेऽस्मि-
न्नावीर्भवत्वतितरां श्रुतराशिगोष्ठी।
अच्छिन्नमेव मखसन्ततिरत्र देशे
चन्द्रार्द्धचूड़यजनाय भवेन्महर्द्धिः।।20
सर्व्वे च तीर्थनिकरा हतपापपुञ्जा-
स्तत्रैव सन्निधिममी विदधत्वजस्रम्।
पूर्णो निरर्गलसुमङ्गलसंहतिना
देशो भवेत् स भुवने बहुमानपात्रम्।।21
श्रुत्वा मुनेर्वचनमुज्जहृषुस् सुरेन्द्रा
ऊचुश्च यद् भगवतोऽभिमतं तदस्तु।
इत्थन्तपोभिरभिपूतजगत्त्रयस्य
न स्यात् कथं नु भवतः खलु सर्व्वमिष्टम्।।22
निर्म्माय भूरिविभवाश्रमचक्रवालं
प्रैप्यादिपूरितपुरैः परिपाल्यमानम्।
ते याजकार्थपरिकल्पितसत्क्रियाढ्य-
मद्यापि तिष्ठदमरास्त्रिदिवं प्रतीयुः।।23
स्वर्व्वासिपु प्रतिगतेषु महीपतीनां
प्रत्येकमुद्यतवतां शिवपूजनार्थम्।
तत्राश्रमा बहुविधा विभवाभिपूर्णा-

स्तत्तेजसा बभुरिवोपहृता द्युलोकाः॥24
तत्राश्रमेषु मुनिशिष्यपरंपराणा-
मभ्युद्गमः सततमध्ययनध्वनीनाम्।
हृष्यद्गणैभृशमुदीरितं तूर्य्यघोषान्
प्रोत्सर्प्पिणोऽधिकगण(णा)न्तिरयांबभूव॥25
(तत्र) स्थितस्त्रिभुवनप्रतिपूज्यमानो
व्याख्यायतो मुनिगणेषु शिवागमानाम्।
............स..........कृतास्पदस्य
लीलान्दधे भगवतश् शिशिराङ्शुमौलेः॥26
तत्र..............प्रार्थनां पुण्यभाजाम्
इज्याभेदं प्रतिदिनविधावुत्सवेषु क्रमेण।
.........प्रति.........यतीनां यथावत्
सम्यत्तवै..............................॥27
........स्वस्त्रीयं कुलकुमुदिनीशुभ्रभानुं मनीषी
शुद्धे..................................।
......................कन्नियुज्यात्मतुल्यं
यो...........दमनिधननन्निर्विमानं प्र(यातः)॥28

तृतीय सर्ग-

तन्मातृवङ्शतिलकन्तिलकाभिधाना
दौहित्रिका मतिमतो विजयेन्द्रसूरेः।
सूनुः क्षितीन्द्रविदुषो गुणरत्नसिन्धो-
र्य्या श्रीकवीश्वरकवेर्दुहितुश्च नप्त्री॥1
भूषावलिस्फुरितरत्नमरीचिशुभ्रा
मध्यस्थिता रुचिरसख्युडुमण्डलानाम्।
मन्दाङ्शुदीप्तिरपि पाङ्शुविहारसङ्गाद्
या शैशवे वसुमतीं गगनीचकार॥2
यां यौवने सति न केवलमेवकान्ति-
रत्युच्छ्रया समुदियाय विधिप्रयुक्ता।
बन्धुक्रमानुगतसंपदपि प्रथिष्ठा

संभावना च महतां कुलमण्डलानाम्।।3

ज्येष्ठैर्नरेन्द्रगुरुभिर्विदुषां वरैर्य्या
मान्या पुरः परिषदामभिवन्द्य मूर्द्धा।
वागीश्वरी भगवतीयमिति प्रकाश-
माभास्य रत्ननिकरैश्च रणेभ्यपूजि।।4

तद्व्याहृतेः प्रथिततां भुवि या प्रपन्ना
वागीश्वरी भगवतीति बभार नाम।
यस्या बहूनि चरितान्यतिमानुषानि
सर्व्वे प्युदीक्ष्य विविदुः खलु देवतात्वम्।।5

दृष्ट्वा समासादितयौवनान्तान
तातो वरान्वेषणसंभ्रमोऽभूत्।
योगानुभावादिव न(ना)रदषिस्
सिद्धः समासाद्य समादिदेश।।6

वागीश्वरी भगवतीयमभूत् सुता त
आनन्दनार्थमिह भूमिभुवो भवस्य।
तीव्रैस्तपोभिरिह सूरिपरंपराभि-
राराधितस् सोऽचिरमेष्यति पावनाथम्।।7

यच्छुद्धशैवत्वमुपैति नाम्ना
नमश्शिवायेति भुवि प्रतीतिम्।
यो धर्म्मपर्य्यन्त इवाम्बुदानां
शिवागमानां विततिन्तनोति।।8

शरीरवाङ्मानसवृत्तिभिर्यो
नितान्तभद्राभिरतिं प्रपन्नः।
ज्ञानार्च्चयोद्भास्यपवर्ग्गरक्तस्
त्वयापि लक्ष्यस् स तदा शिवाङ्शः।।9

श्रुत्वा स सिद्धस्य गिरं पुरस्ता-
दुपस्थितानां कुलमण्डलानाम्।
आहूय हर्षात्कुलप(पण्डिता)ख्य-
न्तन्मातुलन्तां गिरमाचचक्षे।।10

स चास्यलोकत्रययातकीर्त्ते-
शिचराद् विजानंश्चरितञ्जहर्ष।
सर्व्वे प्यनुष्ठाय महोत्सवन्त-
मामन्त्रयामासुरनर्घशीलम्॥11
सन्तानकाकरविकीर्ण्णचतुष्क....
मूर्द्धस्थितः स्फुरितभूषणचन्द्रचारुः।
तद्बन्धुवृन्दगणमध्यगतस् स.....
वस्थानुभूतसुख...............॥12
सत्यञ्च तद्धस्तगतैव सम्पद्
यद्दत्तमेकम् परि................।
अदृष्टपर्य्यन्तमनन्यलब्धं
भूयिष्ठमिष्टं.................॥13
जातस्तयोरिव मखे ज्वलनो रणौजां
यस् संस्कृतेस्तु विदुषः पितुरेव लब्धा।
तद्वङ्शसन्ततमहापुरुषाहृतानां
सत्कर्म्मणां फलमिवोत्तममाविरासीत्॥14
पित्रोस् सुभद्र इति यो वचसोपनेतुः
ख्यातोऽपि मूर्द्धशिव इत्यपरेण नाम्ना।
भूयो महावनिभुजो जयवर्म्मन(ण)श् श्री-
भूपेन्द्रपण्डित इति प्रथितः पृथिव्याम्॥15
त्रय्याद्यनेकविधवाङ्मयकोविदोऽपि
यश् शैववाङ्मयरतस् स्वकुलोचितत्वात्।
बाल्यात् प्रभृत्यविरतस्मृतिचिन्त्यमान-
ज्योतिः परं परिरक्ष यमन्तरायात्॥16
बालोपि सन्निव नवाहितवह्निरिद्धो
ज्ञानार्च्चिषोर्ज्जितमहाकविवृन्दवन्द्यः।
भ्रष्टाक्षराननतिचिरं विदुषामसाध्यान्
ग्रन्थान् पुनः पटुरुची रचयाञ्चकार॥17
दीक्षाविधौ संति न केवलमेव सोम-

मामन्त्रितोऽसकृदपाययदानृशंसात्।
यो न्यायसांख्यकणभुङ्मतशब्दशास्त्र-
भाष्यार्थसोममपि सूरिजनान् पिपासूः।।18
विद्यापवर्ग्गविहितापचितिप्रबन्धे
यस्याश्रमेऽनवरताहुतिधूमगन्धे।
दुर्ग्गागमेषु मतिभेदकृतार्थनीत्या
विद्यार्थिनां विवदतां ध्वनिरुत्ससर्प्प।।19
अथाध्वरे श्रीजयवर्म्मदेवस्
सत्कर्त्तुकामो गुणिनान्निकायम्।
गुणानुरोधेन परीक्षणाय
निश्शेषशास्त्रार्थविदो न्ययुंक्त।।20
तेषां पुरम् स्थापितपुस्तकानां
संप्रष्टुमुद्युक्ततवतान्निकामम्।
चिच्छेद पक्षं मतिवज्रपाताद्
यः पर्व्वतानामिव वज्रपाणिः।।21
सविस्मयोत्फुल्लविलोचनैस्त-
र्व्विलोचितः पूर्णकलाभिरामः।
रराज यो राजसभाम्बरस्थश्
शचीव मध्ये कवितारकाणाम्।।22
गुणैरनूनैरिव य(या)ज्ञवल्क्यो
विदेहभर्त्तृर्नृपतेस सभायाम्।
निर्जित्य सूरीन् नृपसत्क्रियां यो
गजाश्वरत्नादिमवाप बालः।।23
तदा प्रभृत्येव विसङ्शयं यो
जातः प्रजानां बहुमानपात्रम्।
परीक्षितास् सन्मणयो हि युक्त्या
कस्यादरन्न प्रतिपादयन्ति।।24
क्षेत्रेषु पुण्येषु कृताश्रमेषु
योऽध्य(क्ष्य)कत्वेऽधिकृतः क्रमेण।

शास्त्रे च लोके च सतां विवादे
भूपेन निर्नेतृतया न्ययोजि।।25
गुणौघरत्नैरभिभूषितोऽपि
भूपेन यो भूरिगुणादरेण।
सुवर्णकर्णाभरणोपवीति(त-)
चित्रांशुकाद्यैः पुनरभ्यभूषि।।26
राज्याय निस्स्पृहयितापि ततोऽनुकम्पान्
नाकं व्रजत्यवरजे जगदेकनाथे।
अभ्यर्थितस्तनुभृतां निकररनाथैश्
शासन्नयेन धरणीन्धरणीन्द्रवर्म्मा।।27
ज्यायांश्च सप्तप्रकृतीरकम्प्यास्
संप्रापयामास गुणैर्विवृद्धिम्।
कलातिपूर्णो हि हिमाङ्शुमाली
क्षीरार्णवं पूर्णतरं करोति।।28
धर्म्मप्रियश्चाखिलवाङ्मयज्ञं
धर्म्मप्रवक्तारममानयद् यम्।
यत्रानुरागो मनसो हि तस्य
प्रायेण सङ्कीर्त्तनमेव रत्यै।।29
ततोऽवनीन्द्रो नृपयोस्तयोश् श्री-
नरेन्द्रलक्ष्म्या निजभागिनेय्याः।
सूनुर्भवान्या इव कार्तिकेयो
दुर्व्वारविद्विड्द्विरदेन्द्रसिङ्हः।।30
महीधरश्रेणिशिरोधिरूढ़-
पादद्युतिस् सूर्य्य इवातिदीप्तः।
श्रीसूर्य्यवर्म्मेत्यपि शुभ्रभानु-
राह्लादने साधुकुमुद्वतीनाम्।।31
विद्यापवर्गे नवयौवनस् स-
ञ्जाताभिलाषः कुलराजलक्ष्म्याः।
तस्यां सुधायामिव सैङ्घिकेये

द्विपत्यधीनत्वमुपागतायाम्।।32

चमूसमूहार्णवमाजिभूमा-

वाधाय युद्धं विदधत् स भीमम्।

उत्प्लुत्य नागेन्द्रशिरोऽरिराजं

हन्तादि्र शृङ्गं द्विजराङ् इवाहेः।।33

धात्रीं द्विषद्ध्वङ्सनसिन्धुमग्नां

दोर्दष्ट्रयाद्धृत्य धृताक्षताङ्गीम्।

पूर्व्वां व्यवस्थामुचितां यथावत्

प्रत्यर्प्पयामारा यथा वराहः।।34

द्वीपान्तरेन्द्राश्च जिगीषिता ये

प्राप्तानपश्यत् करवाहिनस्तान।

स्वयं प्रयाय द्विषतां प्रदेशं।

रघुञ्जयन्तं लघयञ्चकार।।35

चतुर्थ सर्ग-

विचित्रवल्लीवनविप्रकीर्ण्णम्

ऋष्यप्सरोमण्डलसेव्यमानम्।

प्रोद्यत्त्रिकूटोपममादिमेरोस्

सौधत्रयं सोऽश्ममयञ्चकार।।1

आकीर्णकेतुनिकरैर्गगनोल्लसद्भि-

रामस्तूर्य्यनिनदैश्च दिवं स्पृशद्भिः।

तन्त्रीमिलन्मधुरगीतरवैश्च नृत्य-

न्नारीजनैरपि तदैन्द्रमिवावकीर्ण्णम्।।2

प्राक् छौनकीये किल दीर्घसत्रे

पुरातनं सूतगिरैव जज्ञुः।

तदेव साक्षादिव तत्र कुड्ये

चित्रैर्व्विचित्रे ददृशुस् समस्तम्।।3

तत्रैशलिङ्गं सषड़ाननार्च्च-

मर्च्चाञ्च गौर्य्या महिषासुरारेः।

..........मखे च स्वयशःप्रतानं

संस्थापयामास समं मनीषी।।4
सुवर्णपात्रैः कनकाम्बुजाभैः
.........करङ्कैः कलशैरमत्रैः।
सफेनपुञ्जैरिव विस्फुरद्भि-
र्देवालयन्तद्युनदीचकार।।5
...........करिभिस्तरङ्ग-
त्वङ्गत्तुरङ्गद्विजघोषरम्यम्।
रत्नाकरार्च्चिश्छुरितं सशङ्खं
.............अम्बुनिधीचकार।।6
पदातयो यानमभूषणा(श्च)
भूषां कुवस्त्रा वसनं महार्हम्।
...................मकान्ताः
प्राप्येष्टिदृष्ट्येव बुधा विनेमुः।।7
अभ्यर्च्चितानां विदुषां स्मितश्री-
...........................मुदाली।
अनोकहानामिव पुष्पराजी
ताराकरश्रीरिव शर्वरीणाम्।।8
.......................अर्च्चनार्थम्
गजाश्वगोजामहिषाविसार्थैः।
रैरूप्यताम्रत्रपुकङ्सलोह
.....................चैपीत्।।9
तत्रात्मभोगञ्च नरेन्द्रदत्तं
दोलातपत्रं कलशङ्करङ्कम्।
.....................आदि
सुवर्णाञ्चितं तरमयम् व्यतारीत्।।10
निश्शेषशास्त्रैर्लिखितैस् सनाथा(न्)
.....................................न।
स पुस्तकानध्ययनाच्छिदार्थं
तत्राश्रमेऽनेकविधानचैषीत्।।11

....

पद्मासनासीनमिवात्मयोनिम्।

राजन्यराजीसुरसङ्घजुष्टम्

..................................।।12

तञ्च प्रतीक्ष्यं प्रियसत्क्रियाभि-

रभ्यर्च्च्य विश्रान्तसुखोपविष्टम्।

....

वार्त्तामपृच्छद् मुदितो नरेन्द्रः।।13

स चाह सर्व्वत्र शिवं विनेतु(:)

..................................।

निरन्तरायास् सुखिनस् स्वकार्य्या-

न्नेमे जनाः पुण्यकृतः च्युतास् स्मः।।14

अर्थ- प्रथम सर्ग-

पद्य संख्या 1 से 15, 18, 19, 21, 39 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।

पद्य संख्या 16,17, 20, 22, 26, 28, 29, 30, 32, 33, 34 से 41, 47 से 49 एवं 51 अंशतः खण्डित हैं।

पद्य संख्या 42 से 46 तथा 50 की भी यही स्थिति है।

जगत् को पवित्र करने के लिए यहाँ भद्रेश्वर पर्वत पर मैं आत्मलिंग की स्थापना करूँगा। तुम्हें तुम्हारे समस्त भावी कुलोत्पन्नों के साथ देवकार्य सम्पन्न करने के लिए सदा के लिए नियुक्त करता हूँ।।23

मेरे आत्मलिंग की अपनी अन्तर की भक्ति से पूजा करते रहने पर मैं तुम्हारे ऊपर कृपा करते हुए मुक्ति प्रदान कर दूँगा। मुमुक्षु जनों को उनके द्वारा भक्तिपूर्वक साधना से प्रसन्न होकर भवबन्धन से मुक्ति रूपी मोक्ष मैं ईश्वर ही प्रदान करता हूँ।।24

मेरी पूजा की महत्त्वपूर्ण वृत्ति तुम्हारे हृदय में और वही वृत्ति तुम्हारे कुल की सन्तानों में हो, कामशत्रु शिवजी का यह अचिन्त्य वचन कैसे पूरा करूँगा तथा शिवभक्ति में मन को कैसे अचल करूँगा।।25

मन को स्थिर करने के लिए योगवृत्ति धारण करते हुए परमदेव

के अन्तर्दर्शन से अन्तःकरण को आनन्दपूर्ण करके इस देश (हृदयेश शिवजी) के वियोगजन्य दुःख को न प्राप्त होऊँगा।।26

शिवजी की आज्ञा से अथवा दूसरे किसी की आज्ञा से कीट होऊँ या पतंग अथवा त्रिलोक का राज्य प्राप्त हो जाय मैं यहाँ छोड़कर नहीं जाऊँगा यह मेरी अभिमन्यु के समान दृढ़ प्रतिज्ञा है।।27

यह सुज्ञात है कि जगत् सत्य और अस्वतन्त्र है, नाथे हुए बैलों की तरह महेश्वर की आज्ञा से प्रेरित होकर ही चलता जाता है, स्वर्ग अथवा अपने अनिष्ट में घूमता रहता है।।28

सत् क्रिया द्वारा धन लाने के लिए विमान के समान नौकासमूहों द्वारा वैसे ही प्राप्त किया जैसेशृंगी ऋषि शास्त्र की आज्ञा से प्राप्त किये तथा इसके पूर्व ऋषि लोमपाद प्राप्त कर चुके थे।।31

शिवजी की लिंग स्थापना का विधिवत शिवजी की कृपा से पूर्ण कर...........मिट्टी और सोने में समान दृष्टि रखने वाले उस राजा ने श्रेय को तृष्णारहित होकर ग्रहण किया।।51

शिशिर काल के चन्द्रमौलीश्वर लिंगमूर्ति के भक्तजनों प्रभूत श्रेयस प्राप्त कराने के लिए स्वर्ग से आये देव जो शोभा से प्रकाशमान हुए थे उन्हें देखकर श्रेष्ठमुनि भी विस्मय से विस्मित हुए।।52

द्वितीय सर्ग–

(पद्य संख्या 2 से 5 तथा 26 से 28 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।)

इस प्रकार शुद्ध तीर्थ जल से अभिषेक कर शिवलिंग की विधानपूर्वक पूजन के द्वारा तथा बिना थके हुए (अनाश्रान्त) योग साधना के द्वारा वे योगीजन सूर्य के प्रकाश के समान प्रकाश से प्रकाशित हुए।।1

तब इन्द्र प्रमुख देवगण मुक्त हुए इस ऋषि को विस्मय में देखकर विशिष्ट तप से गौरव प्राप्त इस मुनि को (स्वर्ग में) आदरपूर्वक स्थान दिया।।2

महेश्वर शिवजी की आराधना से प्राप्त समुन्नति को तथा उससे प्राप्त तेजस्विता को देखकर उस अभ्युदय प्राप्ति का कारण जो शिवजी की कृपा के समान वे समझ नहीं पाये।।6

समुन्नति की प्राप्ति के श्रेष्ठ शास्त्रीय मत से शिवजी की

आराधना से सहज प्राप्य समुन्नति का ऐश्वर्य हमारे इन मुनि को प्राप्त था।।7

हम दिग्पाल स्वर्गवासियों के घरों के रक्षक हैं उसी प्रकार शिवजी के घर (मन्दिर) के जो रक्षक हैं, विशिष्ट तप के तेज से ऊर्जस्वित जो लोग हैं, स्वर्गीय सम्पदा देने वाले शिवजी की उपासना करने वाले विद्वानों को इसी मार्ग से स्वर्ग के घरों की रंजक सम्पदा शिवजी प्रदान करें।।8

नवीन मेघ के जल से भीगकर जैसे वृक्ष हर्षित हो जाते हैं वैसे ही स्वर्गवासियों की वाणी से उसी प्रकार हर्षित हुए संयमी होते हुए भी परमार्थ को जानने वाले योगाराधक, उन देवताओं की अर्चना कर हाथ जोड़कर ये वाक्य सुने।।9

आपलोग जैसे लोगों के संस्मरण मात्र से क्षणभर में अनेक कल्पों का उपार्जित पाप नष्ट हो जाते। दर्शन करने से पुनः पवित्रता प्राप्त कर आप आत्मज्ञानी हमारे द्वारा बहुत आदर पाते हैं।।10

मन, वचन और शरीर से भी संयुक्त हमारे तप अब साक्षात् सफल हो गये जिससे आप पापरहित एवं आपका दर्शन बहुफलदायी है। आप मेरे घृणारहित मेरे दृष्टिपथ में आवें (घृणा न करने योग्य मुझे दर्शन दें)।।11

अपने अनुग्रह के रूप में अपना चरण दें, मुझमें परा (श्रेष्ठ) कोटि की भक्ति को जानकर दें। मैं तब आत्मस्वरूप के अतिरिक्त की चाहना नहीं करूँ। उन सज्जनों से जो आत्मज्ञानी नहीं हैं क्यों न घृणा करूँ या दूर जाऊँ।।12

संसार से भयभीत मैं आत्मोन्नति के लिए योगसाधना में कैसे अनुरक्त होऊँ तथा आत्मलिंग का पूजन भावपूर्वक कैसे करूँ जिसके लिए शिवजी ने नियुक्त किये हैं।।13

भगवान् शिवजी को जगत् का एकमात्र कारण जानकर मैं जो आदेश कर रहा हूँ उसके लिए क्षमा करें। निश्चय ही उस लिंग में वर्तमान शिवजी न केवल मेरे ऊपर कृपा करेंगे अपितु आप पर भी उनकी कृपा होगी।।14

इतना कहकर आदरपूर्वक पुनः अर्घ्य प्रदान कर उन देवताओं का अभिवादन किया। उनके चुप होने पर या अधोमुख होने पर लज्जित से होते हुए स्वर्ग के स्वामी इन्द्र ने पुनः कहा।।15

आप जैसे स्पष्ट और दृढ़ रूप से मुक्ति चाहने वालों के हित चाहने वालों द्वारा अब वर देने का हमारे लिए अवसर नहीं है। तथापि आपके गुणों के प्रति प्रेम होने के कारण हम वर देना चाहते हैं। क्यों इच्छा की वृत्ति अधिकारी या योग्यता की खोज नहीं करता।।16

हमारे वरदान की यद्यपि आप अपेक्षा नहीं रखते हैं तथापि यदि अपने जिन कुलोत्पन्नों को अपने स्वधर्म और कुलधर्म की रक्षा के लिए अधिकृत किया है, उनके वर की याचना यदि आप करते हैं तो निश्चय ही यह अपने प्रति ममत्व होने पर भी श्रेष्ठ होगा।।17

मुनि बोले- साधु पुरुषों की दूसरों पर कृपा करने की आदत होती है, मेरे ऊपर आपका अनुग्रह होने के कारण लोकपालों सहित आप मेरे लिए यह वर प्रदान करें।।18

शिवजी ने जिस अपने आत्मलिंग की अर्चना के लिए हमें अधिकृत किया है, वह शिवलिंग जिस श्रीशिवांघ्र पर्वत की तलहटी में स्थित है, वह प्रदेश कुश स्थली के नाम से प्रसिद्ध हो तथा इस प्रदेश में इस युग के अन्त तक मेरे कुल में उत्पन्न लोगों की स्थिति (उपस्थिति) आप लोगों की कृपा से बनी रहे, यह वर इस समय दिया जाय।।19

तथा मेरे वंश में अनेक कवि (विद्वान) निरन्तर उत्पन्न होते रहें, जिनमें वेद चिन्तन गोष्ठी चलती रहे तथा चन्द्रचूड़ शिवजी की उपासना के लिए बड़े धनापेक्षी यज्ञों की परम्परा टूटने न पाये।।20

एवं पाप समूहों को नाश करने वाले तीर्थों के समूहों का सन्निधान यहाँ सदा बना रहे, बन्धनहीन (मुक्ति योग्यता), सुमंगलकारी एवं पापरहित होने के कारण यह प्रदेश जगत् में बहुत माननीय (आदरणीय) हो।।21

मुनि के वचन को सुनकर सुरेन्द्र हर्ष से भर गये और बोले- आप श्रीमान् का जो अभिमत है वही हो, इस प्रकार घोर तप के कारण तीनों लोकों द्वारा पूजित आपका अभीष्ट कैसे या क्यों पूरा न हो (अर्थात् अवश्य

हो)।।22

धन-धान्य से भरे अनेक आश्रमों का मण्डल निर्माणकर तथा उसमें आज्ञापालन के लिए अनेक दासों, सेवकों, सत्क्रियापूर्ण, यज्ञ करने वालों के लिए दान किया, आज तक रुके हुए देवतागण स्वर्ग को गये।।23

शिवजी के आशीर्वाद से महाराज के शिवलोक जाने पर, प्रत्येक व्यक्ति शिवजी की पूजा के लिए तत्पर हुए, उन आश्रमों में बहुत प्रकार के सम्पदा भरे थे उन सम्पदाओं के तेज (चमक) से स्वर्ग लुटा हुआ सा प्रतीत हुआ।।24

उन आश्रमों में गुरु-शिष्य परम्परा से होने वाले अध्ययन की ध्वनि से तथा आश्रम के प्रसन्न सेवकों द्वारा किये गये तूर्यनाद से भक्तजनों में हर्ष की अतिवृद्धि हुई।।25

(पद्य संख्या 26 से 28 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।)

तृतीय सर्ग-

(पद्य संख्या 12 एवं 13 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।)

उनके मातृवंश की तिलकभूता तिलका नामवाली थी जो बुद्धिमान पण्डित विजयेन्द्र सूरी की नातिन थी। यह तिलका गुणरत्नों से भरे समुद्र के समान विद्यासमुद्र, राजपण्डित गुणरत्नसिन्धु के पुत्र कवीश्वर की पुत्री तथा विजयेन्द्र पण्डित की नातिन थी।।1

जिसके वस्त्रों में जड़े रत्नों के शुभ्र प्रकाश के बीच वह ऐसी प्रतीत होती थी मानो प्रसन्न मित्र तारों के बीच चन्द्रमा हो, जो धूल में खेलने की इच्छा से तारामण्डली के साथ धरती पर आ गया हो तथा इस प्रकार उसने बाल्यकाल में ही पृथ्वी को आकाश बना दिया हो।।2

जिसमें यौवन के आने पर न केवल कान्ति ही अतिउच्चता को प्राप्त हुई अपितु ब्रह्माप्रदत्त वंशपरम्परागत कुलसम्पदा, प्रतिष्ठा एवं वैदुष्य भी उच्चता को प्राप्त हुआ जिससे कुल की शोभा बढ़ी।।3

विद्वानों में श्रेष्ठ राजगुरु के द्वारा विद्वानों में जो श्रेष्ठ थी विद्वत्परिषद् के आगे नस्तमस्तक यह भगवती वागीश्वरी ही है अभिवन्दना की तथा भगवती वागीश्वरी की अवतार (प्रकाश को प्रकाशित) जानकर चरणों पर रत्नसमूह अर्पित कर चरणों की पूजा किये।।4

संसार में वेदज्ञान और ओंकार (व्याहृति) साधना में सर्वश्रेष्ठ रूप से लगे हुए इसे भगवती वागीश्वरी नाम ही धारण कराया गया, जिसके बहुत से अतिमानवीय कार्यों को देखकर सभी विचार करते रहे कि यह देवतात्मा ही है; अर्थात् यह देवता ही है।।5

उसे पूर्ण यौवन प्राप्त देखकर वर की खोज के कार्य में भ्रम की स्थिति आ गयी, उसी समय योगानुभव की तरह (संयोग से) सिद्ध ऋषि नारद वहाँ आ पहुँचे और आदेश दिया।।6

यह आपकी बेटी साक्षात् देवी वागीश्वरी जगत् के आनन्द के लिए शिवजी की कृपा से अवतरित हुई है, कुल के विद्वानों की परम्परा द्वारा घोर तप के द्वारा आराधना से प्रसन्न जगत् को पवित्र करने के लिए आयी है।।7

जिसे नाम से ही शुद्ध शिव भक्ति प्राप्त थी, वह संसार में 'नमः शिवाय' नाम से प्रसिद्ध तथा जिसने समुद्र पर्यन्त धरती पर शैवागम के विस्तार को फैलाया।।8

शरीर, वाणी और मन की वृत्तियों में जो शुभवृत्तियों से भरा हुआ है, ज्ञानार्चना द्वारा सदा मुक्ति में अनुरक्त है उसे ही तुम्हारे द्वारा भी शिवांश को देखा जाय (अर्थात्, उसे ही विवाह योग्य माना जाय)।।9

सिद्ध की वाणी को सुनकर वह अपने आगे उपस्थित कुलजों की मण्डली को बुलाकर तथा कुल के पण्डितमान्य जनों एवं उसके मामा कुल के लोगों को बुलाकर हर्षोत्फुल्ल होकर यह बात बतायी।।10

तीनों लोकों में फैले उस कीर्तिवाले का चरित्र दीर्घकाल से जानने वाले बन्धुवर्ग हर्षित हुए। सभी पापरहित बन्धुजनों को निमन्त्रित कर सभी वैवाहिक अनुष्ठान को सम्पन्न किया।।11

उसके वंश के महापुरुषों द्वारा आचरित सत्कर्मों के उत्तम फल के रूप में जो उत्पन्न हुआ था तथा जिसके यज्ञ में अग्नि और शब्द मानो उन दोनों द्वारा ही उत्पन्न हुए थे (जैसे अरणी और पीठ से उत्पन्न होते हैं) एवं संस्कृत का वैदुष जिसने अपने विद्वान पिता से प्राप्त किया था।।14

जिसे पिता के द्वारा सुभद्र यह नाम प्राप्त था, वह मूर्द्ध शिव इस दूसरे नाम से भी प्रसिद्ध था। पुनः पृथ्वीपति महाराज जयवर्मन द्वारा श्री

भूपेन्द्र पण्डित इस नाम से पृथ्वी पर प्रसिद्ध हुए।।15

वेदत्रय और अनेक शास्त्रों के पण्डित होते हुए भी कुलपरम्परागत शैवशास्त्र में विशेष अनुरक्ति थी। वह बाल्यकाल से ही निरन्तर स्मृतियों का चिन्तन करते रहते थे तथा आत्म ज्योति का अपने अन्दर में ही ध्यान करते रहते थे।।16

अल्पवयी होने पर भी आवाहित अग्नि से समृद्ध तथा ज्ञान अग्नि से ऊर्जस्वित वह महाकवियों के समूह से वन्दनीय था, उसने विद्वानों द्वारा असाध्य भ्रष्टाक्षरों में लिखे ग्रन्थों को शीघ्र ही शोधन कर पुनः शुद्धाक्षरों में लिखा (रचना की)।।17

मन्त्र दीक्षा विधि में न केवल सोम (सोमयज्ञ) की ही दीक्षा ली अपितु नृशंसों को निरुपाय करने की भी दीक्षा ली। वह न्याय, सांख्य, तथा मीमांसा एवं व्याकरण शास्त्रों की भाष्यार्थ की रचना कर और सोमयज्ञ के द्वारा ज्ञानपिपासु विद्वानों की पिपासा को शान्त किया।।18

विद्या और मोक्ष शास्त्र से विहित मार्ग से परिपूर्ण व्यवस्था में संचालित जिसके आश्रम में अनवरत आहुति प्रदान करने से उत्पन्न सुगन्धित धूम तथा वेद के कठिन (विवादास्पद) प्रसंगों के अर्थभेद पर अपने-अपने अर्थ को लेकर विवाद करते विद्यार्थियों की ध्वनि बाहर निकल रही थी (गुंजरित हो रही थी)।।19

यज्ञ में गुणियों के सत्कार करने के उद्देश्य से महाराज जयदेववर्मन गुणियों को जानने के लिए उनके परीक्षण हेतु समस्त शास्त्रों को जानने वालों को नियुक्त किया।।20

उनके सामने रखी गयीं पुस्तकों से पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देते हुए अपनी मति से प्रश्नों के सिद्धान्तों का उसी प्रकार खण्डन किया जैसे इन्द्र ने पर्वतों के पंखों का अति वज्रपात से खण्डन किया था (काट दिया था)।।21

मनमोहक कला से पूर्ण सभा रूपी आकाश में शुक्रादि तारागणों के बीच शची के समान अवस्थित उसे विस्मय से फैली आँखों से देखा।।22

गुणाधिक्य के कारण जैसे याज्ञवल्क्य ने विदेहराज के राज

दरबार में सभी पण्डितों को जीत लिया था, वैसे ही राजदरबार में सभी पण्डितों को जीतकर राजा द्वारा सम्मान में दिये गये घोड़े, हाथी और रत्नादि बाल्यकाल में ही प्राप्त किया।।23

उसके बाद ही जो उत्तम मणियों (उत्तम जनों) की युक्ति से परीक्षा कर संशयमुक्त हुआ सभी उत्तम जनों का आदर करने वाला वह प्रजाजनों के बहुत सम्मान के योग्य हुआ।।24

जो पुण्य क्षेत्रों में बनवाये गये मठों (आश्रमों) का अध्यक्ष पद क्रमशः प्राप्त किया था, वह शास्त्र और समाज के सम्बन्ध में सज्जनों में उत्पन्न विवाद में निर्णय करने वाले के पद पर राजा के द्वारा नियुक्त किया गया।।25

गुण रूपी रत्नों के समूह सजे हुए होने पर भी उसके गुणों का आदर करने के लिए राजा के द्वारा सोने के कुण्डल, आभूषण, सोने के यज्ञोपवीत तथा चित्रित वस्त्रों से पुनः विभूषित किया गया।।26

राज्य की इच्छा न रखने वाले धरणीन्द्रवर्मन, जगत् के एकछत्र स्वामी तथा बड़े भाई के स्वर्गवासी होने पर अनाथ हुए प्रजाजनों की प्रार्थना पर न्यायपूर्वक शासन करते हुए।।27

कोषादि सातों प्रकृतियों (शासनांगों) में श्रेष्ठ होते हुए भी शेष प्रकृतियों के बिना अव्यवस्थित करते हुए भी गुणों की समृद्धि प्राप्त कर, जैसे सोलह कलाओं से पूर्ण चन्द्रमा अपने (उद्गम स्थान) क्षीरसागर को परिपूर्ण कर देता है वैसे ही शासन को परिपूर्ण किया।।28

धर्मप्रिय, सम्पूर्ण वाङ्मय यज्ञ प्रेमी वह धर्मयुक्त वचन बोले के रूप में मान लिया गया था, उसके मन की अनुरक्ति विशेषकर (नाम) संकीर्तन के प्रति प्रेम में थी।।29

तत्पश्चात् दोनों राजाओं की बहन श्रीनरेन्द्रलक्ष्मी का पुत्र जो देवी दुर्गापुत्र कार्तिकेय के समान हुआ था वह शत्रुओं के लिए उसी प्रकार दुर्निर्वाय था जैसे गजेन्द्रों के लिए सिंह।।30

राजाओं के मस्तक पर आरूढ़ उसका तेज, पर्वतों के निम्न भाग पर पड़ने वाले कठोर तेज (प्रदीप्त तेज) के समान अतिदीप्त तेजवाले शुभ्र सूर्य श्रीसूर्यवर्मन नाम वाले सूर्य कुमुद्वती के लोगों का आह्लादित करने में

समर्थ हुआ।।31

मोक्ष साधक विद्या और कुल लक्ष्मी की प्राप्ति की इच्छा रखने वाला वह नवयौवन सम्पन्न सूर्यवर्मन, दोनों राजाओं से द्वीप शासित होते हुए भी दोनों राजाओं के मध्य से द्वीपाधिपत्य उसी प्रकार प्राप्त किया जैसे सूर्य और चन्द्र के मध्य से सिंहिकापुत्र राहु अमृत प्राप्त कर लिया था।।32

सेना समूह रूपी समुद्र से युद्धभूमि विनाश पर्यन्त भीषण युद्ध किया जैसे पक्षीराज गरुड़ युद्धभूमि में शत्रुराजा सर्वप्रधान को तथा पर्वतों के शिखर को उड़कर मारा था।।33

पृथ्वी को राक्षसवंशियों ने समुद्र में डुबाकर रख दिया था, परन्तु भगवान् वराह ने उसे अपने दो दाँतों से निकालकर बिना पृथ्वी को क्षति पहुँचाये पूर्व व्यवस्था के साथ पुनः स्थापित कर दिया था उसी प्रकार शत्रुवंशियों द्वारा कुव्यवस्था प्राप्त पृथ्वी को बिना कोई क्षति पहुँचाये पूर्व के अनुसार उचित व्यवस्था दी गयी।।34

दूसरे द्वीप के राजाओं को जीतने की इच्छा से उन गजसेना को न आया हुआ पाकर स्वयं ही शत्रुओं के प्रदेश में गया इस प्रकार जयशील रघु को भी छोटा बना दिया।।35

चतुर्थ सर्ग–

विचित्र लतावितान से वन भरा हुआ था, ऋषियों और अप्सराओं की मण्डली जहाँ बसे हुए थे (से जो सेवित था) वहाँ आदिमेरु के त्रिकूट पर्वत के तीन शिखरों की तरह चमकते हुए शिखर वाले तीन मन्दिर (महल) पत्थरों से बनवाया।।1

आकाश में उड़ते हुए पताका समूह से सुशोभित, मन्दध्वनि करते हुए तूर्यनाद से दिशाओं को भरते हुए, तन्तुवाद्य की मधुर ध्वनि के साथ गीत ध्वनि और नृत्य करते हुए नारीजनों से भरे होने के कारण इन्द्र के निवास के समान हुआ था।।2

शौनक के दीर्घ सत्र (ज्ञान सत्र) से पूर्व, प्राचीन सूत की वाणी की तरह उत्पन्न हुआ। उसी प्रकार तीनों मन्दिर सुशोभित हुए, चित्र विचित्र रूप सब दिखाई पड़े।।3

वहाँ शिवलिंग के साथ कार्तिकेय की अर्चना से तथा महिषासुर

शत्रु दुर्गा की अर्चना से उस यज्ञ में अपने यश का विस्तार किया।।4

पद्य संख्या 5 से 14 अंशत: नष्ट हो चुके हैं।

नोम रुन एवं नोम संडक अभिलेख
Phnom Run & Phnom Sandak Inscription

थाईलैण्ड में कोरट जिले के दक्षिण पूर्व में स्थित नोम रुन एक छोटी पहाड़ी का नाम है। यहाँ से पाये गये अभिलेख में सूर्यवर्मन द्वितीय के पूर्वजों की वंश परम्परा का वर्णन है।

उपर्युक्त दोनों अभिलेख में कुल 8 पद्य हैं। नोम रुन में 6 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 1 से 5 टूट चुके हैं। नोम संडक में केवल 2 पद्य हैं जो दोनों स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।

आयमोनियर[1] एवं जॉर्ज सेदेस[2] ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।

(1) नोम रुन अभिलेख :

(आसी)न्नृपश्रीद्धहिरण्यवर्म्मा
हिरण्यगर्भेण विभू..............।

---

1. *Le* Cambodge, Vol. II, p.103
2. *BEFEO, Vol. XXIX, p.300*

हिरण्यगर्भाण्ड हिरण्यभे...........

विभूषणार्थन्नु य.................।।2

..........दिव्यलक्ष्म्योः प्रकृतिः क्षितीन्द्र-

ग्रामे स्थिरा यस्य.............।

........स्थास्य........स्थान कुलाम्बुजानि

ताभ्यां कृतानीव लसन्व्य.........।।3

हिरण्यलक्ष्म्यामवनीन्द्रदेव्यां

महीधरं श्री जयवर्म्मदे(वम्)।

महीपतिस् सोऽजनयद् यथाश्रयाम्

कला कलापन् दि.........ती..........।।4

तस्यां वरश्रीधरणीन्द्रवर्म्मा-

वनीश्वरं श्री युवराज................।

परापरौ श्री जयवर्म्मनाम्नो

जगज्जयी सोऽजनयज्जनेशः।।5

हिरण्यवर्म्मादद्भुतमान्य नप्ता

हिरण्यलक्ष्म्याश्च सुतासुतायाम्।

श्री सूर्य्यवर्म्मावनिपं क्षितीन्द्रा-

दिव्य क्षितीशोऽजनयद्वरेण्यम्।।6

अर्थ- उनसे उस विश्वजेता महाराज श्री जयवर्मन ने एक के बाद एक श्रेष्ठ सौन्दर्य वाले युवराज तथा पृथ्वीपति श्री धरणीन्द्र वर्मन को उत्पन्न किया।।5

हिरण्यवर्मन के अद्‌भुत मान्य (माननीय) नाती महाराज क्षितीन्द्रादित्य ने हिरण्यलक्ष्मी देवी की पुत्री की पुत्री से महाराज श्री सूर्यवर्मन को उत्पन्न किया।।6

(2) नोम संडक अभिलेख :

इयन्द्युलक्ष्मीश्च तयोर्व्विशेषो

नासीदियं वातिशये न साध्या।

येतीव दत्ता युवराजभर्त्रा

स्वर्गच्छता श्री जयवर्म्मणेपि।।1

कुलानुरागादनुगच्छतापि
स्वर्गच्छतश् श्री युवराज पूर्व्वान्।
दत्ता पुनश् श्री जयवर्म्मणा या
मूर्त्तष भक्तिर्धरणीन्द्र देवे।।2

अर्थ- श्यलन्धुलक्ष्मी और उनकी भूमि यह नहीं अपितु कठिनाई से प्राप्त की गयी थी। स्वर्ग जाते हुए युवराज स्वामी के द्वारा जो इसी रूप में जयवर्मन को सौंप दी गयी थी।।1

कुल-परम्परा को अनुगमन करने वाले जयवर्मन के द्वारा भी फिर मूर्तिमती भक्ति की तरह इसे धरणीन्द्रदेव को दी गयी थी।।2

चिक्रेंग अभिलेख

Chikreng Inscription

चिक्रेंग अभिलेख चिक्रेंग प्रान्त में एक पत्थर पर उत्कीर्ण है। इस अभिलेख में उमा नाम की एक लड़की का वर्णन है जो संग्राम की ही लड़की कही गयी है। आर.सी. मजूमदार[1] के द्वारा बतलाये गये प्रह नोक अभिलेख (संख्या 90) में वर्णित संग्राम एक सरदार माना गया है। उसकी लड़की उमा बहुत सुन्दर थी तथा सभी कलाओं में दक्ष थी। साधु महीधरवर्मन की वह पत्नी बनी तथा लोकेश्वर को स्वर्ण एवं चाँदी के आभूषण तथा बहुमूल्य पत्थरों को दान में दिया।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 10 है जिनमें दो ही पद्य (2 एवं 3) विद्यमान हैं। शेष सभी नष्ट हो चुके हैं।[2]

---

1. *IK*, p.498
2. *BEFEO, Vol. XV(2), p.9*

ज्यो (द्यो)तितांङ्शो यशः श्रीअमरेन्द्रविख्यातः।
तस्योमेति तु नप्तो शरदिन्दुरिवान्वयव्योम्नि।।2
(कर्म्म)णाद्भुतसङ्ग्रामसुता सर्व्वकलाद्भुता।
शम्भोर्गौरीव महर्षिश्रीमहीधरवर्म्मणः।।3

अर्थ- प्रकाशमान यश वाले श्रीमान् अमरेन्द्र के नाम से विख्यात जो राजा हैं, उनके कुल के आकाश में शरदकालीन चन्द्रमा के समान आनन्द देने वाली यह उमा नाम की दौहित्री (नातिन), विचित्र कर्मा श्रीमान् संग्राम की सर्व कलाद्भुता कन्या भगवान शिव की पार्वती के समान महर्षि महीधरवर्मन की सती सहधर्मिणी है।
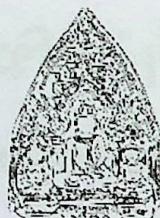
ता प्रोम अभिलेख

Ta Prohm Inscription

अंगकोर थोम के पूरब पूर्वी बारे नामक एक बड़े तालाब के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर ता प्रोम का मन्दिर स्थापित है। एक खड़े पत्थर के चारों तरफ अभिलेख उत्कीर्ण है। यह बुद्ध, धर्म, संघ, लोकेश्वर और प्रज्ञापारमिता (बुद्ध की माता) की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। इसका तात्पर्य यह कि लेखक का झुकाव महायानी होगा।

राजा जयवर्मन सप्तम की एक लम्बी वंशावली दी गयी है। इस अभिलेख में निम्नांकित के विषय में विवरण है–

(1) कम्बुज राज लक्ष्मी जिनका विवरण और कहीं नहीं पाया जाता है।

(2) भववर्मन जिसके वंशज हर्षवर्मन, जयराज चूड़ामणि जो हर्षवर्मन की पुत्री थी और आगे चलकर जयवर्मन सप्तम की माँ बनी।

इस वंश परम्परा के पश्चात् राजा की प्रशस्ति है। राजा के विजय अभियान का

भी उदाहरण इस अभिलेख में है जिनके चलते उसने चम्पा के राजा को पकड़ लिया और पीछे चलकर छोड़ दिया। इसमें निम्नांकित वर्णन दिये गये हैं-

(1) राजा के द्वारा गुरु को दिये बहुत से दान

(2) मन्दिर के विभिन्न उत्सवों में आवश्यकता पड़ने वाली वस्तुएँ एवं सामग्रियाँ

(3) किसानों और व्यापारियों पर अन्न के कर

(4) मन्दिर के कोष की जमा संख्या

(5) पत्थरों एवं ईटों के बने गुम्बदों एवं भवनों का विस्तृत विवरण

(6) एक सप्ताह तक चलने वाला वसन्त उत्सव तथा इसे मनाने के नियम

(7) देश के विभिन्न भागों में अस्पतालों की संख्या (कुल 102) और उनमें मिलने वाली वस्तुओं की एक लम्बी सूची।

और अन्त में यह इच्छा प्रकट की गयी है कि पवित्र कार्य राजा की माँ को प्राप्त होने चाहिए जिससे वह बुद्ध की परिणति प्राप्त कर लें।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 145 है जो सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।[1]

सम्भारविस्तरविभावितधर्म्मकाय-
सम्भोगनिर्मितवपुर्भगवान् विभक्तः।
यो गोचरो जिनजिनात्मजदेह भाजां
बुद्धाय भूतशरणाय नमोऽस्तु तस्मै।।1
वन्दे निरुत्तरमनुत्तर बोधिमार्ग्ग
भूतार्थ दर्शन निरावरणैक दृष्टिम्।
धर्म्मन्त्रिलोक विदितामरवन्द्यवन्ध-
मन्तर्वसत्षड्रिषण्डविषण्डखड्गम्।।2
सम्यग्विमुक्तपरिपन्थितया विमुक्त-
सङ्गोऽपि सन्ततगृहीत परार्थसङ्गः।
सङ्गीयमानजिनशासनशासितान्यान्
सङ्घोऽभिसंहिताहित प्रभवोऽवताद् वः।।3
त्रैलोक्यकाङ्क्षितफलप्रसवैकयोनि-
रग्राङ्गुलिविटपभूषित बाहुशाखः।

1. *BEFEO, Vol. VI, p.44*

104. ता प्रोम अभिलेख

हेमोपवीत लतिका परिवीत कायो
लोकेश्वरो जयति जङ्गमपारिजातः।।4
मुनीन्द्रधर्म्माग्रसरीं गुणाढ्या-
न्धीमद्भिरध्यात्मदृशा निरीक्ष्याम्।
निरस्तनिश् शेष विकल्प जालां
भक्त्या जिनानां जननीं नमध्वम्।।5
आसीदखण्डमनुदण्डधरावनीन्द-
वन्द्यो वरश् श्रुतवतां श्रुतवर्म्म सूनुः।
श्री श्रेष्ठवर्मनृपतिश् शुचिभिर्यशोभिश्
श्रेष्ठोऽवदातवसुधाधरवंश योनिः।।6
श्रीकम्बुवंशाम्बर भास्करो यो
जातो जयादित्य पुरोदयाद्रौ।
प्राबोधयत् प्राणहृदम्बुजानि
तेजोनिधिश् श्रेष्ठपुराधिराजः।।7
जाता तदीयै नवगीत कीर्त्ति-
चन्द्रोल्लसन्मातृकुलाम्बुराशौ।
र राज लक्ष्मीरिव या सतीना-
मग्रेसरी कम्बुज राजलक्ष्मीः।।8
भर्त्ता भुवो भवपुरे भववर्म्मदेवो
विभ्राज मानरुचिरञ्जितमण्डलो यः।
पूर्णः कलाभिरवनीन्द्र कुलप्रसूतिः
कर्त्तामृतांशुरिव तापहरः प्रजानाम्।।9
सर्व्वानवद्यविनयद्युतिविक्रमो य-
स्तद्वंशजो जनितविश्वजनीनवृत्तिः।
श्रीहर्षवर्म्मनृपतिर्हतवैरिहर्षो
जन्येषु दिङ्मुखविकीर्ण यशोवितानः।।10
महीभुजा श्रीजयराज चूड़ा-
मणिर्महिष्यामुदपादि तेन।
तस्यां यशश्चन्द्रमरीचिगौरा

गौरीव गौरी गुरुणाग्रदेव्याम्।।11
वागीश्वरीवातिशयैर्गिरां या
धात्रीव धृत्या कमलेव कान्त्या।
अरुन्धतीव नवगीत वृत्त्या
त्यागादिना मूर्तिमतीव मैत्री।।12
श्रीमद्यशोधर पुरेऽधिगताधिराज्यो
राजा जितारि विसरो जयवर्म्मदेवः।
आवारिधेः प्रतिदिशन्निचखान कीर्त्ति-
स्तम्भान् महीधर पुराभिजनास्पदो यः।।13
तद्भागिनेयो विनयोर्जितश् श्री-
महीधरादित्य इति प्रतीतः।
श्री सूर्य्यवर्म्मावनिपालभातृ-
जघन्यजो यो विजितारिवर्ग्गः।।14
श्लाघ्यावदातान्वयदी पकेन
विराजिता राजपतीन्द्र लक्ष्मीः।
विख्यात चारित्र वरेण राज-
पतीश्वर ग्राम कृतस्थितिर्या।।15
तयोस्तनूजो महितद्विजेन्द्रो
द्विजेन्द्र वेगो द्विजराजकान्तः।
दिक्चक्र वालोत्कटकीर्तिगन्धो
योऽधीश्वरश् श्री धरणीन्द्रवर्म्मा।।16
शाकेन्दुशासन सुधजनितात्म तृप्ति-
र्भिक्षुद्विजार्थिजनसात्कृत भूतिसारः।
सारञ्जिधृसुरशुभायतनाद सारात्
कायादजस्त्रजिनपादकृतानतिर्यः।।17
एषा श्रीजयवर्म्मदेवनृपतिन्देदीप्यमानौजसन्
तस्माद्वीरमजीजनत् क्षितिभुजश् श्रीहर्षवर्म्मात्मजा।
ब्रह्मर्षरिव देवराजमदितिर्देवी सुधर्म्माश्रितं-
गोप्तुं गां शतकोटिहेति विहताराति प्रवीरं रणे।।18

षाण्मातुरस्य विविधन्नु वपुः प्रहृष्टै-
रेकं कृतं विधिरवेक्ष्य विधित्सुरर्थम्।
गाढ़ोपगूहनमुदा हरशार्ङ्गयनङ्गा-
दैश्वर्य्य शौर्य्यवपुरेक निधिं व्यधाद् यम्।।19
यं प्राप्य कान्तमनवद्य गुणैकरागी
माशंसितन्नु धरणीन्द्रभुजाङ्कजातम्।
प्राच्यान्निकामगणिका रुचिमप्य पास्य
धात्री रतिं विदधती सुषुवे शुभानि।।20
आस्फालितभ्रमितवैरिकरीन्द्रशैल-
राजो भुजोरति बलेन रणाम्बुधौ यः।
लक्ष्मीसितद्विरदराज तुरङ्ग रत्न-
प्राप्तो हरेर्जलधिमन्थनमन्वकार्षीत्।।21
शङ्के समस्तगुण संमतिरंशुमालि-
वंशोद्‌भवोऽवनिपतीन्द्रवराङ्गरत्नम्।
गछ-त्ययम्मम् कृते समितीत्यतीव-
हर्षाद् यमाजिकमला दृढ़मालिलिङ्गे।।22
यस्याब्धिपारगिरि कानन गीत कीर्तिं
श्रुत्वोत्तरोत्तरगतिर्युधि विद्रुतारिः।
धाम स्मरन्निव विड़म्बितवान् सिसृक्षून्
दाक्षीननन्त गमनान वनीं प्रभातुम्।।23
मन्ये यदीययशसां सदृशो यदि स्या
द्रत्नाकरञ्च भुवनत्रितयञ्च विष्णुः।
नाहर्तुमूर्ध्वमवनीमशकत् समुद्रात्
कोटिक्रमैरपि न लङ्घयितुञ्च लोकान्।।24
अनेकधानेक जगत्सुभिन्नो
ऽप्यात्मैकता तु स्फुटमस्य सव्या।
सुखानि दुःखानि यदात्मभाजा-
भात्मन्यधात् सुहृदये यदीये।।25
संप्राप्य यन्मखम खण्डमतीवतृप्ति-

राखण्डलो नु जनमेजयशापतापम्।
उत्सृज्य हृष्टहृदयस्त्रिदिवस्य भूमे-
स्तेने विभूतिभिरभूमिभवाभिरैक्यम्।।26
अनङ्गकान्तोऽद्भुतशस्त्र शिक्षस्
संमोहनेनैव चकार निद्राम्।
दुर्व्वार वैरीन्द्रकुले रणे यो
विनिद्रतान्तत्प्रमदा समूहे।।27
चम्पागतस्य युधियस्य गृहीतमुक्त-
तद्भूधरस्य चरितामृतमन्यभूपैः।
श्रुत्वा नतैहृतत्रिवाञ्जलिभिर्व्वराङ्गे
सिलं महोहुतवहोदिततापशान्त्यै।।28
सुवर्णदण्ड व्यजनातपत्र-
मायूरकेतुध्वजपद्मचीरैः।
राज्याभिषेके शिविकां नृपाहीं
हैमीं गुरौ प्रादित दक्षिणां यः।।29
दिदेश यश् श्रीजयमङ्गलार्थ-
देवाभिधानं प्रियमास्पदञ्च।
ग्रामं गुरौ राजपतीन्द्रपूर्व्व
कुले च तस्यावनिभृत्कुलाख्याम्।।30
भक्त्या च यो मातरि रत्नमञ्च-
शय्यालसद्राजगृहैकभागम्।
हिरण्ययष्टिध्वजचामरादि-
रम्याञ्च हैमीं शिविकामयच्छत्।।31
भूभागभेकञ्च विभूतिभारै-
राढ्यीकृतं प्रादित पूर्व्वजे यः।
रत्नस्फुरन्तीं शिविकाञ्च हेम-
दण्डध्वजाद्यैरभितो विकीर्णाम्।।32
तस्याग्रजस्याग्रवधूषु देवी-
स्वाभिन्यभिख्यामपि यो व्यतारीत्।

तदीयमुख्यानुचरेषु सेना-
पतेश्च राजानुचरेष्विवाख्याम्।।33
विभज्य भोज्याद्यपि यश्चतुर्धा-
दिशन् गुरौ मातरि पूर्व्वजे पि।
भक्त्या वशिष्टं बुभुजे हिरण्य-
किरीट रत्नादिषु कैव वाणी।।34
उत्पादिता तेन भुजा गृहीत-
धात्र्यां पुरी राजविभार नाम्नी।
रत्नोल्लसत्स्वर्ण विभूषिताङ्गी
मुनीन्द्र मातुर्भरणे नियुक्ता।।35
प्रातिष्ठिपच्छ्रीजयराजचूड़ा-
मणिं मणिद्योतित पुण्य देहाम्।
तस्याज्जनत्या जिनमातृमूर्त्ति
मूर्त्तिं समूर्त्तिद्युशशाङ्करूपैः।।36
सोऽतिष्ठिपच्छ्रीजयमङ्गलार्थ-
देवं तथा श्रीजयकीर्तिदेवम्।
मूर्त्तिं गुरोर्दक्षिणवाम्.......यष्
षष्टिं शते द्वे परिवार देवान्।।37
तस्यास् सपरिवारायाः पूजाऽशानि दिने दिने।
द्रौणौ पाक्यक्षताः प्रस्थौ त्रयस्सप्तति खारिकाः।।38
तिला एकादशा प्रस्था द्रोणौ द्वौ कुदुवावपि।
द्वो द्रोणौ कुदुवौ मुद्राः कङ्कु प्रस्थाश्चतुर्द्दश।।39
घृतं घटी त्रिकुदवं दधिक्षीरमधूनि तु।
आधिकान्येकशस्तस्मात् सप्तप्रस्थैर्गुद्दः पुनः।।40
घटी प्रस्थौ द्विकदुवौ तैलं प्रस्थत्रयंस्तथा।
कुदुवौ द्वौ तरुफलस्वेहस्तु कुदुवत्रयम्।।41
पूजोपकरणादीनि फलशाक मुखानि तु।
नोलान्यत्र प्रसिद्धत्वाद्विज्ञेयानि यथोचितम्।।42
देववस्त्रादिवस्त्राणां युगलानि शतानिषट्।

चत्वारिंशच्च युगलान्यध्यर्द्ध युगले अपि।।43
देवता पादविन्याससमशकार्थ प्रसारिताः।
चीनांशुकमयाः पञ्चचत्वारिंशत्पटा अपि।।44
सत्त्राण्यध्यापकाध्येतृवासिनां प्रतिवासरम्।
खार्य्यश्चतुर्दश द्रोणः पञ्चप्रस्थाश्च तण्डुलाः।।45
अष्टादशोत्सवे प्यत्र सङ्क्रान्ते प्रतिवत्सरम्।
अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यां पञ्चदश्याञ्च पक्षयोः।।46
विशिष्टास्तण्डुलाः पाक्याः खार्य्यः पञ्चदशाधिकम्।
सहस्रं षष्टिरष्यै च द्रोणेन सह पिण्डिताः।।47
चत्वारिं शत्तिलाः खार्य्यः खारीभ्यां मुडकास्ततः।
त्रिदोणैश्चाधिकाः पञ्चविंशतिर्घटिका घृतम्।।48
एकत्रिंदशद्धधि क्षीरे प्रत्येकं घटिका मधु।
एकोनविंशतिस्तेन गुद्धस्तुल्यौऽथ तैलकम्।।49
कुदुवौ घटिकाः पञ्चदशाथाष्ट शतानि च।
द्वय शीतिर्देववस्त्रादि युगलानि सहस्रकम्।।50
अयुते द्वे सहस्राणि खार्य्योऽष्टौ पाक्यतण्डुलाः।
चत्वारिंशतथा द्रोणः पिण्डिताः प्रतिवत्सरम्।।51
नियुतञ्चायुतं द्वे च सहस्रे ब्रीहयश् शतम्।
तदर्था एकषष्टिञ्च सञ्चयाय चतुर्गुणैः।।52
ग्राह्याश्चतुस्सहस्राणि ग्रामादिभ्यश्च तण्डुलाः।
खारिका नवतिस्तिस्रो द्रोणो द्वौ कुदुवावपि।।53
खार्य्यश् शतं त्रयोशीतिद्रोणौ प्रस्थाश्च षट् तिलाः।
मुद्रा द्रोणौ दश प्रस्था द्वौ च खार्य्यश् शते दश।।54
चतुश्शतानि घटिका नव प्रस्था घृतं दधि।
सप्त प्रस्थास्तथा सप्त घट्यः पञ्च शतानि च।।55
प्रस्थोऽशीतिष् षट् च घट्यः पयः पञ्चशतानि च।
मधु पञ्च शतान्यष्टात्रिंशच्च प्रस्थपञ्चकम्।।56
चतुश्शतानि घटिका गुद्दोऽशीत्युत्तराणि च।
अथ त्रयोदश प्रस्थास्तैलन्त परिमाणकम्।।57

पञ्च प्रस्थाः पञ्च घट्यस् स्नेहस्तरुफलस्य च।
तन्तुवायगृहाद् ग्रामादपणादेश्च वाससाम्।।58
युगलानां सहस्राणिं चत्वरिंशच्च पञ्चकम्।
ग्रहीतव्यानि नवतिस्तथार्द्धं युगलस्य च।।59
मधूच्छिष्टस्य भारास्तु गणिता दश सप्त च।
अष्टादश तुलाः पञ्च कट्यो नव पणास्तथा।।60
सीसानामेक पञ्चाशद्भारा दश तुला अपि।
तिस्रश्च कट्टिकैकाश्वो द्वे दास्यौ द्वौ च दन्तिनौ।।61
राज्ञा दत्तास् स्वयन्दत्ता ग्रामवद्भिश्च भक्तितः।
सहस्रत्रितयं ग्रामाश्चत्वारिंशत्तथा शतम्।।62
चतुश्शताः पुमांसोऽष्टादश यात्राधिकारिणः।
द्विसहस्रास् सप्तशताश्चत्वारिंशच्च कारिणः।।63
सहस्रे द्वे शते च द्वात्रिंशच्च परिचारिकाः।
योषितस्तासु नर्त्तक्यष् षट्छता दश पञ्च च।।64
अयुतं द्विसहस्राष् षट्छताः पिण्डीकृताः पुनः।
चत्वारिंशच्च सर्वे ते सार्द्धं तत्स्थितिदायिभिः।।65
षट्सहस्राष् षडयुताष् षट्छता पञ्चविंशतिः।
स्त्रीपुंसा गणितास्तत्र देवपूजानि दायिनः।।66
एते सप्रायुताः पिण्डीकृता नवसहस्रकाः।
त्रिशता पञ्चषष्टिश्च पुंकाचाम्पादिभिस् सह।।67
प्रासादादिकरङ्कादिकृत स्वर्णापि विंशतिः।
अष्टौ भाराश्चतस्रश्च तुलाः पादा च कट्टिकाः।।68
पञ्चविंशति भाराश्च रूप्याणां दश पञ्च च।
तुला द्वे कट्टिके द्वौ च पादौ पणचतुष्टयम्।।69
पञ्चत्रिंशच्च वज्राणि मौक्तिकव्यजनद्वयम्।
विंशतिष् षट्छता मुक्तास्तथायुतचटुष्टयम्।।70
शतानि पञ्च चत्वारि सहस्रानि च संख्यया।
चत्वारिंशच्च वैदूर्य्यरक्ताश्मादिमभाश्मनाम्।।71
ताम्रस्य च शतं भारा विंशतिश्च त्रयोदश।

त्रयोदश तुलाश्चैका कट्टी पञ्च पणा अपि।।72
कंसस्य तु सहस्रे द्वे भारास्त्रीणि शतानि च।
नवत्रिंशच्च गणितास्तुलास् सप्तदशापि च।।73
सुवर्णपटलं सार्द्धं चतुर्व्विंशतिभारकम्।
लोहस्यैका तुला भाराष् षट्छतादश पञ्चत।।74
कट्ट्यो दश तुलास् सप्त भाराः पञ्चदश त्रपु।
सीसञ्चतुश्शता भाराः सप्तत्रिंशत्तुलार्द्धकम्।।75
सप्तषष्टिः पुनश्चीनपटा नव शतानि च।
तथा द्वादश कौशेय शय्याः पञ्च शतानि च।।76
शतानि पञ्चातपत्रमुखा विंशतिस्रयः।
नवत्रिंशच्च वलाभि प्रासादाः पिण्डिताः पुनः।।77
शतान पञ्च षट्षष्टिः खण्डान्युपलवेश्मनाम्।
इष्ट कावेश्मनां खण्डान्यष्टाशीतिश् शतद्वयम्।।78
षटसप्ततिस्तु विस्तारे व्यामा वापितटाकयोः।
शतं सहस्रं पञ्चाशदायामेन तु पिण्डिताः।।79
शर्क्करौधोपलकृतप्राकाराणां समन्ततः।
व्यामास् सहस्रे द्वे सप्त शतानि द्वौच संख्यया:।।80
चतुश्शतानि च नवत्रिंशच्चात्र विपश्चितः।
प्रत्यहं भोजिता राजमन्दिरे धर्म्मधारिणः।।81
शतानि नव चाध्येतृवासिनम् सप्ततिस्तथा।
चतुश्शतास् सहस्रन्ते सर्व्वे नव च पिण्डिताः।।82
चैत्राष्टभ्यास् समारभ्य यावत्तत्पूर्णिमातिथिः।
सुवसन्तोत्सव विधिर्वशारामजिनागमे।।83
वर्षे वर्षे कृतस्तस्या भगवत्या यथागमम्।
पूर्ण सर्व्वोपकरणैस्तत्र यागद्वयं कृतम्।।84
भगवान् भगवत्यासौ चतुर्द्दश्यां प्रदक्षिणम्।
त्रिः कुर्य्यात् पौर्णमास्याञ्च वीरशक्त्यादिभिस् सुरैः।।85
सान्द्रन्ध्वजातपत्राद्यैरम्बरं परितस्तदा।
ताड्यमानाखिलातोधमन्द्रध्वनिमनोहरम्।।86

नर्त्तक्यो नर्त्तकाश्चात्र नृत्येभुः परितो दिशः।
दानशीलादिकुशलं कुर्य्युस् सर्वे च मानवाः।।87
पूजिताश्च त्रिगुरवस् सहस्रन्देवतास्तदा।
षट्छतानि पुनर्या(र्य)त्र देवा नवदशापि च।।88
भिक्षुद्विजाद्या विद्वांसस् सहस्रन्तत्र भोजिताः।
गोभिक्षा एकनवतिर्नवाशीत्युङ्गुलीयकाः।।89
पिण्डितास्ते पणास् सप्त तुलितास्तपनीयकम्।
शतं सहस्रं सप्तापि देववस्त्रादिवाससाम्।।90
तिस्रो वृहतिका एकः कम्बलो नवविंशतिः।
क्षुद्रवासांसि सार्द्धानि शाटिकाश्चापि विंशतिः।।91
दान्तोपधानेभेकञ्च दान्तं विचटनन्तथा।
अष्टाशीति समुद्रास्तु सगन्धा एकदर्प्पणम्।।92
सहस्रञ्चषकाश् श्वेतत्रपु षड्विंशतिस्तुलाः।
श्रीवासकृष्णे तु समे तुले षोडस कट्टिकाः।।93
नियुतं पञ्चषष्टिश्च सहस्राणि शतानि च।
सप्त सिक्थ प्रदीपानाञ्चत्वारिंशच्चतुष्टयम्।।94
सहस्रेन्द्वे शते भारा द्वात्रिंशच्च तुले च तत्।
सिक्थञ्चुम्बल ताम्बूलमाल्यादीनि यथोचितम्।।95
षट्छता देवयज्ञादिपाक्यास्त्रिंशच्च तण्डुलाः।
खार्य्यस्त्रयोदश प्रस्था व्रीहिप्रस्थास्तु षोडस।।96
सार्द्धास्त्रिखार्य्यस् सार्द्धैकादश प्रस्थास्तिला अपि।
मुद्रास्त्रिखारिका द्रोणः प्रस्थसार्द्धोय्यथो घृतम्।।97
घटयो च पञ्च प्रस्थाश्च सार्द्धा द्वे घटिके दधि।
प्रस्थाश्चैकादश ततश्चतुः प्रस्थाधिकं पयः।।98
सप्तघट्यो मधु गुद्वौ घटयौ प्रस्था दशापि च।
पादस्त्रिमाषाः कर्पूरस्तथा विम्बचतुष्टयम्।।99
एकादश तरुष्कस्य पणा अष्टौ पणाः पुनः।
नखं पादश्च माषश्च चतुर्विम्बन्तु हिङ्गुलम्।।100
चन्दनस्य द्विकट्टयौ च त्रिपणाश्च त्रिपादकाः।

कस्तूरिकाः पणौ माषौ षड् बिम्बान्यथ तैलकम्।।101
प्रस्थौ द्वौ कुदुवौ पादौ दश कट्टयस्तु नागरम्।
गोभिक्षाद्याखिलञ्चैतद् ग्राह्यं कोषान् महीभृतः।।102
राजकोषाद् गृहीतव्याः कल्पनाः प्रतिवत्सरम्।
द्रोणौ द्वौ सप्ततिः खार्य्यस्तण्डुलानाञ्चशशताः।।103
तिलाष् षड्विंशतिः खार्य्यो द्रोणः प्रस्थचतुष्टयम्।
मुद्रा द्रोणो दश प्रस्थास् सप्तत्रिंशच्च खारिकाः।।104
घृतं षड्विंशतिर्घट्यो नव प्रस्थास्ततो दधि।
चतुष्प्रस्थैकघटिकान्यूनं दध्ना समं पयः।।105
प्रस्थास् सप्तैकषष्टिश्च मधु घट्योऽथ षोड्श।
आढ़कोना गुड़स्तैलं दश प्रस्था घटीत्रयम्।।106
द्वे सहस्रे पुनस्त्रीणि शतानि युगलानि तु।
तथा सप्तोत्तराशीतिर्देव वस्त्रादि वाससाम्।।107
शय्या वितानानि चतुर्विंशतिर्विंशतिः पुनः।
उपधानानि षट्त्रिंशन्मशका वरणानि च।।108
तृणजा विंशतिश्चीनशय्याश्चानांशुकानि तु।
विंशतिः पञ्च सिक्थन्तु भारो दश तुला अपि।।109
पञ्च प्रस्थास्त्रयो द्रोणा मरिचानां द्विखारिके।
चन्दनस्य तुलैका द्वादश कट्टयास्त्रिपादकाः।।110
श्रीवासस्य तुलास्त्रिंशत् कट्टयस् सार्द्धत्रयोदश।
कृष्णा द्वादश कट्ट्यस्तु तुलाः पञ्चदशापि च।।111
कर्प्पूरस्य पुनर्द्धे च कट्टिके षट् पणा अपि।
तरुष्कं द्वादश पणं कट्टेयका च नरवं पुनः।।112
पणाश्च दश कट्ट्यौ तु हिङ्गुलं पणपञ्चकम्।
स्वर्णाङ्गुलीय गोभिक्षामत्र चूर्ण समुद्रकाः।।113
त्रिंशत् पणा अथ त्रिंशत्पणानि रजतान्यापि।
कदाभादीनि ताम्राणि तुलास् सप्त द्विकट्टिके।।114
त्रपूणि द्वितुले चीनसमुद्रशत पञ्चकम्।
खार्य्यो द्वात्रिंशतिद्रोणत्रयञ्च लवणस्य तु।।115

कृष्णत्रपु पुनस्त्रिंशत् तुला एकस्तुरङ्गमः।
हिरण्यभूषणा धेनुः कपिला वत्ससंयुता॥116
आरोग्यशाला विषये विषये द्वे शतन्तथा।
तत्र सप्त शतान्यष्टानवतिश्चार्प्पितास् सुराः॥117
देवतावासिरोग्यर्थं प्रत्यब्दं व्रीहिखारिकाः।
अयुतन्नियुतं सप्त सहस्राणि शतद्वयम्॥118
ग्रामा अष्ट शतान्यष्टात्रिंशत् स्त्रीपुरुषाः पुनः।
चत्वारिंशत्सहस्रं षट्छता अष्टायुता अपि॥119
राजकोष्ठादिदं ग्राह्यं रैगोभिक्षाङ्गुलीयकाः।
पणाष् षोडश पादौ द्वौ त्रिभाषाश्चानुवत्सरम्॥120
देवार्हादीनि वासांसि षट्छतानि सहस्रकम्।
चतुर्द्दश पणाः कट्ट्यष् षट् तुलैका च चन्दनाम्॥121
श्रीवासानां तुलास् सप्त कट्ट्योऽष्टौच चतुष्पणाः।
कृष्णायाष् षट् तुला एकादश कट्ट्यः पणा दश॥122
षट् तुलास्त्रिपणास् सिक्थं मधुनो घटिका पुनः।
एकादशोत्तर शतं प्रस्था द्वादश सार्द्धकाः॥123
घटिका द्वादश गुह्या प्रस्थैर्द्वादशमिस् सह।
दश घट्यो नव प्रस्था घृतानि कुदुवद्वयम्॥124
खारिकां विंशतिर्द्वे च द्रोणश्चैकस्तिला अपि।
त्रयोदश तुला द्वे च कट्टिके पिप्पली तथा॥125
यवानीपिप्पलीरेणुपुन्नागा गणिता इमे।
एकैकशस् सप्त पणास्त्रयोदश च कट्टिकाः॥126
चतुश्शतज्जातीफलं त्रिसहस्रं द्वयन्तथा।
क्षारजीर्णे समे कट्ट्यश षट् पणाश्च चतुर्द्दश॥127
तिस्रः कट्ट्यो द्विकर्प्पूरौ पणः पादौ त्रिमाषकाः।
शर्क्कराणां तुले कट्ट्यस्त्रयोदश पणाष्टकम्॥128
सप्ततिस्तु दङ्दङ्साख्यास् सहस्रे षट् छतानि च।
शतपुष्पं तुला कट्ट्यष् षड् द्वादश पणा अपि॥129
धान्यस्य द्वादश तुलास्तथा षोडश कट्टिकाः।

चतुर्द्दश पणाश्चाथ कक्कोंलमरिचे समे।।130
कट्ट्यस्त्रयोदश तथा पणास् सप्तैलिका अपि।
एकादश तुलाः कट्ट्यस्तिस्त्रस् सप्त पणाधिकाः।।131
एकादश तुला कट्ट्यष् षोडशापि प्रचीबलम्।
सर्षपाणि पुनर्द्रोणः प्रस्थैर्द्वादशभिस् सह।।132
सहस्रमयुते पथ्यात्वचौ तु त्रिशते समे।
षष्टिश्च दार्व्वीखण्डानि त्वष्टाषष्टिस् सहस्रकम्।।133
कन्दङ्हर्लाय्जन्स्यङ्देवदारुच्छव्यं तुले समम्।
देवमित्तून्तुला कट्ट्यस्त्रयोश पणाश्च षट्।।134
भैषज्याम्लानि घटेयका चत्वारिंशच्च सङ्ख्यया।
सार्द्धाश्चैकादश प्रस्थाश्चर्म्माङ्ह्मन्यष्ट खारिकाः।।135
कल्कानि दशमूलानां लसुनानाञ्च संख्यया।
अयुतानि च चत्वारि सहस्राण्यष्ट चैकशः।।136
अर्शश्शमनभैषज्य समुद्रानां सहस्रकम्।
शतानि नव षष्टिश्च हिङ्गूनान्नव कट्टिकाः।।137
सप्त रम्भादितैलानां प्रस्था घट्यस्त्रयोदश तुलात्रयम्।
शतं द्वादश घट्यश्च प्रस्थाश्चाष्टौ निदिग्धिकाः।।138
शुण्ढयः सप्त पणाः कट्यस्त्रयोदश तुलात्रयम्।
कोष्ठानि त्रिपणाः पादौ द्वौ चैकादशकट्टिकाः।।139
पलाण्ड्ना पुनः खार्य्यस् सप्त द्रोणद्वयन्तथा।
लसुनानां पुनः खार्य्यस्तिस्रो द्रोणद्वयाधिकाः।।140
कुर्व्वन्निमानि सुकृतान्यतिमात्रमातृ-
भक्त्या व्यधात् प्रणिधिमेवमसौ क्षितीन्द्रः।
एभिश् शुभैर्म्मम् कृतैर्भविनां भवाब्ध-
रुत्तारणाय भजतां जननी जिनत्वम्।।141
धर्म्मस्थितिं परकृतां विकृतान् दुरात्म-
भग्नाञ्च सोऽवनिपतिस् स्थिति रक्षणार्थी।
दृष्ट्वावबवध्य च दृढ़ं पुनरेवमाह
रक्षिष्यतस् स्थितिमनागतकम्बुजेन्द्रान्।।142

मातुर्निरर्थमुपकारमवेक्ष्य भक्त्या
जह्युर्निजायुरपि मातृकृते कृतज्ञाः।
तद्भूधरा विदितवानपि मत्प्रतिष्ठा-
रक्षोत्सुकान् स्वयमतृप्तयार्थये वः।।143

तां स्थेयसीमापि विधातुमपलवेभ्यो
रक्ष्या भवद्भिरिह देवभुजिष्यकास्ते।
काष्ठोपल प्रभृति किञ्चन् देवकार्य्य-
स्याङ्गञ्च हारकविकाराधमेभ्यः।।144

श्रीसूर्य्यकुमाराख्यश् श्रीजयवर्म्मावनीभुजो जातः।
राजकुमारोऽग्रण्यान्देव्यामकरोत्प्रशस्तमिदम्।।145

अर्थ- सामग्री के विस्तार से विवेचित एवम् निर्णीत धर्म रूप शरीर के संभोग से रचित शरीर वाले भगवान् विभक्त किये हुए जो जिन और जिन के आत्मज शरीरधारियों के बुद्ध जो प्राणियों की शरण माने जाते हैं उनको नमस्कार है।।1

उत्तरहीन बुद्ध के मार्ग वाले, प्राणियों के लिए अर्थ के दर्शन जो बिना आच्छादन के स्पष्ट एक दृष्टि वाले, त्रिलोक में विदित देवों से वन्दन योग्य, अन्दर बसने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य रूप शत्रुओं को जीत चुकने वाले बुद्धदेव को प्रणाम करता हूँ।।2

भलीभाँति विशेष रूप से जन्म और मरण से छुटकारे के लिए चोरी-चोरी विशेष रूप से संग छोड़ने वाले से भी सर्वदा दूसरों के लिए ज्ञान के संग के इच्छुक, सम्यक रूप से बुद्ध के शासन से औरों के शासन कर चुकने वाले संघ से अभिसंहित प्रभु रूप भगवान् बुद्ध तुम्हारी रक्षा करें।।3

तीन लोकों से इच्छित फल की उत्पत्ति के एक उद्गम स्थान अग्र अंगुली रूप वृक्ष पर शोभित बाहु रूप शाखा वाले सुवर्णमय यज्ञोपवीत रूपी लत्ती से लिपटे शरीर वाले लोक के ईश्वर जो चर प्राणी होकर भी स्वर्ग के फूल के वृक्ष पारिजात के समान हैं, वे बुद्ध भगवान् सभी प्रकार के उत्कर्षों से युक्त होकर जीतें, विजयी हों, उनकी जय हो।।4

मुनीन्द्रों के धर्मों की भ्रमरी रूपी गुणों से भरी-पूरी बुद्धिमानों से अध्यात्म-दृष्टि से देखने योग्य सभी विकल्प रूप रूप-जालों का निराकरण करने वाली बुद्ध की माताजी को भक्ति से नमस्कार करते जाओ।।5

सम्पूर्ण पृथ्वी के राजाओं से प्रणाम योग्य श्रेष्ठ वेदों और शास्त्रों के सुननेवालों के श्रेष्ठ श्रुतवर्मन के पुत्र श्री श्रेष्ठवर्मन राजा उज्ज्वल कीर्तियों से श्रेष्ठ उज्ज्वल राजवंश की योनि से उत्पन्न थे।।6

जो श्री कम्बु वंश रूप आकाश के सूर्य जयादित्यपुर के उदय पर्वत पर उत्पन्न हुए, प्राण और हृदय रूप कमलों को हँसाने वाले तेजों के कोष श्रेष्ठपुर के अधिराज थे।।7

उसकी नवीन गायी हुई कीर्ति रूप चन्द्र से अतिशय शोभित मातृकुल रूप समुद्र में जो लक्ष्मी के समान शोभा पाती थी, सतियों की अग्रगण्या कम्बुजराज की लक्ष्मी थी।।8

पृथ्वी का स्वामी भवपुर में भववर्मन राजा जो विशेष रूप से शोभायमान सुन्दर और मण्डल को जीत चुकने वाले कलाओं से पूर्ण राजवंश की सन्तान कार्य करने वाले चन्द्र के समान प्रजा के सन्तापहारी थे।।9

जो सभी धर्मयुक्त विनय की छवि से युक्त विक्रमी उसके वंश में उत्पन्न विश्व के लोगों के हितकारी आजीविका वाले श्री हर्षवर्मन राजा मारे हुए शत्रुओं से हर्षवाले सभी दिशाओं में बिखरी कीर्ति के विस्तार वाले थे।।10

उस राजा के द्वारा श्री जयराज चूड़ामणि पटरानी में उत्पन्न किया गया था, उसमें जो पटरानी कीर्ति रूप चन्द्र-किरण सी उजली श्री गौरी जी जो शिव की अग्रदेवी हैं उनके समान यश वाली हैं, उसमें राजाओं का सिरमौर पैदा किया गया।।11

जो सरस्वती जी के समान अतिशय वाणी से सम्पन्न, धैर्य से धात्री सरस्वती के समान, कान्ति से लक्ष्मी के समान नये गीतों की वृत्ति से अरुन्धती के समान, त्याग आदि से साक्षात् मूर्तिमती के समान थी।।12

श्रीमान् जयवर्मन राजा यशोधरपुर में अधिराज्य पाने वाले राजा

शत्रु समूह को जीतने वाले, समुद्र से लेकर प्रत्येक दिशा में कीर्ति के स्तम्भों को गाड़ने वाला जो महीधरपुर के अभिजन की प्रतिष्ठा रूप था।।13

उसकी बहन का पुत्र श्री महीधरादित्य विजय से बल और प्राणों से युक्त – इस नाम से विदित श्री सूर्यवर्मन राजा की माता का सबसे छोटा जो शत्रु समूह को जीत चुकने वाला था।।14

धन्य और उज्ज्वल वंश के दीपक द्वारा विराजित राजपतीन्द्र की लक्ष्मी प्रसिद्ध सुन्दर श्रेष्ठ वाले कुलदीपक द्वारा राजपतीश्वर ग्राम में अपनी स्थिति स्थापित की गयी थी।।15

उन दोनों का पुत्र पूजित है द्विजेन्द्र ब्राह्मण श्रेष्ठ जिसके द्वारा ऐसा वह था, गरुड़ के समान वेगवाला, चन्द्र के समान सुन्दर दिशाओं रूपी चक्रवालों में उत्कृष्ट कोटि की कीर्ति की गन्ध जिसकी फैली हुई थी जो श्री धरणीन्द्रवर्मन नाम से विख्यात राजा था।।16

जो बुद्ध भगवान् रूप चन्द्र के समान अमृत से उत्पन्न आत्मा की तृप्ति वाला, बौद्ध भिक्षु, ब्राह्मण याचक लोगों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाला, सार को ग्रहण करने की इच्छा वाला, अशुभ के घर असार शरीर से नित्य ही बुद्ध के चरणों पर नमन करने वाला था।।17

इसने श्री जयदेववर्मन राजा जो जाज्वल्यमान पुनः-पुनः अतिशय प्रकाशमान थे उनसे वीर को उत्पन्न किया था, जो श्री हर्षवर्मन राजा की पुत्री थी जैसे ब्रह्मर्षि से देवराज को अदिति ने जन्म दिया था जो सुन्दर धर्म का आश्रित था। धर्म को रखने के लिए रण में सौ करोड़ आघात से आहत हुए शत्रु वाले प्रकृष्ट वीर को जन्म दिया था।।18

ब्रह्मा ने कार्तिकेय के विविध शरीरों को प्रसन्न होकर एक रूप से छिपाने के हर्ष से या घने आलिंगन के हर्ष से शिव, विष्णु और कामदेव से ऐश्वर्य, शूरता और शरीर को लेकर जिसको एकत्र विधान करके पैदा किया था।।19

जिस सुन्दर धार्मिक गुणों के एक समूह धरणीन्द्र की बाहु से उत्पन्न अभिलषित को पा करके पूरब दिशा में ज्योति को निरस्त करके सरस्वती रति का विधान करती हुई कल्याणों का सृजन करने लगी थी।।20

सब ओर से फाड़े हुए घुमाये हुए शत्रु रूप गजेन्द्र और पर्वतों के राजा भुजा की रति के बल से रण रूप समुद्र में जो लक्ष्मी, ऐरावत के समान उच्चैश्रवा के समान, घोड़े और रत्न सबको पा करके विष्णु भगवान् के समुद्र मन्थन का अनुकरण करने लगा था जैसे समुद्र मथ कर विष्णु ने चौदह रत्न, घोड़े, हाथी और रत्न पाये थे वैसे ही रण रूप समुद्र को मथ कर इसने सब कुछ प्राप्त किये थे।।21

शंका करता हूँ कि सभी गुणों से युक्त चन्द्र वंश में उत्पन्न पृथ्वी राजेन्द्र रूप राजा रूप श्रेष्ठ अंगों वाले रत्न लाने जाते हैं ये मेरे लिए अत्यन्त हर्ष से जिन्हें लक्ष्मी दृढ़ रूप से आलिंगन करने लगी कि मेरे लिए ये रत्न लाने जाते हैं।।22

जिसकी कीर्ति का गान समुद्र के पार स्थित पहाड़ों और वनों तक गायी गयी ऐसे राजा की कीर्ति को सुन करके उत्तरोत्तर गति से युद्ध में शत्रुओं को भगा चुकने वाले मानो तेज का स्मरण करता हुआ सा सृष्टि की इच्छा वाली दक्ष सम्बन्धिनी अनन्त गमन वाली पृथ्वी को नापने के लिए दिखावा किया करता था।।23

मानता हूँ जिसकी कीर्तियों के समान यदि समुद्र, तीनों भुवन और विष्णु समुद्र से ऊपर पृथ्वी को नहीं ला सके, करोड़ों डगों से भी लोकों को लाँघ भी न सके थे।।24

अनेक बार अनेक विश्व से भिन्न भी आत्मा की एकता सत्य और स्पष्ट प्रतीत है आत्मा के भागी के द्वारा सुखों और दुखों को जिसके सुन्दर हृदय में आत्मा में धारण का अवसर मिला था।।25

जिस अखण्ड यज्ञ से अतिशय तृप्त इन्द्र ने जनमेजय के शाप रूप ताप को पाकर उसे छोड़कर प्रसन्न हृदय होकर स्वर्ग की भूमि के ऐश्वर्यो से जो ऐश्वर्य भूमि से उत्पन्न नहीं थे उन ऐश्वर्यो से एकता का विस्तार किया करता था।।26

एक ओर कामदेव सुन्दर होकर भी दूसरी ओर आश्चर्य कर शस्त्र शिक्षाविद् भली-भाँति मोहने से सम्मोहन से ही दुख से निवारण करने लायक शत्रु राज के समूह में रण में जिसने निद्रा कर दी और शत्रु राजाओं की रानियों के समूह में रत जगा करके ही छोड़ा था। विधवा होने

के कारण कभी रात में या दिन में किसी क्षण नींद ही नहीं आती।।27

चम्पा के युद्ध में जिसके द्वारा पकड़कर छोड़ दिये गये राजा के चरित रूप अमृत नम्र अन्य राजाओं द्वारा सुनकर अंजलियों से हरण किये हुए के समान सुन्दर अंग में छींटा गया तेज रूप अग्नि उगे हुए सन्ताप की शान्ति के लिए सींचा गया।।28

सुवर्ण के डण्डे वाले पंखे और छाता वाले मयूरकेतु ध्वजा वाले कमल रूप वस्त्रों से राज्याभिषेक में सोने की राज योग्य शिविका (डोला) और दक्षिणा गुरु को सब दिये थे।।29

जिसने श्री जयमंगलार्थ देव नामक प्रिय स्थान भी ग्राम गुरु को दिया। राजयतीन्द्र पूर्व कुल में उस राजा के कुल के नाम को सुशोभित किया।।30

और भक्ति से जिसने माता को निमित्त रत्नों का बना मंच, शय्या से शोभित राजभवन का एक भाग सुवर्ण के डण्डा वाली ध्वजा, चँवर आदि और सुवर्ण निर्मित डोला तेल लगाकर सब दिये थे।।31

पूर्वज के निमित्त जिसने एक भूमि का खण्ड उसे ऐश्वर्यों के भारों से धनयुक्त करके प्रदान किया था। रत्नों से चमकती हुई शिविका (डोला), सुवर्ण निर्मित दण्ड से युक्त ध्वजा आदि से सब ओर बिखरी हुई दी थी।।32

उसके बड़े भाई के अग्र वधुओं में देवी स्वामिनी नाम की थी उसे भी जिसने वितरित किया उसके प्रधान अनुचरों में सेनापति के मानो राजा के अनुचरों में नाम को दिया।।33

बाँट करके भोज्य पदार्थ आदि भी जिसने भाग कर दिये थे गुरु के निमित्त, माता के निमित्त, पूर्वजों के निमित्त भी भक्ति से दिया था, बचे हुए को भोगा था, सुवर्ण के किरीट रत्न आदि में कैसी वाणी कही जाय?34

उससे बाँह द्वारा गृहीत धात्री में राजविभार नाम की पुरी रत्न से चमकते स्वर्ण से विभूषित अंगों वाली मुनीन्द्र की माता के भरण के लिए नियुक्त की गयी।।35

श्री जयराज चूड़ामणि जो मणि के द्वारा प्रकाशित पुण्य शरीर

वाली थी उसका प्रतिष्ठापन किया था, उसमें माता की मूर्ति को, मूर्ति सहित आकाश के चन्द्र रूपों से प्रतिष्ठापित किया था।।36

श्रीजयमंगलार्थ देव की उसने स्थापना की थी तथा श्री जयकीर्तिदेव की मूर्ति की स्थापना की थी। गुरु के दाहिने बाए...... दो सौ साठ देव परिवारों की स्थापना की थी।।37

उन देवों की पूजा के अंशों को सपरिवार प्रतिदिन दो द्रोण पकाने योग्य अक्षत, दो प्रस्थ तिहत्तर खारी पकाने योग्य अक्षत दिया करते थे।।38

तेल भी ग्यारह प्रस्थ, दो द्रोण, दो कुदुव देते। दो द्रोण, दो कुदुब मुद्राएँ, कौनी (एक प्रकार का अन्न), कङ्कु चौदह प्रस्थ देते थे।।39

घी एक घड़ा तीन कुदुव, दही, दूध और मधु एक-एक करके अधिक उससे दिया करते थे और फिर गुड़ सात प्रस्थ दिये जाते थे।।40

सात प्रस्थ गुड़ एक घड़ा, दो प्रस्थ, दो कुदुव गुड़ और तेल तीन प्रस्थ दो कुदुव दिया करते, वृक्ष के फल के तेल तीन कुदुव दिया करते थे।।41

पूजा के उपकरण आदि जिनमें मुख फल और शाक, यहाँ नहीं कहे गये हैं, यथोचित रूप से प्रसिद्ध होने के कारण विशेष रूप से जानने योग्य है ही।।42

छः सौ जोड़े देवों के वस्त्र आदि। चालीस जोड़े आधे जोड़े भी।।43

देवता पैर रखने के लिए एवं मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी, कपड़े फैलाने के लिए रेशमी वस्त्र थे वे चौवन कपड़े दिये थे।।44

अध्यापक और गुरु के पास रहकर पढ़ने वाले अध्येतागण, छात्रगण के लिए प्रतिदिन चौदह खारी, पाँच द्रोण पाँच प्रस्थ चावल दिये जाते थे।।45

यहाँ संक्रान्ति में प्रतिवर्ष दो पक्षों की अष्टमी, चतुर्दशी, पंचमी तिथियों तथा अट्ठारह उत्सवों में ये प्रदान किये जाते थे।।46

विशिष्ट प्रकार के चावल जो पकाने लायक हो एक हजार पन्द्रह खारी अड़सठ द्रोण सब मिलाकर दिये जाते थे।।47

तिल चालीस खारी, गुड़ दो खारी, घी पच्चीस घड़ा दिये जाते थे।।48

दही और दूध इक्कीस घड़े, एक घड़ा मधु, उसके समान इक्कीस घड़े गुड़ तथा इसके बाद तेल दिये जाते थे।।49

तेल आठ सौ पन्द्रह घड़े, दो कुदुव बेरासी हजार जोड़े देवों के वस्त्र आदि।।50

बीस हजार आठ खारी पकाने लायक चावल तथा चौवालीस द्रोण चावल कुल मिलाकर प्रति वर्ष दिये जाते थे।।51

एक लाख बारह हजार एक सौ व्रीहि गम्हड़ी धान उसके लिए चौगुणा संचय के निमित्त एकसठ खारी और दिये गये।।52

ग्राम आदि से चावल चार हजार तिरानवे खारी दो द्रोण, दो कुदुव चावल ग्राह्य थे।।53

तिल सौ खारी तिरासी द्रोण छः प्रस्थ मुद्रा दो द्रोण बारह प्रस्थ दो सौ दस दिये जाते थे।।54

घी चार सौ घड़ा, नौ प्रस्थ दही, पाँच सौ सात घड़े सात प्रस्थ आदि।।55

दूध पाँच सौ घड़े, छियासी प्रस्थ, मधु पाँच सौ अट्ठाइस घड़े पाँच प्रस्थ।।56

चार सौ अस्सी घड़ा गुड़, तेरह प्रस्थ तेल उसी परिमाण से दिये गये।।57

वृक्ष के फलों के तेल पाँच प्रस्थ, पाँच घड़े जुलाहों के घर से, ग्राम से, बाजार आदि से कपड़ों के लिए।।58

पैंतालीस जोड़े हार, नब्बे जोड़े वस्त्र और जोड़ों के आधे लेने योग्य थे।।59

मधु के भार गिने हुए सत्रह, अट्ठारह तुला, पाँच कट्टी तथा नौ पण।।60

शीशे इक्यावन भार दस तुला, तीन कट्टिका एक घोड़ा, दो दासियाँ और दो हाथी दिये गये।।61

स्वयं राजा द्वारा भक्ति से दिये गये एवं भक्ति से ग्राम वालों द्वारा

तीन हजार एक सौ चौवालीस ग्राम थे।।62

चार सौ अट्ठारह यात्रा के अधिकारी पुरुष, दो हजार सात सौ चालीस कार्यकर्ता पुरुष।।63

दो हजार दो सौ बाईस परिचारिकाएँ स्त्रियाँ, उनमें नर्तकियाँ छः सौ पन्द्रह थीं।।64

फिर कुल मिलाकर एक लाख दो हजार छः सौ चालीस वे सभी हुए जो उनकी स्थिति देने वालों के साथ थे।।65

छः लाख छः हजार छः सौ पच्चीस स्त्री पुरुष गिने हुए वहाँ देव पूजा के उत्तरदायी थे।।66

ये कुल मिलाकर सात लाख नौ हजार तीन सौ पैंसठ पुरुष चम्पा वासियों के साथ थे।।67

प्रासाद आदि करङ्क आदि स्वर्ण निर्मित आदि सभी अट्ठाईस भार चार तुला एक पाव कट्टिका मात्रा में दिये गये थे।।68

रुप्य पच्चीस भार पन्द्रह तुला दो कट्टिका दो पाद (पाव) चार पण दिये गये थे।।69

पच्चीस वज्र दो मोती के पंखे, चालीस हजार छब्बीस मोती दिये गये।।70

ये सभी संख्या से चार हजार पाँच सौ चौवालीस वैदूर्य मणि, लाल मणि पत्थरों के दिये गये थे।।71

ताँबे के एक सौ तैंतीस भार तेरह तुला, एक कट्टी और पाँच पण।।72

काँसा गिने हुए दो हजार तीन सौ नब्बे भार और सत्रह तुला मात्रा में दिये गये थे।।73

सुवर्ण पटल साढ़े चौबीस भार लोहे के छः सौ पन्द्रह भार और एक तुला।।74

राँगा पन्द्रह भार सात तुला दस कट्टी शीशा, चार सौ सत्ताईस भार आधी तुला।।75

नौ सौ सड़सठ रेशमी कपड़े, पाँच सौ बारह कौशेय निर्मित शय्या।।76

पुनः सब मिलाकर पाँच सौ तेईस प्रमुख छाते, उनचालीस बल भी निर्मित प्रासाद थे।।77

पत्थर के बने मन्दिरों की संख्या पाँच सौ छियासठ थी। पक्की ईंटों के बने मन्दिरों के खण्डों की संख्या गिनती में दो सौ अट्ठासी थी।।78

बावली और तालाबों के विस्तृत व्याम छिहत्तर, एक हजार एक सौ पचास की दीर्घता से सब मिलाकर।।79

सब ओर से शक्करों के समूह वाले पत्थरों से रचित चहारदीवारों के व्यामों की संख्या दो हजार सात सौ दो थी।।80

इस राज मन्दिर में धर्मधारी पण्डित लोग प्रतिदिन चार सौ उनचालीस भोजन करते थे।।81

कुल मिलाकर एक हजार तेरह सौ सत्तर पढ़ने वाले गुरु समीप निवासी छात्र थे।।82

चैत्र मास की अष्टमी तिथि से पूर्णिमा तिथि तक वंश की वाटिका वाले महात्मा बुद्ध भगवान् के शास्त्र में सुन्दर वसन्तोत्सव विधि में समारोह था।।83

प्रतिवर्ष उस भगवती के यथोक्त शास्त्रानुसार सभी उपकरणों से पूर्ण दो यज्ञ किये जाते थे।।84

भगवान् और भगवती से वह चतुर्दशी का प्रदक्षिणा तीन बार और पूर्णिमा में वीर शक्ति आदि देवों से प्रदक्षिणा किये जाते थे।।85

उस समय घने रूप से ध्वजों, छातों आदि से सब ओर से आकाश मण्डल में सभी बाजों के पीटने के स्वर सुन्दर गम्भीर और मनोहर होते थे जो गूँजते हुए अच्छे मालूम पड़ते थे।।86

नर्तक एवं नर्तकियाँ सभी दिशाओं में नाचते, सभी मनुष्य दानशील एवं कुशल कार्य करते थे।।87

तब तीन गुरुजन पूजित हुए एक हजार छः सौ उन्नीस देव पूजे गये।।88

वहाँ भिक्षु ब्राह्मण आदि विद्वान लोग एक हजार खिलाये गये तथा गोभिक्षा एकानवे, नवासी अंगुलि मात्र।।89

वे कुल मिलाकर सात पण तौले गये, तपनीयक एक हजार एक

सौ सात देवों के वस्त्र आदि दिये गये।।90

तीन बृहतिकाएँ एक कम्बल उन्तीस छोटे वस्त्र आधे के साथ बीस साड़ियाँ दी गयीं।।91

एक मुलायम तकिया, एक कोमल बिछावन, अट्ठासी मुद्रा सहित और गन्धयुक्त एक दर्पण दिया गया।।92

एक हजार प्याले सफेद राँगे से बने, छब्बीस तुला श्रीवास और कृष्णा बराबर-बराबर दो तुला सोलह कट्टिका।।93

एक लाख पैंसठ हजार सात सौ चौवालीस सिद्ध चावल के प्रदीप थे।।94

दो हजार दो सौ तेइस भार, दो तुला सिद्ध चावल, चुम्बलक, पान, माला आदि जैसा उचित होना चाहिए सब थे।।95

देवों के यज्ञ आदि में पकाने लायक चावल छः सौ तीस खारी तेरह प्रस्थ सोलह प्रस्थ व्रीहि=गम्हड़ी धान।।96

तिल साढ़े तीन खारी साढ़े ग्यारह प्रस्थ, मुद्रा तीन खारी एक द्रोण और घी डेढ़ प्रस्थ दिये जाते थे।।97

दही दो घड़े पाँच प्रस्थ, ढाई घटिका दिये जाते थे। दूध पन्द्रह प्रस्थ सात घड़ा मधु और गुड़ दो घड़े दस प्रस्थ।।98

सात घटिकाएँ मधु, दो घटिकाएँ गुड़ और दस प्रस्थ गुड़ सवा तीन माशे कपूर तथा चार बिम्ब कपूर।।99

ग्यारह तरुष्क के (ग्यारह पण) और फिर दस पण, नख, पाद (पौन) मासा और चार बिम्ब हींग।।100

तीन कट्टिकाएँ चन्दन की तीन पण और तीन पाद कस्तूरी दो पण, दो मासे छः बिम्ब इसके बाद तैल।।101

तैल दो प्रस्थ, दो कुदुव, दो पाद, दस कट्टी नागर गोभिक्षा आदि सब ये राजा के खजाने से लेने योग्य हैं।।102

प्रति वर्ष राजा के खजाने से ये कल्पित कहे हुए पदार्थ लेने योग्य हैं। दो द्रोण सत्तर खारी (चार सौ सत्तर खारी) चावल खारी।।103

छब्बीस खारी तिल और एक द्रोण चार प्रस्थ, मुद्रा एक द्रोण दस प्रस्थ सत्ताईस खारी।।104

छब्बीस घड़े घी, उसके बाद नौ प्रस्थ दही, चार प्रस्थ और एक घटिका कम दही के बराबर दूध।।105

सड़सठ प्रस्थ मधु और सोलह घटिकाएँ एक आढ़क कम गुड़ दस प्रस्थ तेल तीन घटी।।106

दो हजार तीन सौ सत्तासी जोड़े देव वस्त्र आदि कपड़े।।107

चौबीस शय्या के वितान फिर छत्तीस तकिये और मच्छरदानी।।108

बीस तृण से उत्पन्न शय्या, रेशमी वस्त्र पच्चीस, पाँच सिक्थ सिद्ध चावल दस भार एक तुला।।109

पाँच प्रस्थ तीन द्रोण दो खारी काली मिर्च, चन्दन एक तुला बारह कट्टी तीन पाद।।110

श्रीवास तीस तुला साढ़े तेरह कट्टी, कृष्णा बारह कट्टी पन्द्रह तुला।।111

कपूर दो कट्टी छः पण तरुष्क बारह पण, एक कट्टी नख दस पण दो कट्टी।।112

हींग पाँच पण, सुवर्ण की अंगूठी, गोभिक्षा, चूर्ण समुद्रक तीस पण।।113

और चाँदी तीस पण, कुत्सित प्रकाश आदि वाले, ताँबे सात तुला दो कट्टी।।114

राँगा दो तुला चीन समुद्र पाँच सौ बाईस खारी लवण तीन द्रोण।।115

फिर काला राँगा तीस तुला, एक घोड़ा, सुवर्ण से सुसज्जित एक बछड़ा सहित कपिला गाय विभिन्न विषयों (शासन की एक इकाई- जिला के समान) में एक सौ दो आरोग्यशालाएँ तथा वहाँ सात सौ अन्ठानवे देवता अर्पित थे।।116

देवता के आवासी रोगियों के लिए प्रति वर्ष दस हजार करोड़।।117

सत्रह हजार दो सौ खारी व्रीहि गम्हड़ी धान दिये जाते थे।।118

आठ सौ अड़तीस ग्राम फिर स्त्री-पुरुष एक सौ बीस हजार छः

सौ कार्यरत थे।।119

राजकीय कोष से प्रति वर्ष ये धन, गाय, भिक्षा, अंगूठियाँ सोलह पण दो पाद तीन मासे लेने योग्य हैं।।120

देवताओं के लिए वस्त्र आदि एक हजार छः सौ चन्दन चौदह पण छः कट्टी एक तुला चन्दन समर्पित थे।।121

श्रीवास सात तुला आठ कट्टी चार पण कृष्णा छः तुला ग्यारह कट्टी दस पण।।122

सिक्थ सिद्ध चावल छः तुला तीन पण फिर मधु का छोटा घड़ा एक सौ ग्यारह प्रस्थ और बारह अर्द्धक के साथ समर्पित होते थे।।123

गुड़ बारह घड़ा, बारह प्रस्थों के साथ घी दस घड़ा नौ प्रस्थ, दो कुदुव दिये जाते थे।।124

तिल बाईस खारी, एक द्रोण तथा पीपल तेरह तुला, दो कट्टी भी दिये जाते थे।।125

अजवायन, पिप्पली, पुन्नाग (केसर) रेणु ये सभी गिनकर एक-एक सात पण तेरह कट्टी।।126

जायफल तीन हजार चार सौ तथा दोनों क्षार और जीर्ण बराबर-बराबर छः कट्टी चौदह पण।।127

कपूर दो प्रकार की दो कपूर तीन कट्टी एक पण दो पाद तीन माशे शक्कर दो तुला तेरह कट्टी आठ पण।।128

दङ् दङ् सांख्या दो हजार छः सौ सत्तर शतपुष्पा एक तुला छः कट्टी बारह पण।।129

धान्य बारह तुला सोलह कट्टी चौदह पण कंकोल और काली मिर्च दोनों बराबर-बराबर।।130

इलायची तेरह कट्टी सात पण ग्यारह तुला तीन कट्टी सात पण अधिक।।131

प्रचीबल ग्यारह तुला सोलह कट्टी सरसो एक द्रोण बारह प्रस्थ।।132

पथ्या और त्वचा दालचीनी बराबर बराबर ग्यारह हजार तीन सौ साठ, दार्वी खण्ड अड़सठ हजार।।133

कन्दङ् हर्लाय जनसाङ् देवदारु छव्यं दो तुला बराबर देवमित्र एक तुला तेरह कट्टी छः पण।।134

दवा जो खट्टी हो, भैषज्य, अम्ल खट्टी एक घड़ा गिनकर चालीस साढ़े ग्यारह प्रस्थ आठ खारी चर्माङ्द्दानि।।135-136

अर्श रोग दूर करने वाली दवा एक हजार की संख्या, नौ सौ साठ कट्टी हींग।।137

केले आदि का तेल सात प्रस्थ तेरह घड़े, निदिग्धिका बारह सौ घड़ा आठ प्रस्थ।।138

सोंठ सात पण, तेरह कट्टी तीन तुला कोठ तीन पण दो पाद ग्यारह कट्टी।।139

प्याज सात खारी दो द्रोण, लहसुन तीन खारी दो द्रोण अधिक।।140

इन धर्मों को करता हुआ माता की अति भक्ति से राजा ने प्रबन्ध किया था। इन किये धर्मों से विश्व के संसार रूपी समुद्र से उतारने के लिए माता के बुद्धत्व के भजने वाले मेरे पुरुषों के संसार रूप समुद्र के पार करने के लिए ये धर्म कर्म किये गये थे।।141

दूसरों के द्वारा किये गये धर्म की स्थिति को दुष्टात्मा द्वारा भग्न वह राजा स्थिति की रक्षा का इच्छुक देखकर मजबूती से बाँधकर इस प्रकार फिर बोला- न आये हुए कम्बुज देश के राजाओं से स्थिति के लिए जो रक्षा करेंगे उन्हें कहकर चेतावनी के साथ बोला था।।142

मैं स्वयं असन्तुष्ट सा तुम रक्षण कार्य करने वालों से प्रार्थना करता हूँ- माता के लिए उपकार को देखकर भक्ति से आभारी होकर माता के लिए अपनी आयु का भी त्याग करोगे मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा में उत्कण्ठित होने वाले राजाओं को ज्ञात कराया उक्त निवेदन किया था।।143

उस स्थिर धर्म को जो ठहरने लायक है तथापि उथल-पुथल से रक्षा करने योग्य है। आपलोगों के द्वारा यहाँ देवता के धन, लकड़ी, पत्थर आदि देव कार्य के अंग को सुवर्ण के बनी वस्तुओं को अधर्मों से बचावें।।144

श्री सूर्यकुमार नाम का श्री जयवर्मन राजा का पुत्र राजकुमार आगे गिनी जाने वाली देवी के विषय में यह प्रशस्ति लिखवाया था।।145

105

प्रह खन खड़े पत्थर अभिलेख

Prah Khan Stele Inscription

अंगकोर के निकट खण्डहरों के बीच यह प्रह खन का मन्दिर है। एक खड़े पत्थर के चारों ओर यह अभिलेख लिखा गया है। अभिलेख का प्रारम्भिक भाग ता प्रोम के अभिलेख से मिलता है। यह जयवर्मन सप्तम की वंशावली को बतलाता है और राजा की प्रशस्ति का पाठ करता है। इस अभिलेख से हमें यह जानकारी मिलती है कि राजा ने दो सोने की मूर्तियाँ नटेश्वर – नृत्य में लीन शिव तथा दूसरे अपने पिता को समर्पित की। राजा द्वारा 13,500 गाँव धर्मराज को दान में देने का वर्णन है। यह गाँव 20,400 देवी-देवताओं को दिये गये जिनमें यम और काल भी शामिल हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि दाह संस्कार सम्बन्धी प्रथा का प्रचलन उस समय भी था जो अन्तिम दो देवताओं के वर्णन से मालूम होता है।

अंगकोर पर आक्रमण करने वाले चमों पर सम्राट की विजय का उल्लेख भी अभिलेख में है। अपने विजय के उपलक्ष्य में राजा ने उस निर्णयात्मक युद्ध-स्थल

पर जयश्री नगरी नामक एक नगर की स्थापना की। अभिलेख में जयश्री नगरी की तुलना प्रयाग से की गयी है और यह माना गया है कि धार्मिक महत्व के जयश्री नगरी प्रयाग से भी बढ़कर है क्योंकि प्रयाग में केवल गंगा तथा यमुना नामक दो ही तीर्थ हैं और इस जयश्री नगरी के पड़ोस में तीन तीर्थ हैं। तीनों में से एक बुद्ध को समर्पित किया गया है, दूसरा शिव को तथा तीसरा विष्णु को। जॉर्ज सोदेस ने अंगकोर के चारों ओर के बड़े तालाबों को तीन तीर्थों के रूप में बतलाया है।

अभिलेख में बोधिसत्व-लोकेश्वर की प्रतिमा-स्थापना का भी वर्णन है। यह राजा के पिता का रूप था। इसका नाम जयवर्मेश्वर था और इसने प्रह खन के मन्दिर में प्रधान देवता के रूप में स्थान पाया।

उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त इस अभिलेख में निम्नलिखित वर्णन हैं-

(1) 121 वह्नीगृह (सम्भवत: धर्मशाला) की स्थापना

(2) राजा के भिन्न-भिन्न पवित्र स्थापत्य, पूजा के लिए खर्च और वस्तुएँ निश्चित

(3) लगभग 20,400 की संख्या में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, स्वर्ण, चाँदी, कांसा और पत्थर से निर्मित

(4) मन्दिर में रहने वाले सेवक जिनमें 208532 गुलाम थे। अन्तिम श्लोकों में यह संख्या 306372 पुरुष और महिलाएँ गुलाम जो चम्पा, यवन और पुकन या पगान-वर्मा एवं रवान से लाये गये थे।

(5) मन्दिरों एवं छोटे स्थापत्य की संख्या, मन्दिर के लिए 8176 गाँवों का दान (अभिलेख के अगले भाग में यह संख्या 13500 दी गयी है) और 2066 सहायक स्थापत्य।

(6) प्रह खन मन्दिर में फाल्गुन के महीने में वार्षिक उत्सव को मनाना।

(7) चैत्र माह में ता प्रोभ की भाँति देवताओं का महोत्सव मनाना।

(8) सूर्य भट्ट तथा दूसरे ब्राह्मण जावा और अनम के राजा तथा चम्पा के दो शासकों द्वारा पवित्र जल को इन उत्सवों पर चढ़ाने के लिए लाना।

(9) प्रह खन के जयतटाक की खुदाई और इसके अन्दर एक यादगार बनाना।

(10) इन सारे पवित्र कार्यों के लिए राजा के द्वारा प्राप्त की गयी योग्यता को अपने पिता धरणीन्द्रवर्मन द्वितीय को समर्पित।

(11) भविष्य के राजा को इस स्थापत्य की सत्ता के आह्वान।

(12) 400126 खारीस चावल का दाम।

अन्तिम श्लोक में यह कहा गया है कि यह लम्बी प्रशस्ति मुख्य रानी राजेन्द्रा देवी के पुत्र राजकुमार वीर कुमार के द्वारा रची गयी है।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 179 है जिनमें पद्य संख्या 86 से 92, 100 एवं 105 से 112 अस्पष्ट हैं।

जार्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

VV 1-14 are identical with those of No. 177 of RCM

श्लाघ्यावदातान्वयदीपकेन
विराजिता राजपतीन्द्रलक्ष्मीः।
विख्यातचारित्रवरेण या श्री-
सुवीररवत्यास्पदमातृवंशा॥15

VV 16-18 are identical with those of No. 177 of RCM

ब्रह्माण्डकान्तिमुपचित्य सुधाभिषिक्ताम्
आधार धाम्नि च निधाय सुलक्षणं यम्।
प्रेम्णा यथा स्वकुशलं विदधे विधाता
नूनञ्चिकीर्षुरनवद्यगुणाधिराजम्॥19

लक्ष्मीश्चलेव्यात्म गुणैरलङ्घैय-
र्बद्धाचला येन नयावरोधे।
आशाचरीङ्कीर्त्तिसखीं विभूप्य
नित्ये द्विषत्क्षत्र कुलन्दिगन्ते॥20

साधुप्रियस् सद्गुणवृद्धि वृद्ध-
संज्ञः कृती संस्कृत वर्णरीतिः।
निपातयन्दुर्हृदभीशवन्द्यो
यो विश्रुतः पाणिनिरा कुमारम्॥21

भक्त्यां स्वयं योऽदित धर्म्मराजे
त्रयोदश ग्राम सहस्रकाणि।
शतानि पञ्चापि च चोदितस्तु
कृष्णेन पञ्चैव न धार्त्तराष्ट्रः॥22

---

2. *BEFEO, Vol. XLI, p.255*

और्व्वानलो वैरिबलाम(म्बु) राशौ
दावानलश् शस्त्रवनेषु यस्य।
नम्रारिभूभृत्कुमुदेषु चन्द्रो
नारायणास्त्रद्युतिरेव तेजः।।23
विद्विड्भिराकृति विशेषमवेक्ष्य यस्य
दुर्धर्षमायुधयुजो युधि मीलिताक्षैः।
स्त्रस्तास्त्रवाहुभुजगैर्विगतञ्चिरान्नु
प्रस्थापनास्त्रमधुना स्थितमेव मेने।।24
आश्चर्य्यमाणं युधि येन भूपा
नीलासिमस्त्रारुण हेमगौरम्।
पुरस्तिरश् शक्रधनुः कृताद्य-
भीत्येव दृष्ट्वास्त्रमुचः प्रणेभुः।।25
सान्द्रास्त्रवर्षैः पिहितोग्रधाम्नि
प्रदोषिते रङ्गसरस्यगम्ये।
भृङ्गीव लक्ष्मीरभवद् विकासि-
धामाम्बुजे यस्य परिभ्रमन्ती।।26
प्रोत्तुङ्गसौध विलसद्रि पुराज राज-
धानीस् स्वीवीरि अवहेऽरिवनं मृगेषु।
शङ्केऽदिशत् स्ववनवासिषु यस् स्वदावं
युद्धाहृतेषु समतां प्रथयन्वदन्यः।।27
यस् सत्कृतेषु विभवैरदिशत् स्वपुत्री-
र्धीमत् सुनीति निलयो रुचिलोभनीयाः।
चेदीश्वरो हुतवहे तु तदङ्शमर्ध-
माहृत्य गाधिरपि भूरिहयान् ऋचीके।।28
रामश्च यश्च विहितामर मर्त्य कार्यो
पित्रर्थतत्परहृदौ जितभार्गवौ द्वौ।
पूर्व्वोऽश्मना व्यधित चङ्क्रममब्धिमृक्षै-
र्हेम्ना परस्तु मनुजैस्तरितुं भवाब्धिम्।।29
नाट्येश्वरौ स्वर्णभयौ पुरस्ताद्

येनार्थितौ स्वर्णभुजङ्गमस्य।
सद्यो विमुक्ताविव राघवौ द्वौ
भुजङ्गबन्धाद्र विहतेन्द्रपाते।।30
प्राप्तौ प्रशस्तां पितरि स्तुतिन्द्राग
दिवोऽवतीर्णे किल रामभीष्मौ।
स्वयम्भुवे यस्तु चतुर्भुजाढ्ये
सदार्च्चिते कामिव लोकनाथे।।31
यत्रद्विषद्रुधिरधाम्नि जयश्रियं यो
जह्रे युधि व्यधित तत्र पुरीन्तदाख्याम्।
हेमाम्बुजोपलविरञ्चितभूमिभागा
दिग्धाधुनापि रुधिरैरिव या विभाति।।32
सत्कृत्य तीर्थद्वयसन्निधानात्
साध्यो विशुद्धेय जगतां प्रयागः।
किङ्कथ्यते बुद्धशिवाम्बुजाक्ष-
तीर्थ प्रकृष्टा नगरी जयश्रीः।।33
स श्रीजयवर्म्मनृपश्
श्री जयवर्म्मेश्वराख्य लोकेशम्।
वेदेन्दुचन्द्ररूपै
रुदमीलयदत्र पितृमूर्तिम्।।34
आर्य्यावलोकितेशस्य मध्यमस्य समन्ततः।
शतद्वयत्रयोऽशीतिस्तेन देवाः प्रतिष्ठिताः।।35
विबुधाश् श्री त्रिभुवनवर्म्मेश्वर पुरस् सराः।
त्रयः प्रतिष्ठितास्तेन पूर्व्वस्यान्दिशि भूभृता।।36
काष्ठायान्दक्षिणस्यां श्रीयशोवर्म्मेश्वरादयः।
तेन प्रतिष्ठिता देव विंशतिर्द्वादशोत्तराः।।37
श्री चाम्पेश्वरविम्बाद्यस्त्रिंशत् पश्चिमतस् पुराः।
कौवेर्य्यां शिवपादाद्याश्चत्वारिंशत् प्रतिष्ठिताः।।38
एको व्रीहिगृहे देवश्चङ्क्रमेषु पुनर्दश।
चत्वारश्चोपकार्य्यायामारोग्यायतने त्रयः।।39

द्वारेषु च चतुर्दिक्षु चतुर्विंशति देवताः।
एते शतानि चत्वारि देवास्त्रिंशच्च पिण्डिताः।।40
राज्यश्रीपुलिने लिङ्गसहस्रेण चतुर्दश।
चुरिद्वये सयोगीन्द्रविहारे षोड्शैकशः।।41
गौर श्रीगजरत्नस्य चैत्ये च वलभीषु च।
तीरे जयतटाकस्य विंशतिर्द्वे च देवताः।।42
एकश्च विश्वकर्म्माख्य आयस्थान गृहे सुरः।
सर्व्वे पञ्च शतान्येते दश पञ्च च पिण्डिताः।।43
लोकेश्वरादिदेवानां पूजाङ्गानि दिने दिने।
द्रोणार्द्धन्तण्डुलाः पाक्या खारिकाः पञ्चसप्ततिः।।44
खारिकैका तिलाः पञ्च प्रस्था द्वौ कुदुवावपि।
मुद्रा द्रोणद्वयं प्रस्थाश्चत्वारः कुदुवद्वयम्।।45
घृतस्य त्वेकघटिका तथा प्रस्थास्त्रयोदश।
दध्नश्चतुर्दश प्रस्था घटिका कुदुवद्वयम्।।46
क्षीरस्य त्रिंशदेकोना प्रस्था द्वौ कुदुवावपि।
मध्वेकविंशतिः प्रस्था गुड़स्त्वेकोनविंशतिः।।47
षट् प्रस्थास् सत्रिकुदुवास्तैलन्तरुफलस्य तु।
स्नेहं प्रस्थौ द्विकदुवौ स्नानोपकरणैस् सह।।48
पूजोपकरणान्यत्र फलशाकमुखानि तु।
नोक्तान्यति प्रसिद्धत्वाद् विज्ञेयानि यथोत्रितम्।।49
देवार्हवसन श्वेतरक्त कम्बल शाटिकाः।
शय्यासनादिभिः पञ्चचत्वारिंशच्छतानि षट्।।50
लोकेशाद्यङ्घ्रि विन्यासमशकार्थ प्रसारिताः।
षडुत्तरा च पञ्चाशय्यीनांशुकमयाः पता(टा):।।51
सत्तान्यध्यापकाध्येतृवासिनान्तण्डुलाः पुनः।
द्रोणौ द्वाविंशतिः खार्योऽन्वहं प्रस्थाश्चतुर्दश।।52
एकैकस्मिन्दिने देवपूजाङ्गैस्तण्डुलैरिभे।
षट् प्रस्थास् सप्तनवतिः खार्यो द्रोणनयन्तथा।।53
चतुर्दशीपञ्चदशीपञ्चमीद्वादशीष्वपि।

अष्टम्यां पक्षयोस् सार्द्धं संक्रान्ताष्टदशोत्सवैः॥54
खार्यः पञ्चसहस्राश्च साष्टाशीतिशतत्रयाः।
वर्षे वर्षे दश प्रस्था विशिष्टाः पाकातण्डुलाः॥55
चतुस् सप्ततिखारिकास्त्रिद्रोणाः कुदुवौ तिलाः।
मुद्रास्त्रयोदश प्रस्थैस्त्रिद्रोणैश्च ततोऽधिकाः॥56
नवप्रस्थाधिका पञ्चसप्ततिर्घटिका घृतम्।
दध्यष्टाषष्टिघटिका आढकं कुदुवद्वयम्॥57
सप्त प्रस्था द्विकदुवो घटिका नवसप्ततिः।
क्षीरं मधु पुनः प्रस्थो घटिकाः पञ्चसप्ततिः॥58
चतुः प्रस्था द्विकदुवो पष्टिश्च घटिका गुडः।
घटिकास्तु त्रिपञ्चाशत्तैलं प्रस्थास्तथा दश॥59
महीरुहफलानान्तु स्नानोपकरणक्षमः।
स्नेह प्रस्थाश्च चत्वारः घटिकाश्च त्रयोदश॥60
एकैकवत्सरे देवपूजाङ्गं पिण्डितं पुनः।
सञ्चयाय द्विगुणितं ग्रामार्घाकरसम्भवम्॥61
व्रीहिणान्नियुतञ्चैकं खार्योऽयुतचतुष्टयम्।
षट्सहस्राण्यष्टशतान्येका(क) नवतिरेव च॥62
खार्यस् सप्त सहस्राणि शतान्यष्टौ च तण्डुलाः।
चत्वारिंशत्तथाष्टौ च श्राद्धमाद्यापणादिषु॥63
खार्यश् शतानि चत्वारि त्रयस्त्रिंशत्तिलास्तथा।
तन्न्यूना दशखारीभिर्मुद्रा द्रोणेन पिण्डिताः॥64
शतानि पञ्च घटिकाश्चत्वारिंशच्च पञ्च च।
प्रस्थास् सप्त घृतं सार्द्धा दधि सप्त शतानि तु॥65
घट्योऽष्टासप्ततिः प्रस्थाः पुनर्दश पयांसि तु।
षट् छतानि नवत्रिंशत् सङ्ख्याष् षट् प्रस्थसंयुताः॥66
शतानि चत्वारि चतुः पञ्चाशद् घटिका मधु।
पञ्चप्रस्थास्ततो न्यूनो घटिभिस्तिसृभिर्गुडः॥67
तैलं प्रस्थवयं पञ्चदश घट्यश् शतत्रयम्।
अष्टप्रस्थास्तरुस्नेहो घट्यो नवदशं शतम्॥68

अयुते द्वे सहस्रे च देववस्त्रादिवाससाम्।
षट् छतानि तथा शीतिर्युगानि द्वे युगे अपि।।69
एका तुला तरुकस्य नवतिर्द्वौ तथा पणाः।
श्रीवासस्यैक भारो द्वे तुले च दश कट्टिका:।।70
कृष्णैकभारस्त्रि तुलास्त्रयोदश च कट्टिका:।
शतभारास्तुले सिक्थ सार्द्धैकादश कट्टिका:।।71
छागाश् शतानि चत्वारि विंशतिश्च त्रयस्तथा।
कपोतबार्हिहारीतास् समाष षष्टिश् शतत्रयम्।72
(ग्रामा:) पञ्च सहस्राणि त्रिशतानि च विंशति:।
(चत्वारो) भूभृता दत्ता ग्रामवद्भिश्च भक्तित:।।73
नवायुतानि सप्तापि सहस्राणि शतानि तु।
अष्टौ स्त्रीपुरुषास्तव चत्वारिंशच्च पिण्डिता:।।74
अभवत् प्रमुखास्तेषान्नराश् शतचतुष्टयम्।
चत्वारिंशच्च चत्वार: पाचकाधास्तु षट् छता:।।75
चतुस्सहस्रा: पुरुषाष् षट् चाथ परिचारिका:।
सहस्रे द्वे शते चाष्टानवतिश्चाथ नाटिका:।।76
सहस्रन्तास्वथो सप्तचत्वारिंशत् सहस्रका:।
चतुश्शताश्च षट्त्रिंशद्देव पूजादिंदायिन:।।77
प्रत्यब्दन्तण्डुला ग्राह्यास् सहस्रान्त्रिशता अपि।
खार्योऽष्टाविंशतिर्भूभृत्कोष्ठाद्द्रोणद्वयन्तथा।।78
मुद्गास्तु सप्तपञ्चाशत् खार्यो द्रोणत्रयन्तिला:।
चतुष्प्रस्थास्त्रयो द्रोणा नवविंशति खारिका:।।79
घटिका विंशतिस्तिस्रष् षट् प्रस्थाश्च तथा घृतम्।
त्रिंशत्तु घटिका: प्रस्था नव द्वौ कुदुवौ दधि।।80
एकत्रिंशत् पयो घट्यष् षट् प्रस्थामधुन: पुन:।
षट् प्रस्था: कुदुवो घट्यष् षडशीतिश् शतत्रयम्।।81
घटिकाष् षोड़श गुड़ष षट् प्रस्था: कुदुवद्वयम्।
तिलतैलन्तु चत्वार: प्रस्थाष् षड् घटिकास्तथा।।82
सहस्रत्रितयं सप्त शतानि द्वादशापि च।

देववस्त्रादियुग्मानि शतां शय्यास्त्रयोदश।।83
त्रिशता मशकार्थास्तु चीनांशुकमयास्त्रयः।
विंशतिश्चोपद्यानानि पुनर्द्वाभ्याञ्च विंशति।।84
चीनशय्याः पुनास्तिस्रस्तृणजा विंशतिस्तथा।
मरिचानां पुनः प्रस्था द्वादशैका च खारिका।।85
द्वौ भारौ द्वे तुले सिक्थ साद्धैकादश कट्टिकाः।
लवणानाञ्चतस्रश्च खार्यो द्रोण..............।।86
चन्दनस्य पुनर्भार एकः पञ्च...............।
श्रीवासस्यैकभारश्च त्रितुल..................।।87
कृष्णैकभारश्च तुलाष् षट् त्र................।
सार्द्धत्रिकट्ट्यः कर्प्पूर मा(षे)..............।।88
षट् कट्टिका दश पणा........................।
त्रिकट्ट्यः क्रिमिजं सूत्र........................।।89
हेमाङ्गुलीयगोभिक्षा..............................।
माषौ त्रिपादा द्वादश..............................।।90
समुद्रामत्रकलशं.............................चम्।
पणा अष्टौ त्रयः पादा...मास् साष्टविम्बकाः।।91
तुलामत्रादि ताम्राणि...................कट्टिकाः।
पणाश्च पञ्चाथ तुले..........पञ्चकट्टिकाः।।92
अथ पञ्चाशताश्चीन(स)मुद्राविंशतिस्तथा।
हेम शृङ्गखुरा धेनुः कपिलास्तरणान्विता।।93
चत्वारो वर्णतुरगाश्चत्वारो दन्तिनस्तथा।
दास्यौ द्वे मही(हि)षौ च द्वौ दाण्या राज्ञानुवत्सरम्।।94
प्रासाददीनि हैमानि शते पञ्चाशता त्रिभिः।
अयुतन्तु करङ्कादिभोगा अष्टसहस्रकाः।।95
शतं षष्टिस्तथा तेषां करणं काञ्चनं पुनः।
तुला द्वादश भारास्तु त्रिशतं सत्रिकट्टिकम्।।96
चतुर्दश पणा एकपादो माषौ सविम्बकौ।
रजतन्तु शतं भारास् सप्तत्रिंशद् द्विकट्टिके।।97

वज्रवैदूर्यरक्ताश्च मुखान्यष्टशतानि च।
पञ्चत्रिंशत् सहस्राणि सप्तभिस्त्रिंशता सह।।98
नियुतञ्चायुतञ्चापि द्वे सहस्रे च मौक्तिकाः।
ताम्राणां सप्ततिर्भारास्त्रयः कट्टीत्रयन्तुला।।99
अयुतं षट् सहस्राणि कंसानान्दश स......।
भारा द्वे च तुला एका कट्टी दश पणास्तथा।।100
त्रिकट्ट्यास्त्रितुलास् स्वर्णपटलानां शतद्वयम्।
भारा भारा नवशताः पञ्च कट्ट्यस्तुले नपु।।101
चत्वारों विंशतिस् सीसं भारा नवशतास्त(था)।
चतुस्तुलास्त्रिकट्ट्यो यष् षष्टिर्भाराश्चतुश्शताः।।102
पिण्डीकृतास्तु बलभि प्रासादा द्वौ शतन्तथा।
शिलागृहाणां खण्डास्तु पञ्चाशीतिश्चतुश्शताः।।103
सहस्रे द्व शते चाष्टात्रिंशत् स्थानेषु पञ्चसु।
व्याम(स् समन्त) तो व प्राश् शर्कररौघशिलामयाः।।104
....................व्यामास् सहस्रे पञ्चसप्ततिः।
...........नि..।।105
शर्कररौघशिलाबद्धतराण्येतानि सर्व्वतः।
....।।106
कुट्यश् शतानि चत्वारि नवत्रिंशच्च पिण्डिताः।
....।।107
एकश्चाध्यापकः पञ्चदशोपाध्यापका अपि।
....।।108
धर्म्मधारितपश्शीलधर्म्मभाणक योगिनः।
केश...।।109
सर्व्वे ते त्रिशतास्त्रिंशदष्टौ शैवा पुनश्......।
नवत्रिंशच्च...।।110
गृहीतास्थिदानास्ते सर्व्वे पिण्डीकृताः पुनः।
सहस्रन्...।।111
श्रीवीरशक्ति सुगतं राजा स उदमीलयत्।

....अतिष्ठिपत्।।112

स्थापयामास सुगतं स श्रीराजपतीश्वरम्।

जयमङ्ग(लार्थचू)ड़ामणिञ्च सिकटाह्वये।।113

श्रीजयन्तपुरे विन्ध्यपर्व्वते च मर्खलपुरे।

रत्नत्रयं स्थापितवानेकैकस्मिन् स भूपतिः।।114

श्रीजयराजधानी श्रीजयन्तनगरी तथा।

जयसिंहवती च श्रीजयवीरवती पुनः।।115

लवोदयपुरं स्वर्णपुरं शम्बूकपट्टनम्।

जयराजपुरी च श्रीजयसिंहपुरी तथा।।116

श्रीजयवज्रपुरी श्रीजयस्तम्भपुरी पुनः।

श्रीजयराजगिरिश् श्रीजयवीरपुरी तथा।।117

श्रीजयवज्रवती श्री जयकीर्त्तिपुरी तथा।

श्री जयक्षेमपुरी श्री विजयादिपुरी पुनः।।118

ग्रामश् श्री जयसिंहाद्यो मध्यम ग्राम कस्तथा।

ग्रामश्च समरेन्द्राद्यो या श्री जयपुरी तथा।।119

विहारोत्तरकश्चापि पूर्व्वावासस्तथैव च।

त्रयोविंशति देवेषेष्वेकैकस्मिन्नतिष्ठिपत्।।120

जयबुद्ध महानाथं श्रीमन्तं सोऽवनीपतिः।

यशोधरतटाकस्य तीरे यागाः पुनर्दश।।121

यशोधरपुराद् यावच्चम्पानगरमध्वसु।

उपकार्या हुतभुजस् सप्तपञ्चाशदालयाः।।122

पुराद विमायपुरं यावद् वह्नेस् सप्तदशालयाः।

पुराज्जयवतीं तस्या जयसिंहवतीं ततः।।123

जयवीरवतीं तस्या जयराजगिरिं पुनः।

जयराजगिरेर्यावच्छ्रीसुवीर पुरीं तथा।।124

तस्या यशोधरपुरं यावद् वह्निगृहाणि च।

चत्वारिंशच्च चत्वारि चैकं श्रीसूर्यपर्व्वते।।125

एकं श्रीविजयादित्यपुरे कल्याणसिद्धिके।

एकञ्च पिण्डितान्येक विंशत्युत्तरकं शतम्।।126

रैरूप्यकंसाश्ममया देवास् सयमकालका:।
पिण्डितास्ते प्रतिक्षेत्रमयुते द्वे चतुश्शता:॥127
पिण्डितान्यत्र देवानां पूजाङ्गान्यनुवत्सरम्।
सार्द्धमध्यापकाध्येतृवासिनां परिकल्पितै:॥128
व्रीहीणान्नियुतञ्चाष्टावयुतानि च खारिका:।
तथा त्रीणि सहस्राणि नवत्या चाधिकंशतम्॥129
चतुस्सहस्रका: पञ्चशतास्तण्डुल खारिका:।
त्रयस्त्रिंशत्तथा भाद्रपदमाघाय (य?)णादिषु॥130
द्विसहस्रा नवशता: खार्यस्तिस्रश्च विंशति:।
(मु)द्रास्त्रिभिश् शतैरष्टासप्तत्योनासततस्तिला:॥131
सहस्रं धृतधद्यस्तु षट्छताष् षष्टिरेव च।
चतस्रश्च तथा प्रस्था दश द्विकुदुवाधिका:॥132
सहस्रन्तु दधिक्षीरे घट्यस् सप्त शतानि च।
षट्षष्टिश्च समे प्रस्थाश्रयो मधुगुड़ौपुन:॥133
सहस्रं षट् छता घट्यस्नयोनवतिरेव च।
षट्प्रस्थाश्चैकशस्तैलं पुन: पञ्च शतानि च॥134
घट्यश्चतुर्दश प्रस्थौ स्नेहन्तरुपूलस्य तु।
घट्यश् शते द्वे षट्त्रिंशत् सार्द्धं प्रस्थ चतुष्टयम्॥135
श्रीवासो विंशतिर्भारास्तुला: पञ्च द्विकदिके।
पणाश्च दश कृष्णापि तत्तुल्या चन्दनस्य तु॥136
एको भारस्तुला कट्टो चाष्टादश पणा अपि।
कर्पूरस्तु तुला कट्टी सार्द्धा पञ्च पणास्तथा॥137
चतुस्तुला तरुष्कस्य चतुर्दश च कट्टिका:।
त्रिपणाश्चापि सिक्थस्य भारास्तु त्रिसहस्रका:॥138
द्वे शते च तथा तिस्र: कट्योदश पणा अपि।
अयुतानि पुनस् सप्त देववस्त्रादिवाससाम्॥139
द्वे सहस्रे तथा पञ्चविंशतिश् शतपञ्चकम्।
शय्याधास्तु सहस्रं षट्छताष् षट्षष्टिरेव च॥140
राज्ञा दत्तास् स्वयन्दत्ता ग्रामवद्भिश्च भक्तिन:।

ग्रामा अष्टौ सहस्राणि शतं षट्सप्ततिस्तथा।।141
स्त्रीपुंसा नियुते चाष्टौ सहस्राणि शतानि च।
पञ्च द्वात्रिंशदधिकान्यत्र देवमुनिष्यका:।।142
तेष्वध्यक्षा नवशता विंशतिः पुरुषास्त्रय:।
कारिणष् षट् सहस्रास्तु पञ्चषष्टिश्चतुश् शता:।।143
चतुस् सहस्रास्त्रिशतास्त्रियो द्वात्रिंशवेव च।
सहस्रन्तासु नर्त्तक्यष् (?) षट् छता विंशतिर्द्वयी।।144
प्रासादादिकरङ्कादिकरणञ्चात्र काञ्चनम्।
शतन्त्रिंशत्तथाष्टौ च भारा द्वादश कट्टिका:।।145
रजतन्तु शतं भारा एकविंशतिरेव च।
कट्टिका दश च द्वे च सार्द्धन्दशपणैरपि।।146
ताम्रस्य त्रिशता भारास्त्रयोविंशतिरेव च।
तुलैका कट्टिकैका च पणैः पञ्चभिरन्विता।।147
भारा: पञ्चसहस्राणि कंसस्य त्रिशतानि च।
षष्टिश्च द्वे तुले कट्टयौ सुवर्णपटलसय तु।।148
शते भारास्तुला कट्टी सार्द्ध षोड़शभिः पणैः।
भाराश्चतुर्दश तुले चतस्रः कट्टिकास्त्रपु।।149
सीसं सहस्रन्द्विशता भारा: पञ्च तुला अपि।
भारास् सहस्रे लोहं षट् कट्टय स् सप्त तुलास्तथा।।150
नवायुतानि सप्तापि सहस्राणि शतत्रयम्।
रत्नानि पद्मरागादीन्यष्टाविंशति रेव च।।151
मुक्ताफलानि नियुतमेकं षड़युतानि च।
सहस्राणि नव द्वे च शते द्वाविंशतिस्तथा।।152
शतानि पञ्च वलभिप्रासादास्तु चतुर्दश।
द्वे सहस्रे शिलावेश्मखण्डाष् षट्षष्टि रेव च।।153
अयुतं षट् सहस्राणि व्यामाश् शतचतुष्टयम्।
प्राकारा नवतिश्चापि शर्करौधशिलामया:।।154
अयुते द्वे सहस्राणि चत्वारि च शतानि षट्।
व्यामा विंशतिरष्टौ च दीर्घिकाणां समन्तत:।।155

व्यामा जयतटाकादितटाकानान्तवायुताः।
त्रिसहस्राः पञ्चशतास्तथा सप्त समन्ततः॥156
कुट्यस् सार्द्ध सहस्रन्द्वादश चाध्येतृवासिनः।
दिसहस्रा नवशता नवाशीतिश्च पिण्डिताः॥157
अत्राध्येष्या इमे देवाः फाल्गुणे(ने) प्रतिवत्सरम्।
प्राच्यो मुनीन्द्रश् श्री जयराज चूड़ामणिस्तथा॥158
जयबुद्ध महानाथाः पञ्चविंशति देशकाः।
श्रीवीरशक्तिसुगतो विमाय सुगतोऽपि च॥159
भद्रेश्वर चाम्पेश्वर पृथुशैलेश्वरादयः।
शतद्वाविंशतिश्चैते पिण्डिताः परिवारिकैः॥160
तदा ग्राह्याणि पूजाङ्गान्येतानि नृपतेर्निधेः।
चतुष्पलाधिके स्वर्णन्द्वे कट्टयौ रजतं पुनः॥161
कट्टयश्चतुर्दश श्वेतत्रपुणस्तु चतुस्तुलाः।
चतुश् शतानि पञ्चाशद्देववस्त्रादिवाससाम्॥162
नवयुग्मानि पाक्यास्तु शतन्तण्डलुखारिकाः।
शतं गन्ध समुद्राश्च चत्वारिंशत्रयोऽपि च॥163
घृतं मधु गुड़श्चैका घटी प्रस्था दशैकशः।
एका तुला तथा पञ्च मधूच्छिष्टस्य कट्टिकाः॥164
एकैकशः पुनः पञ्च तुलाश् श्रीवास कृष्णयोः।
घटिकैका दधिक्षीरे दश प्रस्थास्तथैकशः॥165
द्विजाश् श्रीसूर्यभट्टाद्या जवेन्द्रो यवनेश्वरः।
चाम्पेन्द्रौ च प्रतिदिनं भक्त्या स्नानाम्बुधारिणः॥166
एकङ्काष्ठकटं वितीर्य मृगयुर्बुद्धेऽजितेन्द्रोऽन्वभूद्
ऐश्वर्यन्दिवि भैरवासुर इति ख्यातो नृपे का कथा।
तस्मिन् स्वर्णमणिद्विपेन्द्ररदन प्रासाद भद्रासनं
संबुद्धादिसुरद्विजादियतिषु प्राज्यन्दिशत्यादरैः॥167
सुरुचि विरचिताया भूमहिष्यास् समस्त-
प्रकृतसुकृतकेशश्रीजयश्रीकवर्याम्।
उपलकन कमालारञ्जितायां श्रियाढ्यं

व्यधित जयतटाकादर्शमेषोऽवनीन्द्रः॥168

अम्भोज रागाञ्जितशात कुम्भ-
प्रासाद भासारुणिताम्बु राशिः।
विभ्राजते भार्गवभावितस्य
रक्तहृदस्या कृतिमुद्वहन् यः॥169

यस्यान्तरे तीर्थजलैकराशि-
खाताभिरामां पुलिनं परार्द्धयम्।
संस्पर्शिना क्षालितपापपङ्कं
वहित्रभूतन्तरणं भवाब्धेः॥170

कृत्वा प्रकृष्ट सुकृतान्यमितान्यजस्र-
मर्थाय सोऽवनिपतिर्न्निखिला सुभाजाम्।
कुर्व्वंस्त्विमानी कुशलानि पितृप्रकृष्ट
भक्त्या विशेषत इति प्रणिधिं बभाषे॥171

पुण्यैरमींभिरुभयावरणान्धकारान्
प्रज्ञार्करश्मि विसरैर्व्विनिहत्य सद्यः।
बोधिं परानधिगतां भजतां भवाब्धे
रुत्तारणाय जगताज्जनको मदीयः॥172

बुद्धागमैश्चिरतया च परस्य भग्नान्
धर्म्मस्थितिं सुगतिसेतुमिनीद माह।
रक्षिष्यतस् स्थितिमनागत भूमिपाला
नग्रे सरोऽवनिपतिस् स्थितिरक्षिणां सः॥173

प्राणात् प्रियेष्वपि चिराय मृतेषु पुत्र-
दारेषु सत्सु च परेषु नृणाम खेदः।
पित्रोस्तु कालगतयोरति दीर्घकाल-
मेवास तोरपरयोरतिमात्रमाधिः॥174

तत्तौ स्मरन्नुपकृतिञ्च तयोरमूल्यां
कुर्याभिमानि सुकृतान्यतिमात्रभक्त्या।
एतानि रक्षितुमलं क्षितिपाः कृतज्ञा
धर्म्मस्य कर्त्तुरधिकानि फलानि लब्धुम्॥175

भूपाश्च पालनविधिं विदधत्यवश्य-
मभ्यर्थनामपि विना विधिना नियुक्ताः।
तद्‌भूधरा विदितवानपि मत्प्रतिष्ठा-
रक्षात्सुकान् स्वयमतृप्ततयार्थये वः।।176
अत्र स्त्रीपुरुषास् सचाम्पयवनास् सार्द्ध पुकांर्व्वञ्जनै-
र्रक्ष्यन्तान्त्रिशता इह त्रिनियुतास्ते षट् सहस्रा अपि।
षष्टिर्द्वादश चायुतन्तु गणितास् सार्द्ध सहस्रत्रयं
ग्रामाः किञ्च न देवकार्य्यकरणं काष्ठोपलाद्यक्षतम्।।177
एतेष्वत्र च देवयज्ञगणिता एकैकवर्षे दृढ़ं
खार्यस् सन्तु शतञ्चतुर्नियुतिकाष् षड्विंशतिस्तण्डुलाः।
याश्चार्द्धाकरभूमयोऽत्र निहितास्तत्रानियोज्या इमे
न्याय्यार्धादधिक प्रदानवचसो ये देवपूजाच्छिदः।।178
अग्रया श्रीजयवर्म्मदेवनृपते राजेन्द्रदेवी सती
श्रेष्ठं यं समजीजनच्छु तवताम्ग्रेसरं योधिनाम्।
कात्यानङ्गजितङ्कला सुकृतिनां बन्धं वरन्धर्म्मि णां
स श्रीवीर कुमार विब्रु(श्रुर)त इदं शस्तं प्रशस्तं व्यधात्।।179

अर्थ- VV 1-14 are identical with those of No. 177 of RCM

धन्य पूज्य एवं उज्ज्वल वंश के दीपक के समान प्रकाश के द्वारा राजपतीन्द्र लक्ष्मी सुशोभित थी, विख्यात सुन्दर एवं श्रेष्ठ चरित्रवान द्वारा जो श्री सुवीरवती प्रतिष्ठा प्राप्त मातृ वाली थी।।15

VV 16-18 are identical with those of No. 177 of RCM

ब्रह्माण्ड की कान्ति को बढ़ा करके अमृत से अभिषिक्त आधार धाम पर जिस सुन्दर लक्षण वाले को विधान करके प्रेम से जैसे अपने कुशल को विधाता द्वारा विधान हुआ निश्चित रूप से धार्मिक गुणों वाले अधिराज के विधान करने की इच्छा वाला था।।19

लक्ष्मी चंचला है यह समझ करके अलंघनीय आत्मा के गुणों से जिसके द्वारा नीति के अवरोध में पृथ्वी बाँधी गयी थी। दिशाओं में चलने वाली कीर्ति रूपी सखी को विभूषित करके शत्रु क्षत्रियों के वंश को

दिशाओं के अन्त में ले जाया गया था।।20

जो साधन करे पर कार्य को वह साधु है जिसे प्रिय है या साधु का प्रिय सद्गुण वृद्धि नाम वाला प्रयत्नशील संस्कृत=संस्कार किये हुए वर्णों की रीति वला संस्कृत वर्णों की रीतियों का ज्ञाता दुष्ट हृदय वालों को मार गिराने वाला (मारता हुआ) ईश्वर से प्रणम्य जो विशेष रूप से प्रसिद्ध कुमारावस्था से पाणिनि था।।21

भक्ति से स्वयं जिसने धर्मराज को तेरह हजार ग्राम दान करके दिये थे और प्रेरित करने पर पाँच सौ ग्राम दान में दिये थे यह तो कृष्ण के द्वारा दिये गये थे किन्तु धृतराष्ट्र के पुत्रों (दुर्योधन आदि) ने तो पाँच ग्राम भी नहीं दिये थे।।22

शत्रुओं के बल सैन्यों के समूह रूप समुद्र में बड़वानल के समान जाज्वल्यमान रहने वाला और शस्त्र रूप वन में दावानल वनाग्नि के समान सबको भस्मसात् कर देने वाला विनयी शत्रु राजा रूप कमलियों में चन्द्र के समान आह्लादित करने वाला नारायण के अस्त्र=चक्र की द्युति=कान्ति ही सा तेजपुंज था।।23

शत्रुओं द्वारा जिसके आकार विशेष को देखकर दुर्धर्ष हथियार धारण करने युद्ध में जानकर आँखें मूँद लेते थे बाहुरूप सर्पों से अस्त्र गिर पड़ते हैं विगत बहुत कालों से इस समय प्रस्थापना रूप अस्त्र स्थित ही है यह माना जाता है।।24

युद्ध में आश्चर्य डालने वाले जिसके द्वारा राजा लोग नील तलवार वाले लाल अस्त्र सुवर्ण के समान गौरवर्ण के सामने तिरछे होकर इन्द्रधनुष से किये पाप के भय से मानो देखकर अस्त्र छोड़कर प्रणाम कर लेते थे।।25

धन अस्त्रों की वर्षा से उग्र धाम के ढँक जाने पर (ऊँची इमारत के तेज के ढक जाने पर) अगम्य युद्ध रूप सरोवर के प्रदोषित अन्धकारपूर्ण (सन्ध्याकालीन दृश्य) होने पर भृङ्गी (भ्रमरी) के समान लक्ष्मी विकासशील धाम वाले कमल में जिसकी लक्ष्मी चारों ओर भ्रमण करती थी।।26

ऊँचे राजसदन पर विलासित शत्रु राजाओं के राजा की राजधानी

में वीरों से हीन युद्ध में शत्रुओं के वन को मृगों में शंका करता हूँ आदेश दिया था अपने वन में वास करने वालों में जो अपने वनाग्नि को युद्ध से आहरण किये हुओं में समानता को प्रसिद्ध करता हुआ दानी के गुण वदान्य गुण से युक्त उदार था।।27

जो सत्कार किये हुओं में विभवों से आदेश दिया करता था अपनी पुत्रियों को बुद्धिमान सुन्दर नीति का घर शोभा से लोभ के योग्य (पुत्रियों को) शिशुपाल अग्नि में उसके आधे अंश को लेकर गाधि भी बहुत घोड़ों को ऋचीक में।।28

और राम जो देव मानव कार्य कर चुके थे, माता-पिता के लिए तत्पर हृदय वाले थे, परशुराम को जीतने वाले पूर्व पत्थर से समुद्र को वानरों द्वारा बाँधा था, दूसरे सुवर्ण से मानवों द्वारा संसार रूप समुद्र से तरने के लिए थे।।29

दोनों नाट्य के ईश्वर स्वर्ण ही स्वर्ण आगे जिसके द्वारा अर्पित किये गये सोने के साँप के, उसी क्षण विशेष रूप से मुक्त हुए दोनों राम साँप के बन्धन से विशेष रूप से हत हुए इन्द्रपात में।।30

माता-पिता में झट प्रशस्त स्तुति को प्राप्त हुए स्वर्ग से उतरे निश्चित ही राम और भीष्म स्वयम्भू के लिए जो चार भुजाओं से आढ्य में हमेशा पूजित लोकनाथ में मानो किसके समान?।।31

जहाँ शत्रु के रुधिर धाम में जयलक्ष्मी को जिसने युद्ध में हरा था वहाँ उस नाम की पुरी को बनाया सुवर्ण कमल, पत्थर से विशेष रंगी हुई भूमि के भागों वाली (पुरी) अभी भी लाल रूप वाली मानो रुधिर से रंगी सी जो विशेष रूप से शोभती है।।32

दो तीर्थों के सामीप्य से सत्कार करके विश्व के विशेष शुद्धि के लिए प्रयाग साध्य है। क्या कहा जाय? बुद्ध, पार्वती और विष्णु के तीर्थ से उत्तम नगरी जयलक्ष्मी (जयश्री) है।।33

उस श्री जयवर्मन राजा ने श्री जयवर्म्मेश्वर नामक लोकेश महादेव को स्थापित कर 1114 शाके में यहाँ पर माता एवं पिता की मूर्ति की आँखें खोली थीं।।34

आर्यावलोकितेश=आर्यो द्वारा अवलोकित ईश के बीच सब ओर

से दो सौ तिरासी देवों की प्रतिष्ठा उसके द्वारा की गयी थी।।35

उस राजा के द्वारा पूर्व दिशा में श्री त्रिभुवन वर्मेश्वर जिनके अग्रेसर थे तीन देव प्रतिष्ठित किये गये थे।।36

दक्षिण दिशा में श्री यशोवर्मेश्वर आदि बत्तीस देवों की प्रतिष्ठा उससे की गयी थी।।37

पश्चिम से श्री चाम्पेश्वर बिम्ब आद्य तीस देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी। उत्तर दिशा में शिवपाद आद्य चौंतीस देव प्रतिष्ठित किये गये थे।।38

व्रीहिगृह में एकदेव की प्रतिष्ठा की गयी थी, फिर चङ्क्रमों में दस देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी और उपकार्या में चार देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी। आरोग्यायतन में तीन देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी।।39

चारों दिशाओं में द्वारों पर चौबीस देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी। ये सभी जोड़कर चार सौ तीस देव हुए थे।।40

राज्यश्री पुलिन में चौदह हजार उसने दो चुटियों में, योगीन्द्र विहार में एक-एक करके सोलह देव प्रतिष्ठित किये थे।।41

गौर श्री गजरत्न के चैत्य देवालय में और बलमियों में, जयतड़ाग के तीर पर बाईस देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी।।42

विश्वकर्मा नामक आय स्थान गृह में एक देव की प्रतिष्ठा की गयी थी। सभी जोड़कर कुल पाँच सौ पन्द्रह देवों की प्रतिष्ठा की गयी थी।।43

लोकेश्वरादि देवों के पूजन के अंग दिन-दिन आधा द्रोण चावल और पचहत्तर खारी पकाने योग्य चावल दिये जाते थे।।44

एक खारी पाँच प्रस्थ दो कुदुव तिल भी दो द्रोण चार प्रस्थ दो कुदुव मुद्रा दी जाती थी।।45

एक घड़ा घी तथा तेरह प्रस्थ घी, दही चौदह प्रस्थ घैला दो कुदुव।।46

दूध, उनतीस प्रस्थ और दो कुदुव, मधु इक्कीस प्रस्थ, गुड़ उन्नीस प्रस्थ दिये जाते थे।।47

पेड़ के फल के तैल छः प्रस्थ और तीन कुदुव स्नान के

उपकरणों के साथ स्नेह=तैल दो प्रस्थ और दो कुदुव दिये जाते थे।।48

यहाँ पूजा के उपकरण फल और शाक जिनके मुख्य थे वे अति प्रसिद्ध होने से नहीं कहे गये हैं यथोचित रूप से विशेषतया जानने योग्य हैं।।49

देवों के योग्य वस्त्र उजले, लाल, कम्बल, साड़ियाँ, शय्या, आसन आदि से पैंतालिस सौ छः दिये जाते थे।।50

लोकेश आदि के चरणों के विन्यास के लिए मशकहरी के लिए पसारने वाली जो रेशमी वस्त्र के बने हुए कपड़े थे वे छप्पन दिये जाते थे।।51

फिर सत्र के हिसाब से अध्यापकों और छात्रों को चावल प्रतिदिन दो द्रोण बाइस खारी चौदह प्रस्थ दिये जाते थे।।52

एक-एक दिन में देवों की पूजा के अंगों के द्वारा इन चावलों से ये छः प्रस्थ सन्तानवे खारियाँ और तीन द्रोण दिये जाते थे।।53

दोनों पक्षों में चतुर्दशी, पञ्चदशी, पञ्चमी, द्वादशी और अष्टमी में तथा संक्रान्ति के अट्ठारह उत्सवों के साथ।।54

पाँच हजार तीन सौ अट्ठासी खारियाँ वर्ष में दस प्रस्थ विशिष्ट पकाने योग्य चावल दिये जाते थे।।55

चौहत्तर खारी, तीन द्रोण, दो कुदुव तिल और मुद्राएँ तेरह प्रस्थ तीन द्रोण और उनसे भी अधिक दिये जाते थे।।56

नौ प्रस्थ अधिक पचहत्तर घैले घी, दही, अड़सठ घैले एक अढ़ैया दो कुदुव।।57

सात प्रस्थ, दो कुदुव उन्यासी घैले दूध, फिर मधु एक प्रस्थ पचहत्तर घैले।।58

चार प्रस्थ, दो कुदुव साठ घैले गुड़, तिरपन घैले दस प्रस्थ तैल दिये जाते थे।।59

पेड़ों के फलों के स्नान के उपकरण के समर्थ तैल चार प्रस्थ, तेरह घैले मात्र दिये जाते थे।।60

कुल फिर एक वर्ष में देव पूजा के अंग जोड़कर इकट्ठा करने के लिए दो गुने करके ग्राम के आधे खान से उत्पन्न वस्तुएँ पूजा के लिए

दी जाती थीं।।61

दस लाख खारी व्रीहि=गम्हड़ी, चालीस हजार खारी छः हजार आठ सौ इक्यानवे खारी व्रीहि=गम्हड़ी दी जाती थी।।62

........सात हजार आठ सौ अड़तालीस खारी चावल श्राद्ध भाग प्राप्ति कर्ताओं में।।63

चार सौ तैंतीस खारी तिल इनसे दस खारी कम द्रोण से मुद्रा जोड़ करके जो हुई।।64

पाँच सौ उनतालिस घैला एवं साढ़े सात प्रस्थ घी, सात सौ घैला दही दिये जाते थे।।65

सत्तासी घैला, दस प्रस्थ दूध, छः सौ उनतालिस और छः प्रस्थ दूध छः सौ तिरानवे घैला मधु का देना आवश्यक था।।66

चार सौ पैंतालिस घैला मधु, पाँच प्रस्थ उससे तीन घैला कम गुड़ दिये जाते थे।।67

तीन प्रस्थ तीन सौ पन्द्रह घैला तेल, आठ प्रस्थ पेड़ के फल का तैल नब्बे सौ घैला तैल।।68

बाईस हजार छः सौ अस्सी दो-दो जोड़े कपड़े देवों के वस्त्र आदि दिये जाते थे।।69

तरुष्क का एक तराजू और बेरानवे पण पैसे श्रीबास=बेल का फल, पत्ता का एक भार दो तुला दस कट्टिक।।70

कृष्ण= एक प्रकार के चन्दन की लकड़ी का एक भार तीन तुला= तोले तेरह कट्टिका सौ भार दो तुलाएँ सिक्थ=भात, पकाया चावल, मोम साढ़े ग्यारह कट्टिका।।71

बकरे चार सौ तेईस, कबूतर, मयूर, हारियल- एक प्रकार का कबूतर उड़द के साथ तीन सौ साठ दिये जाते थे।।72

पाँच हजार तीन सौ चौबीस ग्राम राजा से तथा ग्रामीणों से भक्ति से दिये गये।।73

सनतानवे हजार अड़तालीस सौ स्त्री पुरुष वहाँ जोड़ करके सब दिये गये थे।।74

उनके प्रमुख पुरुष चार सौ चौवालीस थे, रसोइया आदि छः सौ

थे।।75

चार हजार पुरुष छः परिचारिकाएँ, दो हजार दो सौ अनठानवे नाटिकाएँ (अभिनेत्रियाँ)।।76

उनमें पैंतालीस हजार चार सौ छत्तीस देवों की पूजा आदि से उत्तरदायी थे।।77

प्रतिवर्ष चावल एक हजार तीन सौ अट्ठाइस खारी, दो द्रोण राजा के भाण्डागार से ग्रहण करने योग्य थे।।78

मुद्राएँ संतावन खारी तीन द्रोण, तिल चार प्रस्थ तीन द्रोण उनतीस खारी।।79

घी तेईस घैला छः प्रस्थ, दही तीस घैला नौ प्रस्थ दो कुदुव।।80

दूध इकतीस घैला छः प्रस्थ, मधु छः प्रस्थ, दो कुदुव तीन सौ छियासी घैला।।81

गुड़ सोलह घैला छः प्रस्थ, दो कुदुव, तिल तैल चार प्रस्थ छः घैला ।।82

तीन हजार सात सौ बारह देवों के वस्त्र आदि जोड़े-जोड़े, शय्या वस्त्र तेरह सौ।।83

मशकहरी के लिए रेशम के वस्त्र तीन सौ तीन, बीस तकिये, फिर दो के लिए बीस।।84

रेशम के वस्त्र की शय्या तीन, तृण की शय्या बीस, फिर काली मिर्च एक प्रस्थ तेरह खारी।।85

दो भार दो तुला साढ़े ग्यारह कट्टिका सिक्थ=पकाया चावल, लवण (नमक) चार खारी, द्रोण.......।।86

फिर चन्दन का भार एक पज्य............। श्रीबास (बेल) एक भार तीन तुला......।।87

कृष्ण= एक प्रकार के चन्दन की लकड़ी एक भार छः तुला...... कर्प्पूर साढ़े तीन कट्टिका, भा(षे)......।।88

छः कट्टिका, दस पण-पैसे........तीन कट्टिका रेशम का सूत।।89

सोने की अंगूठी, गाय को दी जाने वाली भिक्षा दो माशे तीन पैरों

वाली बारह।।90

यहाँ मुद्रा सहित कलश..........यम्, आठ पण तीन पाद, मास् आठ बिम्बक सहित।।91

तुला, ताँबा............कट्टिका, पाँच पण, दो तुला.........पाँच कट्टिका............।।92

पाँच सौ बीस चीनी मुद्राएँ, काली गाय के सींग और खुर सोने से मढ़कर ऊपर से कपड़ा ओढ़ाकर उसका दान दिया।।93

चारों वर्ण के घोड़े, चारों वर्ण के हाथी, दो दासियाँ, दो भैंसे दो देने योग्य राजा से प्रतिवर्ष दिये गये।।94

सोने के देव मन्दिरों के समूह दो सौ तिरपन, अट्ठारह हजार करङ्क आदि भोग दिये गये।।95

फिर उनके एक सौ साठ पुनः सोने का किया गया, सोने का भार नीचे लिखा है, एक तुला बारह भार तीन सौ तीन कट्टिका सहित।।96

चौदह पण, एक पाद, दो माशे (माष) दो बिम्ब सहित सोने के भार, चाँदी तो एक सौ तिहत्तर दो कट्टिक मात्रा में भार दिये गये।।97

वज्र, वैदूर्म्य और रक्त ये मणियाँ जो मुख्य हैं आठ सौ पैंतीस हजार सैंतीस के साथ।।98

मौक्तिक एक लाख बारह हजार दिये गये, ताँबे के सत्तर भार तीन कट्टी, तीन तुला।।99

कासे सोलह हजार दस...........भार दो तुला, एक कट्टी, दस पण...........।।100

सोने की छातों के दो सौ तीन तुला, तीन कट्टी भार दिये गये। रांगे के नौ सौ भार, पाँच कट्टी, दो तुला।।101

शीशे के नौ सौ चौबीस भार चार तुला, तीन कट्टी चार सौ साठ भार।।102

जोड़ने पर देव मन्दिर दो सौ तथा पत्थर की शिला के मन्दिरों के खण्ड चार सौ पचासी।।103

दो हजार दो सौ अड़तीस पाँच स्थानों में व्याम समन्त वप्राश् शर्करौघशिला के।।104

...........व्यामास् पचहत्तर हजार............ .... नि...........
।।105

शर्करौघशिला से बँधे ये सब ओर से।......................................
।।106

जोड़कर चार सौ उनचालीस कुटियाँ......... ....
..।।107

एक अध्यापक और पन्द्रह उप अध्यापक भी..........................
।।108

धर्म के धारण करने वाले, तप रूप शील वाले, धर्म के बोलने वाले योगी लोग केश।।109

वे सभी तीन सौ अड़तीस शिवभक्त फिर..........और उनचालीस.
...........।।110

जोड़े हुए सभी स्थिति और दान ग्रहण कर चुकने वाले फिर.......
....हजार.........।।111

श्रीवीर शक्ति सुगत-बुद्ध को उस राजा ने आँखें खुलवाई थीं।।112

उसने श्रीराजपतीश्वर बुद्ध की स्थापना की थी और जयमङ्गलार्थ चूड़ामणि की सिकटा नामक स्थान पर स्थापना की थी।।113

श्रीजयन्तपुर में एवं विन्ध्य पर्वत पर और मर्खलपुर में एक-एक स्थान पर तीन रत्न उस राजा ने स्थापित किये थे।।114

श्रीजयराजधानी, श्रीजयन्त नगरी जयसिंहवती और फिर श्रीजयवीरवती।।115

लवोदयपुरी, स्वर्णपुर, शम्बूकपट्टन नगर, जयराजपुरी और श्रीजयसिंहपुरी।।116

श्रीजयवज्रपुरी, श्रीजयस्तम्भपुरी, श्रीजयराजगिरि और फिर श्रीजयवीरपुरी।।117

श्रीजयवज्रवती तथा श्रीजयकीर्तिपुरी श्री जयक्षेमपुरी तथा श्रीविजयादिपुरी।।118

श्रीजयसिंहाद्यग्राम तथा मध्यमग्रामक, समरेन्द्राद्यग्राम तथा जो

श्रीजयपुरी।।119

और भी विहारोत्तरक तथा पूर्व आवास इन तेईस देवों में एक-एक में स्थापना की थी।।120

उस राजा ने श्रीमान् जयबुद्ध महानाथ को यशोधर तड़ाग के तीर पर फिर दश यज्ञ किये थे।।121

यशोधरपुर से लेकर चम्पा नगर तक राहों में अग्नि के सत्तावन उपकारयोग्य भवन बनाये थे।।122

पुर से विमायपुर तक अग्नि के सत्रह भवन बनाये थे। तब उस पुर से जयवती को और जयसिंहवती को बनाया।।123

उसी से जयवीरवती को फिर जयराजगिरि को तथा जयराजगिरि से श्रीसुवीरपुरी तक।।124

और उससे यशोधारपुर तक अग्नि के लिए चौवालीस भवन बनाये थे तथा एक भवन श्रीसूर्यपर्वत पर बनाया गया था।।125

एक भवन श्री विजयादित्यपुर में, कल्याण सिद्धिक में एक भवन सभी मिलाकर एक सौ इक्कीस भवन निर्माण किये गये थे।।126

धन, रुपये, पत्थर के बने देव, यम और काल के साथ सभी मिलाकर वे प्रति क्षेत्र में बीस हजार चार सौ हुए थे।।127

यहाँ सभी मिलाकर देवों की पूजा के अंग वर्ष पीछे (प्रतिवर्ष) अध्यापक और पढ़ने वाले, बसने वाले परिकल्पितों के द्वारा।।128

सौ लाख अस्सी हजार खारी गम्हड़ी तथा तीन हजार एक सौ नब्बे खारी अधिक अन्न (व्रीहि) गम्हड़ी दी जाती थी।।129

चार हजार पाँच सौ खारी चावल तथा भादो, माघ अयनादियों में दिये जाते थे।।130

दो हजार नौ सौ तेईस खारी मुद्रा तीन सौ अठहत्तर खारी तिल दिये जाते थे।।131

एक हजार छ: सौ आठ घी के घड़े चार प्रस्थ बारह कुदुव अधिक दिये जाते थे।।132

एक हजार सात सौ छियासठ घड़े दही और दूध बराबर प्रस्थ मधु और गुड़ फिर दिये जाते थे।।133

एक हजार छः सौ तिरानवे घड़े छः प्रस्थ फिर पाँच सौ प्रस्थ तैल दिये जाते थे।।134

चौदह घड़े दो प्रस्थ पेड़ के फल के तैल साथ ही दो सौ छत्तीस घड़े चार प्रस्थ अधिक दिये जाते थे।।135

श्रीवास बीस भार पाँच तुला, दो कट्टिकाएँ और दस पण कृष्णा भी उसके बराबर चन्दन के।।136

कर्पूर एक भार तुला कट्टी, अठारह पण भी, कर्पूर तुला कट्टी आधा सहित पाँच पण।।137

तरुष्क के चार तुला, चौदह कट्टिका तीन पण, सिद्ध चावल तीन हजार भार दिये जाते थे।।138

दो सौ तीन कट्टी दस पण सत्तर हजार देवों के कपड़े दिये जाते थे।।139

दो हजार पाँच सौ पच्चीस और एक हजार छः सौ छियासठ शय्या आदि स्वयं राजा ने दिये थे।।140

स्वयम् राजा के द्वारा दिये गये भक्ति से ग्रामीणों द्वारा भी आठ हजार एक सौ छिहत्तर ग्राम दिये गये थे।।141

बीस लाख आठ हजार पाँच सौ बत्तीस देव भुजिष्यक स्त्री-पुरुष दिये गये थे।।142

उनमें अध्यक्ष नौ सौ तेईस पुरुष थे तथा कार्य करने वाले छः हजार चार सौ पैंसठ थे।।143

चार हजार तीन सौ बत्तीस स्त्रियाँ थीं उनमें नर्तकियाँ एक हजार छः सौ बाईस थीं।।144

देव मन्दिर और राज सदन आदि करङ्क आदि करण यहाँ सुवर्ण एक सौ अड़तीस भार बारह कट्टिक मात्रा में दिये गये थे।।145

चाँदी एक सौ इक्कीस भार बारह कट्टिक दस पणों के साथ भी दिये गये थे।।146

ताँबा तीन सौ तेईस भार एक तुला, एक कट्टिक पाँच पणों से युक्त थे।।147

काँसा पाँच हजार तीन सौ साठ भार, दो तुला, दो कट्टिक सुवर्ण

पटल थे।।148

दो सौ भार एक तुला दो कट्टिका सोलह पणों के साथ, चौदह भार दो तुला चार कट्टिक राँगा।।149

शीशा एक हजार दो सौ भार पाँच तुला भी, लोहा दो हजार भार छः कट्टिका सात तुला।।150

नब्बे लाख सात हजार तीन सौ अट्ठाईस रत्न पद्मराग आदि दिये गये थे।।151

सौ लाख छः युक्त, नौ हजार दो सौ बाईस मुक्ताफल दिये गये थे।।152

पाँच सौ बल चौदह प्रासाद (देव और भूप मन्दिर) दो हजार शिलागृह छियासठ खण्ड।।153

सोलह हजार चार सौ नब्बे मिश्री के टुकड़ों का ढेर।।154

बीस लाख चार हजार चार सौ छः व्याम चारों ओर से दीर्घिकाएँ अट्ठाईस थीं।।155

जय तड़ाग आदि तड़ागों के चारों ओर नब्बे हजार तड़ाग तीन हजार पाँच सौ सात व्याम थे।।156

कुटियों के साथ-साथ ही बारह हजार विद्यार्थी सब मिलाकर दो हजार नौ सौ नवासी थे।।157

प्राचीन मुनिगण, श्रीजयराज चूड़ामणि, महानाथ जयबुद्ध, पच्चीस गुरुओं (राजाओं) को तथा वीरशक्ति बुद्ध को प्रत्येक वर्ष फाल्गुण मास में यहाँ स्थापित करके भद्रेश्वर, चाम्पेश्वर तथा पृथुशैलेश्वरादि एक सौ बाईस देवों को जो परिवार जनों द्वारा पूजित हैं, स्थापित करें।।158-160

तब उसके बाद पूजा की ये सामग्री राजकोष से लें- चार पल से अधिक सोना, सोलह कट्टा चाँदी, सफेद रांगा चार तोला, चार सौ पच्चास देवताओं के परिधान योग्य वस्त्र, एक सौ तैंतालीस सुगन्ध द्रव्य (चन्दनादि), घी, मधु और गुड़ प्रत्येक ग्यारह घटी, ग्यारह प्रस्थ, छः तुला मधुमक्खी के मोम का छत्ता, पाँच तुला सुगन्ध तेल, पाँच तुला अगरु तथा दूध और दही प्रत्येक एक घटिका और दस प्रस्थ लें।।161-165

श्री सूर्यभट्ट आदि ब्राह्मणगण जावा के देवता (गतिमानों के स्वामी) शिवजी, चम्पा में पूजित (अथवा धनुर्धरों से पूजित) शिवजी, इन दोनों देवताओं तथा यवन देश के स्वामी या यवन देश में पूजित शिवजी को प्रति दिन स्नान योग्य चढ़ाने वाले हों (अर्थात् प्रत्येक दिन जल चढ़ावें)।।166

तत्पश्चात् एक काठ का आसन या पीढ़ा बिछाकर भगवान् बुद्ध में ध्यान लगावें- उस बुद्ध में जो इन्द्र से भी अजेयों की परम्परा में सबसे ऊपर हैं। उस बुद्ध की सेवा में देवों, ब्राह्मणों और संन्यासियों को सोना, रत्न, हाथी दाँत की वस्तुएँ, महल, उत्तम आसनादि आदर के साथ दें क्योंकि ऐश्वर्य नाशवान है। ऐश्वर्य के विनाश में भैरवासुर की कथा प्रसिद्ध है फिर राजाओं के धन की क्या कथा?।।167

सारी पृथ्वी रूप रानी के सुरुचिपूर्ण सजे सुवर्ण रत्न के केशाभरणों के बीच विशिष्ट केशाभरण रूप विजयश्री रूपी रत्न को ये राजे जयतटाक (तालाब) रूप आईने में देखा।।168

लाल कमलों के रंग को जीतने वाले सोने के बने महल की आभा जयतटाक जाल में पड. रही थी उससे लाल हुए जल समूह, परशुराम द्वारा निर्मित लोहितकुण्ड का रूप ले रहा था (क्षत्रिय विजय के बाद परशुराम ने जिस कुण्ड में हाथ धोया था वह हाथ के रक्त से लाल हो जाने के कारण लोहितकुण्ड कहलाया था)।।169

जिसके अन्दर तीर्थों के जल का एक राशि, खाई जो सुन्दर किनारों वाले तड़ाग थे। स्पर्श करने वालों के पाप रूप पङ्क को धोने वाले थे, संसार समुद्र के तारक नाव रूप थे।।170

वह राजा उत्कट कोटि के धर्मों को जो अपरिमित थे नित्य करके सभी प्राणियों के लिए इन कुशलकारी धर्मों को करता हुआ पितरों की उत्तम कोटि की भक्ति से विशेषतया यह कहने लगे।।171

इन पुण्यों से दोनों आवरणों के अन्धकारों को बुद्धि रूप सूर्य की किरणों के प्रसारों से तत्क्षण नष्ट कर दूसरों से अज्ञात बोध को भजते हुओं के संसार को उतारने के लिए हमारे पिताजी के धर्म हैं।।172

बौद्ध दर्शन शास्त्रों से चिरकाल तक दूसरों की टूटी हुई धर्म

स्थिति को सुन्दर गति देने वाले पुत्र के समान यह धर्म कार्य है इस प्रकार यह कहा- स्थिति जो धर्म की है उसकी रक्षा करने वाले भावी राजाओं के अग्रेसर राजा धर्म स्थिति के रक्षकों का अग्रगण्य है।।173

प्राणों से भी प्रिय चिरकाल पूर्व दिवंगत हुए पुत्र, स्त्री लोगों के दूसरों के रहने पर भी खेद नहीं है। अति दीर्घकाल पूर्व माता-पिता के काल-कवलित होने पर और लोगों को अतिशय मानसी व्याधि होती है।।174

सो उन दोनों माता-पिता को स्मरण करता हुआ, उन दोनों माँ-बाप के अमूल्य उपकार को याद करता हुआ अति मात्र भक्ति से इन धर्म कार्यों को करूँ- ऐसा कहा था, इनकी रक्षा करने के लिए पर्याप्त समर्थ कृतज्ञ राजा लोग धर्म कार्यों की रक्षा करके धर्म कार्यों के करने वालों से भी अधिक धर्म के फलों को पाने के लिए रक्षा करें।।175

और राजा लोग धर्म पालन की विधि को अवश्य करने वाले हैं, प्रार्थना न करने पर भी ब्रह्म द्वारा रक्षक रूप से नियुक्त होकर रक्षा करेंगे सो राजा लोग जानकर भी मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए उत्कण्ठित राजा लोगों को स्वयम् अतृप्त रूप से मैं प्रार्थनापूर्वक रक्षा का भार सौंपता हूँ।।176

, यहाँ स्त्री-पुरुष चाम्प और यवन सहित पुकांर्व्व जनों के साथ तीन सौ द्वारा रक्षा करें। यहाँ तीस लाख छः हजार साठ सब मिलाकर बारह अयुत= एक सौ बीस हजार हैं साथ ही तीन हजार ग्राम देवकार्य किया गया है और भी काष्ठों से पत्थरों से जो अविनाशी रूप से रहें।।177

और यहाँ न इनमें देव यज्ञ के लिए गिने हुए एक वर्ष में दृढ़ता से चार सौ नियुत (एक नियत का अर्थ दस लाख है, शतम्=सौ, चतुः=चार, नियुत=दस लाख) छब्बीस संख्या में चावल हैं और यहाँ अर्ध के आकार की भूमि हैं जो दी गयी हैं, वहाँ ये न नियुक्त किये जाएँ। न्याय से युक्त अर्ध= मूल्य से अधिक प्रदान के वचन वाले जो देवपूजा के नाशक हैं, उन्हें न नियुक्त किया जाय।।178

श्रीजयवर्मन देव राजा की अग्रमहिषी सती राजेन्द्रादेवी ने जिस श्रेष्ठ को जन्म दिया, जो वेदों और शास्त्रों के सुनने वालों का अग्रेसर है और युद्ध करने वालों का भी अग्रगण्य है, कान्ति से कामदेव को भी जीत

चुका है, कला और धर्मात्माओं का प्रणम्य है, धर्मियों का श्रेष्ठ है वह श्रीवीरकुमार नाम से विशेष प्रसिद्ध है उसने इस प्रशस्त धर्म कार्य को किया था।।179

से फौंग अभिलेख

Say Fong Inscription

मेकाँग नदी के बाएँ किनारे पर वियेंग चन और नोंग खे के मध्य से-फौंग नामक स्थान है। यहाँ एक अभिलेख उत्कीर्ण कराया गया है जो एक बड़े पत्थर के चारों ओर खुदा हुआ है और यह अच्छी स्थिति में है। अभिलेख एक चिकित्सालय की स्थापना का वर्णन करता है तथा इसके नियम का विस्तृत विवरण देता है।

इस अभिलेख के स्थान से यह स्पष्ट होता है कि कम्बुज साम्राज्य की सीमा वियेंग चन तक बढ़ गयी थी। बारहवीं शताब्दी में कम्बुज राजाओं की भौगोलिक सीमाओं को सिद्ध करने के लिए यही वर्णन उपलब्ध है।

निम्नांकित अभिलेख ऐसे हैं जो एक ही मूल लेख प्रस्तुत करते हैं-

1. वट लोई मन्दिर अभिलेख
2. ता के पौंग पत्थर अभिलेख
3. चयफुम मन्दिर अभिलेख

4. नोम वन मन्दिर अभिलेख

5. कुक रोक अभिलेख

6. ता मीन टच अभिलेख

7. खोनबुरी मन्दिर अभिलेख

8. बन किन मन्दिर अभिलेख

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 48 है जो सभी शुद्ध हैं।

ता मीन टच में अतिरिक्त पद्य हैं जिनकी संख्या 39 है लेकिन पद्य संख्या 1 से 19 नष्ट हो चुके हैं। पद्य संख्या 26, सेफौंग के पद्य संख्या 27 के समान है। पद्य संख्या 37 से-फौंग के पद्य संख्या 38 के समान है। बन किन में अतिरिक्त पद्य हैं जिनकी संख्या 28 है, पद्य संख्या 1 से 24 नष्ट हो चुके हैं तथा पद्य संख्या 25 से 28 अंशतः टूट चुके हैं।

मास्पेरो के द्वारा इस अभिलेख का पता लगा। उसने इस बात की पुष्टि की कि कम से कम पाँच स्थानों पर वही अभिलेख पाया गया। बार्थ ने भी इस बात की पुष्टि की है। डॉ. आर.सी. मजूमदार ने भी इसकी पुष्टि की है।[1] इस अभिलेख का सम्पादन एम.एल. फिनौट ने किया है।[2]

नमो बुद्धाय निर्म्माणधर्म्मसम्भोगमूर्त्तये।
भावाभावद्वयातीतो द्वायात्मा यो निरात्मकः।।1
भैषजयगुरुवैदूर्य्य प्रभराजजिन्नमे।
क्षेमारोग्याणि जन्यन्ते येन नामापि श्रृण्वताम्।।2
श्रीसूर्य्यवैरोचनचण्डरोचिः
श्रीचन्द्रवैरोचनरोहिणीशः।
रुजान्धकारापहरौ प्रजानां
मुनीन्द्रमेरोर्जयता मुपान्ते।।3
आसीन्नृपश् श्रीधरणीन्द्रवर्म्म-
देवात्मजश् श्रीजयवर्म्मदेवः।
जातो जयादित्य पुरेश्वरायां
वेदावरैकन्दुभिराप्त राज्यः।।4

---

1. Quoted by R.C. Majumdar in IK, p.460
2. *BEFEO, Vol. III, p.18*

निश्शेष राजत्य शिरोवतंस-
पादाम्बुजस् संथति संहृतारिः।
पर्य्य ग्रहीत् सद्गुणरत्नभूषां
यत्कीर्त्तिहारां वसुधाङ्गनां यः॥5
सदा मुदा वर्द्धितदानवारिस्
सदानवर्द्धि प्रिय संपदाढ्यः।
नष्टचाहवैः क्लिष्ट सुरारिकान्तो
यः कृष्णकल्पोऽप्य वदातवर्णः॥6
योऽभ्यर्थितां भूपतिर्भिदुराणां
लक्ष्मीमुपेक्ष्य स्वयमभ्युपेत्ताम्।
दिक्षु द्रुतां ह्लादयतिस्म कीर्तिम्
अहो विचित्रा रुचिरिन्द्रियाणाम्॥7
यं वीक्ष्य धाम्ना विजिते पि नाथे
बुद्धेव कान्त्या विजितञ्च कामम्।
शुचन्त्यजन्त्यो निजनाम् सार्थ
वन्दीकृतारिप्रमदाः प्रचक्रुः॥8
पुण्यायुषः क्षीणतया युगेऽन्त्ये
क्षयङ्गतायां क्षयवत् प्रजायाम्।
प्रजापतिः प्राग्युगवद्वितेने
योऽभ्युत्थितिं पूर्ण वृषां समृद्धाम्॥9
ऋद्धया स्वर्गीकृतां पृथ्वीं मत्वामरणदूषिताम्।
मर्त्यानाममरत्वाय योऽदिशद् भेषजामृतम्॥10
पुष्यङ्कृती कृतीकृत्य पूर्णाङ्ग योऽकरोद् वृषम्।
राजवैद्याचिकित्साङ्घ्रि भङ्गन् त्रियुगदोषतः॥11
जित्वान्यगोपति वृषं स्वैरन् त्रिभुवनाङ्गने।
जृम्भते निनदन्धीरं वृषो यत्पुष्कलीकृतः॥12
देहिनान्देहरोगो यन्मनोरोगो रुजत्तराम्।
राष्ट्रदुःखं हि भर्तृणान्दुःखं दुःखन्तु नात्मनः॥13
आयुर्व्वेदास्त्रवेदेषु वैधवीरैर्व्विशारदैः।

योऽघातयद् राष्ट्ररुजो रुजारीन् भेषजायुधैः॥14
सर्व्वेषाम पराधान् यस् सर्व्वतः परिशोधयन्।
युगापराधे न रुजामपराधान् व्यशोधयत्॥15
सारोग्यशालं परितो भैषज्य सुगतं व्यधात्।
सार्द्धज्जिनौरसाम्यां यस् सदा शान्त्यै प्रजारुजाम्॥16
स व्यधादिदमारोग्यशालं ससुगतालयम्।
भैषज्य सुगतञ्चेह देहाम्बरहृदिन्दुना॥17
सोऽतिष्ठिपदिमौ चात्र रोगिणां रोगघातिनौ।
श्रीमन्तौ सूर्य्यचन्द्रादिवैरोचन जिनात्मजौ॥18
चिकित्स्या अत्र चत्वारो वर्णा द्वौ भिषजौ तयोः।
पुमानेकः स्त्रियौ च द्वे एकशः स्थितिदायिनः॥19
निधिपालौ पुमांसौ द्वौ भेषजानां विभाजकौ।
ग्राहकौ व्रीहिकाष्ठानान्तद्धायिभ्यः प्रतिष्ठितौ॥20
पाचकौ तु पुमांसौ द्वौ पाकैद्योस्कदायिनौ।
पुष्पदर्भहरौ देववसेवश्च विशोधकौ॥21
द्वौ यज्ञहारिणौ पत्रकारौ पत्रशलाकयोः।
दातारावथ भैषज्य पाकेन्धनहरावुभौ॥22
नराश्चतुर्दशारोग्यशाला संरक्षिणः पुनः।
दातारी भेषजानाञ्च मिश्र द्वाविंशतिस्तुते॥23
तेषामेको नरो नारी चैकशः स्थितिदायिनः।
वारिसन्तापभैषज्य पेषकार्य्यस्तु षट् स्त्रियः॥24
द्वे तु व्रीह्यवद्यातिन्यौ ता अष्टौ पिण्डिताः स्त्रियः।
तासान्तु स्थितिदायिन्यः प्रत्येकं योषितावुभे॥25
पुनः पिण्डीकृतास्ते तु द्वात्रिंशत् परिपारकाः।
भूयोऽष्टानवतिस् सर्व्वे पिण्डितास् स्थितिदैस् सह॥26
तण्डुला देवपूजांशा ऐकोद्रोणा दिने दिने।
शेषा यज्ञाः प्रदातव्या रोगिभ्यः प्रतिवासरम्॥27
प्रतिवर्षन्त्विदं ग्राह्यं त्रिव्कृत्वो भूपतेर्निधेः।
प्रत्येकञ्चैत्रपूर्णम्यां श्राद्धे चाप्युत्तरायणे॥28

रक्तान्जालवसनमेकं धौताम्बराणि षट्।
द्वे गोभिक्षे पञ्चपलं तक्रं कृष्णा च तावती।।29
एकः पञ्चपलः सिक्थदीप एक पलाः पुनः।
चत्वारो मधुनः प्रस्थास्त्रयः प्रस्थास्तिलस्य च।।30
घृतं प्रस्थोऽथ भैषज्यं पिप्पलीरेणुदीप्यकम्।
पुन्नागञ्चैकशः पादद्वयञ्जातीफलत्रयम्।।31
हिङ्गुक्षारं कोत्स्थजीर्णमेकैकञ्चेक पादकम्।
पञ्चाविम्बन्तु कर्पूरं शर्करायाः पलद्वयम्।।32
दङ्दङ्साख्या जलचराः पञ्चाख्याता अथैकशः।
श्रीवासञ्चन्दनन्धान्यं शतपुष्पं पलं स्मृतम्।।33
एलानागर कक्कोल मरियन्तु पलद्वयम्।
प्रत्येकमेकशः प्रस्थौ द्वौ प्रचीबलसर्ध्ष(र्ष)पौ।।34
त्वक्सार्द्धमुष्टिः पथ्यास्तु चत्वारिंशत् प्रकल्पिताः।
दार्वीभिदाद्वयञ्चाथ सार्द्धैकपलमेकशः।।35
कन्दङ्हलाय जनस्यङ् देवदारुच्छव्यं प्रकल्पितम्।
सैकपादैकपलको मित्रदेवः प्रकल्पितः।।36
अथैकशो मधुगुद्दौ कुडुवत्रयमानितौ।
एकः प्रस्थस्तु सौवीरनीरस्य परिकल्पितः।।37
द्वौ याजकौ तद्गणकश्चैकस्ते धर्म्मधरिणः।
त्रयो नियोज्याश् श्रीराजविहाराध्यापकेन च।।38
वर्षे वर्षे त्विदन्तेषु प्रत्येकं परिकल्पितम्।
तिस्नो वृहत्यो द्वादशयुगा दशकराः पटाः।।39
युग्मानि नवहस्तानां वाससान्दश पञ्च च।
द्विकट्टिकं पुनः पात्रत्रितयन्त्रा पुषं स्मृतम्।।40
देया द्वादश खार्य्यश्च तण्डुलानामथैकशः।
सिक्थतक्के त्रिपलके देये कृष्णा तु षट् पला।।41
वदन्यवृन्दाग्रसरोऽपि राजा
प्रजार्थ चिन्ता जनितार्थि भावः।
भूयोऽप्यसौ याचत इत्यजस्त्रं

प्रदित्सतः कम्बुजराजसिंहान्।।42
कृतं मयैतत् सुकृतं भवद्भिस्
संरक्षमीयं भवदीयमेतत्।
पुण्यस्य कर्त्तुः फलभाक् प्रकृष्टं
संरक्षितेत्युक्तमिदं हि वृद्धैः।।43
यो राजधान्यान्निहितः प्रभुत्वे
मन्त्री स एवात्र नियोजनीयः।
न प्रेषितव्या इह कर्म्मकाराः
करादिदानेषु न चान्यकार्य्ये।।44
प्रत्यग्रदोषा अपि देहिनस्ते
न दण्डनीया इह ये प्रविष्टाः।
ते दण्डनीयास्तु न मर्षणीया
ये प्राणिहिंसानिरता इहस्था।।45
जगद्धितात्यर्थतृषस् स राजा
पुनर्वभाषे प्रणिधानमेतत्।
भवाब्धिमग्नाज्जनतां समस्ता-
मुत्तारयेयं सुकृतेन तेन।।46
ये कम्बुजेन्द्राः कुशलानुरक्ता
इयां प्रतिष्ठां मम रक्षितारः।
ते सात्वयान्तः पुरमन्त्रिभिन्ना
निरामयां मोक्षपुरं लभेरन्।।47
नानादिव्याङ्गनाभिर्विरचितरतिभिर्भूरिदिव्योपभोगै-
र्दिव्येयुर्दिव्यदेहा दिवि दितिदनुजांस्तेजसा तेजयन्तः।
दार्ढ्यन्नीत्वा समन्तादचलितमानिशं रक्षया स्वः प्रयाणे
ये निश्रेणीकरिष्यन्त्यकुशलदलनं पुण्यमेतन्मदीयम्।।48

Additional verses in TA MEEN TAUCH Inscription

निधिपालः पुमानेको भेषजानां विभाजकः।
व्रीहिभेषजकाष्ठानां ग्राहकस्तद् प्रदायिनः।।20
पाचकौ पत्रकारौ द्वौ देवागार विशोधकौ।

नरौ वारिप्रदौ पत्रशलाका काष्ठदायिनौ।।21
द्वौ च भैषज्य पाकैधजलदौ भेषजप्रदाः।
आरोग्यशाल रक्षाश्च पञ्च ते परिचारकाः।।22
पिण्डिता दश् तेषान्तु स्थितिदा एकशः पुमान्।
स्त्री चैका द्वे स्त्रियौ वारितापभेषज मर्दिके।।23
द्वे तु व्रीह्यवधातिन्यौ मिश्रास्ताः परिचारिकः।
चतस्त्रस् स्थितिदायिन्या वेतासा मेकशः स्त्रियौ।।24
ते सर्व्वे पिण्डितास् सार्द्ध स्थितिदैर्भिषगादयः।
चतुर्व्विशतिराख्याता नराः षड्विंशतिस् स्त्रियः।।25

(Verse 26 is identical with V.27 of SAY FONG Inscription)

ग्राह्यन् त्रिवेलमन्वब्दन्निधानान् नृपतेरिदम्।
प्रत्येकञ्चैत्रपूर्णम्यां श्राद्धे चाप्युत्तरायणे।।27
सार्द्धद्विविम्बिका चैका गोभिक्षा जालमम्बरम्।
रक्तान्तपार्श्वमेकञ्च द्यौतम्बर युगद्वयम्।।28
प्रत्येकन् त्रिपले कृष्णातक्के द्वे सिक्थदीपकः।
एकस्त्रियाल्कश्चैक पलाश्चत्वार एकशः।।29
मधुप्रस्थद्वयं ग्राह्यन्तिल प्रस्थद्वयन्तथा।
कुदुवत्रयमानन्तु घृतं प्रोक्तमथौषधम्।।30
यवाणीपिप्पली रेणुपुन्नागाः पाद एकशः।
सद्विभाषा जातीफले द्वे कर्पूरन्त्रिविम्बकम्।।31
कोत्थजीर्णक्षारहिङ्गु प्रत्येकन्तच्चतुष्टयम्।
त्रिमाषं शर्क्करायास्तु पलमेकं सपादकम्।।32
त्रयस् सत्वा जलचरा दङ्दङ् साख्या अथैकशः।
श्रीवासञ्चन्दनन्धान्यं शतपुष्पन्त्रि पादकम्।।33
एलानागरकर्कोलमरिचं कुदुवं स्मृतम्।
एकैकं ते द्विकुदुवे द्व प्रचीबल सर्षपे।।34
त्वगेक मुष्टिर्दार्व्येका पथ्या विंशतिरष्ट च।
कन्दङ् हर्लाय जन्स्यङ् दारुच्छव्यं स्यादेकशपलम्।।35
त्रिपादको मित्रदेवो ग्राह्यो द्विकुदुवं मधु।

तावान् गुद्दोऽथ सौवीरं सपादं कुदुवत्रयम्।।36

(Verse 37 is identical with V.38 of SAY FONG Inscription)

प्रत्यब्दन्दशहस्तानान्देयन्तेषु युगत्रयम्।

वाससान्नवहस्तानां युग्मानि द्वादशैकशः।।38

प्रत्येकन्नव खार्यश्च तण्डुलानान्तथैकशः।

साद्धैंक कट्टिकं पात्रवितयन्त्रापुषं स्मृतम्।।39

(Additional Verses in BAN PKEAN Inscription)

............द्वौ गुद्दस्य मधुनस्तथा।

.........कुदुव साष्टगण्डूषकं स्मृतम्।।25

.........तद्‌गणकश्चैकस्ते धर्म्मधारिणः।

.........याश श्रीराजविहाराध्यापकेन च।।26

.........तेष्विदन्देयं प्रत्येकं वृहतीत्रयम्।

........नाः पञ्चदशयुग्मास्त्रि पात्रकम्।।27

...........इकन्तण्डुला नवखारिकाः।

.......त्रिपले सिक्थतक्क कृष्णा तु षट्पला।।28

अर्थ- बुद्ध को नमस्कार है जो निर्माण करने वाले धर्म के संभोग की मूर्ति हैं। भाव और अभाव दोनों से परे हैं और द्वयात्मा हैं निरात्मा हैं।।1

दवा के गुरु वैदूर्य मणि के समान आभा वाले राजा 'जिन' को नमस्कार है जिनके नाम भी सुनने पर क्षेम और आरोग्य पैदा होते हैं।।2

श्री सूर्य और वैरोचन के समान तेज वाला श्रीचन्द्र वैरोचन से रोहिणी के स्वामी प्रजा के रोग रूप अन्धकार के हरने वाले दोनों मुनीन्द्रों में मेरु पर्वत के समान हैं- उनकी जय हो।।3

श्री धरणीन्द्रवर्मन राजा के पुत्र राजा श्री जयवर्मन जयादित्यपुर में पैदा हुए। 1114 शकाब्द में जिसने राज्य को पाया।।4

सभी राजाओं के सिर के अलंकार रूप चरण कमल वाले युद्ध में शत्रु के मारने वाले, अच्छे गुण रूप रत्न अलंकार बहुत सा एवं जिनकी कीर्ति रूप माला वाली धरती रूप स्त्री को जिसने पाया।।5

सदा हर्ष से दैत्यों शत्रुदेवों के बढ़ाने वाले सदा नये धन से प्रिय

सम्पत्ति से धनी कठोर दैत्यराज को युद्धों से जिसने नष्ट किये जो थोड़ा काला होकर भी श्वेत वर्ण वाला था।।6

जिसने राजाओं से प्रार्थित लक्ष्मी का अपमान करके अपने तई सभी दिशाओं में कीर्ति को शीघ्र प्रसन्नतापूर्वक फैलाने वाला, इन्द्रियों की रुचि विचित्र है- इस बात पर कवि आश्चर्य प्रकट करते हैं।।7

जिसे देखकर तेज से नाथ के हराने पर बुद्ध के समान कान्ति से कामदेव पर विजय पाने वाला अपने नाम को सार्थक करने वाला सोचती हुई न पैदा करती हुई शत्रु स्त्री को बन्दी किया।।8

पुण्य देने वाली आयु है जिसकी उसके समाप्त होने पर कलियुग में प्रजा के क्षय के समान क्षीण होने पर प्रजापति के समान पुराने युग के समान विशेष बढ़ाया जिसने पूर्ण धर्म रूप बैल को समृद्ध करके पुनरपिर धर्म का अभ्युत्थान किया।।9

मरण से दुखित देखकर, पृथ्वी को धन से स्वर्ग बनाया, मरने वालों को अमरत्व प्रदान करने के लिए जिसने अमृत समान दवा का आदेश उपदेश दिया।।10

पूर्णरूप से प्रयत्नशील जिसने धर्म रूप बैल को पूर्णांक किया और प्रयत्नवान बनाया। राजवैद्य से न चिकित्सा करने योग्य पैरों के टूटने रूप तीन युगों के दोष से सत्ययुग में चार पैर थे, धर्म के त्रेता में एक द्वापर में कलियुग में एक एवं तीन पैर टूट चुके थे, उन्हें पूरा कर चार पैरों वाला धर्म बैल का निर्माण किया था।।11

अन्य गोपति रूप बैल को जीतकर त्रिभुवन रूप आंगन में अपनी इच्छा से जो हृष्ट-पुष्ट किया गया बैल (धर्म) वह धीरे-धीरे डकारता हुआ जम्हाई लेता है।।12

शरीर वालों के शरीर का रोग और रोगियों के मन का रोग है, राजाओं का जो राष्ट्र दुःख है- ये दुःख हैं कि आत्मा को कोई दुःख नहीं है।।13

वैद्यों में वीर विशारद लोगों के द्वारा आयुर्वेदों अस्त्र वेदों में जिसने राष्ट्र रोगों को रोग रूप शत्रुओं को दवा रूप अस्त्रों से मार डाला।।14

सभी के अपराधों को जिसने सभी प्रकारों से शोधकर युग के अपराध में रोग के अपराधों को जिसने न विशुद्ध किया।।15

आरोग्यशाला सहित सभी ओर से दवा रूप बुद्ध बनाया दो औरस 'जिन' सहित जिसने सदा प्रजा के रोगों की शान्ति के लिए किया।।16

उसने इस आरोग्यशाला को बुद्धशाला सहित बनाया तथा दवा रूप बुद्ध को यहाँ देह रूप आकाश में हृदय रूप चन्द्र से प्रकाशित किया।।17

और इन दोनों की स्थापना की। जो रोगियों के रोग दूर करने वाले घर हैं श्रीमन्त लोग सूर्य, चन्द्र आदि वैरोचन जो 'जिन' के पुत्र हैं।।18

यहाँ चारों वर्ण के लोगों की चिकित्सा होती है पर उसमें वर्ण दो हैं। दोनों के वैद्य दो हैं- एक पुरुष का और एक स्त्री का। स्थिति पालन देने वाले एक-एक हैं।।19

खजाने के रक्षक दो पुरुष हैं। दवाओं के विभाजन करने वाले दो हैं। व्रीहि और काठों के ग्राहक दो हैं। उनके भागीदारों द्वारा दोनों प्रतिष्ठित हैं।।20

रसोई बनाने वाले दो पुरुष- रसोई की लकड़ी और जल देने वाले दो हैं। फूल, कुश लाने वाले, देव मन्दिर को विशेष रूप से शुद्ध करने वाले दो हैं।।21

दो यज्ञ कराने वाले, दो पत्र बनाने वाले, दो पत्र और शलाका दोनों के तब दवा देने वाले दो रसोई की लकड़ी लाने वाले दो हैं।।22

चिकित्सालय के रक्षक फिर चौदह आदमी हैं। दवा देने वाले सब मिलाकर वे बाईस हैं।।23

उनमें एक पुरुष, एक-एक नारी जो स्थिति देने वाली हैं, जल, संताप दवा बनाने वाली छः नारियाँ हैं।।24

दो व्रीहि के गम्हड़ी धान्य के अवधात कूटकर चावल बनाने वाली वे सभी मिलकर आठ स्त्रियाँ हैं। उनकी स्थिति देने वाली प्रत्येक में दो हैं।।25

फिर मिलाकर वे तो बत्तीस परिचारिकाएँ हैं। फिर अन्ठानवे सभी मिलाकर स्थिति देने वालों के साथ हैं।।26

प्रतिदिन एक द्रोण देवपूजा का अंश चावल शेष यज्ञ प्रतिदिन रोगियों को दिये जायें चावल।।27

प्रतिवर्ष तीन बार राजा के खजाने को ग्रहण करना चाहिए, प्रत्येक चैत्र पूर्णिमा में और श्राद्ध में उत्तरायण में।।28

लाल जाल वाला वस्त्र एक धोती छः कपड़े दो गोभिक्षा के लिए पाँच पल तक्र और काला कपड़ा उतना ही।।29

एक पञ्च पल सिक्थदीप फिर एक पल चार प्रस्थ मधु और तिल तीन प्रस्थ।।30

एक प्रस्थ घी, दवा, पीपल के रेणु दीप के लिए एक-एक पुन्नाग केसर, जायफल तीन।।31

हींग का क्षार-भस्म, कोत्थ, जीर्ण पका हुआ, एक-एक पाव पाँबिम्बकपूर, शक्कर दो पल।।32

दङ्दङ् सा नाम की दवा जलचर जोंक जो शोणित खींचते हैं पाँच, इसके बाद एक-एक श्रीवास-बेल, चन्दन, धान्य, शतपुष्पा एक पल।।33

इलायची, नागरमोथा, ककोल, काली मिर्च दो पल, प्रत्येक एक जगह दो प्रस्थ, प्रचीबल सरसो।।34

त्वचा आधी मुट्ठी चौबीस पत्थ प्रकल्पित हैं, दार्वीभिदा दो एक एक डेढ़ पल।।35

कन्दङ्हलाय, जनस्यङ्, देवदारुच्छव्य प्रकल्पित है, मित्र देव सवा पल प्रकल्पित है।।36

इसके बाद एक-एक मधु और गुड़ तीन कुदुव नाप से, सौवीर जल एक प्रस्थ परिकल्पित है।।37

दो यज्ञ कराने वाले उसके गिनने वाले एक गणक ज्योतिषी वे धर्मधारी हों तीनों नियोजन करने योग्य हैं जो श्री राज विहार के अध्यापक द्वारा।।38

उनमें यह प्रतिवर्ष प्रकल्पित है। दस हाथ कपड़े, तीन बड़े, बारह जोड़े।।39

नौ हाथों के जोड़े दस और पाँच फिर दो कट्टिक पात्र और तीन

पात्र यायुष के लिए।।40

चावल बारह खारी एक-एक करके दे दिये जायें सिक्थ और तक्र तीन पल कृष्ण छः पल दिये जायें।।41

दाता के गुण, दाता राजाओं के समूह के अग्रेसर राजा प्रजा के लिए चिन्ता से उत्पन्न याचक भाव वाला फिर भी उसने याचना की अनवरत प्रदान की इच्छा वाले कम्बुज के सिंहोपम राजाओं से।।42

मेरे द्वारा किये गये इस धर्म कार्य को आप लोग इसकी सम्यक रक्षा करें यह कार्य आपका है क्योंकि पुण्य करने वाले के उत्तम फल को संरक्षक भी पाता है- यह बात वृद्धों ने कही है।।43

जो राजधानी में प्रभुपद पर निहित हो वही यहाँ मन्त्री नियुक्त हो। यहाँ नौकर नहीं भेजे जायें- कर आदि देने में और न अन्य कार्य में।।44

नये दोषवाले भी शरीरधारी वे जो यहाँ प्रविष्ट हैं उन्हें दण्ड न दिया जाय और न क्षमा किया जाय- उनका अपराध जो प्राणियों की हिंसा में यहाँ वाले निरत हों।।45

विश्व कल्याण की अतिशय तृष्णा वाला वह राजा अपने बयान से फिर बोला- उस धर्म से विश्व रूप समुद्र में डूबी सभी जनता को पार उतार दूँगा।।46

जो कम्बुज के राजा कुशल हैं, अनुरागी हैं वे इस प्रतिष्ठा को जो मेरी है- बचावें। वे वंश सहित अन्दर हवेली, मन्त्री, मित्र सबके साथ नीरोग होकर मोक्षपुर लाभ करें।।47

अनेक देवों की स्त्रियों या सुन्दरी नारियों द्वारा विरचित रतियों से अधिकाधिक सुन्दर उपभोगों से सुन्दर शरीर पाकर स्वर्ग में तेज से दैत्यों को प्रकाशित करते हुए शोभित हों। दृढ़ता लेकर सब ओर से अचल हमेशा रक्षा से स्वर्ग यात्रा में जो अकुशल के अकल्याण को दूर करने वाले इस मेरे पुण्य कार्य की रक्षा करें वे स्वर्गीय सुख भोग करें।।48

Additional verses in TA MEEN TAUCH Inscription

एक पुरुष खजाना पालने वाला, एक दवा बाँटने वाला व्रीहि=धान्य, दवा, लकड़ियों को ग्रहण करने वाला और उनके देने वाला।।20

दो रसोइये, दो पत्ता बनाने वाले, दो देवमन्दिर साफ करने वाले, दो जल देने वाले, पत्र, शलाका, लकड़ी देने वाले।।21

दो दवा, भोजन, लकड़ी, जल देने वाले दो, दवा देने वाले, आरोग्यशाला की रक्षा करने वाले पाँच वे दास हैं।।22

सभी मिलकर दस, उनमें स्थिति देने वाला एक-एक पुरुष, एक स्त्री, दो स्त्रियाँ जल, ताप, दवा पीसने वाली दो।।23

दो धान कूटने वाली, दवा कूटने वाली मिली हुई वे दासियाँ चार, स्थिति देने वाली दो, इनमें एक-एक स्त्री।।24

वे सभी मिलकर साथ स्थिति देने वालों के वैद्य आदि चौबीस पुरुष, छब्बीस स्त्रियाँ हैं।।25

Verse 26 Identical with v.27 of SAY FONG Inscription

प्रत्येक चैत्र पूर्णिमा में, श्राद्ध में और उत्तरायण में प्रतिवर्ष तीनों काल में राजा के इस निधान से ग्रहण करना चाहिए।।27

ढाई बिम्बिका सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल एक गोभिक्षा, एक जालीदार कपड़ा, लाल कपड़ा एक दो जोड़ी धोतियाँ।।28

प्रत्येक तीन पल कृष्णा और सिद्ध चावल तक्र दो, सिद्ध करने का दीप, एक त्रिपलक, एक पल चार एक-एक करके।।29

दो प्रस्थ मधु ग्रहण करने योग्य है, दो प्रस्थ तिल घी तीन कुदुव यह औषधि है।।30

अजवायन, पीपलरेणु, पुन्नाग, केसर एक-एक पाव दो जायफल दो मासे सहित तीन बिम्बक कपूर (चन्द्रमण्डल का आधा भाग= बिम्बक)।।31

कोत्थ जीर्ण क्षार हिङ्गु प्रत्येक चार तीन माशा शक्कर सवा पल।।32

तीन जीव जलचर दङ्दङ् सा नाम का एक-एक श्रीवास, चन्दन, धान्य, तीन पाव शतपुष्पा।।33

इलायची, नागर मोथा, ककोल, काली मिर्च एक-एक कुदुव दो प्रचीबल सरसो एक-एक वे दो कुदुव।।34

एक मुट्ठी दालचीनी, एक दार्वी, अट्ठाईस पथ्या, कन्दङ्

हर्लाय, जनस्यङ्, दारुच्छव्य, एक-एक पल।।35

तीन पाव मित्र देव, दो कुदुव मधु, उतना ही गुड़, सौवीर साँभर नमक सवा तीन कुदुव।।36

Verse 37 is Identical with verse 38 of SAY FONG Inscription

प्रतिवर्ष दस हाथ कपड़े तीन जोड़े, नौ हाथ के बारह जोड़े एक-एक करके प्रत्येक नव खारी चावल एक-एक करके साथ एक कट्टिक पात्र तीन यायुष।।39

Additional verses in BAN PKEAN Inscription

.............दो गुड़ के एवं मधु के ....आठ कुल्ले.... ....।।25

...उसका गिनने वाला गणक एक वे धर्मधारी लोग श्री राजविहारके अध्यापक के द्वारा।।26

..........उनमें यह दिया जाय प्रत्येक तीन वृहती पन्द्रह जोड़े तीन पात्र।।27

.........चावल, नौ खारी............तीन पल, सिद्ध चावल, तक्र, कृष्ण छः पल।।28

107

प्रसत तोर खड़े पत्थर अभिलेख

Prasat Tor Stele Inscription

प्रसत तोर का मन्दिर सियम रियेप प्रान्त में है। यह अभिलेख भगवान् शिव, विष्णु, ब्रह्मा, गंगा और भूपेन्द्र पण्डित की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। इसके बाद ही राजा की प्रशस्ति दी गयी है। ऐसा वर्णन है कि राजा ने अपने नाना की एक मूर्ति स्थापित की, एक तालाब खुदवाया और एक विहार, आश्रम तथा एक ऊँचा मन्दिर बनवाया। चम्पा एवं पश्चिम के एक राजा के ऊपर उनके आधिपत्य की भी चर्चा इस लेख में है। संस्थापक के परिवार का इतिहास भी इसमें दिखलाया गया है जिससे निम्नलिखित बातों का पता लगता है–

1. नमश्शिवाय एवं वागीश्वरी भगवती जिनका वर्णन अभिलेख संख्या 99 में है– को एक पुत्र हुआ जिसे भूपेन्द्रसुरी (भूपेन्द्र पण्डित) की उपाधि दी गयी।
2. जयवर्मन षष्ठ, धरणीन्द्रवर्मन प्रथम तथा सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल में भूपेन्द्रसुरी दण्डाधिकारी अधिकारियों के निरीक्षक थे।

3. उनको दो पुत्र और एक पुत्री थी। भगवती से पैदा हुआ बड़े पुत्र को अपने पिता के समान भूपेन्द्र पण्डित की उपाधि मिली। उसने राजेन्द्र पण्डित और सूर्य पण्डित की भी उपाधि पायी। सूर्यवर्मन द्वितीय के शासन-काल में इस पुत्र ने सभापति का पद प्राप्त किया।
4. छोटा पुत्र एक गायक था। अभिलेख में इसका नाम नहीं दिया गया है।
5. पुत्री को एक पुत्र हुआ जिसने भी भूपेन्द्र पण्डित की उपाधि पायी और जयवर्मन षष्ठ के शासन काल में सभ्याधिप (दण्डाधिकारियों का प्रधान) का पद पाया। यह तीसरे भूपेन्द्र पण्डित ने इस अभिलेख की रचना की।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 61 है जो सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं। जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

हूँ

यस्याप्यचित्प्रकृतितः प्रकृतिर्गुणात्मा
श्रेणीपतेरिव तरोरभिरजाद्य योनिः।
सर्व्वत्र सा भवति वस्तुचयाय पश्चात्
तन्नन्नमीमि जगतां पतिभशभडयं।।1
वन्दे कुशेश यदृशं सदृशं शिवेन
सं प्रत्येवयन्महतां महसां महिम्ना।
अर्द्धेन्दुधारिव पुषासुर साधितेन
प्रापाम्बिकाङ्गमिव यस्य शरीरमैक्यम्।।2
अम्भोजभूर्भुवि विभाति विभामिराभि-
र्वेदैश्चतुर्भिरपि भूतपतेरधीतैः।
येन व्यधायि निजसर्ग्ग विषाद काले
विष्णोरधोगतिरधोवदनैर्धुद्याम्नाम्।।3
गङ्गामुमामयद्यियेव शशाङ्कमौलि-
कौटीरकोटर वने गहने निलीनाम्।
नाशङ्कितव्य सुरपूर्व्वसुर प्रवेशे
निर्भीतमग्र कुशलां प्रणमन्त मूर्द्धा।।4
भूपेन्द्रपण्डित पदं मुनिमस्तकालि-

---

1. *IC,* p.277

मालानतं कजमिव प्रणमन्तु सन्तः।
सङ्सार सिन्धुभुवनोद्धरणाय गुह्य-
टीकापथा यदकरोद् यमसद्म शून्यम्।।5
रक्षत्सु शक्रादिषु राजमूर्त्त्या
वृषं समीक्ष्य क्षतमङ्घ्रिभङ्गात्।
जातश शिवश् श्री जय वर्म्म देवौ
राजा ररक्षानिश्मक्षताङ्गम्।।6
कान्तं वपुः कौशलमग्रवीर्य्यं
पूर्व्वावनीन्द्रादधिकं यद्वीयम्।
तीव्रं सहस्राग्नितपः कृतं किं
शास्त्रान्तरेणाप्युत तत् कृतं स्यात्।।7
यो भूतिभूतो समदृष्टिरुधन्
वृषस्थितो गोत्रवर प्रतीतः।
दुर्ग्गागमेक्षी भुवनप्रतीक्ष्यस्
सुलक्षितो भूतपतिः प्रतीर्ण्णः।।8
नैकं वृषस्य यदमस्थिरमेत्य यं प्राङ्
नीत्यौषधेनं सुदृढ़ं पुनराप भङ्गम्।
अङ्घ्रि त्रयं क्षतमनेकनरेन्द्र दोषात्
तेन स्म रोद्धतिषरामचिरेण मन्ये।।9
लक्ष्मीः पतिं समुपगूहितु मादृता यं
मूर्द्धाभिषिलनृपतीन् बत विस्मरत्री।
आलिङ्गने रणमुखेऽनु किरत्किणत्वा-
च्छस्त्रादृतौ शतदृशं स्मरति स्म शक्रम्।।10
एकान्त कान्त कुसुमायुधकान्ति कामात्
कामं द्विषन्तमदहन्तु पुरा न रोषात्।
भूतस् स यो हि भुवने भुवनप्रतीतं
रूपं स्मरस्य सकलन्तदलं बभार।।11
स्थानेतरां मनसिजो भुवि जायमानो
यो योषितो व्यदहृदक्षिनिपात बाणैः।

पूर्व्वत्र यद् युवति हेतुवृहदविपत्ति-
मर्द्धेन्दुशेखरधृतो ऽन्वभवत् स निन्द्याम्।।12
तापी फलाशी गिरिरन्ध्रशायी
तेजस्विनञ्चेत् तमिमं समीक्ष्य।
निर्व्वाणमाया इति कान्तिशीक-
श्चारानुनीतः क्षितिपाल राशिः।।13
कामोऽपि मकरारूढ़ो यत्कान्त्युत्कीर्तिनीरधौ।
अगाधे केवलं मग्नो यदनङ्गो महत्तरः।।14
आस्फालितद्विङ्गद्विपकुम्भमुक्त
मुलालवस् संपत्ति येन रेजे
यत्तत्पराणां सुरसुन्दरीणां
व्यथौत्सुकानामिव वाष्पबिन्दुः।।15
यं संप्रधार्य्यात्मभुवा न तस्य
स्तुतिर्न कामस्य तिरस्कृतिश्च।
य एककर्त्ताकलुषस्मरस्य
तस्यानवद्यस्य पुनस् स्तुतोऽभूत्।।16
चन्द्रेण चूतेन मधो रसेन
सार्द्धङ्गतोऽस्मीह इतीव कामः।
योऽभूद् ह्रियाग्निं प्रविशन् मुखेन्दुः
पाण्यङिघ्र चूतश् श्वसनाग्रगन्धः।।17
दिष्टयार्जुनश्चाक्षय वाणतूणो
रामश्च हन्त स्वयमागतेषुः।
यस्याहतारे रण एकवाण-
गत्यैव किं भूरिशरेण शङ्के।।18
दोर्दण्डदण्डदलितद्विरदेन्द्रदन्त-
क्षोदैर्व्वलक्षितसमग्र वपुर्व्विकीर्णैः।
कर्प्पूर चूर्ण्णनिचयैरिव चर्च्चितो यो
लक्ष्म्या रतौ रतिगृहोपमयुद्धरङ्गे।।19
भूभृद्यशः परिमितार्थम् जाण्डखारी

स्रष्ट्रा कृता तदनु तद्यशसि प्रदत्ता।
यत्रैव यत्र तु महाण्डमतीत कीर्चौ
मानं परङ्क्तिमिव तेन मुदा प्रदेयम्।।20
यस्याध्वरोद्धुर विसारितधूम्रधूमो
वात्योद्धृतोरुतरवृत्तवपुर्व्विरेजे।
वाहुर्हरेरिव हरन् कनकाण्डमूर्द्ध-
यत्कीर्त्तिपीडितकृशार्जितकीर्त्तिहारे।।21
मरुत्समुद्धृत सुवृतविग्रहो
गवां वृहत्कोटिरूपद्रवान्तकः।
यदध्वरे धूमगणः करो यथा
धृतोरुगोवर्द्धन पर्व्वतो हरेः।।22
अमूर्तिरक्नापि यदीयकीर्ति
र्व्विभुस समस्ता सुहृदाननस्था।
सन्दृश्यमानेव जनैरनेका
कालो यथोपाधि विशेष संस्थः।।23
यद् द्राव्यमानरिपवो ननु सावकाशा
रन्ध्रे हरेर्हरिगणाश्च गृहेषु तेषाम्।
श्रीश्चात्र किञ्चिदवकाश परं(दं)परेषां
वाधाङ्गभिष्यदभवन्न तदीय राज्ये।।24
क्षोण्याभिमासनुपमां प्रतिमां सुवर्णा
स्वर्ग्गस्वकीय जननीजनकानुसारीम्।
योऽस्थापयद् विविधभोग चयैर पूर्व्वैः
काष्ठामुखेषु च समं स्वयशः प्रतानम्।।25
गौरीगुरुर्म्मदसमः कनकाङ्गकन्ते-
रीशाहितात्मजतया महिमानमाप।
मत्वेति मेरुरमलान् तनुजान्नु कीर्त्ति
स्वर्ण्णाद्रिमूर्त्तिरदिशन्नृपतौ महेशे।।26
दैर्घ्येण गम्भीरतया प्रथिम्ना
नैवास्य वापी जलधीयमाना।

आकीर्णकार्त्तस्वरम प्रविम्बै-
रौर्व्वाग्निभूतैरपि मध्यदृष्टैः॥27
यत्राश्व संहतिसमानतया मया सा
संज्ञासमाश्व इति न प्रतिमन्यमाना।
त्याज्या न सा त्रिभुवनप्रथिता कथन्नु
सार्थेति सप्त तुरगा रविणानिबद्धाः॥28
राजन्यकन्या विभवोपनीता
लक्ष्मी समास् सन्ति सहस्रसंख्याः।
अन्योन्यदेशोचित शिल्पभेद-
वेषा रुषा यास् सदृशो बभूवः॥29
वातोद्धतो ध्वजस्तस्य लक्ष्मीकर इवाग्रतः।
ततो मा गा इत इति स्वस्स्त्रीणां विनिवृत्तये॥30
आकीर्ण्णकेतनगणैर्गगणोल्लसद्भि-
स्तारा रराज सुतरामिव धूमकेतुः।
आशंसितक्षितिशुभा न शुभेतराढ्या
संलक्ष्यते स्म जलकेतुरशङ्कि शङ्के॥31
नीलेन्द्रनीलमणि नीरज राग राशि-
रोचिष्परिस्फुरितमण्डित मण्डलेन।
क्रीड़ागृहे धुमणिनेव विवर्ण्णभाव-
भाजाद्यो नु गणकस्य मुहुः क्रियन्ते॥32
उधद्दूहद्वितकीर्त्ति सुरद्रुमेण-
दानाम्बु यस्य सवने जलधीयमानम्।
उद्भृतभूरिविवुधाद्भुतभूतिभूम्ना
नेयत्तयाधिकतया जलधेर्दवीयः॥33
सर्व्वानवद्यवदन प्रकृतावसत्यां
स्वेनानुरूपवपुषि द्युपतिः प्रसक्तः।
अन्यासु यत्र वनितासु यदि प्रयातः
कान्तारतिं स्म नु परासु निराकरोति॥34
स्वल्पीकृतापि वसुधा वसुधाधिपेन

चाम्पेश्वरप्रहित चाम्प पुरैर्नवीनैः।
कीर्त्त्या नया बत तदुत्थितया महत्या
ब्रह्माण्डमेव सुतनूकृतमद्य मन्ये।।35
येनाश्रमाः विरचिताः परितो विहारं
ये नित्यहूतपुरुहूत पुरस् सरेण।
अच्छिन्नसन्ततमखे सुखिना सुरेण
केनाहृता इव चिरं स्थितये द्युलोकाः।।36
सप्तार्च्चिर्हृत्यगारे विधिसततहुतो येनमन्त्रैः प्रयुक्तै-
र्म्मेध्येनाभूत पूर्व्वेण विविधहविषापि प्रहृष्यत्यतीव।
पूर्व्वन्नापूर्व्वमाशु प्रहिताहित हविर्मन्दपालस्य मन्त्रात्
कृत्स्नं कृष्णार्जुनाभ्यां प्रियमधिकमसौ खाण्डवे नो चखाद।।37
यामिन्यां यामतूर्य्यः प्रथितपृथुद्यनो यत्र हर्म्याग्र शृङ्गे
नो चच्चच्चारुचामीकरचमरकश्चन्द्रविम्बान्तिकत्वात्।
अन्तस्थानस्थितेन्द्र प्रमुखमखभुजामन्य जायारतानाम्
अन्यत्राशङ्कनात् काचिदरतिरपरा रागिणान्नाप चित्ते।।38
यत्र स्त्रीस्तनचारुचन्दनरुचा शुभ्रस्तटाकोऽधिको
रोधोरोपितरैचयो हर जटागङ्गेव भूम्युद्धता।
यङ्कल्लोलकरैर्व्विलुप्तललनाली लाल लाभं भृशं
सा कान्ता प्रतिताडयेत् कुचकुलैः पीनैरहो विग्रहः।।39
उच्चैर्द्युव्या समुधन् भुवनमधरयन् गौरपत्राधिकान्तो
विश्रान्तभ्राम्यदभ्रभ्रमर परिचितः कन्टकेनाचिताङ्गः।
पांशुप्रासाद एषोऽपरमिव कमलं लक्षितालीनलक्ष्मीस्
सृष्टं स्रष्ट्रा यथार्थं भवति रचितये श्रीसपत्न्याधरण्याः।।40
गन्धर्वो दिवि यायतिस्म सुयशो यस्याधवरोत्थं मुदा
राजन्यः करमार्दवोपजनितङ्कान्त्युत्थितङ्कामिनी।
द्विट्क्षत्रश्च यथापराधादमजन्नो वैपरीत्यं क्वचित्
प्रायो गीतिमभीप्सितां रचरकलाङ्गायन्ति लोका भृशम्।।41
यत्कीर्त्त्या वागुरायामिव भुवि वितताया‌ङ्गता राजसिंहा
दम्या ये दुर्दमा येन सपदि सुदमास् स्वस्थितिं सुष्टुनीताः।

मन्दौजोवागुरायन्नभसि कजदुवा त्वेकमेनं समीक्ष्य
तान् त्यक्त्वाप्रीतयेऽद्यापि ननु खलु कृतं साधनंभोयनञ्च॥42
भूतो भूतिगणं भृशं विद्युतमो होमार्च्चितश् शङ्करश्
श्रेयो गोत्रवरो महानसमसदृष्टिर्भवो जातवान्।
कुर्व्वन् विप्रमदं समस्तविबुधे निर्व्वाणदाय्यच्युतः
पद्मर्द्धिश्चतुराननो विधिरयन्देवत्रयात्मा स्फुटम्॥43
धूमानां संख्यया स्याद् यदि घनमहिमा मेघ एकोऽध्वराणां
धूम प्रारभ्यमाणो नवसरविवरो यस्य चैकार्ण्णवस्य।
तोयादाने क्षणेन द्रुहिणकृत इव स्थूलकोशोऽतिरेकस्
सार्द्धं सर्वात्मना सम्मणिविसररुचो शङ्कि संरक्षणार्थम्॥44
उत्कृत्तक्षत्रमाजौ भृगुजमतिवलिं विक्रमेणाभिजित्थ
द्राग् योऽधः कृत्य तेजस्विनमिनमपरं पूरिताशा समूहः।
श्रीभर्त्ता शङ्ख चक्रासि शरवसुमती शक्ति चापाङ्कपाणि-
र्धात्रीं शत्रुष्वधीनामहरदकुटिलोऽधश्रवकाराब्ज नेत्रम्॥45
वागीश्वरी भगवती भगवान् शिवश्च
शङ्के यदीयजननी जनकावभूताम्।
वागीश्वरी भगवनीति नमश् शिवाय-
नामी(म्ने)श्वरेणं विहितं कृपयानयोर्यत्॥46
सिद्धान्ततर्क्कमुनिसम्मतशब्दशास्त्र-
वेदार्थ पञ्च जलधीन् पिबति स्म हृद्यम्।
पीतोज्झितैकसरिताम्पतिराशु ताव
ज्जिह्वाय किङ्किल न कुम्भभवोऽपि यस्मिन्॥47
राज्यास्थितश् श्रीजयवर्म्मदेव-
स्ततः परं श्रीधरणीन्द्रवर्म्मा।
श्री सूर्य्यवर्म्माथ नृप त्रय श्री-
भूपेन्द्रसूरिः किल सम्यदर्शी॥48
लिङ्गंपरं प्रतिकृतिं स्वयमेव सभ्यम्
भूपेन्द्रदेश इह यस् समतिष्ठिपत् प्राक्।
पुण्याय लोकनिकरस्य ततः परं स

स्वयति एष सुरमन्दिर पावनार्थम्।।49
श्रीसूर्य्य पण्डित सभापतिरात्मजश् श्री-
भूपेन्द्र पण्डितगुरो कुलपद्म सूर्य्यः।
श्रीसूर्य्यवर्म्मनृपतेः प्रवरो वरोऽसौ
सौस्नातिकोऽनवरतन्नृपतीन्द्रभूत्यै।।50
भूपेन्द्रपण्डित सभापतिरीश्वराद् यो
राजेन्द्रपण्डित सभापति नाम लब्ध्वा।
श्री सूर्य्यपण्डित सभापति नाम पश्चाद्
एवंविधैर्विजित पूर्व्वगुरूर्यशोभिः।।51
रुद्राङ्श जातश् शितिकेशभाग् यो
भाग्यो भवोपासक वृद्धपुत्रः।
अजातशत्रुः कुलदीप्तदीपस्
सुते पि सामान्य समान दोषः।।52
एकूनविङ्शति वयो जनकाप्तविद्यो
विद् यस् सुधर्म्मनिरतो निरतंवदन्यः।
विश्वम्भरापति गुणज्ञतया सुवर्ण-
यानोपवीत फलकव्यजनैर्ष्य भूषि।।53
योग्यो विचारकगुरुर्गुरुकोटि होम
होता सभापति गुरुर्गुणरत्न पात्रम्।
शास्त्रीय लौकिक पदव्यवहारमार्ग्गे
स्थेयीकृतोऽवनिभुजा किल सूक्ष्मदर्शी।।54
रैरत्नभूषणकरङ्क सुवर्णढोलां
दोर्भ्यां दिदेश गिरिशे प्रणयात्तयोर्यः।
आजन्म जन्मविधिवज्जपहोम सोम-
यागादिकर्म्मफलमाचरितञ्च पित्रीः।।55
यस्यानुबन्ध कविकुञ्जर संकुलेऽस्मिन्
ग्रामे महर्द्धिविभवे च कुशस्थलीति।
सञ्जात एवमनुजः प्रणवोपगीतो
भद्रेश्वरार्च्चनविद्यौ गिरिश प्रयुक्तः।।56

अस्थापयद् भगवतीं जननीं सतीं श्री-
भूपेन्द्रपण्डितपितुः पदपाङ्सुलब्ध्यै।
श्रीसूर्य्यपण्डित सभापतिरात्म रूपं
भक्त्यैतयोस् सहकलत्रमतिष्ठिपद यः।।57
रैराशिरत्न रजतत्र पुताम्रालोह
कंसद्विपेन्द्रवृषभेन्द्र धराश्वदासम्।
श्रीसूर्य्यपण्डित सभापतिरीश्वरेऽदा-
दस्मिन् प्रतिष्ठितविद्यौ प्रणयेन पित्रोः।।58
योऽस्थापयत् प्रतिकृतिं विभवेन पित्रो-
र्गीर्व्वाणमन्दिर सुखापु(पू) रचूतमूले।
ग्रामे सुवर्णगजरत्नरसाश्वताम्र
तारन्ततार तरसा गिरिशेषु तेषु।।59
श्रीसूर्य्यपण्डित सभापति भागिनेयो-
योऽग्रयस् सभापतिरनन्तरमेव नप्ता।
भूपेन्द्रपण्डित गुरोस् स कुशस्थली श्री-
भूपेन्द्र पण्डित इति प्रथितो रसायम्।।60
सम्याधिपश् श्रीजयवर्म्मदेव-
राज्ञो जयादित्यपुरे परार्द्धेय।
श्रीसूर्य्यसूरिर्यशसे प्रशस्तं
रूपैक चन्द्राद्रिभिराचकार।।61

अर्थ- जिसकी अचेतन प्रकृति से प्रकृति गुणात्मा है समुद्र के समान ब्रह्मतरु से अज (ब्रह्मा) आदि अपोति (स्वयम्भू)= आप ही आप होने वाला पीछे सर्वत्र वस्तु इकट्ठे करने के लिए वह होती है- उन भुवनों के स्वामी स्तुति करने योग्य शिव को पुनः-पुनः अतिशयेन नमन करता हूँ।।1

शतपत्र कमल के समान आँखों वाले शिव के समान महान की तेजस्विता की महिमा से विश्वास से अर्धेन्दुधारी शरीर से देवों से साधे हुए श्री अम्बिका के अंग के समान जिसके शरीर की एकता है।।2

श्री ब्रह्माजी पृथ्वी पर प्रकाशों से सोहते हैं। इन चारों वेदों से

प्राणियों के स्वामी द्वारा पढ़ाये गये जिसने अपनी सृष्टि के विवाद के समय जिसके द्वारा की गयी देवों के जो नीचे मुँह करने वाले थे- उन्हीं मुखों से विष्णु जी की अधोगति= भर्त्सना की गयी थी कि उनने लक्ष्मी का पाणि-ग्रहण किया था।।3

गंगा को उमा से भय की बुद्धि से ही मानो शिवजी ने अपनी जटा के कोटर रूप वन में विलीन की थी, न आशंका करने योग्य देव-देव के प्रवेश में निर्भय होकर अग्रकुशला को सिर से प्रणाम करें।।4

मुनियों के मस्तकों की पंक्तियों की माला रूप अग्नि को सज्जन लोग कमल के समान प्रणाम करें- संसार सागर भुवन से उद्धार के लिए गुप्त टीका के मार्ग से यमलोक को जिसने शून्य कर दिया।।5

इन्द्रादि देवों की ओर से रक्षा होने पर भी राजमूर्ति से देखा गया धर्मवृष को देख समीक्षा करके पैर टूटने से कटा हुआ घाव था- यह देखकर शिव ने स्वयम् श्री जयवर्मन राजा का अवतार ग्रहण कर सर्वदा न कटे अंगों से युक्त पूर्ण चार पैरों वाले धर्म की रक्षा की थी- धर्म शासन करते थे।।6

शरीर सुन्दर कौशल अग्रवीर्य पूर्वतन राजाओं से अधिक जिसका था तीव्र रूप से हजार अग्नि की तपस्या की उसने। दूसरे शास्त्र से भी या वह किया गया हो।।7

जो ऐश्वर्य रूप समान दृष्टि वाला उगता हुआ धर्म पर स्थित श्रेष्ठ गोत्र प्रतीत होने वाले दुःख से जानने योग्य शास्त्र रूप आँखों वाला संसार भर का पूज्य सुन्दर लक्षणों से युक्त राजा का अवतार हुआ।।8

जिस वृष रूप धर्म के एक पैर स्थिर न पाकर जिसे प्राचीन नीति रूप औषध से खूब मजबूत पुनः कर दिया जो टूटा था, अनेक राजाओं के दोष से तीन पैर टूटे थे उन्हें फिर सुदृढ़ बनाकर बहुत दिनों तक धर्मपालन पूर्वक राज्य किया था।।9

लक्ष्मी ने पति विष्णु को छिपाने के लिए आदर पाकर जिसे मस्तक पर अभिषेक पाये राजाओं को खेद से विसरती हुई, युद्ध में आलिंगन में पीछे बिखेरा शस्त्र की चोट से काला मासा, दाग वाले को देखकर सौ आँखों वाले इन्द्र का स्मरण किया।।10

पूर्ण सुन्दर कामदेव की छवि सी छवि वाले कामदेव से पूर्ण द्वेष करने वाले को पहले क्रोध से न जलाया, क्योंकि जो पृथ्वी पर जन्म लिया वह संसार से विश्वस्त कामदेव के सभी अंगों के सौन्दर्य से पर्याप्त युक्त होकर उस रूप को धारण करने वाला था।।11

दूसरे स्थान पर कामदेव पृथ्वी पर जन्म लिया जो स्त्रियों ने अपनी आँख रूप बाणों से जलाया था- पूर्व जन्म में जो युवतियों के लिए बड़ी विपत्ति छा गयी उसे अर्द्ध चन्द्रशेखर द्वारा पकड़ने पर उसने निन्दनीय अनुभव किया था।।12

जो तप करने वाला या सन्ताप सहने वाला, फल खाने वाला, पर्वत की गुफा में रहने वाला था उसे तेजस्वी चन्द्र समान सुन्दर को देखकर निर्वाण माया से समझकर किस दिशा में जाया जाय यह गुप्तचरों से अनुनय करने पर राजा लोगों का समूह किंकर्तव्यविमूढ़ हुए थे।।13

जिसकी छवि की उज्ज्वल कीर्ति रूप समुद्र में जो अगाध था मगर पर चढ़ा कामदेव भी केवल डूब गया कि यह कामदेव अतिशय सुन्दर मुझ कामदेव से भी अधिकाधिक सुन्दरतर है।।14

शत्रुरूप हाथी के मस्तक के कुम्भ के फाड़ डालने पर मुक्ता के गिरने से जिस राजा द्वारा शोभा पायी गयी थी कि तत्पर रहने वाली देवस्त्रियों की व्यर्थ उत्कण्ठा वाली के समान मानो वाष्प की बूँद गिरी हो।।15

जिसे देखकर निश्चित रूप से कामदेव द्वारा न उसकी प्रशंसा न अनादर ही हुआ था जो एक कर्ता के द्वारा पापी कामदेव का नाश हुआ था, उस निष्पाप कामदेव तुल्य राजा की प्रशंसा फिर हुई थी।।16

चन्द्र से, आम से, मधु के रस से साथ गया हूँ मानो ऐसा समझकर कामदेव लज्जा से अग्नि में प्रवेश करता हुआ मुखचन्द्र हाथ पैर रूप आम हवा के द्वारा सुगन्ध बिखेरने लगे थे।।17

शंका है कि दैवयोग से भाग्य से अर्जुन जो अक्षय बाण और तरकस वाला है, खेद है राम मानो स्वयम् बाणों के आगे हों। ऐसा उस राजा द्वारा मारे गये शत्रुओं को रण में एक बाण की गति से ही मारा था - क्या बहुत बाणों की आवश्यकता थी या बहुत बाणों से या एक बाण से? यह

शंका कवि की है।।18

रति गृह की उपमा वाले युद्ध रंग में जो लक्ष्मी की रति में अपनी बाँह रूप दण्ड से हाथी के राजा गजराजों के दाँत तोड़कर समूचे शरीर उज्ज्वलता बिखर जाने से उजला मालूम पड़ने लगा और कपूर के चूर्ण के समूह से मानो राजा का शरीर पूजित हो ऐसा जान पड़ने लगा था।।19

पूर्वतन राजा के यश के थोड़े करने के लिए ब्रह्माण्ड के रचने वाले के द्वारा उसके बाद उसके यश में प्रदान किया गया जहाद्द ही जहाँ बीती कीर्ति में परम आदर महाण्ड कीर्ति में मानो उससे हर्ष से मानो क्या विशेष दिया जाय?।।20

जिसके यज्ञ के उठे धुएँ बिखरी हुई हवा से (आँधी) उड़ने पर धूमिल शरीर शोभने लगा था। जिसकी कीर्ति से पीड़ित दुबले राजा अर्जित कीर्ति की माला में मानो विष्णु की बाँह हरण करता हुआ सुवर्ण रूप अण्ड है सिर जिसका ऐसा मालूम पड़ता था।।21

हवा से उड़ते सुन्दर वृत्त वाले शरीरधारी राजा गायों के बहुत करोड़ उपद्रवों के नाशक जो यज्ञ में धुएँ का समूह जैसे हाथ हो, मालूम पड़ता था कि जैसे कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाया था- ऐसा लगता था।।22

बिना मूर्ति वाली अकेली जिसकी कीर्ति व्यापक रूप से सभी मित्रों के मुँह में हो ऐसा लगा था जैसे काल उपाधि विशेष में स्थित हो।।23

जो गिरने वाले शत्रु निश्चित ही अवकाश पा चुके थे। उनके घरों में विष्णु के छिद्र में वानरों के समूह के समान थे। शत्रु की लक्ष्मी थोड़ा अवकाश पा सकी थी उस राजा के राज्य में बाधा के अंग की इच्छा न हुई थी निर्बाध राज्य करता था।।24

दिशाओं के मुखों में साथ-साथ अपने यश के विस्तार को जिसने स्थापित किया था। पृथ्वी पर इस अनुपम सुवर्ण की मूर्ति स्वर्गवासी अपने माँ-बाप के अनुसरण करने वाली कीर्ति को दिशाओं में बिखेरा था।।25

गौरी के गुरु शंकर मेरे समान न हैं स्वर्ण के समान अंग वाला

ईश के अहित पुत्र के समान बड़प्पन पाया था, यह समझकर मेरु पर्वत निर्मल पुत्रों की कीर्ति को स्वर्ण पर्वत की मूर्ति राजा में और महेश में दी।।26

दीर्घता से, गहराई से, स्थूलता से इसका जलाशय खुदवाया गया, समुद्र के समान आचरण न करने वाला था। बिखरे करुण स्वर वाले अप्रबिम्बों से बड़वानल रूप बीच में दिखने वाले लक्षणों से ज्ञात था।।27

जहाँ घोड़ों की समानता से समाश्व नाम मानने वाला था, न मानकर त्रिभुवन में प्रसिद्ध सूर्य द्वारा सात ही घोड़े बाँधे गये कि असमाश्व नाम सार्थक हुआ उनका राज्य समाश्व थे।।28

राजकुल की कन्या वैभवों से युक्त लक्ष्मी के समान हजारों हैं। परस्पर अन्य देश के उचित शिल्प की भिन्नता से भिन्न वेष वाली मानो रोष से एक सी समान हो गयी थीं।।29

वायु से उड़ती राजा की ध्वजा लक्ष्मी का हाथ है मानो आगे से दिख रहा है मानो राजा यहाँ से न जा यह समझकर अपनी स्त्री न लौटने देने के लिए खड़ी हो।।30

आकाश में उड़ते पताके मानो अच्छी तरह तारागण धूमकेतु के समान हों लगता था धूमकेतु पृथ्वी के शुभ को कहते हैं। ये पताके अशुभ नहीं हैं मालूम पड़ता है जलकेतु हो ऐसी शंका सबको थी- कवि भी शंकित से है।।31

नीले इन्द्र नीलमणि कमल के रंगों के ढेर की छवि से फड़कते एवं शोभित मण्डल से क्रीड़ा गृह में सूर्य के समान मानो विवर्ण भाव के भागी बार--बार गिरने वाले के मन में दुःख पैदा करते हैं।।32

उगते बड़े बिखरे यश रूप कल्पवृक्ष से जिसके मद जल चूने से समुद्र सा है। उत्पन्न हुए बहुत देवों को आश्चर्य कर बहुत ऐश्वर्यों से न मालूम इतने या अधिकता से समुद्र से छोटा है।।33

सब अपाप अनिन्द्य सुन्दर मुख प्रकृति में नहीं है ऐसा समझकर इन्द्र अपने समान रूप वाले राजा के शरीर में आसक्त हुए थे। जहाँ दूसरी नायिकाओं में यदि प्रयाण किया वहाँ अपनी कान्ता की रति को अन्य स्त्री में निराकरण किया था।।34

राजा द्वारा पृथ्वी छोटी कर दी गयी थी चाम्पेश्वर द्वारा भेजे नवीन चाम्पपुरों से इस कीर्ति से खेद है उससे उठी बड़ी कीर्ति से ब्रह्माण्ड को ही आज छोटा कर दिखाया- यह कवि मानते हैं।।35

जिसके द्वारा आश्रमों की रचनाएँ की गयी थीं। सब ओर विहार मठ बनाये गये थे। जो प्रतिदिन इन्द्रादि प्रधान हवन करने वाला था। अखण्ड रूप सर्वदा यज्ञ होते थे अत: सुखी देव द्वारा देव लोक वाले राजा के राज्य की चिरकाल तक टिकने के लिए आशीर्वचन देते थे कि यह सदा रहे।।36

जिसके द्वारा सात अर्चियों वाले अग्निदेव अग्निशाला में विधिपूर्वक सर्वदा मन्त्रों के प्रयोगों सहित हवनों से प्रसन्न थे जो हवन पवित्र थे और पूर्व में ऐसा हवन न हुआ था, विविध प्रकार के हविष्य पदार्थ थे जिससे अत्यन्त प्रसन्न थे। पूर्व जन्म में अपूर्व शीघ्र भेजे गये हितकारी हवि नन्दपाल के मन्त्र से कठिन कृष्ण और अर्जुन के द्वारा अधिक प्रिय उसने खाण्डव वन में खाया नहीं था- ऐसा लगा।।37

रात्रि में चौथे प्रहर प्रसिद्ध स्थूल और घना जहाँ मकान की अग्र चोटी थी चमकते सुन्दर चँवर के केश न थे चन्द्र के नजदीक रहने के कारण अन्दर स्थान में स्थित इन्द्र प्रमुख यज्ञ के भाग खाने वाले देव जो अन्य स्त्री में रत थे उनके अन्यत्र की आशंका से कोई नायिका न रति में लीन प्रेमियों के चित्त में न पा सकी थी।।38

जहाँ स्त्री के स्तन पर सुन्दर चन्दन की छवि से सफेद तड़ाग अधिक वेग से रोपा हुआ धन का ढेर सा जो शिव की जटा के समान मानो भूमि खोदी गयी थी जिसको लहरों के हाथों से विलुप्त डूबी स्त्री की लीला सुन्दरता के आधिक्य से वह स्त्री अपने स्तनों से जो स्थूल थे अहो!!! खेद है आश्चर्य है पीटती-मारती ठोकरें देती थीं- अपना शरीर नहीं तड़ाग को पीटती थी या राजा के शरीर को।।39

ऊँची छवि से चमकता भुवन को नीचा दिखाता उजले पत्रों से अधिक अन्त वाला विशेष थके घूमते आकाश के भ्रमरों से परिचित फूल के काँटों से छिदे अंगों वाला ऊँचा यह प्रासाद या राजमहल, दूसरे कमल के समान लक्षित जहाँ लक्ष्मी लीन है, ब्रह्मा द्वारा रचा गया यथार्थ होती है

रचना लक्ष्मी की सौत धरती थी।।40

स्वर्ग में गन्धर्व जिसकी सुन्दरता को गाते थे, जिसके यज्ञ से उठे सुन्दर यश को हर्ष से गन्धर्व गाते थे। राजाओं का समूह हाथ की कोमलता से उत्पन्न कान्ति से उठी कामिनी, शत्रु कहीं अपराध के अनुसार दमन से उत्पन्न विपरीतता को नहीं अपनाते। प्राय: लोग मनचाहे गीत को स्वर की कला से युक्त होकर अतिशय प्रसन्नता से गाते हैं।।41

जिसकी कीर्ति के पृथ्वी पर फैलने पर राजसिंह चले गये जो दुर्दमनीय थे बेदम्य हो गये जो सुदम्य थे वे अपनी स्थिति को सुन्दरतया सुधार सके। मन्द बल वाला आकाश हो गया। आकाश में एक इसी को देखकर उन्हें छोड़ करके प्रीति के लिए आज भी निश्चित ही एक यही राजा साधन और मोचन कार्य करता है।।42

कल्याणकारी शंकर जी होम से पूजित होकर एक भूत से भूतों का गण हो गया बहुत, शंकर जी का चन्द्र भी बहुत चन्द्र हो गया- कल्याण देने वाले श्रेष्ठ गोत्र वाले महान् होकर असम दृष्टि त्रिनेत्र हुए मोक्ष देने वाले विष्णु सभी देवों में अच्युत हुए और ब्राह्मण के सम्मान से ब्राह्मण के मद को बढ़ाने वाले हुए-कमलों का धनी ब्रह्मा चतुरानन चार मुख वाले हुए। अत: सार यह है कि यह ब्रह्मा तीन देवों का एक रूप है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी एक हैं।।43

यज्ञों के धुओं की संख्या से यदि मेघ की विशालता होती है तो एक मेघ ही यज्ञों का फल है। धुएँ से आरम्भ होने वाले जिस समुद्र का नवसर विवर है। जल लेने में एक क्षण में शिव या विष्णु द्वारा बनाया गया है ऐसा मानकर स्थूल केश बड़े बढ़े केश वाले का बड़ा बनता है। सब की आत्मा के साथ अच्छी मणि की बिखरी छवियाँ मानो संरक्षण के लिए हैं- ऐसी शंका कवि को है।।44

युद्ध में क्षत्रियों को जो काट चुका है। भृगुपुत्र जो अति बली हैं। पराक्रम से जीतकर सभी दिशाओं में प्रकाश बिखेरकर झट ही जो तेजस्वी चन्द्र के समान दूसरा चन्द्र चन्द्र को नीचा दिखाने वालाहै। श्री लक्ष्मी का स्वामी शंख, चक्र, तलवार, बाण, धरणी, शक्ति, धनुष से चिह्नित हाथों वाला पृथ्वी को शत्रु की अधीनता से हर लिया जिसने वह राजा सीधा है,

कुटिल नहीं है उसने विष्णु को भी नीचा दिखाया था।।45

वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती भगवती और भगवान् शिव-कवि शंका करते हैं कि जिस राजा के माँ-बाप थे। वागीश्वरी भगवती यह नम: शिवाय नाम से ईश्वर द्वारा कृपा करके इन दोनों से राजा की रचना हुई थी।।46

तर्क का सिद्धान्त मुनियों से सम्मत शब्दशास्त्र, वेदों के अर्थ इन पाँच समुद्र को जो मनोहर हैं पीता था, पीकर त्यागे हुए एक नदी पति समुद्र शीघ्र तब तक क्या अगस्त्य मुनि समुद्र पीने वाले भी जिसमें लज्जित हुए थे मानो ऐसा लगता है।।47

राजगद्दी पर स्थित श्री जयवर्मन राजा उसके बाद श्री धरणीन्द्रवर्मन, श्री सूर्यवर्मन तीन राजाओं में श्री भूपेन्द्र पण्डित निश्चय ही समदर्शी थे।।48

स्वयं ही सम्यक प्रकार से परलिंग की मूर्ति को इस भूपेन्द्र देश में पहले जिसने प्रतिष्ठापित किया था। लोगों के समूह के पुण्य के लिए उसके बाद वे स्वर्ग गये इस देव मन्दिर की पवित्रता के लिए।।49

श्री सूर्य पण्डित सभापति श्री भूपेन्द्र पण्डित गुरु के आत्मज थे जो कुल कमल के सूर्य थे। श्री सूर्यवर्मन राजा के परम श्रेष्ठ याजक सर्वदा नृपतीन्द्र के ऐश्वर्य के लिए प्रयत्नशील थे।।50

भूपेन्द्र पण्डित सभापति ईश्वर से जिसने राजेन्द्र पण्डित सभापति नाम पाया पीछे श्री सूर्य पण्डित सभापति नाम इस प्रकार के यशों से पूर्व गुरुओं पर विजय पाने वाले थे।।51

शिव के अंश से उत्पन्न काले केशों वाले जो भाग्य से शिव के उपासक वृद्ध के पुत्र थे। अजातशत्रु ऐसा वंश को प्रकाशित करने वाला दीप जैसा पुत्र में भी सामान्य समान दोष है।।52

इक्कीस वर्ष की अवस्था में पिता से विद्या पाकर जो ज्ञाता सुधर्म में रत दान में रत जिसे राजा गुणज्ञ होकर सोने का रथ, सोने का यज्ञोपवीत, सोने की शिला, सोने का पंखा, इस प्रकार देकर विभूषित कर सके।।53

योग्य विचार करने वाले गुरु करोड़ों गुरुओं द्वारा होम के होता सभापति गुरु गुणरूप रत्न से सुपात्र शास्त्रीय लौकिक पद के व्यवहार के

मार्ग में सूक्ष्मदर्शी राजा द्वारा स्थायी पद पर आसीन किये गये थे।।54

धन, रत्न, आभूषण, करङ्क, सुवर्ण का डोला, प्रणय से युक्त हाथों से जिसने शिव को दिये थे। आजन्म, जन्म-जन्म में विधिपूर्वक जप, होम, सोमयाग आदि कर्मों के फल के लिए धर्माचरण किये पितरों की तृप्ति के लिए भी।।55

जिसे पीछे बँधे कवि गजों से भरे इस ग्राम में महान् धन विभव में कुशस्थली है, हो गयी है ऐसा सोचकर अनुज को प्रणव के द्वारा उपगीत होकर भद्रेश्वर की पूजा की विधि में शिव द्वारा प्रयुक्त किये गये थे।।56

श्री भूपेन्द्र पण्डित पिता के चरण की धूलि पाने के लिए भगवती जननी सती को स्थापित किया श्री सूर्य पण्डित सभापति आत्मा के रूप की भक्ति से इन दोनों को स्त्री के साथ जिसने स्थापना की थी।।57

धन की राशि, रत्न, चाँदी, राँगा, ताँबा, लोहा, कंस द्विपेन्द्र, वृषभेन्द्र, खेत, अश्व, दास श्री सूर्य पण्डित सभापति ने ईश्वर को दिये थे- माता-पिता के प्रेम से प्रतिष्ठा की इस विधि में।।58

जिसने वैभव से माता-पिता के प्रेम से मूर्ति स्थापित की देवमन्दिर के सुख से पूर्ण आम की जड़ में, ग्राम में सुवर्ण, हाथी, रत्न, भूमि, घोड़े, ताँबा उन शिव को वेग से वितरित किये थे।।59

श्री सूर्य पण्डित सभापति के भागिनेय, जो अगुआ सभापति बाद में ही नाती भूपेन्द्र पण्डित गुरु के थे वे पृथ्वी पर श्री भूपेन्द्र पण्डित इस नाम से विख्यात हुए कुशस्थली में।।60

सभ्यों के स्वामी श्री जयदेववर्मन राजा के जयादित्यपुर में जो पूज्य था श्री सूर्य पण्डित यश के लिए प्रसिद्ध रूप एक चन्द्रादि से बनाया था उसने।।61
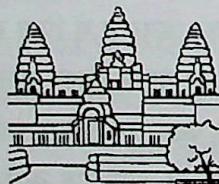
108

प्रसत क्रन खड़े पत्थर अभिलेख

Prasat Crun Stele Inscription

अंगकोर थोम की चहारदीवारी के दीवार पर चारों कोने पर पाये गये चार खड़े पत्थरों पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। उत्तरी-पश्चिमी तथा दक्षिणी-पश्चिमी खड़े पत्थर पर का अभिलेख जयवर्मन सप्तम की वंशावली तथा उनकी प्रशस्ति का वर्णन करता है। दक्षिणी-पश्चिमी अभिलेख कुछ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचना देता है जैसे चम्पा और कम्बुज का एक हो जाना वैसे ही दक्षिणी-पूर्वी खड़ा पत्थर जयसिन्धु खाई का वर्णन करता है।

उत्तरी-पूर्वी कोने पर खड़े पत्थर का भी अभिलेख जयवर्मन सप्तम को जब विवाहित पति के रूप में प्रस्तुत करता है जो अपनी राजधानी यशोधरपुरी को एक दुल्हिन के रूप में स्वीकार करता है।

सोदेस ने माना है कि इन अभिलेखों का लक्ष्य अंगकोर थोम को जयवर्मन सप्तम द्वारा स्थापित साम्राज्य का स्थान दीवारों एवं गड्ढों के साथ बतलाना है। दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर का अभिलेख सूर्यवर्मन द्वारा धरणीन्द्रवर्मन की,

त्रिभुवनादित्य द्वारा यशोवर्मन की, जयवर्मन सप्तम द्वारा त्रिभुवनादित्य की पराजय का वर्णन करता है। यह अभिलेख जयवर्मन सप्तम द्वारा किलेबन्दी की भी चर्चा करता है।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 5 है जो चार समूहों में हैं-

(अ) इसमें 5 पंक्तियाँ हैं; प्रथम एवं तृतीय पंक्ति नष्ट हैं।

(ब) इसमें 1 ही पंक्ति है, टूटा हुआ

(स) इसमें 4 पंक्तियाँ हैं जो सभी शुद्ध हैं।

(द) इसमें 8 पंक्तियाँ हैं जिनमें पंक्ति 3, 6 और 8 नष्ट हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

(अ) ....।
एकीकृते भृगुजकम्बुजभूमिभागे।।
विलसतिक.........व्यालिखच्छृङ्ग एको
भुजगसदनसङ्गागाढतान्या पि तेन।
अनुकुरुत इमे ते निर्म्मिते श्रीमहाश्री-
जयगिरिजयसिन्धू तद्बृहत्कीर्त्तिकोटीम।।

(ब) **तेन श्रीजयसिन्धुशैलपरिखा दुग्धाब्धि शु(क्ला या भ्रा)**

(स) **योग्या यशोधरपुरीमणिसौधभूषा**
येनोत्सुका कुलभवा जयसिन्धुवस्त्रा।
ऋद्धोत्सवे ततविकासियशोविताने
हस्ताहृता भुवन सौख्य सुतोद्भवाय।।

(द) **पूर्व्व श्रीधरणीन्द्रवर्म्मनृपतेश् श्रीसूर्य्यवर्म्मा विना**
रक्षां राज्यमहर्युधैव जगृहे भर्त्तुर्यशोवर्म्मणः।
.....आ दैत्यतमोजयात् त्रिभुवनादित्यश्च तस्मादपि
चाम्पेन्द्रो जयइन्द्रवर्म्मविदितो वीर्य्यावलेपादिति।।
श्रुत्वा श्रीजयवर्म्मदेव नृपतिर्वृत्तिन्नृपाणाभिमाम्।

---

1. *BEFEO, Vol. I* p.87

एनं..रणे॥
कृत्वाद्यांमवनीमनून विभवैर्दुर्गाश्च व प्रादिकां।
....................................भावीश्वरानव्रवीत्॥

अर्थ-

(अ) भृगुवंशियों और कम्बुवंशियों के एकत्रित की गयी भूमि के एक भाग में सुशोभित - एक शिखर की रचना की। सर्प (शेष नाग) के बने निवास-स्थान से बहुत प्रेम होने पर भी भगवान् शेषशायी इसके इन निर्मितियों में निवास किये जिसके महान् यश की सीमा श्री महा श्री जयगिरिजय सिन्धु था।

(ब) उसके द्वारा श्री जयसिन्धु पर्वत के चारों ओर दूध के समान उजला नाला।

(स) योग्या (योग्य लड़की) यशोधरपुरी के मणि भवनों की शोभा, पति पाने को उत्सुका, कुलपुत्री जयसिन्धुवस्त्रा, बहुत बड़े उत्सव में जिसमें उसके यश का वितान तना था, जगत् के कल्याण और सुतोत्पत्ति के लिए उसके द्वारा उसके हाथ में दी गयी।

अथवा

यशोधरपुरी के हस्तान्तरण में भी यह अर्थ लिया जा सकता है।

(द) पूर्व काल में जो राजा श्री धरणीन्द्रवर्मन का राज्य रक्षाविहीन था- बड़ा ही युद्ध कर श्री सूर्यवर्मन ने प्राप्त किया, स्वामी यशोवर्मन- स्वर्ग तक के विजय और त्रिभुवनादित्य और उससे भी चम्पेश्वर जयइन्द्रवर्मन जो अपनी शक्तिमद के लिए प्रसिद्ध था- प्राप्त किया। राजाओं के इस कार्यक्रम को सुनकर श्री जयइन्द्रवर्मन इस प्रकार के........ युद्ध में धन से कम हुए पृथ्वी को किला और चहारदीवारी बनाकर सम्पन्न और समर्थ करके........भावी राजाओं के लिए कहा- ॥

109

फिमनक अभिलेख
Phimanaka Inscription

फिमनक नाम का एक भवन अंगकोर थोम में है। इस भवन की नींव में एक खड़े पत्थर पर खुदा यह अभिलेख है। खड़ा पत्थर टूट गया है और यह अभिलेख बुरी तरह जर्जर अवस्था में है।

अभिलेख का प्रारम्भ त्रिकाया, बुद्ध और लोकेश्वर की प्रार्थना तथा जयवर्मन सप्तम की प्रशस्ति से है। यह अभिलेख जयवर्मन सप्तम की प्रथम रानी की भी चर्चा करता है जिसका नाम स्पष्ट नहीं है क्योंकि केवल अन्तिम भाग (देवी) ही बचा है। उनकी मृत्यु के बाद राजा ने उनकी बड़ी बहन इन्द्रा देवी से व्याह किया। ये दोनों बहनें रुद्रवर्मन तथा राजेन्द्रलक्ष्मी ब्राह्मण की पौत्रियाँ थीं। छोटी बहन जो प्रथम रानी बनी थी– अपनी बड़ी बहन जो उस समय एक पवित्र बौद्ध थी, से शिक्षा प्राप्त की थी। नागेन्द्रतुंग, तिलकोत्तरा तथा नरेन्द्राश्रम में रहने वाली बौद्ध भिक्षुणियों को इन्द्रादेवी ने पढ़ाया था। उसकी विद्वता तथा उसके संस्कृत के ज्ञान की पुष्टि इस वर्तमान अभिलेख से होती है। इस अभिलेख की रचना भी उसी ने

की।

इस अभिलेख में वह अपनी मृत छोटी बहन के पवित्र जीवन एवं कार्यों का वर्णन करती है। इस अभिलेख में जयवर्मन की चम्पा यात्रा तथा चम्पा के राजा द्वारा कम्बुज पर आक्रमण और कम्बुज के द्वारा चम्पा पर विजय का वर्णन है। फिनौट का विचार है कि यशोवर्मन ने चम्पा के राजा को मार डाला पर आर.सी. मजूमदार इस बात को सम्भव मानते हैं कि जय इन्द्रवर्मन ने कम्बुज के राजा को मार डाला।[1] अभिलेख की गड़बड़ी के कारण कोई निश्चित एवं स्पष्ट निर्णय नहीं निकाला जा सकता है।

सेदेस ने इन श्लोकों का भिन्न रूप से अर्थ लगाया है। उनके अनुसार राजा के बनने के पूर्व ही जयवर्मन ने चम्पा पर आक्रमण किया। इसी बीच कम्बुज के राजा यशोवर्मन द्वितीय के विरोध में एक क्रान्ति हुई। जयवर्मन शीघ्र ही वापस आया परन्तु तब तक राजा की मृत्यु हो चुकी थी। चमों का शासन काल बड़ा ही अशान्तपूर्ण था जब इच्छा होती कम्बुज पर धावा बोल देते थे। जयवर्मन को वनवास में रहना पड़ा और उनकी रानी को एक विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ा। अन्तत: जयवर्मन सप्तम की विजय हुई और उसे कम्बुज की राजगद्दी पर आसीन कर दिया गया। जयराज देवी को अपनी बड़ी बहन द्वारा बौद्ध धर्म की दीक्षा मिली। वह गहन धार्मिक पूजा एवं भक्ति में लीन रहती थी। उसने एक उत्सव किया जिससे वह अपने अनुपस्थित पति का चेहरा देख सके। जब उसके पति लौट आये, उसने अपना खैरात का कार्य बढ़ा दिया। राज्य के मुख्य मन्दिरों को उसने उपहार एवं दान दिये तथा बहुत सी मूर्तियाँ स्थापित की जिनमें अपने माता-पिता, सम्बन्धियों एवं दोस्तों की भी मूर्तियाँ थीं।

बहुत सी भिक्षुणियों की सहायता से एक नाटक किया गया। वह इस नाटक की रचयिता थी और घटनाओं के सृजन के लिए उसने जातकों के साधन उपलब्ध किये। इस अभिलेख में कुल 102 पद्य हैं। फिनौट[2] एवं सेदेस[3] ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।

श्रीधर्म्म कायञ्चनयन् य एकस

स(म्भोग) निर्म्माण तनु श्चतुर्धा।

1. *IK,* p.518
2. *BEFEO, Vol. XXV,* p.372
3. *IC, Vol.* II p.161

भिन्नोऽधिमोक्षैस् सुगतादिशाभ्यात्
साध्य(न्तमी)ड़े जगदेककायम्।।1
जिनाय शाक्येश्वर सर्व्ववेदिने
यथार्थ...............दते प्रकुर्व्वते।
जगद्धितं सङ्घमभेद्यमानसन्
त्रिभिन्न.........फलात्मने नमः।।2
लोकेश्वरो लोकहितानु लोभो
लोकान् स्व.......र्दधाद् यः।
वा(व) लाहकाश्वोऽब्धिगतावह श्च
नानाप..........सुत(रोवि)भाति।।3
भोक्तुं भुवं श्रीधरणीन्द्रवर्म्मा-
देवोद्भश् श्रीजयवर्म्मदेवः।
स मातरि श्रीजयराज चूडा-
मणौ जयादित्यपुरेश्वरायाम्।।4
वेदाम्बरैकेन्दुभिराप्त राज्यो-
वित्तो यशोभिस् स नरेन्द्रवर्य्यः।
कलङ्क मुक्तेन्दु कलाभिरामै-
र्म्मुक्ता(कला) पैरिव दिग्वधूनाम्।।5
विद्विड्द्विपेन्द्रवनितोन्नतदन्त सन्धेस्
सौख्यं स्पृशन् रणरतौ क्षणपाति तारिः।
यो नापतत् सुखमलं रमणीं नवोढ़ां
संप्राप्तवानिव विहीनकलावकाशाम्।।6
विशोष्य दृष्टि(ष्ट्या) द्विशतां हृदम्बु-
राशिं कृती यो जनमानसानि।
संपूर्य्य लोकार्थविधानदीप्त-
तृष्णाग्नितप्तस् स्म सदाधिशेते।।7
जित्वां स्मरं यस् स्ववपुर्गुणेन
कान्तेन कान्ताहृदयं प्रविष्टः।
नूनं स्मरस्यास्पदभित्यवेक्ष्य

तस्यापि..........प्रति साभिलाषः।।8
मनोश्वयोर्य्यस्य जिनप्रयाणे
वि.............ततोर्न भेदः।
भेदोऽतिदूरन्नगरागमे तु
.............पुरमापदश्वः।।9
सूत्रज्ञो यस् समाहारादस.....सने
साधूपकारिभावाच्च सूत्रक........हसत्।।10
लक्ष्म्या कृष्टो मदो यस्य विद्यया व....
तेजसा स घृणेनेवनीतो हस्त्य........कान्।।11
ऊर्द्ध्वमूर्द्धङ्गता यस्य कीर्त्तिमाला प्रभास्वरा।
बभौ मूढ़ेन्द्रियान् देवान् बोधयन्तीव........यान्।।12
सहस्रदर्शनः प्राप्तो लोकपालै.......तैः।
तेजोनुजेन यो दुष्टदैत्येषु दम(ने व्य)धात्।।13
वृषप्रियो महाक्षेत्रवीजारोप समुत्सुकः।
क्षेत्रीभूतां भुवञ्चक्रे यो दोर्दण्ड पु(ण्यै) दृढ़ैः।।14
यस्य प्रजापतेश श्रुत्या स्मृत्या सुप्त........।
वेद्योमनुभ्यामाधिक्यं सकला मेदि(नीगता)।।15
निबद्धय यः कृतयुगं गोषु कृ।
कर्कशं युगमुत्सृज्य क्षेत्र.............।।16
अनेकोग्रपुरञ्जित्वा दय...........।
रुषा दहन्तन्त्रिपुरञ्जहा...............।।17
कीर्त्तिर्दिक्षु स्वयं याता पत्युः.......।
श्रीस् सत्स्वनुज्ञया योऽस्याः कीर्त्त्या..।।18
ध्वस्तभूभृच्छिरोरत्नद्युतिः पादन(खांशुभिः)।
भास्वान् स्वभासा योऽर्केन्दु दीप्तं मेरुभिवाह(सत्)।।19
वशीकृताक्षस् सद्राज्यो दुर्योधननृपाग..........।
उक्तो युधिष्ठिराच्छेष्ठो यो ललज्ज नताननः।।20
स्रष्टुः कामोऽभिरामोऽपि सभायो मे पिमर्म्मभित्।
इतीव वीतमायो यः सृष्टः स्रष्टा मनोरमः।।21

त्यक्तास्र वित्तवृन्दस्य यथार्थन् द्विषदर्थिषु।
तृप्तिर्नः यस्य ददृशं यथैषान् दिक्षु धावनाम्।।22
द्रवीकृत्य द्विषत्कंसं देवविम्बे निधाय यः।
देवरूपस्थितिं कुर्वन्...............व्यधात्।।23
विरोध प्रशमे रक्तै..........रूपस्थितः।
युयुत्सुदैत्यैर्युद्धं यो जहा(सै)व हरिं सदा।।24
सर्व्वक्ष्मां रक्षयन् पुण्यैः पुरुषायुषभानुषाम्।
न केवलं कलिं सर्व्वान् युयुत्सूनापि योऽजयत्।।25
भूमिर्भूर्य्यातपत्रे पि पूर्व्वराज्यऽति तापभाक्।
चित्रमेकातपत्रे यद् यद्राज्ये तापभत्य जत्।।26

VV 27-52 are too damaged to be reproduced only a few verses of importance are quoted below:

तस्याभव(च्छ्री जय राज दे)वी
नामाग्र देवी.......................।
सौन्दर्य्य राशि रन.............
सृष्टिं परां य........................।।30
यस्यास् सुमा(ता)...................
नाम्ना पिता श्री ज.................
(श्री) रुद्रवर्म्म............(पितामहा)....
(पि)तामही श्री.....................।।33
(माताम)हः........................
...................विप्र.................।
(रा)जेन्द्र लक्ष्मीर्व...................
(माताम)ही व.....................।।34
राजेन्द्र लक्ष्म्य......................।
....।।35
सा नाथभ(क्ता).....................।
वाष्पै...................................।।43
श्रीइन्द्र(देव्य) ग्रभवा च गङ्गा।।47

सा भर्त्त......................
यद् यत्तपो दुष्करम्........मच्छैः।
चक्रे.......................सिद्धम्
अभ्यस्तमिष्टं सुलभं हि..........रे॥50
रामप्र....................रेणं रामं
प्राप्तां वियुक्ताञ्च स.......सीताम्।
प्रियप्र.......................यथोभा
प्रियङ्गुता स्यामिति..............स्था॥51
लावण्य............तपोभिस्तप्रामनष्टामविवर्जित........।
साध्ये दुरा..........सन्तस् समस्तान् गणय.........सौख्यम्॥52
कमग्रवीजं संवर्द्धयमानं मतिकाल वृष्ट्या।
कर्म्म..........फलं समापदृ व्रतकर्शितात्मा॥53
व्र.............इमा चरन्ती
................महानवम्यां पथि सा चचार।
तपः.......................याता
संदर्शयन्ती चरितं सतीनाम्॥54
तदा................मदोऽस्या
जटापिधानं हृतवान् करेण।
.................नेव पक्षं
प्राकाशयद् यानमुपाहितेष्टम्॥55
................गमनं समीपं
ज्ञात्वापि सा व्यक्त तपः समृद्ध्या।
...............पि प्रपेदे
कृत्यं हि चित्ते महतान्न संपत्॥56
..........................तीन्द्रवर्म्मा
लब्धोदयेश लववद्विनीतः।
..................तप श्चरिष्य(ष्यं)-
न्त(स्त) या निषिद्धः पुनरुक्तदोषात्॥57
तपोग्रवृक्षे सुनिमित्त पुष्प-

न्तां प्राप्नुवन्तीं समुचेत्य भूत्याः।
............यागभादादिपञ्जनन्या
निन्युर्यथावद् विततध्वशोभाः।।58
श्रीइन्द्रदेव्यग्रभवानु शिष्टा
बुद्धं प्रियं साध्यमवेक्षमाना।
(दुःखा)म्बुतापानल मध्यवर्त्ति-
वर्त्माचरत् सा मुगतस्य शान्तम्।।59
..........क्षचिन्ता गजरूप बुद्धं
पुरा जटाच्छादनमाहरन्तम्।
............कर्षणोत्कम्
पुनर्नयन्तं स्वपथं ववन्दे।।60
.............व ज्वलन्तं
वह्निं समीक्ष्याग्नि गृहे तभेव।
...........................थे व
विगण्यमानामगमत् सुसिद्धिम्।।61
...................भ्यमान्
भीष्मातिकान्तं प्रियभेव साक्षात्।
................दुःखं
सुखायमानं स्मरणे प्रपेदे।।62
........................देशं
भर्त्रापता स्पर्द्धमिवाप्नुवन्ती।
..........................भासा
सन्दर्शिनात्मा क्षिति देवतेव।।63
....
पुण्येन सा भतृनितान्तभक्त्या।
............................खानि
श श्वद् ययाचे प्रणिधानशक्त्या।।64
............(य)शोवर्म्म..........र्षे-
र्भृत्येन राज्योदयतत्परेण।

............तेऽत्याशु नराधिपन्तं
राजोपकुर्व्वन् विजयान्निवृत:।।65
...............तोऽप्याहृतजीव राज्ये
प्राक् श्रीयशोवर्म्मनृपे तु तेन।
.............कारो दुरितातिगुर्व्व्या-
स्त्राणे भुव: कालमुदीक्ष्य तस्थौ।।66
.............वेव प्रतिलभ्य यत्नै-
र्नाथं श्रमान् व्यक्तवती सुदिव्या।
..........(समु) द्धरिष्यन्तमिभान्निमग्ना-
मापत्ययोधौ क्षितिमभ्यकाऽक्षत्।।67
............व स श्रीजयइन्द्रवर्म्मा
चाम्पेश्वरो रावणवत् प्रमत्त:।
.............भानौरथनीत सैन्यो
योद्धङ्गतो धोसम कम्बुदेशम्।।68
...........दा दक्षिणदिक्स्थितेन
यमेन दुष्टे रविणा च शीते
.........र्ग्गो युधि संग्रहीतुं
विपाकयुक्तन्नृपतिं बबाधे।।69
............यत्नैस्तरणैरपार-
वीराम्बुधिन्तं समरे विजित्य।
(लब्धाभिषे)को विजयादिजित्या
भुवं विशुद्धां बुभुजे स्तवार्च्याम्।।70
................णीशे महिषी........सा
सम्पत्प्रकर्षैः कृत्तपुण्यभारा।
............सर्व्वजनेषु.............
फलप्रदा तेषु जगद्धितोत्का।।71
.............सुतपोनि............
गङ्गामिव प्राप्तनृपेन्द्रनाथा।
............धधिक प्रदान-

वृष्ट्यामिपूर्णाम्करोत्कृतज्ञा।।72
त...........वद् व्रतञ्च
बौद्धं फलं साप्तवती च साक्षात्
तपो................या युयोज
स्वनर्त्तकी र्जातककसार नाटैय:।।73
सर्वेन...................ष्ट..........
श्रुतस्य हान्या विषयैः प्रमत्ताः।
राज्ञे निवेद्याशु तया विगत-
बन्धाः श्रुतस्था द्विजतां समीयुः।।74
हृता(मृ)तादाहित सत्क्रियाश्च
परम्पराज्ञापिता वृत्तयश्च।
संप्राप्त पुण्य प्रसवाश्च तस्या
यशोऽति शुभ्रं भुवनेषु बभ्रुः।।75
कृतज्ञतां सा वितितान राज्ञः
संपत्प्रकाशैर्भुवि भूधरोऽपि।
संपत्प्रदो.............ण सम्पदोस्याः
(परस्य)रस्योप कृतौ स्फुटौ द्वौ।।76
सा सा .... ती वदन्या
देवार्थिसाद्भूत विभूतिसारा ।
पात्र प्र..................यत्नैः
पूजा प्रदीपैर्नृप कोश तुल्यैः।।77
क्षेत्रे.................नाग्रारत्न-
प्रासाद संस्थापितयातृदेवान्।
षट्त्रिंश.............हेम-
कट्टीभिरग्निद्युति सन्निभाभिः।।78
त्यक्तं प्रसूभिः क्षतमेव बाला-
वृन्दं गृहीत्वा शतशः सुताभम्।
प्रावर्द्धयत् कीर्त्तितधर्म्मधर्म्म-
कीर्त्त्याह्वयं सा सुखसंपदाद्यम्।।79

तथा नियुक्त व्रत दान वस्त्रं
प्राव्राजयत् साध्ययन प्रशस्तम्।
ससीम संपादित धर्म्मकीर्त्ति-
ग्रामं सदा रक्षित धर्म्मकीर्त्तिम्।।80
सा दुन्द(न्दु)भिं हेमकृतन् ध्वजञ्च
सुवर्णरुप्यै रचिताग्रचदण्डम्।
चीनांशुकैः कल्पित चित्र वस्त्रं
प्रादाद् वरं पूर्व्वतथाभताय।।81
दिदेश सा श्रीजयराजचूडा-
मणौ हिरण्याहितनन्दि युग्मम्।
श्येनांश्च हैमांश्चतुरस् सदण्डान्
सदीपकोशाज्ज्वलिनान्निरन्तम्।।82
सा श्रीजयश्री सुगते तथादान्
नन्दि द्वयं सिंह युगञ्च हैमम्।
सदर्पणां स्वर्णमयीं श्रियञ्च
चाभीक रञ्जाभरमप्युदारम्।।83
रत्नाङ्घ्रिविन्यास मचिन्त्य रूपं
कमण्डलुं स्वर्णमयञ्च कोशम्।
भोज्यासनं विंशतिकट्टिकाभिः
कृतञ्च हेम्नामतिदीप्तभासाम्।।84
हैमं समुद्रं मणिरञ्जिताङ्ग-
न्दीपस्य पादञ्च सुवर्णजातम्।
घृतञ्च तुश् श्री प्रतियातनाभिस्
सुवर्णजं पत्थरमप्यचिन्त्यम्।।85
हैमन्तथा चुम्वलमुन्नताग्रं
संस्थापिते चाष्टमहाभयानाम्।
प्रभञ्जके कंसमये जिनेऽदाद्र
ग्रामद्वयं लेखदृढ़ाभिधानम्।।86
भद्रेश्वरे रूप्यमयं सुवर्णे-

रालैपितन्दुन्दुभिमप्यदात् सा।
देवञ्च भद्रेश्वरपुत्रभूत-
मस्थापयद् दुन्दुभि संज्ञमर्थात्।।87
चाम्पेश्वराख्ये च सुरे विमाये
बुद्धे च पृथवद्र्यभिधानके च।
शिवेऽदिशद्दुन्दुभिमेकमेकं
सा स्वर्णलिप्तं कृतरूप्यपूर्व्वम्।।88
सा श्रीजयक्षेत्रशिवे च देवं
महेश्वरं श्री जयराज पूर्व्वम्।
नाम्नेश्वरीञ्चात्र तथा सपूर्वा
मस्थापयत् कल्पित देशभूमाम्।।89
दिदेश मध्याद्रि सुरे सभूषा(षां)
न्त(स्त)त् संश्रुतान् सा विजय प्रयाणे।
भर्त्तुर्निर्वृतौ महदुद्भवाय
ध्वजान् शतञ्चीनपटैर्विचित्रान्।।90
'वसुधातिलकं' पूर्व्वक्षितीशेन शिलाकृतम्।
स्वर्णैः प्रावृत्य सा धर्म्माद् धोभूम्यो स्तिलवंशधात्।।91
सा साधु तत्र त्रिगुरून् सौवर्णान् रत्नभूषणान्।
अस्थापयच्छिवपुरे प्रतप्तानिव भास्वरान्।।92
मातरं पितरं भ्रातृसुहृद्बन्धु कुलानि च।
ज्ञातानि ज्ञापितान्येषा सर्व्वत्रास्थापयत् सुधीः।।93
सा भर्तृभक्ति सुदृढ़ा निर्व्वास्यन्त्यप्यनन्तरम्।
मध्याह्न कृत्य संपन्ने नाथे निर्व्वाणभागता।।94
तस्याञ्जनन्यधिगुणञ्जनन्द नापा-
न्निर्व्वाणभानि जगताज्ज्वलिताधि वह्निम्।
तत्पूर्व्वजा नृपतिना विहिताभिषेका
श्री इन्द्रदेव्यभिधिका नयति स्म शान्तिम्।।95
रूपन्तदा श्रीजयराजदेव्या
राजात्मरूपैस् सह भूरिसङ्ख्यम्।

संस्थापयन् सर्व्वपुरे जिनानां
स्वमन्दिरे चाभिररक्ष लक्ष्मीम्।।96
श्रियं श्रिया रूपजुषां सरस्वतीं
विचारकागाञ्च विजित्य विधया।
विपक्षलक्ष्मीञ्च सुभाग्यशोभया
स्वनाम् तत् कर्म्मगता क्रमेण या।।97
नगेन्द्र तुङ्गे वसुधादिके श्रुतौ
जिनालये या तिलकोत्तरे तथा।
महीभृताध्यापक सत्तमाहिता-
वरोध वृन्दाध्ययनं सदा व्यधात्।।98
स्थिता नरेन्द्राश्रमनाम्नि धाम्नि या
नरेन्द्रकान्ताध्ययनैर्मनोरमे।
रराज शिष्याभिरज्ञस्त्रचिन्तिता
सरस्वती मूर्त्तिमतीव तद्विता।।99
नाम्ना पुरे दन्तिनिकेतने श्री-
सरस्वती पूर्व्वपुरे च पश्चात्।
द्विजात्मजा राजकुलोत्तमा या
यशोधरायां पुरि राजकान्ता।।100
याक्रम्य नम्रशिरसोद्धतराजपादा
गङ्गाम पास्तचरणं शिवमूर्द्धिकोपात्।
कान्तास्वपि श्रुतरतासु नृप प्रसादान्
सारैः श्रुताकृतिकृतान् वितनान कान्तैः।।101
स्वभावभूत प्रतिभा बहुश्रुता
सुनिर्म्मला श्रीजयवर्म्मदेवभाक्।
इदं प्रशस्तं विमलं विधाय सा
निरस्तसर्व्वान्यकला विदिधुते।।102

अर्थ- जिस एक ने श्रीधर्मकाय को जन्म दिया, चार प्रकारों से सम्भोग के निर्माण करने वाले (जिस एक ने) बुद्ध आदि की शान्ति से अधि मोक्षों

से भिन्न जगत् रूप एक शरीर वाले, साधन करने योग्य उस ईश्वर की स्तुति करता हूँ।।1

शाक्य सिंह सब कुछ जानने वाले 'जिन' के लिए..........यथार्थ. ....दते.......करने वाले के लिए जगत् के हितकारी संघ जो भेद के योग्य मन वाला नहीं है उसे तीन प्रकारों से भिन्न....फल है आत्मा जिसके उसे नमस्कार है।।2

लोक के ईश्वर लोकहित के लिए अनुकूल.......जो लोकों को अपने.......धारण करता हुआ। बलाहक नाम अश्व वाला समुद्रगत आ = समन्तात् भाव से बहने वाला, ढोने वाला नहीं पाया........भली-भाँति विशेष रूप से सोहता है।।3

पृथ्वी को भोगने के लिए श्री धरणीन्द्रवर्मन राजा से उत्पन्न श्री जयवर्मन राजा वह श्री जयराज चूड़ामणि माता में जयादित्यपुर की स्वामिनी में जन्म लिया।।4

1114 शाके में राज्य प्राप्त करने वाला राजाओं में श्रेष्ठ कीर्तियों से धनी, कलङ्क से मुक्त दिग् रूप बहुओं के मोती समूहों के समान शोभायमान मालूम पड़ता था।।5

शत्रु रूप गजेन्द्र की स्त्री की ऊँची दाँतों की जोड़ से सुख को छूता हुआ युद्ध की रति में एक क्षण में शत्रु को गिरा चुकने वाला, जो सुख नयी ब्याही हुई रमणी में पर्याप्त सुख में न पड़ सका था नयी ब्याही हुई रमणी को पा चुकने वाले के समान कला के अवकाश से विहीन नवोढ़ा को पाने वाले के समान मालूम पड़ता था रण रमण में ही सुख है।।6

दृष्टि से शत्रुओं के हृदय के जल समूह को विशेष रूप से शोषण करके प्रयत्नवान् जिसने जन के मानसों को सम्यक रीति से पूर्ण करके लोक के प्रयोजन के विधान से प्रकाशित तृष्णा रूप अग्नि से तपा हुआ सर्वदा सुख की नींद सोता था।।7

जो अपने शारीरिक गुण से कामदेव को जीत सुन्दर शरीर के गुण से सुन्दरी के हृदय में पैठा हुआ निश्चित ही यह कामदेव की प्रतिष्ठा का स्थान है यह देखकर उसके भी...........प्रति अभिलाषा से युक्त था।।8

जिस 'जिन' के युद्ध प्रस्थान में मन रूप घोड़े के वि...........नहीं

भेद ज्ञात होता था भेद अतिशय दूर............नगर में आगमन होने पर तो ... .पुर को प्राप्त किया अश्व ने।।9

सूत्र का ज्ञाता जो समेटने से..........सने और अच्छे उपकारी भाव से सूत्रक..........हँसा।।10

लक्ष्मी से आकृष्ट जिसका मद विद्या से ....वह तेज से मानो सूर्य से ले जाया गया हाथी घोड़े..........कान्।।11

जिसकी प्रकाशमान कीर्ति रूप माल सिर के ऊपर गयी थी मूढ़ इन्द्रियों वाले देवों को समझाती हूई सी शोभती थी।।12

इन्द्र ने प्राप्त किया था लोकपालों के द्वारा................उनके द्वारा, तेज के छोटे भाई के द्वारा जो दुष्ट दैत्यों पर दमन कर सका था।।13

धर्म रूप बैल को प्यार करने वाला, वृष है प्रिय जिसको, या वृष का प्रिय महा खेत में बीज के आरोपण करने में सम्यक प्रकार से उत्कण्ठित होने वाले ने पृथ्वी को खेत रूप कर दिया था जिसने अपने बाहुरूप डण्डों के मजबूत धर्मो से।।14

जिस प्रजापति के श्रवण से स्मरण से सोया........ब्रह्मा और मनु से अधिकता समूची पृथ्वी में प्राप्त थी।।15

जिसने सत्ययुग को गोरूप धर्मों में बाँध करके.......। कठोर युग को त्याग करके...क्षेत्र।।16

अनेक उग्रपुर को जीत करके..........क्रोध से त्रिपुर नामक दैत्य को जलाते हुए....जहाँ।।17

कीर्ति दिशाओं में स्वयम् गयी हुई थी स्वामी के............। लक्ष्मी सज्जनों में अनुज्ञा से......जो इसकी कीर्ति से।।18

नष्ट किये राजाओं के सिरों के रत्नों की छवि वाला पैरों के नखों की किरणों से अपने तेज से प्रकाशमान जो, सूर्य के तेज से प्रकाशमान मेरु पर्वत की मानो हँसी उड़ाई।।19

जुए को वश में करने से अच्छे राज्य पाने वाले दुर्योधन राजा के.. ....कहा हुआ युधिष्ठिर से श्रेष्ठ कहे जाने पर जो सिर नीचे करके लज्जित हुआ था।।20

कामदेव सा सुन्दर भी छल से युक्त मेरी सृष्टि के मर्म को भी

छेदन करने वाला है मानो इस प्रकार माया से रहित होकर जो मनोरम स्रष्टा रचित हुआ था।।21

त्याग दिया है आँसू, हथियार, धनों के समूह जिसने ऐसे जिसके शत्रु याचकों की यथार्थ तृप्ति नहीं देखी थी जैसी तृप्ति दिशाओं में दौड़ते हुओं की थी।।22

शत्रु रूप कंस को पिघला करके देव के विम्ब में रखकर जो देव के रूप की स्थिति को करता हुआ..................विधान किया था।।23

विरोध की शान्ति में रक्तों से............उपस्थित। युद्ध करने की इच्छा करने वाले दैत्यों से जो युद्ध को, सर्वदा विष्णु को हँसा था।।24

समूची पृथ्वी की रक्षा पुण्यों से करता हुआ जो पृथ्वी पुरुष की आयु वाले मानुषों वाली थी। केवल कलि को नहीं, सभी युद्ध करने की इच्छा वालों को भी जिसने जीत लिया था।।25

पूर्वतन राज्य में बहुत छातों के रहते भी भूमि अतिशय ताप की भागिनी थी। विचित्रता यह है कि एक छत्र के रहने पर भी भूमि ने राज्य में ताप को छोड़ा था।।26

श्री जयराज देवी उसकी हुई नाम की अग्रदेवी........... सुन्दरताओं की राशि रन...........सबसे अच्छी परा सृष्टि को............।।30

जिसकी सुन्दरी माता.............नाम से पिता श्री ज............श्री रुद्रवर्मन.........पितामह–दादा पितामही–दादी...............श्री.................. .।।33

मातामह = नाना............ब्राह्मण.............राजेन्द्रलक्ष्मी......... मातामही–नानी......।।34

राजेन्द्रलक्ष्मी अ..................।।35

वह नाथ की भक्तिन...................वाष्प=भाप, आँसू में........... ....।।43

और श्री इन्द्रदेवी की जेठी बहन गंगा।।47

वह भर्त......जो जो तप दुष्कर मच्छै.......किया.........सिद्ध हुआ अभ्यास किया हुआ।।50

रामप्र.............रेम.............राम को। उसने पायी हुई और

विरहिणी.........सीता को। प्रिय प्र.......जैसी उमा...........प्यारी हूँगी.........
यह...........स्था..........।।51

सलोनापन............तपस्याओं से तप्त हुई अविनष्ट हुई अविवर्जित= विशेष रूप से न वर्जित...........साधन के योग्य में दुरा..........सज्जन लोग सभी को गण्य.......सौख्य को।।52

.........किस अग्रवीज को जो सम्यक रूप से बढ़ रहे को अतिकाल वर्षा से कर्म फल को समाप्त किया व्रत से दुबली आत्मा वाला।।53

.............इमा चलती हुई..............महा नवमी में रास्ते में उसने किया.........तप.......प्राप्त हुई सतियों के चरित्र को।।54

.........तव...............इसका मद............जटा रूप ढक्कन को हाथ से हटाया..........नेव समान............पक्ष को प्रकाशित किया जिन्हें समीप में आहित रखे.........।।55

...........गमन समीप................जानकर भी वह तपस्या को व्यक्त करने वाली समृद्धि से.........भी............प्रपन्न हुई..........क्योंकि महान् लोगों के चित्त में कृत्य सम्पत्ति नहीं है।।56

.......इन्द्रवर्मन......लाभ किया है उदय के ईश को जितने वह लब्धोदय........लव के समान नम्र..........तप का आचरण करते हुए पुनः कहने के दोष से उसके द्वारा मना किया गया।।57

तप के अग्र वृक्ष में सुन्दर निमित्त रूप फूल को उसे पाती हुई के समीप जाकर ऐश्वर्य से........यज्ञ के हिस्से आदि पद को पैदा करने वाली से विस्तृत मार्ग की शोभाओं को यथावत् रूप से लिया था।।58

श्री इन्द्रादेवी की बड़ी बहन, अनुशासन में रहने वाली प्रिय बुद्ध के साध्य को देखती हुई, दुःख और पछतावा रूप अग्नि के बीच वाले मार्ग का आचरण किया- उसने बुद्ध के शान्त मार्ग को अपनाया।।59

..........क्ष चिन्ता गज रूप बुद्ध को पहले जटा रूप ढक्कन को हटाते हुए (को).......खींचने में उत्सुक को फिर अपने रास्ते पर ले जाते हुए को प्रणाम किया।।60

.......व जलते हुए अग्नि को भली-भाँति देखकर अग्नि गृह में

उसी को ....थे व समान विशेष गणना करती हुई सफलता को प्राप्त हुई।।61

...........भ्यगात्= प्राप्त हुई। भयंकर और अति सुन्दर साक्षात् प्रिय को ही.........दु:ख को सुख के समान स्मरण में समझा।।62

..........देश को स्वामी के अधीन होड़ लेने के समान प्राप्त करती हुई.....तेज से......सम्यक रूप से दिखाये हुए आत्मा वाले पृथ्वी देवता के समान।।63

पुण्य से वह स्त्री स्वामी की नितान्त भक्ति से .....सुखों को सनातन रूप से निवेदन की शक्ति से याचना की।।64

..........यशोवर्मन.............राज्य के उदय में तत्पर नौकर से........ .वे अतिशय, शीघ्र उस राजा को उपकार करता हुआ विजय से निवृत्त हुआ।।65

आहरण किये हुए प्राणियों के राज्य में पहले श्री यशोवर्मन राजा में उससे उसके द्वारा ....अतिशय भारी पाप क्रिया से पृथ्वी के रक्षण में समय को देखकर ठहरा था।।66

..........नेव, कोशिशों से प्रतिलाभ करके स्वामी को मेहनत से सुन्दर दिव्य ने त्यागा था, इस उद्धार करते हुए को, डूबी हुई को, आपत्ति रूप समुद्र में पृथ्वी को चाहा था।।67

.......वह श्री जयइन्द्रवर्मन चाम्पेश्वर रावणतुल्य मतवाला......... ..सूर्य में............रथ से ले जाये गये सैनिक जिसके, ऐसा वह युद्ध के लिए गया, स्वर्ग के समान कम्बुज देश को।।68

.........रा, दक्षिण दिशा में स्थित यमराज से दूषित किये हुए और सूर्य से शीत में....युद्ध में संग्रह करने के लिए फल से युक्त राजा को बाधा दी थी।।69

.........यत्नों से तैरने वाली नावों से उस अपार वीरों के समूह रूप समुद्र को युद्ध में जीतकर राज्याभिषेक पा चुकने वाला विजय आदि जीत से स्तुति से पूज्य विशेष शुद्ध भूमि को भोगा था।।70

....पटरानी........वह सम्पत्ति की उत्पत्तियों से कर लिया है पुण्य के भार को जिसने वह (स्त्री).........सभी जनों में फल प्रदान करने वाली,

उनमें जगत् के हित में उत्सुक हुई।।71

.........सुन्दर तप रूप अग्नि...........गंगा के समान नृपेन्द्र= राजा को नाथ के रूप में पाने वाली........आदि अधिक प्रदान की.......वर्षा से पूर्ण कृतज्ञा ने की थी।।72

........तुल्य और व्रत को और बुद्ध सम्बन्धी फल को उसने साक्षात् पाया था....तप जिसने जोड़ा अपनी नर्तकियों को जातक युग के श्रेष्ठ नाट्यों से।।73

सभी नहीं.........ष्ट...........सुने हुए की हानि से विषयों से मतवाले राजा को शीघ्र निवेदन करके उसके द्वारा खुले बन्धन वाले सुने हुए पाठों में स्थित ब्राह्मणत्व को पा सके थे।।74

और हरण किये अमृत से सत्कर्म कर चुकने वाले और परम्परा से मालूम कराये वृतान्तों वाले और पुण्य के फल को सम्यक तथा पाने वाले.......उसकी कृति अति श्वेत भुवनों में बिखरी थी।।75

राजा की कृतज्ञता को उसने बिखेरा सम्पत्ति के प्रकाशों से भूमि पर राजा भी सम्पत्ति देने वाला..........इसकी सम्पत्तियाँ दूसरे के उपकार में दोनों स्पष्ट प्रतीत हुए थे।।76

वह स्त्री सा...........दाता के गुण से युक्त (उदार) श्रेष्ठ ऐश्वर्य देवता और याचकों में वितरित कर चुकी अच्छे व्यक्ति प्रयत्नों से पूजा के दीपों से राजा के खजाने के तुल्यों से।।77

खेत में..........रत्नों के द्वारा निर्मित राजभवन और देवमन्दिर में.... .....और देवों को.....छत्तीस सुवर्ण की कट्टियों से जो अग्नि की कान्ति सी छवि वाली थीं उनसे।।78

माता-पिता से छोड़े हुए क्षीण हुए बालिकाओं के समूह को, जिनकी संख्या सैकड़ों थी, अपनी पुत्री के समान ग्रहण करके (स्त्री) उसने सुखों और सम्पत्तियों से समृद्ध कीर्तन किये हुए प्रसिद्ध धर्मवाली धर्मकीर्ति नाम से यश को पूर्णरूप से बढ़ाया था।।79

वैसे ही नियुक्त किये व्रत के दान वस्त्र वाले को उसने अध्ययन से प्रसिद्ध रूप में संन्यासी बनाया था। सीमा सहित धर्मकीर्ति के समूह को सम्पादित कर हमेशा रक्षित धर्मकीर्ति को बढ़ाया।।80

उस स्त्री ने सोने के नगाड़े और सोने की ध्वजा जिसके अग्रिम डण्डे सोने और रूपे से रचित थे श्रेष्ठ रेशम, गेरुए वस्त्रों से कल्पित विचित्र वस्त्र को पूर्व बुद्ध को प्रदान किया था।।81

उसने श्री जयराज चूड़ामणि को सुवर्ण निर्मित दो नन्दी, डण्डे सहित चार सुवर्ण निर्मित बाज पक्षी समूह, दीपकोष सहित जो हमेशा जलने वाले थे दिये थे।।82

तथा उसने श्री जयश्री बुद्ध देव को दो नन्दी, जो सोने के बने थे और सोने के बने दो सिंह दर्पण सहित स्वर्ण रचित लक्ष्मी और स्वर्ण रचित उदार बड़ा चामर (चँवर) ये सब वस्तुएँ प्रदान रूप में समर्पित किये गये थे।।83

रत्न द्वारा चरण के विन्यास से युक्त न चिन्तन करने योग्य रूप को, स्वर्णमय कमण्डलु और स्वर्णमय कोष, भोज्य का आसन, बीस कट्टिकाओं से सोने से रचित अत्यन्त प्रकाशयुक्त दिये थे।।84

सुवर्ण से बने मुद्रा सहित, सुवर्ण मुद्रा अशर्फियों से युक्त जिसके अंग मणियों से रंगे थे, सुवर्ण से बने दीप के चरण चार श्रीमूर्तियों से धारण किये हुए जो चार श्रीमूर्ति और प्रतिमाएँ सुवर्ण रचित थीं, पत्थर भी अचिन्तनीय थे।।85

तथा सुवर्ण निर्मित ऊँची फुनगी वाला चुम्बल, आठ महामयों के सम्यक रूप से स्थापित प्रतिमा को प्रभञ्जक कंसमय 'जिन' को दिया दो ग्राम लेख दृढ़ नाम से प्रसिद्ध किया था।।86

उसने भद्रेश्वर को रूप्य से बने सुवर्णो से आलेपित नगाड़ा भी दिया था। भद्रेश्वर के पुत्र रूपदेव की दुंदुभि नाम से स्थापना की।।87

चाम्पेश्वर नामक देव और माया से विगत बुद्ध (विमाय बुद्ध) जो पृथ्वाद्रि नाम से विदित है शिव को एक नगाड़ा दिया था जो स्वर्ण से लिप्त था और पूर्व में उसकी रचना रूप्य (चाँदी) से हुई थी।।88

उस स्त्री ने श्री जयक्षेत्र शिव को और श्री राजमहेश्वर देव को तथा ईश्वरी नाम से यहाँ स्थापित किया था तथा बहुत स्थान और भी दिये थे।।89

मध्याद्रिदेव को आभूषण सहित भली-भाँति सुने हुओं को उसने

विजय के प्रयाण में स्वामी के लौटने में महान् उत्सव के लिये, सौ ध्वजाएँ जो रेशम के वस्त्रों से निर्मित थीं, प्रदान की थी।।90

पूर्वतन राजाओं से शिला रचित 'वसुधातिलक' नामक को स्वणों से मढ़ करके उस स्त्री ने धर्म से स्वर्ग, आकाश और भूमि का तिलक बना डाला था।।91

उसने अच्छी तरह वहाँ तीन गुरुओं को जो सोने के बने थे रत्नों और अलंकारों से युक्त थे उन्हें शिवपुर में प्रकाशमान प्रतापी के समान तेजस्वी रूप में स्थापित किया था।।92

इस सुन्दर बुद्धिवाली पण्डिता ने माता, पिता, भाई और बन्धुओं के वंशजों को जो स्वतः ज्ञात थे और दूसरों से मालूम कराये गये थे, सबकी स्थापना की थी।।93

वह स्वामी की भक्ति से सुन्दर रीति से दृढ़ थी जो बाद में निकाली गयी भी थी तथापि उसके बावजूद भी मध्याह्न का कालिक कृत्य के सम्पन्न कर लेने पर स्वामी नाथ में मोक्ष (निर्वाण) को प्राप्त कर लेने पर मुक्त हुई।।94

उसकी माता के गुणों से युक्त जनों के प्रसन्न करनेवाली, भुवनों के ज्वलित अग्नि में मोक्ष पाने पर उसकी बड़ी बहन राजा के द्वारा अभिषेक द्वारा राज्य सत्तासीन की गयी श्री इन्द्रदेवी इस नाम से प्रसिद्ध शान्ति को प्राप्त हुई थी।।95

तब श्रीराज देवी के रूप को राजा के आत्मा के रूपों के साथ भारी संख्या में 'जिनों' के सभी पुरों में सम्यक रूप से स्थापित किये गये थे और अपने मन्दिर में लक्ष्मी की सभी भावों से रक्षा की थी।।96

जो क्रमशः रूपों से प्रीति करने वालों की लक्ष्मी को श्री=शोभा और लक्ष्मी से सरस्वती जी के विचारकों को विद्या से जीत करके और सुन्दर भाग्य की शोभा से शत्रु की लक्ष्मी को उस अपने नाम को कर्मगत किया (व्यवहार में लाया था)।।97

जो ऊँचे पर्वत राज पर जो पृथ्वी से अधिक ऊँचा था ऐसे श्रुति-वेद मं 'जिन' मन्दिर में तथा तिलकोत्तर में राजा के द्वारा श्रेष्ठ अध्यापकों से भरे अवरोधों के समूह का अध्ययन हमेशा विधानतः किया

करती थी।।98

जो नरेन्द्राश्रम नामक धाम पर स्थित थी जहाँ राजाओं की रानियों के अध्ययन करने से मन रमण करने लायक स्थान था वहाँ शिष्याओं से नित्य चिन्तन में रत रहने वाली सरस्वती की साक्षात् मूर्ति वाली सी उन शिष्याओं की हितकारिणी रूप से स्थित रहने वाली थी।।99

नाम से दन्तिनि केतनपुर में श्री सरस्वतीपुर में पूर्व और पश्चात् जो ब्राह्मण की पुत्री राजवंश में श्रेष्ठ यशोधरपुरी में पीछे राजा की रानी बनी थी।।100

जिसने लम्बे सिर राजा के चरणों से उद्धृत गंगा को आक्रमण कर जो क्रोध से शिव के सिर पर चरण रखने वाली गंगा जी को पाठ सुनने में रत रहने वाली सुन्दरियों के रहने पर राजा की प्रसन्नताओं को बहुत सुन्दर और श्रेष्ठ सुने उपदेशों की आकृतियों को करके विस्तारित किया था।।101

स्वभाव से उत्पन्न प्रतिभा जो बहुश्रुत थी बहुत पाठ सुन चुकी थी सुन्दरी निर्मला श्री जयवर्मन राजा की भगिनी थी उसने इस प्रसिद्ध निर्मल को विधान करके उसने सभी अन्य कलाओं को परास्त कर विशेष रूप से प्रकाशमान हुई थी।।102

110

फिमनक द्विभाषी अभिलेख

Phimanaka Bilingual Inscription

अंगकोर थोम के क्षेत्र में यह अभिलेख है। इस अभिलेख में अश्वत्थ वृक्ष की रक्षा के लिए (जिसे ख्मेर मूल लेख में महाबोधि कहा गया है) प्रार्थना की गयी है। इस वृक्ष को ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के साथ पहचान की गयी है। इस देश के धार्मिक इतिहास में यह अभिलेख एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है क्योंकि इसमें बौद्ध धर्म तथा ब्राह्मण धर्म के बीच समझौते का प्रमाण है। जयवर्मन सप्तम के शासन-काल का यह अभिलेख है।

इस अभिलेख में 3 पद्य हैं जो सभी शुद्ध एवं स्पष्ट हैं।[1]

ब्रह्ममूल शिवस्कन्ध विष्णुशाख सनातन।
वृक्षराज महाभाग्य सर्व्वाश्रय फलप्रद॥1
मा त्वाशनिर्म्मा परशुर्म्मानिलो मा हुताशनः।

---

1. *BEFEO, Vol. XVIII,* p.9

या राजा या गजः क्रुद्धो विनाशमुपनेष्यति।।2
अक्षिस्पन्दं भ्रुवोस् स्पन्दन्दुस्स्वप्नन्दुर्व्विचिन्तितम्।
अश्वत्थ शमयेत् सर्व्वं यद्दिव्यं यच्च मानुषम्।।3

अर्थ- ब्रह्मदेव जिसके मूल में हैं, भगवान् शिव जिसके स्कन्ध में निवास करते हैं तथा भगवान् विष्णु जिसकी शाखाओं में सनातन रहते हैं ऐसे हे महाभाग्य, सर्वाश्रय, फलदाता वृक्षराज अश्वत्थ आपका विनाश न तो वज्र, न परशु, न हवा, न अग्नि, न राजा और न क्रुद्ध हाथी ही कर सकेगा।।1-2

हे अश्वत्थ वृक्षराज, आँखों के फड़कने से भौंहों के फड़कने से, दुस्स्वप्न से, पुनर्विचार से, देव सम्बन्ध से तथा मनुष्य सम्बन्ध से उत्पन्न अशुभों का शमन करें।।3
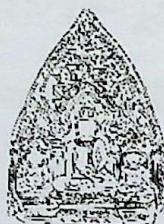
III

कोक स्वे सेक अभिलेख
Kok Svay Cek Inscription

वट कोक खपोस के एक खड़े पत्थर पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यहाँ के रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं से यह जानकारी मिलती है कि यह कोक स्वे सेक से लाया गया था। कोक स्वे सेक पश्चिमी बारे के दक्षिणी क्षेत्र में इस मन्दिर के दक्षिण-पश्चिम 2 मील की दूरी पर स्थित है।

यह अभिलेख संस्कृत, पालि एवं ख्मेर भाषा में है। संस्कृत भाषा से भगवान् बुद्ध की मूर्ति की स्थापना 1230 या 1231 में श्रीन्द्र महादेव के रूप में होने की बात का पता चलता है।

इस अभिलेख का धार्मिक महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि श्रीलंका के हीनयानी बौद्ध धर्म का कम्बोडिया में प्रचार होने का यह प्रमाण प्रस्तुत करता है। महायानी बौद्ध धर्म का प्रचलन, संस्कृत में नियमों के साथ, श्री जयवर्मन सप्तम के अभिलेख से बारहवीं शताब्दी के अन्त तक सिद्ध होता है लेकिन चाऊ

ता-क्वान की रिपोर्ट से यह सिद्ध होता है कि श्रीलंका के बौद्ध धर्म का प्रभाव कम्बोडिया में तेरहवीं शताब्दी तक प्रचलित था।

इस अभिलेख में कुल 10 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं। जॉर्ज सेदेस ने इसका सम्पादन किया है।[1]

विसुद्ध विसुद्धानं सुद्धि सम्पादकञ्जिनं।
धम्मञ्चारिय सङ्घञ्च सततं सिरसा नमे।।1
सिरिसिरिन्दवम्माख्य भूपेसो गुणभूसनो।
यसोधरपुरे आसिद्मङ्गलिन्दुयमिन्दुना।।2
नभग्गियमचन्दम्हि अस्सिनी तारकान्विते।
रविवारम्हि ततिये यामेऽतीते द्विपादके।।3
सिरिसिरिन्द मोलिस्स महाथेरस्स धीमतो।
सिरिसिरिन्दर तन गाम मेतं अदा मुदा।।4
सिरि मालिनी रतनलक्खी नाम उपासिका।
सद्धादि गुणसम्पन्ना राजालङ्कार पालका।।5
पेसिता तेन कारेत्वां विहारमिध सा पुन।
परिखञ्च तटाकञ्च खणापेन्ती ततो परं।।6
चन्दग्गियम चन्दम्हि भूपाधिपति पेसिता।
बुद्धरूपण् ढापापेत्वा दासिदासिके अदा।।7
वकुलत्थ लगामञ्च दंदामव्हय गामकं।
ताली सत्थ लगामञ्च नद्यग्गगामकाञ्चिमे।।8
बन्धेन्तो खेत्तसीमायो समन्तट्ठदिसासु च।
बुद्धपूजाय चादासि भूपाधिपति धम्मिको।।9
सिरिसिन्द रतन गामक् खेत्तानमन्तरे।
अट्ठपन्तीनि खेत्तानि याजकानभदापयि।।10

अर्थ- अत्यन्त विशुद्धों की शुद्धि (पवित्रता) को सम्पादन करने वाले जिन अर्थात् भगवान् बुद्ध, धर्म तथा आर्य संघ को निरन्तर सिर से नमस्कार करता हूँ।।1

श्रीन्द्रवर्मन नामक गुणभूषण इन्दु (चन्द्रमा) की कान्ति से युक्त

1. *BEFEO, Vol. XXXVII*, p.14

111. कोक स्वे सेक अभिलेख

यशोधरपुर के सम्राट थे।।2

अश्विनी नक्षत्र से युक्त 1230 संवत् में रविवार के दिन तृतीय याम के दो पाद के व्यतीत होने पर।।3

श्री श्रीन्द्रवर्मन नामक राजा ने इस उत्तम ग्राम का दान हर्षपूर्वक बुद्धिमान श्री श्रीन्द्रमौलि महाथेर को दिया।।4

श्रद्धादि गुणों से सम्पन्न राजा के अलंकारों का पालन करने वाली श्रीमालिनी रत्न लक्ष्मी उपासिका ने राजा के द्वारा सम्प्रेषित होकर इस स्थान पर पुनः एक विहार बनवाया।।5

उसके अनन्तर एक परिखा और सरोवर का उत्खनन कराया।।6

भूपाधिपति के द्वारा सम्प्रेषित उस उपासिका ने 1231 संवत् में बुद्ध की प्रतिमा मण्डपाच्छादित कर दास-दासियों को दान में दिया।।7

उसने वकुलत्थल, ताली सत्थल नामक ग्रामों को भी दान में दिया जो नदी के तटवर्ती थे।।8

धार्मिक सम्राट ने भगवान् बुद्ध की पूजा के निमित्त चारों ओर आठों दिशाओं में खेतों की सीमाओं का निर्धारण कराया।।9

श्री श्रीन्द्ररत्न नामक ग्राम के खेतों के मध्य भाग में आठ पंक्तियों वाले खेतों को राजा ने यज्ञकर्ताओं को दिलवाया।।10

112

बन्ते श्री अभिलेख

Bantay Srei Inscription

सियम रियप जिले में बन्ते श्री के निकट यह अभिलेख पाया गया है। इस अभिलेख में भगवान् शिव की प्रार्थना प्रारम्भ में है तथा राजा की प्रशस्ति भी है। इस अभिलेख में ऐसा वर्णन है कि पृथ्वी जो पूर्व के राजा के शासन-काल में दुःखी थी, को श्रीन्द्रवर्मन द्वारा मुक्ति मिली। इसके पश्चात् त्रिपिटक नामक व्यक्ति द्वारा जलावन की लकड़ी दान में देने का वर्णन है। यह व्यक्ति महेश्वरपुर नामक गाँव में रहता था। ईश्वरपुर के शम्भु के मन्दिर में रहने वाले लोगों की देखभाल के लिए अन्य वस्तुओं के समान नौकरों के दान का भी वर्णन है।

राजा के प्रिय मन्त्री मधुरेन्द्रसुरी जो राजा के गुरु यज्ञवराह के आज्ञाकारी थे, का परिचय दिया गया है। उनकी भतीजी (बड़ी बहन की लड़की) जिसका नाम सूर्यलक्ष्मी था, आगे चलकर जनप्रिय रानी बनी। मधुरेन्द्रसुरी और रानी के द्वारा त्रिपिटक के कार्यों की सिफारिश के सम्बन्ध में इस अभिलेख में वर्णन मिलता है।

इस अभिलेख में कुल 28 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं। केवल पद्य संख्या 28 में केवल एक शब्द छूटा हुआ है।[1]

नैकात्म शक्तिभिरुदारतराभिरम्ब-
रव्यापिनीभिरनिशं परितः परीतः।
एकोऽपि नैकनिलयो हृदि योगिनां यो
रंरह्यतेऽस्तु भगवान स शिवः शिवं वः।।1

चन्द्रार्द्धशेखरमशेष सुरासुराधि-
राजर्षि मस्तकधृताङ्घ्रि सरोज रागम्।
वन्दे नु यो मृदु सदा मुकुटं विधातुं
गङ्गाङ्घ्रि पल्लवभिवार्द्धविधुं विधत्ते।।2

आसीद सीम धरणीन्द्र शिरोधृताङ्घ्रि-
रत्नोऽवनीन्द्र पतिरम्बुनिधीन्द्रसीमाम्।
श्री श्रीन्द्रवर्म्मविबुधामिधि रागमेन
रक्षन् क्षितिं क्षितिपतीन्द्रकुलावतंसः।।3

लक्ष्मी पतिर्विहत वैरि सुरारि राजिः
सिन्धौ प्रभूत विजयामृतपूरिताङ्गः।
श्री श्रीन्द्र इत्यभिधिना वितताान भूयो
योऽनुग्रहादभिमतोऽसुभतां स्वमूर्त्तिम्।।4

शङ्के शिवस् शिव शिवारिमवार्य्यवीर्य
सामर्षमित्याभिहितोऽस्य दहो नु भीत्या।
रम्यै रतौ रतिपतिं गिरिराज हुत्या
भस्मावशेषमसृजद् यमिवेह भूयः।।5

रम्ये रिरंसुरपि हृदभवने यदीये
रन्तापि रम्यमकरे मकरध्वजोऽसौ।
तत्र स्थितं सततमेव मृगाङ्कमौलि-
मुरुद्वीक्ष्य वाह्यसुतवौ समयो निलीनः।।6

सर्व्वागमार्ण्णवरसेषु भृशन्निपीती
संस्तम्भितारिकुलविन्ध्यनगाधिराजः।

---

1. *BEFEO, Vol. XXXVII,* p.14

यो योग्यकम्बुकुलभूपपयः पयोधि-
योनिर्ह्रियज्जनितवान् भूवि कुम्भयोनेः॥7
ब्रह्माननाब्जवनसंक्रमणात्तखेदान
वाणीव हंसरमणी प्यपनेतुकामा (व्यपनेतु)।
शङ्के मनोरमतरास्य गृहेऽभ्यतिष्ठद्
यस्य प्रसन्नमनसा शुचिमान सस्य॥8
ग्रामण्य पुण्य जन राज सरो विराज-
मानोल्लसत्कमलरञ्जित जीवनीयम्।
भीमो ममाय नितरां भट एक एव
गुप्तन्धनेश्वरभटेरमितैरुदात्तैः॥9
येनाभिरक्षित मुदारमही तटाक-
मुद्यद् यशो व्रज सहस्र सहस्र पत्रम्।
भीमा भटाः प्रमथितुं किल कोटि शोऽपि
नो शेकिरे त्रिभुवनैकभटेन भूम्ना॥10
श्वेतात पत्र निकरेण समं समन्ता-
दाच्छादितापि वसुधा वसुधाधिपानाम्।
प्राक् प्राप तापमधुनैकसितातपत्र-
च्छायावृतापि न कदाचिदवाप येन॥11
धात्री भृता क्षितिभृताप पुरातनेन
प्रायो मनापमति विस्तर कण्टकत्वात्।
येनाप कण्टक तयाभिनवा तु यूना
संरक्षिता खलु मनागपि नामनापम्॥12
श्रेणीभुजां भुजभुजङ्गवरेण कृत्वा
धात्रीं समुद्रवसनामपदं ध्रुवं यः।
साक्षाददृष्टमसमैकसितात पत्र-
व्याजेन शौक्ल्यमधिकं यशसां वितेने॥13
निर्मथ्य दुग्धजलाधिं किल देवदैत्य-
वृन्दैः पुरा सह चतुर्भुज संप्रयोगः।
लक्ष्मीपतिः स भगवान् समवाय लक्ष्मीं

यत्नं विना तु नृपतिस् स्वयमेव चित्रम्।।14

एकेन वाजिपतिनैव पुराधिराज्य
तोष्टयमानमहिमा किल भूमिपालः।
भूम्नो प्रसन्नमनसा परमेश्वरेण
साम्राज्यदीक्षितविधौ किमुतार्प्पितो यः।।15

वेधाः कलानिधिमधात् सकलङ्कलङ्क-
मेकं भवत्रय विधान विधौ वरीयान्।
कुर्व्वन् ह्रियेव दधतं स जनापवाद-
मन्यं पुनर्गत कलङ्कलानिधिं यम्।।16

योऽकण्टकी कृत्य महीं समस्तां
समी कृतान्तीक्ष्णतरस्तरस्वी।
दयाम्भसा साग्धित साधुबीजं
समृद्धयामास फलैरननैः।।17

यस्मिन्न वत्यवनिमक्षतमासमुद्राद्
वैरीन्द्रभूरिवनिता अपि नापुराधिम्।
स्वयोषितस्तनुपलब्ध मनोरथास्तं
संप्रापुरेव नितरामनिशं निराशम्।।18

अयं शशाङ्कस् स्वतनुं कलङ्का
शक्तोऽपि संदर्शयितुं प्रज्ञासु
इतीव यत्कीर्त्तिरुदारशुद्धि-
प्रत्यायनर्थ विचचार दिक्षु।।19

यदीय कीर्तिः सुतराञ्चरन्ती
विकाशिताशाप्यरिगेहमध्ये।
सपत्नपत्नी वदनारविन्दं
केनापि चित्रम्मलिनी चकार।।20

सर्व्वद्विड्द्वीपशोऽपि यो न जवनो नीत्यादियोगाद्धरी
रम्यश् शर्म्मकरेण यश्च जगती सिन्धोर्व्विबृद्धिं सदा।
कर्त्ता वीतभयो द्विषो ऽपि जयति ग्लावानाश्रितोऽरंश्रिया
यातो नः स जयं रणेऽधिक गुणैरीड्यो मुदा पूर्ण्णया।।21

एधैषणाधिकृतना त्रिपटाकनामा
तिष्ठन् महेश्वरपुरे स यथाकथञ्चित्।
रुन्धैकरूपमनसा प्रतिवासरन्ता-
नेधानदात् क्षितिपतेः प्रवरे समृद्धया।।22
शम्भोर्मुजिष्य निकरेषु विचित्र बुद्धि-
र्भूयो नियोजयति स स्म तदात्म बुद्धया।
एधानपीश्वरपुरे प्रवरे महर्द्धया
तान् सुस्थितस्य भुवने भविनां विभूत्यै।।23
श्रीधृव्जयावनिपतेरति वल्लभश् श्री-
श्रीन्द्राधिपस्य धरणीन्द्राशिरोधृताङ्घ्रे।
मन्त्री नरेन्द्र गुरु यज्ञ वराहधीमद्-
वश्यो महाजनमतो मधुरेन्द्र सूरिः।।24
यस्यानुजाया नृपभोगिनीना-
मग्रया सुता पूर्ण्ण सुधांशु शुद्धा।
श्री सूर्य्य लक्ष्मीर्हृदयाभिरामा
श्री श्रीन्द्रवर्म्मा विनिपाल भर्त्तुः।।25
धर्म्मेण धार्मिक धराधिपतौ सुधर्म्मो
न्यायादपेतमपि तत् त्रिपटाकवृत्तम्।
शम्भोर्भुजिष्यनिकरे करुणार्द्रचेत्ता
न्यायं निवेदयाति स स्म पुराणवृत्तम्।।26
श्रीमान् नरेन्द्र सचिवो धरणीन्द्र सूरि-
नामा समानमति धर्म्म दयाद्रचेताः।
भूयो न्यवेदयदमात्य विशेष सार्थो
धर्म्म्या प्रवृत्तिमपि धर्म्मयशांसि गोषे।।27
श्री श्रीन्द्र वर्म्मधरणी पतिरीश्वराङ्घ्रि
पद्माभिराधन (समा) र्जितकीर्ण्णकीर्त्तिः
ऐश्वर्य्य दृग् यमहृदाकृतम्बनिमुख्यैः
............नुमताभिमतां यथा प्राक्।।28

अर्थ- अतिशय उदार आकाश में व्यापने वाली शक्तियों से सर्वदा सब ओर से व्याप्त, एक भी एक घर वाला नहीं बल्कि जो सभी योगियों के हृदय में पुनः पुनः अतिशय रूप से रमण करने वाला भगवान्- वह शिव तुम्हारे कल्याणों को करें।।1

अर्द्ध चन्द्र को मस्तक पर धारण करने वाले सभी सुर और असुरों के अधि राजर्षि के मस्तकों से धारण किये उस चरण कमल के राग को प्रणाम करता हूँ।।2

जो सदा मुकुट को कोमल बनाने के लिए गंगा के चरण पल्लव के समान अर्द्ध चन्द्र को बनाते हैं।।3

समस्त पृथ्वी के राजाओं द्वारा धारण किये चरण-रत्नों वाला राजा समुद्र की सीमा को श्री श्री इन्द्रवर्मन देवों के आगमों से पृथ्वी की रक्षा करता हुआ- राजा के कुल के भूषण थे।।4

लक्ष्मी के स्वामी, विशेष रूप से मार डाला है वैरी राक्षसों का समूह जिससे ऐसा सिन्धु में बहुत विजय रूप अमृत से पूर्ण अंगों वाला श्री इन्द्रवर्मन इस नाम से फिर विख्यात था जो कृपा से प्राणियों को अपनी मूर्ति प्रदान करने वाले हैं।।4

कवि को शंका है न रोकने योग्य वीर्य बल वाले क्रोध करने वाले शत्रु को शिव ने जला डाला था भय से रति में रमण के लिए बचे भस्म को ही फिर से पर्वतराज के यज्ञ से मानो जिस राजा को बना डाला था। कामदेव के जले भस्म से ही राजा की सुन्दर रचना की गयी थी।।5

जिसके रमणीय हृदय रूप भवन में रमण करने वाला भी रमणीय मकर पर सवार होकर मकरध्वज वह वहाँ स्थित हमेशा ही शिव को देखकर बाहरी सुन्दर शरीर में, राजा के शरीर में भययुक्त होकर विलीन हो गया।।6

सभी शास्त्र रूप समुद्र के रसों में बहुत पीने वाला सम्यक रूप से ठूँठ की नाई अचल रहने वाले शत्रु कुल रूप विन्ध्याचल के लिए हिमालय सा जो कम्बु कुल के राजा लोग हैं- वे समुद्र योनि से निकलकर पैदा होने वाले पृथ्वी पर कुम्भ योनि अगस्ति के समान हैं।।7

ब्रह्मा के मुख रूप कमल वन पर आक्रमण कर वेदों को हंस पर

रमण करने वाली सरस्वती के समान, नाश की कामना करने वाली शंका करता हूँ- अतिशय मनोरम मुख रूप घर में रही जिसके पवित्र मन वाले के प्रसन्न मन से।।8

गाँव के पुण्यकर्ता मनुष्यों के राजा के तालाब में शोभते कमलों से प्रसन्न जीवन के योग्य भयंकर राजा रूप एक ही सैनिक कुबेर के सैनिक जो अनगिनत हैं और बड़ी ऊँची श्रेणी के हैं उनसे लड़कर मथ डाला था एक राजा ने सारे विश्व को।।9

जिसके द्वारा सभी प्रकारों से रक्षित उदार पृथ्वी का तालाब है उसमें उगने वाले यशों के समूह रूप हजार, हजार पत्ते वाले कमल थे ऐसे तालाब को भयंकर योद्धा लोग करोड़ों बार मथने के लिए प्रयत्न करके भी न मथ सके क्योंकि त्रिभुवनों के एक योद्धा जो बहुत बली राजा थे उनने रोका था।।10

श्वेत छातों के समूह के समान सभी ओर से ढकी रहने पर भी पृथ्वी राजाओं की पहले प्राचीन काल में सन्ताप को प्राप्त हुई पृथ्वी इस समय एक श्वेत छाते की छाया से ढकी भी नहीं सन्ताप को पाया पृथ्वी ने जिस राजा की बदौलत।।11

पुरानी धरती को धारण करने वाले राजा के द्वारा अतिशय बढ़े शत्रु के कारण सन्ताप पाया गया था। नये राजा जो युवक हैं उनके द्वारा सम्यक रक्षित होने के कारण थोड़ा भी ताप सन्ताप न पाया गया था।।12

जो कष्ट शत्रु से पुराने राजाओं को थे वह नये को नहीं, रक्षा के कारण जिसने निश्चित रूप से राजाओं की बाँह रूप श्रेष्ठ सर्प से पृथ्वी को समुद्र रूप कपड़े वाली करके अपदस्थ कर दिया था। साक्षात् न देखा हुआ असमान एक श्वेत छाते के छल से अपने यशों की उज्ज्वलता का अधिकाधिक विस्तार किया था।।13

पहले दूध के समुद्र को मथकर देवों और दानवों के समूहों द्वारा चतुर्भुज विष्णु का सम्यक प्रयोग किया गया उन भगवान् लक्ष्मी के स्वामी ने लक्ष्मी को पाया- इस राजा ने तो बिना यत्न के ही स्वयमेव लक्ष्मी को पाया यह कितना विचित्र विषय है।।14

एक घोड़े के स्वामी द्वारा ही पहले राज्य में पुनः पुनः अतिशय

रूप से महिमा की प्रार्थना वाला राजा था। बहुत प्रसन्न मन से परमेश्वर राजा द्वारा साम्राज्य की दीक्षा की विधि में क्या जो अर्पित है।।15

ब्रह्मा ने चन्द्र को कलंक सहित एक ही को बनाया जो तीन भुवनों के विधान की विधि में अतिशय बड़े हैं वह मानो लज्जा से लोकापवाद को धारण करने वाले अन्य को जो पुन: बनाया-जो राजा हैं वे नष्ट है कलंक जिसका ऐसे हैं जिन्हें अकलंक रूप से।।16

जिसने समूची पृथ्वी को शत्रुहीन करके सम बना दिया अतिशय तेजस्वी राजा दया रूप जल से साधे हुए अच्छे परोपकारी बीज को समृद्ध करके बढ़ाया जिसमें बहुत सज्जन रूप फल फले थे।।17

जिसके सर्वदा पृथ्वी की रक्षा अक्षत रूप से समुद्र पर्यन्त करने पर शत्रु नारियाँ ने भी मन की फिर व्यथा को न पा सकी थीं। अपनी नारियाँ जिनके मनोरथ न पूरे हुए थे उनने उस राजा को पाया था ही हमेशा निराश रूप से।।18

यह चन्द्र अपने शरीर को कलंक में सक्त भी प्रजाओं को दिखलाने के लिए मानो यही सोचकर जिसकी कीर्ति की उदारतापूर्वक संशोधन के विश्वास दिलाने के लिए सभी दिशाओं में राजा ने विचरण किया था।।19

जिसकी कीर्ति भली-भाँति चलती हुई सभी दिशाओं को प्रकाशित करती हुई भी शत्रु के घर के बीच में शत्रु की पत्नी के मुखारविन्द को मलिन कर दिया गया किसी राजा के द्वारा।।20

सभी शत्रुओं को द्वीप-द्वीप के हिसाब से जो शीघ्रकारी नीति आदि के योग से कल्याणकारी हाथ से सदा संसार रूप समुद्र की विशेष वृद्धि न कर सका था- करने वाला निडर होकर शत्रुओं को भी जीतता है। हर्ष क्षय न आश्रय देकर जल्द पूरी लक्ष्मी से रण में अधिक गुणों से प्रार्थनीय हर्ष से जय को प्राप्त किया था।।21

उगने की इच्छा के अधिकारी द्वारा त्रिपटाक नाम का ठहरा हुआ भद्रेश्वरपुर में वह जिस किसी प्रकार एकमात्र सन्ताप देने रूप मन से प्रतिदिन उन उगने वालों को समृद्धि से श्रेष्ठ राज्य को उदय होने दिया-सहारा दिया था।।22

श्री शिवजी के दासों के समूहों में विचित्र बुद्धिमान को पुनः नियुक्त किया। अपनी आत्मा की बुद्धि से ईश्वरपुर में प्रसिद्ध श्रेष्ठ महान् वैभव से भुवन में स्थित जीवों के वैभव के लिए।।23

श्री धृब्जयावनिपति के अति प्रिय श्री इन्द्राधिप के धरणीन्द्र द्वारा धारण किये गये चरण वाले के मन्त्री नरेन्द्र गुरु यज्ञवराह बुद्धिमान वश में रहने वाला महाजन से पूज्य मधुरेन्द्र पण्डित था।।24

जिसकी छोटी बहन थी, राजा की रानियों में अग्रगण्या बेटी पूर्णरूप से चन्द्र के समान गौरवर्णवाली श्री सूर्यलक्ष्मी जो हृदय को आनन्द देने वाली सुन्दरी श्री श्री इन्द्रवर्मन राजा स्वामी की।।25

धर्म से धार्मिक राजा सुन्दर धर्मवाला न्याय से युक्त भी वह शिव के सेवक समूह में दया से भीगे चित्तवाला, न्याययुक्त पुरानी कहानी वह निवेदित करता था।।26

श्रीमान् नरेन्द्र मन्त्री धरणीन्द्र पण्डित नाम वाला, समान बुद्धि, धर्म और दया से भीगे चित्त वाला फिर से निवेदित किया। मन्त्री विशेष से धार्मिक प्रवृत्ति को भी धर्म और यश रक्षक राजा के लिए।।27

श्री श्री इन्द्रवर्मन राजा ईश्वर के चरण-कमल की आराधना से अर्जित किया था- बिखरे यश को ऐश्वर्य रूप आँखों वाला जिसके हृदय से किया गया- मुख्य राजाओं द्वारा........अनुमत और अभिमत को जैसे पहले...........।।28

113

अंगकोर मन्दिर खड़े पत्थर अभिलेख

Angkor Temple Stele Inscription

अंगकोर थोम के उत्तरी-पूर्वी इलाके में पाया गया यह अभिलेख एक खड़े पत्थर पर उत्कीर्ण है। विष्णु की प्रार्थना तथा राजा जयवर्मन की प्रशस्ति से यह प्रारम्भ होता है। इसमें भारद्वाज गोत्र के एक ब्राह्मण पुजारी का वर्णन है जिसका जन्म जय महाप्रधान नामक नरपतिदेश (वर्मा) में हुआ था। यह व्यक्ति कम्बुज देश यह सुनकर आया था कि कम्बुज देश में वेद के ज्ञाता तथा विद्वान् बहुत हैं। भीमपुर में (जहाँ वह शिव की पूजा करने गया) उसने श्री प्रभा जो एक शैव मन्दिर से आयी थी, से व्याह कर ली। उससे इनको चार पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। सबसे बड़ी पुत्री जयवर्मन की रानी बनी और छोटी लड़की का पुत्र जयमंगलार्थ श्री श्रीन्द्रवर्मन के शासन-काल में आचार्य बना। उसकी माँ से

मिलती-जुलती एक देवी की मूर्ति के साथ-साथ, राजा ने इस आचार्य की भी मूर्ति बनाई। यह आचार्य 104 वर्ष तक जीवित रहा। इन मूर्तियों का नाम जयत्रिविक्रमदेवेश्वरी तथा री जयत्रिविक्र महानाथ था। स्वर्ण, चाँदी, भूमि, नर्तक, गायकों को भी दान स्वरूप प्रदान किया गया है। इस परिवार के एक सदस्य को पूजा का काम सौंपा गया और यह आदेश दिया गया कि इस परिवार का एक पुरुष मन्दिर एवं उसकी सम्पत्ति का मालिक रहेगा। केवल जब कोई पुरुष न मिले, महिलाओं की ओर से आने वाले एक सदस्य के विषय में सोचने की बात थी।

राजा की मृत्यु के बाद श्री इन्द्र नामक उनके दामाद के द्वारा राजकाज सम्भालने की बात कही गयी है। 1229 ई. में राजा श्री इन्द्र ने राजगद्दी छोड़ दी तथा पवित्र जीवन व्यतीत करने चले गये। उसका एक सम्बन्धी श्री इन्द्र जयवर्मन उनका उत्तराधिकारी बना।

जयमहाप्रधान का तीसरा पुत्र जिसका नाम निशाकर भट्ट था जो राजा का बहुत प्रिय बना और उनके द्वारा उसे श्री श्रीन्द्रशेखर का नाम मिला।

अभिलेख के शेष भाग में निशाकर भट्ट के दान तथा स्थापत्यों की देखभाल के लिए स्वाभाविक प्रार्थना का वर्णन है। मन्दिर में एक दूसरा अभिलेख भी है जो प्रायः नष्ट हो चुका है। इसकी तिथि 1227 के आसपास बतलायी गयी (अन्तिम अंक संदेहास्पद है)। राजा जयवर्मन को स्पष्टतः जयवर्मन अष्टम के रूप में बतलाया गया है। दूसरा श्लोक श्री श्रीन्द्रवर्मन के साथ प्रारम्भ होता है। तीसरा श्लोक पूर्ण है तथा रानी की प्रशस्ति का वर्णन करता है।[1]

इस अभिलेख में 61 पद्य हैं।

श्री श्रीन्द्रवर्म्मनृपतिनृपतीन्द्रवन्द्यं
भक्त्या सदङ्घ्र(?)...........नाम्।।1
भूयोऽभिसंहितहित प्रभवस्य भूभृत्-
संपत्तिविष्टपगतस्य नमे न मेरोः।।2
श्री श्रीन्द्रमुख्यमहिषीं गुणरत्न राशि-
दुग्धाम्बुधिं सकल लोक मनोभिरामाम्।
...........आवधीन्द्र महिषीं शुचिजातिमूर्त्तिं

1. *ISC*, p.500

113. अंगकोर मन्दिर खड़े पत्थर अभिलेख

सौभाग्यभूरिविभवैः प्रणमे जयन्तीम्।।3

श्रीद्धोऽतिसूक्ष्मतनुभावमहानेकोऽ-

प्येकस्त्रिलोक निलयो ऽपि निरालयो यः।

क्रीडत्थलं परमहंस उदारपद्मे

हृतस्थे विदान्तमतिचित्रभजन्नमामः।।1

श्रीद्धां श्रियं नमत तां परिपूर्णचन्द्र-

जित् श्रीद्धशुद्धतम कौस्तुभदर्प्पणस्य।

त्रैलोक्यभातिगवपुश्श्रियभीक्षितुं या

स्यादिच्छति(ती) नु दयिता पुरुषोत्तमस्य।।2

आसीच्छ्रीजयवर्म्मेशो भोनुर्योऽरितमो गणान्।

उदयाचल उद्भतश् श्रीन्द्रराजपुरेऽहरत्।।3

नेत्रान्तरेन्दुहृदये यो राज्यं परिलब्धवान्।

धर्म्मेणापालयल्लोकान् पुत्रवद्(वर्द्ध)यन्नयैः।।4

अतीवकान्ति कोषो यः कामो लोकमनस्स्थितः।

साङ्गोऽनीशजितो न्यस्तभवो हृदि मुदानलः।।5

धर्म्मैकात्या भवन् योऽपि द्विपदेन कलौ युगे।

द्वापरस्य युगस्यास्य लोकशङ्कामदात् सदा।।6

प्रजानामीप्सितानां यो दानात् कल्पद्रुमो नृपः।

सर्व्वथा स्वर्ग्गलोकेन समतामकोद् भुवः।।7

गुणरत्नाम्बुधेर्यस्य स्तुत्यो नापि वदन् शुचिः।

निखिलं गुणमेवाब्धावशेषं कोचरन्(?)मणीन्।।8

कश्चिद्वेदविदां श्रेष्ठो विप्रस्तस्य पुरोहितः।

महाप्रधानशब्दान्तं श्री जयाद्याभिधिन्दधत्।।9

त्रिकतन्तुग्रामजातो देशे नरपतावभूत।

भरद्वाजर्षिगोत्र(त्री) यो हृषकेशादिसंज्ञकः।।10

कम्बुजद्वीपमाकीर्ण्णं वरिष्ठवेदकोविदैः।

विद्याप्रकाशनायास्मिन् विदित्वा द्विज आगतः।।11

विप्र एकाननोत्सृष्टचतुर्वेद इवाहतु।

यश्चतुर्वेदनोत्सृष्ट चतुर्वेदं पितामहम्।।12
पञ्चषटचन्द्रचन्द्रेऽब्दे(ग)तस्य श्रीन्द्रवर्म्मणः।
आराधयच्छिवं शान्त्यै यो भीमपुरसंस्थितम्।।13
राजेन्द्रग्रामज्ञान्तत्र काञ्चित्शैवान्वयां पराम्।
श्री प्रभान्नाम सार्था यो रामामुदावहत्सतीम्।।14
या पुत्रांश्चतुरो यस्माद् वेदत्रयविदो वरान्।
असूत द्वे सुते सत्यौ स्वरूपिण्यौ नयान्विते।।15
पुत्राणां प्रथमो ज्ञानी तस्य वेदविदां मतः।
वेदविद्यापरीक्षायाम्...........भट्टाभिधिः पटुः।।16
तृतीय प्रियवाग् (द्योता)........यविदग्राधीः।
श्री निशाकर भट्टोऽपि(सर्व्व)शास्त्रविशारदः।।17
द्वयोः पुत्र्योर्द्वितीयापि महिषी जयवर्म्मणः।
श्री चक्रवर्त्तिराजादिदेव्यभिख्याति वल्लभा।।18
अन्यस्यां धर्म्मपत्न्यां यः सुव्रतायां वराननाम्।
एकां सुताञ्चाजनयत् सुतान् पञ्च गुणान्वितान।।19
श्रीप्रभाव(र)जा साध्वी सुभद्रासु(सू) ततद्गरोः।
जयमङ्गलार्थ सूरेः सूनुमध्यापकाधिपात्।।20
यो.......न्द........भद्राख्यो विज्ञान जन्म शुद्धिमान्।
दान्तः पारङ्गतः शास्ता शास्त्रव्याकरणाम्बुधेः।।21
श्री श्रीन्द्रजयवर्म्मणो राज्ये सोऽध्यापकाधिपः।
जयमङ्गलार्थनामा पित्रा नाम्ना गुणैः समः।।22
जीवन् वर्षशतं ज्ञानी चतुर्वर्षाधिकं यमी।
अतिवृद्धोहि विप्रो यो जन्मनां वेदविद्यया।।23
वत्सलस्तस्य विप्रस्य यो....प्रतिमान्नृपः।
प्रसूप्रतिमया सार्द्धं देव्या द्रव्यमुदीरयत्।।24
राजा ब्राह्मणशालाया भूमौ तन्मुकुटं परम्।
प्रासादञ्चैतमत्यन्तमद्वितीयत्व शंसनम्।।25
मर्त्यब्रह्मगणान् वेदैरभिनन्द्य द्विजो ह्यजम्।

ब्रह्मलोकस्थितं ब्रह्मलोकं नन्दयितुङ्गतः।।26

सप्तैक बाहुचन्द्रेषु प्रासादेऽस्मिन् यथावचः।

वैशाखस्यादिपक्षस्य द्वादश्यां सुरमन्त्रिणि।।27

चित्रे वृषगतादित्य सौरयोर्म्मिथुनस्थयोः।

भौम राह्वोस्तुलास्थेन्दौ वृश्चिकस्थबृहस्पतौ।।28

सौम्ये शुके च केतौ च मेषस्थे स्थिरसूचके।

कर्कटस्थे च लग्ने योऽतिष्ठिपत् प्रतिमे नृपः।।29

त्रिविक्रम महानाथं श्रीजयादिपदं नृपः।

नाम श्लाघ्यं द्विजस्यास्य प्रतिमायास्तदाकरोत्।।30

श्रीजयादिपदं मध्यत्रिविक्रमपदं वरम्।

देवेश्वर्य्यन्तनामापि ब्राह्मणी प्रतिमागतम्।।31

हेमरूप्यादिभोगांश्च प्रतिमाभ्यामदान्नृपः।

अन्त्वङ्त्रवङ्व्चिक् करोंरुङ् ग्रामांस्त्रीन् दास संयुतान्।।32

गुणिनीर्नर्त्तकीस्तूर्य्यवादकान् गुण संयुतान्।

यस्ताभ्यां गणसंयुक्तान् प्रतिमाभ्यामदात्तदा।।33

प्रतिमार्च्चनकारञ्च तस्य विप्रस्य यः कुलम्।

नः..........स्थितिं......शश्वत् कुलपतिं व्यधात्।।34

कु...........आनि कार्य्याणि पुंसो भावे प्यनागते।

काले.........स्त्रीकुलं योग्यपूजाकारीति चोऽवदत्।।35

स्थापयित्वा तयोस्तत्र भूमिसीमा कृताभवत्।

मन्त्रिणा(ले)खकेन्द्रेण शासनाज्जयवर्मणः।।36

एकाशीतस् समारभ्य प्राच्यभूम्यवधेरभूत्।

व्यामानामष्टाभिस् संख्या चत्वारिंशत्कृताधिका।।37

एकाशीतस् समारभ्यावधेर्द्दक्षिणभूमितः।

व्यामानामधिका द्वाभ्यां दश संख्या कृताभवत्।।38

एकाशीतस् समारभ्यावधेः पश्चिमभूमितः।

व्यामानामधिकैकेन त्रिंशत्संख्या कृताभवत्।।39

एकाशीतस् समारभ्यावधेरुत्तर भूमितः।

व्यामानामधिकैकेन दशसंख्या कृताभवत्।।40
मूर्त्यो..........आदि द्रष्टुं(जामा)तृश्रीन्द्रभूपतौ।
विप्रभू..........राज्यं यो ब्रह्मालयङ्गतः।।41
Verses 42-43 are lost
जयवर्म्मकृ(ति)..................................।
असमाप्ता सुपूर्ण्णया विष्णुकु.............।।44
आदात् प्रतिदिनं भक्त्या य एक............।
प्रतिभाभ्यां..........पञ्चदासदासी.............।।45
प्रजानां कुशले सक्तिं कुर्व्वन् रक्षितः........।
जन्मना विद्यया वृद्धोऽभवद्धर्म्मेण............।।46
नवद्विद्विहृदि स्वर्ग्गं विजेतुम् (गमन्नृपः)।
यौवराज्यस्थिते दत्त्वा राज्यं यो भग..........।।47
श्रीन्द्रभूपस्य वंशश्च यो भूपो जयव(र्म्मणः)।
श्री श्रीन्द्रजयवर्म्माणं नाम श्लाघ्यमकारयत्।।48
त्रीन् शत्रून् यस्य सम्राजो विजेतुर्नान्तरं.........।
परार्थोऽशेषं..............................व तेजसा।।49
श्री निशाकरभट्टोऽपि विप्राब्धौ ससमुद्भवः।
तन्नामा त्वीशभक्त्यासीन्निरङ्को नूनमक्षयी।।50
यो निशाकरसूरिन्तं लोकेशव्य................।
नाम्ना हो...........म्बरे किञ्चिद्गणकोद्....।।51
भूपेशस्तस्य तुङ्गत्वं वितन्वन्..................।
श्री श्रीन्द्रशेखरन्नाम स्वदय....................।।52
श्री श्रीन्द्रशेखरस् शुक्लवस्त्रे.................।
प्रासादं हेमरूप्यादिदाने वि......................।।53
सहस्रगणितानेव विदुषो..........................।
तर्प्पयन् हेमरूप्यादि वस्त्रदा(न)..............।।54
श्री जयादिसूरि(रिः) शम्भुमत्र भक्त्या........।
प्रतिसंवत्सरं मासे...................................।।55

प्रजा बहुतरामग्र...........न्यान् से...........।

संसाराब्धेः कुलं प्रारञ् नयञ् ज्ञा............।।56

परपुण्यावनं कार्य्यं राज्ञापि नियतं कृत(म्)।

श्री श्रीन्द्रशेखरा.....त्या कार्य्याणां त्वत्र वर्द्धन(भ)।।57

...................................अतिष्ठिपत्।

..........काले च रक्षार्थमस्य स्थानस्य तन्मये।।58

ब्रः पक्षसं(भृ)तग्रामं देवयज्ञ विवर्द्धनम्।

बहुधान्य समायुक्तं प्रतिभाभ्यामदान्नृपः।।59

भविष्यन्तो नृपा धर्म्मबीजं रक्षन्तु सर्व्वदा।

भूमौ ब्राह्मणशालायां विप्राश्च नियतं स्थिताः।।60

पुण्यानु..................परेषां फलमाप्नुयात्।

...........किमुतान्येषां पुण्यानां ह्याभिरक्षकः।।61

अर्थ- सभी राजाओं के राजा से प्रणाम करने योग्य श्री श्री इन्द्रवर्मन नामक राजा को भक्ति से अच्छे चरण.........।।1

फिर सब ओर से इकट्ठी की गयी भलाई के जन्मदाता, राजा की सम्पत्ति जो भूतल में है ऐसे को नमस्कार है मेरु के स्वर्ण को नहीं।।2

श्री श्री इन्द्रवर्मन की पटरानी गुणरत्नों के ढेर, दूध के समुद्र, सभी लोकों की मनोहारिणी.........इन्द्र की मुख्य सम्राज्ञी को जो पवित्र जाति की मूर्ति हैं उन्हें सौभाग्य जीतने वाली को प्रणाम करता हूँ।

शोभा एवं लक्ष्मी से दीप्त, अतिशय सूक्ष्म शरीर के भाव वाले महान् अनेक होकर भी एक तीनों लोकों को अपने घर के समान समझने वाले होकर भी सर्वत्र व्याप्त रहकर भी बिना घर का जो है उदार कमल में जो पर्याप्त रूप से क्रीड़ा करता है तथा जो परम हंस है जो हृदय में स्थित रहने पर विद्वानों के उस अतिशय विचित्र न जन्म लेने वाले ब्रह्मा को हमारा नमस्कार है।।1

उस शोभा से प्रकाशित लक्ष्मी को नमस्कार करो जो परिपूर्ण

चन्द्र को जीतने वाली शोभा से प्रकाशित है तथा अतिशय शुद्ध है, कौस्तुभ मणि रूप दर्पणयुक्त है, तीनों लोकों की छवियों से अतिशय गमनशील है अर्थात् अतिशय तेजस्वी विष्णु के शरीर की शोभा को देखने के लिए जो विष्णु जी की प्रियतमा लक्ष्मी जी विष्णु के सुन्दर शरीर की सुन्दरता को निश्चित रूप से मानो देखना चाहती है- ऐसा ज्ञात होता है।।2

श्री जयवर्मन राजा था, जो शत्रुओं के समूह रूप अन्धकारों का नाशक सूर्यवत् प्रकाशमान था- वह उदयाचल पर्वत पर उगा था, श्री इन्द्र राजा के पुर - स्वर्ग में हरा गया, डूबा, दिवंगत हुआ-स्वर्गगामी हुआ था।।3

जिसने 1103 शकाब्द में राज्य को चारों दिशाओं से पाया था, लोगों का पालन धर्म से किया था नीतियों से पुत्र के समान बढ़ाता हुआ।।4

जो अतिशय कान्ति का खजाना कामदेव के समान सुन्दरतम लोगों के मनों में स्थित रहने वाला, कामदेव तो अंगहीन है यह साङ्ग है- अंगों सहित है, ईश ने कामदेव को जीता था- यह तो ईश से जीता हुआ न होने से संसार को त्याग करने वाला है, वह तो संसार को पीड़ा देने वाला है- इस प्रकार सुन्दर होकर भी कामदेव से इस राजा में विशिष्टताएँ पायी जाती हैं- हृदय में हर्ष से अग्नि रखने वाला है।।5

एक धर्म ही है आत्मा जिसकी ऐसा होकर जो कलियुग में भी दो पैरों वाला होने से लोगों को सर्वदा शंका में डालने वाला है कि यह द्वापर युग है, द्वापर युग में धर्म के दो पैर हैं, कलियुग में एक ही पैर धर्म का बचा है। यह राजा तो धर्मैकात्मा होकर दो पैरों वाला होकर इस कलियुग में भी द्वापर युग की शंका में लोगों को डालनेवाला है।।6

प्रजाओं के मनोरथों के दान से जो राजा कल्पवृक्ष के समान आचरण करता है जिसके देखते ही सब कुछ मनचाही चीजें मिलती ही हैं- यह ऐसा दानी है। सभी प्रकार से स्वर्गलोक से पृथ्वी की इस प्रकार समान करने वाला था।।7

जिस गुणरूप रत्नों के समुद्र राजा की प्रशंसाओं को बोलता हुआ पवित्र नहीं है- सभी गुण तो समुद्र में हैं अशेष होने पर शेष तो बचा नहीं तो मणियों का आचरण कौन कर सका।।8

कोई वेदों में श्रेष्ठ ब्राह्मण उनके पुरोहित 'श्री जयमहाप्रधान' इस नाम से विख्यात थे।।9

'त्रिकतन्तु' ग्राम में उत्पन्न हुए राजा के देश में थे। भारद्वाज ऋषि के गोत्र में उत्पन्न हृषिकेश नाम से ख्यात थे।।10

कम्बुज देश श्रेष्ठ वेद ज्ञाताओं से भरा था। इस देश में विद्या के प्रसार के लिए विद्वान् ब्राह्मण आये थे।।11

ब्राह्मण लोग एक मुख से निकले चारों वेद के समान आदर पा चुके थे। जो चार मुखों से निकले चतुर्वेद ब्रह्मा को कहते हैं- वह आदर इन्हें प्राप्त था।।12

जिसने 1165 शकाब्द में उस श्री इन्द्रवर्मन के भीमपुर में स्थित श्री शिवजी की आराधना शान्ति के लिए की थी।।13

राजेन्द्र ग्राम में उत्पन्न किसी शिव भक्त के वंश में पैदा हुई परम उत्तमा श्रीप्रभा नाम को सार्थक करने वाली सती स्त्री से जो सुन्दरी थी उससे जिसने विवाह किया था।।14

जिसने तीन वेदों के श्रेष्ठ ज्ञाता चार पुत्रों को जन्म दिया और दो पुत्रियों को जो उसी के समान सुन्दरियाँ थीं जैसी माता श्रीप्रभा थी वैसी ही सती और न्यायप्रिया थी।।15

उसके पुत्रों में प्रथम ज्ञानी वेदज्ञों में पूज्य वेद परीक्षा में.......... भट्ट नाम का चतुर था।।16

तीसरा प्रिय वाक्........जो अग्रधी था। श्री निशाकर भट्ट भी सभी शास्त्रों का विशारद था।।17

दोनों पुत्रियों में भी दूसरी श्री जयवर्मन की रानी थी। श्री चक्रवर्ती राजदेवी नाम से विख्यात अतिशय प्रिया थी।।18

अन्य सुन्दर व्रत वाली धर्मपत्नी में जिसने सुन्दर मुख वाली एक पुत्री को जन्म दिया।।19

श्रीप्रभा से छोटी साध्वी सुभद्रा ने पैदा किया उसके गुरु जयमंगलार्थ विद्वान् अध्यापकों के अधिक से एक पुत्र को जन्म दिया।।20

जो.............न्द........भद्र नाम से ख्यात था तथा विज्ञान के जन्म से शुद्धिवाला था। दमन करने वाला, पारंगत, शासन करने वाला, व्याकरण

शास्त्र रूप समुद्र का पारंगत था।।21

श्री श्री इन्द्रजयवर्मन के राज्य में वह अध्यापकों का अधिप था। जयमंगलार्थ नाम का पिता से नाम से और गुणों से बराबर था, समान था।।22

ज्ञानी, संयम करने वाला वह एक सौ चार वर्षो तक जीवित रहा जो ब्राह्मण जन्म से और वेद-विद्या से दोनों से ही अति वृद्ध था, वयोवृद्ध और वह विद्या वृद्ध।।23

उस ब्राह्मण के प्रिय जो............प्रतिमा को राजा ने माता की प्रतिमा देवी के साथ द्रव्य कहा...........।।24

राजा ने ब्राह्मणों की शाला की भूमि पर उसके परम मुकुट को और इस प्रासाद के अत्यन्त अद्वितीय कथन को, देव और राजा का मकान बनवाया था।।25

क्योंकि मरण है धर्म जिसका वह मरण धर्म, ब्राह्मण समूहों का वेदों से अभिनन्दन करके ब्राह्मण ब्रह्मलोक में स्थित ब्रह्मलोक को प्रसन्न करने के लिये ब्रह्मलोक गये।।26

1217 शकाब्द में वचन के अनुसार वैशाख महीने के कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि में सुरमन्त्री........बृहस्पति दिन में।।27

चित्रा में वृष लग्न गत सूर्य और शनि के मिथुन में स्थित रहने पर मंगल और राहु के तुला में स्थित चन्द्र में वृश्चिक में स्थित बृहस्पति के रहने पर बुध, शुक्र, केतु के मेष में रहने पर स्थिर सूचक मुहूर्त में स्थिर द्विस्वभाव तीन प्रकार के लग्न हैं जिनसे स्थिर लग्न में कर्क राशि में स्थित लग्न में जिस राजा ने प्रतिमा की स्थापना की थी।।28-29

श्री जयत्रिविक्रम महानाथ नाम से प्रसिद्ध पूजनीय इस ब्राह्मण की प्रतिमा की स्थापना राजा ने की थी।।30

श्री जयत्रिविक्रमदेवेश्वरी नाम से ब्राह्मणी की प्रतिमा की स्थापना की थी।।31

और सोने, रुपये आदि के भोगों को राजा ने दोनों प्रतिमाओं के लिए दिया था। नौकर से युक्त अन्त्वङ्, त्रवङ्, ज्विक्, करोरुङ् तीन गाँव राजा ने दिये थे।।32

तब गुणों वाली बहुत नर्तकियाँ, गुणों वाले बहुत मृदंग वादकगण से संयुक्त जिस राजा ने उन दोनों प्रतिमाओं के लिए दिये थे।।33

प्रतिमा की पूजा करने वाले उस ब्राह्मण का जो वंश था उसी से नहीं.........स्थिति, स्थिति को.......कुलपति का विधान किया था।।34

कु.........अग्नि, सब कार्य पुरुष के अभाव में, न आने पर भी समय पर........स्त्री समूह योग्य पूजा करे यह बात जिस राजा ने कही थी।।35

उन दोनों की स्थापना करके भूमि की सीमा निर्णीत की गयी जयवर्मन के आदेश से मन्त्री के द्वारा लेखक राज के द्वारा सीमा निर्धारित की गयी थी।।36

इक्यासी से आरम्भ कर पूरब दिशा की सीमा निश्चित हुई, व्यामों की अड़तालीस संख्या निर्धारित की गयी।।37

इक्यासी से आरम्भ कर दक्षिण दिशा की भूमि की सीमा निर्धारित की गयी। धामों की बारह संख्या कही गयी।।38

इक्यासी से प्रारम्भ कर पश्चिम दिशा की भूमि की सीमा की गयी। व्यामों की एकतीस संख्या की गयी।।39

इक्यासी से आरम्भ कर उत्तर दिशा की सीमा का निश्चय किया गया। व्यामों की ग्यारह संख्या की गयी।।40

दोनों मूर्तियों के अभय आदि देखने के लिए दामाद श्री इन्द्र राजा के विषय में। ब्राह्मण की भूमि से युक्त राज्य जो ब्रह्मालय चला गया।।41

जयवर्मन का प्रयत्न......................सुन्दर रीति से समाप्त न हो पाई विष्णु कु.....।।44

प्रतिदिन भक्ति से जिसने प्रदान किया एक.............। दोनों प्रतिमाओं के लिए पाँच दास-दासियाँ।।45

प्रजाओं के कुशल के विषय में आसक्ति करता हुआ रक्षित....... ..जन्म से विद्या वृद्ध हुआ धर्म से..........।।46

1229 शाके में जो राजा स्वर्ग पर विजय पाने के लिए चला गया। युवराज पद पर स्थित रहने वाले को राज्य देकर जो भग.............. ।।47

और श्री इन्द्र राजा के वंशज जो राजा जयवर्मन के थे। श्री श्री इन्द्र जयवर्मन नाम जो नाम स्वनामधन्य है इसी नामकरण से ख्यात हुआ।।48

जिस विजयी सम्राट के तीन शत्रुओं के जीतने वाले के नहीं अन्तर..........दूसरों के अर्थ अशेष= सब कुछ.............तेज से।।49

श्री निशाकर भट्ट भी ब्राह्मण रूप समुद्र में वह पैदा हुआ था। उस नाम वाला तो ईश की भक्ति से अंकहीन था निश्चित रूप से उसका क्षय न होने वाला था।।50

जो उस निशाकर विद्वान् को लोकेश व्य.......नाम से हो......म्बरे कुछ ज्योतिषी...........।।51

राजाओं का स्वामी उसकी ऊँचाई को विस्तारित करता हुआ..... श्री श्रीन्द्रशेखर नाम.....।।52

श्री श्रीन्द्रशेखर श्वेत वस्त्र में.............देव और राजा के महल को सोने रूपे आदि दान के विषय में............हजार गिने हुए विद्वानों को।।53

हजार गिने हुए विद्वानों को............तृप्त करता हुआ सोने, रूपे आदि के दान और वस्त्र दान............।।54

श्री जय आदि विद्वान्...........शिव को यहाँ भक्ति से......... प्रतिवर्ष मास में...........।।55

प्रजा बहुतेरी अग्न.............न्यान् से संसार रूप समुद्र के कुल को प्रारञ्, नयञ् ज्ञा.....।।56

निश्चित ही दूसरों के पुण्य की रक्षा राजा के द्वारा भी करनी चाहिए ऐसा आदेश किया। श्री श्रीन्द्रशेखर..........त्या यहाँ कार्यों की बढ़ती की गयी।।57

...........स्थापना की।..........और समय पर इस स्थान की रक्षा के लिए तन्मय होने पर।।58

राजा ने दोनों प्रतिमाओं के लिए बहुत धान्यों से युक्त व्रः पक्ष से सम्यक प्रकार से भरे पूरे स्थान वाले ग्राम को देवता के यज्ञ की विशेष वृद्धि वाले ग्राम को दान में दिया।।59

भविष्य में होने वाले राजा लोग धर्म के बीज की सदा रक्षा करें और ब्राह्मण शाल की भूमि पर नियत रूप स्थित होकर ब्राह्मण लोग रहें।।60

पुण्य के............दूसरों के फल को पावे..........क्या बात दूसरों की? धर्मों के सभी प्रकारों से रक्षण करने वाला।।61

114

अंगकोर वाट अभिलेख
Angkor Vat Inscription

यह अभिलेख अंगकोर वट के चारों तरफ घिरे खाई के उत्तर-पूर्व कोने के निकट एक खड़े पत्थर पर उत्कीर्ण है। इस अभिलेख के प्रारम्भ में शिव की वन्दना तथा सर्वज्ञमुनि, सिद्ध, विद्येशविद् (राजा जयवर्मन और इन्द्रवर्मन के होता) और कुछ दूसरे जिनका नाम नष्ट हो चुका है- की प्रशस्ति है। यह उन लोगों के धार्मिक स्थापत्यों का भी वर्णन करता है। सर्वज्ञमुनि के जन्म स्थान के विषय में लिखा है कि वह आर्यदेश का था। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनि भारत के थे फिर भी दूसरे ब्राह्मण ने ईशानभद्रेश्वर नामक लिंग के होता का काम किया। चौथे को राजा श्रीन्द्रवर्मन ने जाह्नवी जिसका अर्थ गंगा है, का होता नियुक्त किया। यही ब्राह्मण था जिसने यशोधर तटाक में गंगा की मूर्ति स्थापित की और उसके लिए सोने का सिंहासन बनवाया।

अन्त में यह लेख श्री जयवर्मन (परमेश्वर के रूप में भी जाना गया) का वर्णन करता है और उनकी प्रशस्ति की चर्चा करता है जिसमें उनको वराह के

समान पद दिया गया जिसने पृथ्वी को विपत्तियों के समुद्र से छुड़ाया। अभिलेख एक ब्राह्मण जो राजा का होता था तथा उनके दोनों पूर्वजों श्रीन्द्रवर्मन तथा श्रीन्द्रजयवर्मन की भी चर्चा करता है। उसके धार्मिक दानों का भी वर्णन है। वे विद्येशधीमन्त के नाम से प्रसिद्ध थे। इसी होता की प्रार्थना पर राजा ने यह आदेश जारी किया।

इस अभिलेख में कुल 103 पद्य हैं।

इस अभिलेख की विस्तृत व्याख्या देखें।[1]

(उत्पत्तिस्थिति सं)हारकारणं परमेश्वरम्।
वन्दे य एक एव प्राक् त्रिधा भिन्नस् सिसृक्षया।।1
...........एकोऽनेक देहेषु देहिनाम्।
भिद्यते बहुधेवेन्दुर्ब्बहुकोटिघटाम्भसि।।2
.........अङ्गभस्माभातीव पाण्डुरा
श्र(स्र)वन्नेत्राग्नितप्तार्द्धचन्द्र द्रव इवावभौ।।3
....................जता दुग्धार्णवद्युतेः।
स्वर्भूमूतिभुवो भोगिनद्धेद्धा मन्दरायते।।4
................लिङ्गमुन्मीलितेक्षणा।
बभौ यद्भूषणाहीन्द्र सन्दर्शनभिये(व).....।।5
.........या स्वकान्तिविलम्बिनम्।
अवरीकर्तुमद्धेन्दुमौलिमौलिम्............।।6
शर्व्व(प्रियो)ऽभवद् विप्रस् सर्व्वागमविशारदः।
सर्व्वलोकार्थकृत(न्) नाम्ना सर्व्वज्ञमुनिरीरितः।।7
चतुर्व्वेदनिधेर्य्यस्य चतुराननमावभौ।
चतुर्म्मुखस्येव भृशञ्चतुर्व्वेदस..............।।8
आर्य्य(दे)शे समुत्पन्नश् शिवाराधनतत्परः।
यो योगेनागतः कम्बुदेशेऽस्मिन्नि............।।9
श्रीभ(द्रेश्वरश)म्भोर्य्यो यजनार्थं समागतः।
चिरकालन्तमभ्यर्च्य प्रययौ पदमैश्वरम्।।10

---

1. *Sharan, M.K., Studies in Sanskrit Inscriptions of Ancient Cambodia V* p.76 & 130

तद्वङ्राजो भवद् धीमान्मान्यो योगविदां विदन्।
सर्व्वागमानान्तत्त्वार्थ सिद्धषि.............॥11
क्षमा..........साशान्ति सत्येन सत्तमः।
धिया यो भूपतिगुरु.......................॥12
सर्व्व..........नदीधारापूरितो जितसागरः।
यत् सहस्रद्विजागस्त्य सर्व्वागम...........॥13
आस्...........नदी नाम...........ई.........।
काष्ठलोष्ठादि यत् प्राप्य.................॥14
अहिंस्.........प्रभवे द्वीपे व्रः थ्क्वल् इतीरिते।
तस्या द्विजातिजनिते(तो)..................॥15
द्वौ त(तद्द्वीपः) भुवौ या तौ पात्रतामेक एति यः।
पृथिव्यां माणेर................................॥16
...........दी स............ङीन्नाम सप्तलोकमिवापरम्।
स तपोमन्दिरां यु.....................................॥17
............नानां पञ्चादीनां हविर्भुजाम्।
मध्ये सि...॥18
..........................श्री शानतीर्थकम्।
कदाचि...॥19
...............................सं संनी(?).....।
....॥20
Verse 21 missing
चकार देशन्नाम्नेमं मध्यदेशज्ज (ना कुलम्)।
वेदवेदाङ्गविद्विप्रं स्रियं प्राप्य प्रियान्तु सः॥22
अत्र रम्यतमे कृत्वा तपोमन्दिरमुत्तमम्।
स्थितो योऽध्यापकस्तीब्रन्तपस्तेपे तपस्विनाम्॥23
यो योगाभ्यासको व्याससमकर्म्मायतिष्ठिपत्।
जयादि देवदेवेशं परमेश्वर शासनात्॥24
संस्थापिते ततस्तस्मिन् स ददर्श महेश्वरम्।
निर्म्मलस्फटिक प्रख्यं सहस्रादित्यवर्च्चसम्॥25

भवानी जाह्नवीयुक्तन्तत्त्वत्रयमिवोदुतम्।
मूर्तिमन्तं सुदुष्प्रेक्ष्यं व्योमव्यापिनभोजसा।।26
प्रणम्य दण्डवद् भूत्वा त्रस्यन् सोत्कण्ठमानसः।
तुष्टाव स्तुतिभिः स्तुत्यन्तं विभुं स द्विजेश्वरः।।27
प्रोवाच तं महेशानो विस्मयोत्फुल्ल लोचनम्।
दिष्ट्या मुने महत्कार्य्यमिदं मम कृतन्त्वया।।28
नियोक्षेय त्वां वरे कार्ये पावनार्थं महीतले।
मत्प्रसादाच्च ते भूयादिष्टसिद्धिर्गरीयसी।।29
त्वदीयमाश्रमं विद्धि श्रेष्ठं मध्यमदेशकम्।
तस्मिन् कुरु महायागं यथोक्तं पारमेश्वरे।।30
तन्नेशानस्य मूर्त्ती द्वे अभिषिक्ते त्वया मम।
श्रीभद्रेश्वरहोतैका त्वपरा मण्डलेश्वरः।।31
त्वद्भागिनेयीपुत्रश्च त्वच्छिष्योऽप्यपरो मुनिः।
तौ कीर्त्तिविश्रुतौ लोके राजहोतृत्वमागतौ।।32
इत्युक्त्वान्तर्हिते देवे विलपन् सोऽतिदुःखितः।
कृत्वा विधिं यथाकल्पं कल्पवित् स्वाश्रमं ययौ।।33
अत्राश्रमपदे रम्ये तपोमन्दिरमण्डिते।
तपोभृताङ्गणाकीर्ण्णे मन्त्रस्तुतिविनादिते।।34
स्वाध्यायनादैरामन्द्रे संप्रज्वलितपावके।
वेद्यभिकीर्ण्णकुसुमे ब्रह्मलोक इवापरे।।35
कृतवान् स महद्यागं कालयागमिति श्रुतम्।
सरस्वतीभागयुतं लोकपाल समावृत्तम्।।36
हुताग्नेर्द्युस्पृशद्धूम्रधूम पाशाकरैरिव।
स्वर्लोकाकर्षण करन्तत्प्रदानुन्तपोभृते।।37
अनुग्रहार्थं लोकानामास्थितोऽत्राश्रमे मुनिः।
अवश्य(˙)भावि तत्कार्य्यं संप्रतीक्षे शिवाज्ञया।।38
शिष्यर्षभोऽभवत्तस्य यो व्याप्ताशो यशोऽसुभिः।
पूर्ण्णीकृद्वङ्शदुग्धाब्धेर्जितेन्दुरतिनिर्म्मलः।।39
सर्व्वदा सर्व्वविद्याभिस् सेवितो वेद्यमाविदन्।

तस्माद्विधेशविदिति नाम्ना यः प्रथितो भुवि।।40
सर्व्वदाराधयन् योऽसौ मनोवाक्कायवृत्तिभिः।
गुरुं पुरा पुरारातिमुपमन्युरिवाबभौ।।41
शैव व्याकरणज्योतिष्शास्त्राम्भोनिधिपारगः।
कृताभिषेको गुरुणातिमान्यो यो मनीषिणाम्।।42
कृतकृत्ये गुरौ तस्मिन् प्रयाते पदमैश्वरम्।
तं गुर्व्वाराधनपरस् सोऽनुगन्तुमना भृशम्।।43
तदानदद् वाग् द्युमवाभ्येनं यच्छि(च्चि)न्तितं मुने।
मा कृथा होतृतां हि श्रीभद्रेशस्य गमिष्यासि।।44
श्रुत्वाचिन्त्यं वियद्वाक्यन्देवकार्य्यं निबन्धनम्।
स गुरुस्मरणार्त्तोऽपि विदन् वेद्यं भुवि स्थितः।।45
स ररक्ष पदन्तस्य मुनिवर्ग्गसमाकुलम्।
अभ्युद्धुताग्निन्नुतराड् गुरुतस्तत्कुलं प्रति।।46
उपार्जिताभिर्भिक्षाभिस्तर्प्पयन् सोऽतिथीन सदा।
स्वाध्यायवांस्तपस्तेषे यथाशास्त्रोदितं महत्।।47
शैवागमानां सर्व्वेषां विसृतिं प्रततान सः।
भानुमांस्तपसा दीप्तो दीधितीनामिवोदये।।48
राजा श्रीजयवर्म्मासीत् कदाचिद् व्याकुलो भृशम्।
होतुश् शुद्धान्वयाचारश्रुतस्यान्वेपणेऽध्वरे।।49
तदा पुरस्ताद्विदुषान्तेन राज्ञा विचारितः।
बहुमान्यो मतिमतां सद्धोतृत्वे न्ययोजि सः।।50
कृत्वा यज्ञान्यनेकानि दत्त्वा सर्व्वस्वदक्षिणाम्।
तस्म स श्रीन्द्रवर्म्माणमभिषे....................।।51
सोऽभिषेकविद्यौ तस्य मतश् श्री जयवर्म्मणा।
परमेशेन शक्रस्य गुरुर्गुरुवरो यथा।।52
श्रीन्द्रवर्म्मा दिवं याते भूपे श्रीजयवर्म्मणि।
आसीद्भद्रेश्वरेशानस्थापन कृतमानसः।।53
शासनात् परमेशस्य योजयामास यन् नृपः।
श्री भद्रेश्वर लिङ्गस्य होतृ.................।।54

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणः परमेश्वरः।
स्थापनार्थं स्वलिङ्गस्य यो..............॥55
गुरुश्रेष्ठोऽपि संस्थाप्य देवदेवञ्जगद्गुरुम्।
.........तां स्वर्णमयीं साक्षमालाम्.........॥56
...........करणान् हैमान् रत्नविरञ्जितान्।
........स्वनिकरान् प्रादात्तस्मिन्............॥57
........कानि सार्व्वान्याशयमम्भसाम्।
सोऽस्यागनेः पूजनार्थानि कृत्वा...........॥58
.......................न्योऽभवद्भूतहिते रतः।
शितिकण्ठे समुत्कण्ठस् स..........श्.....॥59
.... भूद्र यजने गुरुतः प्रति।
.......स्थस्य शिवस्यास्मिन् पूर्व्वं यातेसताङ्गुरुः॥60
.............................भवध्वङ्सनतत्परः।
.........ना विद्या कर्म्मणाचारेण विदांवरः॥61
.............................जाह्नव्या विनियोजितः।
यो लिङ्गपुर्य्यां होतृत्वे तेन श्रीश्रीन्द्रवर्म्मणः॥62
................................शिवं परम्पकारणम्।
योऽभवद्धोतृतां यानो राज्ञश् श्रीश्रीन्द्रवर्म्मणा॥63
.............................मुमया सहितं पुनः।
नन्दिनं कालसंयुक्तं हैम शृङ्गगिरौ वृषभ्॥64
सर्व्वद्रव्याण्यवाप्तानि यज्ञे श्रीश्रीन्द्रवर्म्मणः।
तान्यदाद् गङ्गया युक्ते स श्रीभद्रेश्वरेश्वरे॥65
स्थापितायां च ग(ङ्गायां) यशोधरतटाकके।
सिंहासनं स्वर्ण्णमयन्तस्याः कृत्वा दिवङ्गतः॥66
...........स........पृथ्वीन्द्रमूर्द्धोद्धृतपदाम्बुजः।
सम्राट् श्री जयवर्म्मादि परमेश्वर नामधृक्॥67
प्राणिनो दुःखपाशेन पाशितान् परमेश्वरः।
दृष्ट्वा विमुक्तये तेषान्तस्माद् यो मूर्तिमान् ध्रुवम्॥68
कालदोषोदधौ धात्रीं मग्नामुद्धृत्य निश्चलाम्।

भूयो बभार यश् श्रीमान् श्रीवराह इवापरः।।69

सर्व्वद्वीपढेवधीशेषु विनयेनानतेषु यः।

दण्डन्दधार षाड्गुण्यवृद्धस् सद्गुणिनां वरः।।70

युगदोषादतिकृशः पादहीनो वृषोऽपि यम्।

(वृ)षरक्षोचितं प्राप्य वेधोण्डे पुष्कलोऽभ्यगात्।।71

कान्तिः कामस्य कामारिणानास्था दग्धसत्तनोः।

अतीव तस्यास् स्थित्यर्थं यं वेधा विदधे ध्रुवम्।।72

यस्यामलाङ्घ्रदुग्धाब्धौ पूर्ण्णे वक्त्रेन्द्रुनानिशम्।

(श्री)रिवाशिश्रियल्लौल्यमयशो मार्ष्टुमात्मनः।।73

लक्ष्मीमिवेन्दुनलिने निनीषुर्भारती रताम्।

(य)स्यास्ये जितपद्मारिपद्मेऽतिष्ठद् ध्रियंरुचा।।74

अनवद्यं सदा वृद्धं राजा राजानम.............।

(त)तार सैंहिकेयं यन्दृष्ट्वा दुःखदिवोत्क्षयः।।75

यस्यास्ये.........ई.........ई..........स्थिताम्।

भूमिभुज इवालीना कीर्त्तौ रोषाद् द्विडानने।।76

...................................कीर्त्तिरिवाक्षया।

पूर्ण्णेन्दुविजये वृत्तङ् ख्यातुन् त्रैलोक्यगामिनी।।77

उत्खातद्विदपुर..................जसिंहयोः।

यशोवितान काङ्क्षेलिपदङ्कृत्वाभ्यकल्पयत्।।78

निशा...।

यशोम्भसाभिषिक्तारिरुजादत्तकराभवत्।।79

स..........................(उ)दरुष।

दानवर्षं सदा मुञ्चन् जितेन्द्रोऽतिशताध्वरम्।।80

...........ज्.........सर्व्वत्र हि दिवाकरः।

पद्मे श्रुत प्रवोधोऽपि किन्न प्रावोधयत् परम्।।81

..............................ण्डैकद्युतिः।

शास्त्रादीक्षादिविधिना कृतानुग्रहकोऽभवत्।।82

....

....

पादाम्बुज शिरसि शुभ्रयशो नृपाणा-

माशासु रोधासि महाम्बुनिधेर्म्महाज्ञा।।83

....

आसीद्विधाकलापूर्ण्णो द्विजेन्द्रोऽतीव निर्म्मलः।।84

....

धैर्य्येण शैलेन्द्रसमस्तपसा भाष्करोपमः।।85

....

ज्वलितं सन्ततमिवं हविषा हव्यवाहनम्।।86

....

श्रीन्द्रवर्म्मावनीन्द्रो यमामन्त्रयितुमद्यतः।।87

....

प्रचक्रमे स्थापयितुं शिवं श्रीशानतीर्थकम्।।88

....

सिद्धार्थं पूजितं पूर्व्वं पावनञ्जगतां सदा।।89

....

दासदासी समायुक्तन्ददौ सोऽस्मिन् महेश्वरे।।90

....

तानि सर्व्वाणि स प्रादाच्छ्रीभद्रेश्वर शम्भवे।।91

....

यस्तपोमन्दिरं रम्यं पुराणात् पुनराकरोत्।।92

....

ययौ सद्धोतृतां राज्ञश् श्रीश्रीन्द्रजयवर्म्मणः।।93

....

यातश् श्रीजयवर्म्मादिपरमेश्वरभृतः।।94

....

भूयोभूमिभृता तेन विभवैश् शिविकादिभिः।।95

..............................यो गुरु............।

श्रीभद्रेश्वर नन्दीशस्थापनं कर्त्तुरमारभेत्।।96

...........................नन्दीश्वरमिवेश्वरम्।

दक्षिणान् निखिलामस्मै प्रादाद्धुवभुजे तदा।।97

......................रूप्यस्वर्ण्णमयं शुभम्।

सोऽदादस्मै हुतभुजे ग्रामान् सपशुकिङ्करान्।।98

......................................भूभृतः।

रक्ष्यो यमाश्रमश् श्रेष्ठस्तधीनो यथाविधि।।99

शिवाग्नेरस्य................कल्पितन्तेन यज्विना।

कुलस्य पत्या कर्त्तव्यमातिथ्यं भोजनादिकम्।।100

.............................प्रार्थितं शासनं महत्।

होत्रा श्रीजयवर्म्मादि परमेश्वर भूभृतः।।101

....

..............न्वहं येन यातु स स्वर्ग्गम्।

गच्छतु यो नाशयंति.....................

त्वाकल्पान्तादवीचिनरका दौ..............।।102

विद्याभिस् सकलाभिर्य्यस् सर्व्वदा सेवितो भृशम्।

विद्येश इव विद्येशधीमानित्यति विश्रुतः।।103

अर्थ- रचना, पालन और नाश के कारण परमेश्वर हैं, उनकी वन्दना करता हूँ जो एक ही हैं पहले, तब सृष्टि की इच्छा से तीन हुए हैं।।1

.........एक जो अनेक देहों में देहधारियों के भिन्न होते हैं जैसे चन्द्रमा बहुत रूपों से उसी प्रकार जैसे बहुत करोड़ों घड़ों के जल में बहुत प्रतिबिम्ब रूप से दीखने वाले चन्द्र के समान।।2

........अंग में भस्म सा सोहता है श्वेत। चूते हुए नेत्र की आग से तवे हुए आधे चन्द्र से द्रव सा सोहता था।।3

.......दूध के समुद्र के प्रकाश से ऐश्वर्य से उत्पन्न साँपों से बँधे उससे प्रकाशित मन्दार के समान आचरण करता है।।4

.........लिंग को आँख खोलकर देखने वाली जिसके आभूषण सर्पराज के दर्शन के डर से मानो.............।।5

........अपनी कान्ति को विलम्बित करने वाले को नीचा दिखाने के लिए चन्द्रशेखर के मस्तक को............।।6

शिव हैं प्रिय जिसे ऐसा ब्राह्मण जो सभी शास्त्रों में विशारद है और सभी लोगों के हित कार्य करने वाला, नामत सर्वज्ञमुनि कहा जाने वाला है।।7

चारों वेदों के निधि जो हैं उनके चार मुख सोहते थे ब्रह्मा के समान मानो बहुत चार वेद।।8

आर्य देश में उत्पन्न शिव की आराधना में तत्पर.........जो इस कम्बुज देश में योग से आये...........।।9

श्री भद्रेश्वर शिव के पूजन के लिए आये हुए वे बहुत दिनों तक पूजन करके ईश्वर के पद को प्राप्त हुए थे।।10

जिनके वंशज बुद्धिमान हुए मान्य हुए योग जानने वालों को जावा से आये सभी शास्त्रों के तत्त्व अर्थ को सिद्ध-ऋषि.........।।11

क्षमा, सहिष्णुता...........शान्ति, शुद्धता, सत्य से अतिशय सज्जन.........बुद्धि से जो राजा का गुरु..........।।12

सब.......नदी की धारा से पूरित जीता है सागर को जिसने वह जो हजार ब्राह्मण अगस्त्य सभी शास्त्र......।।13

आस्..........नदीनाम्...........सूखी लकड़ी ढेला आदि जो पाकर............।।14

अहिंसा............प्रभवद्वीप में ब्र:थ्क्वल इस नाम से विख्यात् उसके ब्राह्मण से उत्पन्न से...........।।15

दो वह द्वीप दो भुवन जो वे दो जो एक पात्रता को प्राप्त करता है पश्चिम में मणि....।।16

........दी रु............ङीन् नाम दूसरे सात लोक के समान वह तप के मन्दिर को........।।17

............पाँच आदियों के.............अग्नियों के बीच में सि........ ....।।18

...................श्री ईशान तीर्थ को.......................कभी............ ....।।19

....

....

....

Verse 21 missing

इस देश को मध्य देश नाम से नामकरण किया जो देश जनों से भरा था वेदों और वेदों के अंगों के जानकार ब्राह्मण की स्त्री जो प्रिया थी उसने उसे पाकर।।22

यहाँ अतिशय रमणीय स्थान पर उत्तम तपो मन्दिर बनाकर जो अध्यापक था उसने तपस्वियों की तेज तपस्या की थी।।23

परमेश्वर के शासन से जो योगाभ्यास करने वाला कर्म से व्यास के समान जयादि देव देवेश की स्थापना उसने की थी।।24

तब उनकी स्थापना करने के बाद उसने उस मन्दिर में महेश्वर को जो निर्मल स्फटिक समान सफेद हजारों सूर्य के समान तेज वाले थे देखा था।।25

भवानी और गंगा से युक्त तीनों तत्वों के समान आश्चर्यकारी मूर्तिमान दुःख से देखने योग्य, बल से आकाश में व्यापने वाले को देखा।।26

तीन बार दण्डवत करके उत्सुक मन से स्तुति विनय की थी- स्तुति के अन्त में उसने व्यापक शिव ब्राह्मण से महादेव बोले।।27

जो ब्राह्मण आश्चर्य से खिली आँखों वाला था- भाग्य से हे मुने! यह महान् कार्य मेरा तेरे द्वारा किया गया।।28

तेरी नियुक्ति महीतल में पवित्रता के लिए बड़े कार्य में करूँगा और मेरी प्रसन्नता से तेरी अतिशय श्रेष्ठ सिद्धि होवे।।29

तुम्हारा आश्रम मध्य देश में श्रेष्ठ है यह जान लो उसमें महायज्ञ करो जैसा परमेश्वर में कहा गया है।।30

वहाँ ईश्वर की दो मूर्तियाँ तेरे द्वारा मेरी दो मूर्तियाँ अभिषेक से युक्त हैं- श्री भद्रेश्वर का होता एक दूसरा मण्डलेश्वर।।31

और तेरी भानजी का बेटा तेरा शिष्य दूसरा मुनि है। वे दोनों कीर्ति से प्रसिद्ध लोक में राज होता पद पा चुके।।32

यह कहकर महादेव के छिप जाने पर रोता हुआ वह अतिशय

दुखी हुआ। कल्प के अनुसार विधि करके कल्प का जानने वाला अपने आश्रम को गया।।33

यहाँ आश्रम में जो आश्रम रमणीय है तपस्या के मन्दिर से शोभित है तप धारण करने वाली स्त्रियों से युक्त मन्त्र और स्तुति शब्दायमान स्वाध्याय के शब्द से जो शब्द मधुर और अस्पष्ट थे अग्नि के अच्छी तरह प्रज्वलित होने पर दूसरे ब्रह्मलोक के समान फूल बिखरे थे।।34-35

उसने कालयज्ञ के नाम से प्रसिद्ध सरस्वती यज्ञ से युक्त लोकपाल से सम्यक रूप से आवृत्त महायज्ञ किया था।।36

हवन किये जाते अग्नि के धुएँ आकाश को छूने वाले जो धुएँ के आकार के समान थे। स्वर्ग लोक के आकर्षण करने वाले वह देने के लिए तप धारण करने वाले को।।37

लोगों पर कृपा करने के लिए मुनि इस आश्रम में हैं शिव की आज्ञा से वह कार्य अवश्य होने वाला है जिसकी प्रतीक्षा करता हूँ।।38

उनके श्रेष्ठ शिष्य हुए जो अपने यश की किरणों से सभी दिशाओं में व्याप्त थे। कुल के दूध के समुद्र के पूर्ण करने वाले चन्द्र को जीत चुकने वाले अतिशय स्वच्छ।।39

हमेशा सभी विद्याओं से सेवित जानने योग्य विषय के जानकार उस कारण 'विधेशवित्' इस नाम से पृथ्वी पर जो प्रसिद्ध हुए थे।।40

जो वह हमेशा मन, वाक्य और शरीर की वृत्ति से पूर्व गुरु को शिव को भजता हुआ उपमन्यु के समान सोहता था।।41

शिव दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, शास्त्र रूप समुद्र के पार जाने वाले विद्वान् गुरु द्वारा अभिषेक प्राप्त कर चुकने वाले जो विद्वानों के अतिशय माननीय थे।।42

उसके स्वर्गीय होने पर जो कृतकार्य था उसे गुरु की आराधना में परायण वह उसके पीछे जाने की इच्छा वाला अतिशय रूप से।।43

तब वाणी निकली आकाश में हे मुने हूँगा जो तुमने सोचा होता का कार्य मत करो श्री भद्रेश को प्राप्त करोगे।।44

न चिन्ता करने योग्य वाक्य देवता के कार्य के निबन्धन वाला

सुनकर वह गुरु के स्मरण से दुखी भी जानने योग्य का जानकार पृथ्वी पर स्थित रहा।।45

उसने उसके पद की रक्षा की मुनि लोगों से युक्त विशेष रूप होम किये गये अग्नि स्तुति का राजा गुरु उस कुल के प्रति।।46

उपार्जित भिक्षाओं से वह अतिथियों को तृप्त करता हुआ हमेशा स्वाध्याय करने वाला तप करने लगा जैसा शास्त्र में महान् तप लिखा है।।47

सभी शैव दर्शन शास्त्रों के विस्तार को विस्तारित किया उसने किरणों वाला तप से प्रकाशित उदय समय में किरणों के प्रकाशित उदय समय में किरणों के प्रकाश के समान।।48

यज्ञ में होता के शुद्ध आचार सुन चुकने वाले की खोज में राजा श्री जयवर्मन किसी समय बहुत व्याकुल थे।।49

तब उस राजा ने विद्वानों के आगे विचार किया और बुद्धिमानों के बहुत माननीय को अच्छे होता के पद पर उसने नियुक्त किया।।50

अनेक यज्ञों को करके सर्वस्व दक्षिणा रूप में देकर उसने श्री इन्द्रवर्मन को अभिषेक..........।।51

वह अभिषेक के विषय में उस जयवर्मन का पूज्य था। परमेश ने इन्द्र के जो श्रेष्ठ गुरु बृहस्पति हैं।।52

श्री जयवर्मन राजा के दिवंगत होने पर श्री इन्द्रवर्मन राजा भद्रेश्वर, ईशान की स्थापना के लिए मन बना चुके थे।।53

परमेश्वर की आज्ञा से जिसे राजा योजित कर चुके थे श्री भद्रेश्वर लिंग के होता....।।54

उत्पत्ति, पालन और संहार के कारण परमेश्वर अपने लिंग की स्थापना के लिए जो...।।55

देवों के देव संसार के गुरु की स्थापना श्रेष्ठ गुरु ने करके भी..... ....उसे सुवर्णमय अक्षयमाला युक्त...........।।56

.............कारणों को सुवर्ण से बने को रत्न से विशेष रंगे हुए को .....उसमें अपने जनसमूहों को............।।57

...........सभी जलाशयों को........वह इस अग्नि के पूजन के

अर्थों को करके......।।58

........जो हुआ प्राणियों के हित में रत........शिव में सम्यक उत्सुकता वाला वह....।।59

.......भद्र पूजन में गुरु से प्रति.....इस शिव के इस में सज्जनों के गुरु पहले जाने पर।।60

.......संसार के नाश में तत्पर..........विद्या कर्म से आचार से जानकारों के श्रेष्ठ।।61

.................गंगा के विशेष रूप से नियोजित जो लिंगपुरी में होता के काम पर उस श्रीन्द्रवर्मन द्वारा।।62

...........शिव को परम कारण को...........जो होता बना राजश्री श्रीन्द्रवर्मन का।।63

..........फिर उमा के साथ...........काल सहित नन्दी को हेमशृंग पहाड़ पर वृष को।।64

यज्ञ में श्री श्रीन्द्रवर्मन से सभी द्रव्य पाये उन सबको गंगा युक्त श्री भद्रेश्वरेश्वर को उसने दिया था।।65

यशोधर तड़ाग पर गंगा की स्थापना करने पर उसका सिंहासन स्वर्णमय करके वह दिवंगत हुआ।।66

......राजाओं के मस्तकों से चरणकमल छुए जाने वाले राजा श्री जयवर्मन आदि परमेश्वर नाम के धारण करने वाले।।67

प्राणी को दुख के बन्धन से बँधे देखकर परमेश्वर विशेष छुटकारा के लिए उनके उस कारण से जो निश्चित रूप से मूर्तमान हुआ।।68

काल के दोष रूप समुद्र में पृथ्वी डूबी है ऐसा देखकर उस अचला का उद्धार करके जिसने फिर से उसे धारण किया दूसरे श्रीमान् वराह के समान।।69

वह सद्‌गुणियों में श्रेष्ठ सभी द्वीपों के स्वामियों जो विनयी थे उनमें से जिसने दण्ड धारण किया था छ:गुणा बढ़ा हुआ।।70

कलियुग के दोष से अति दुर्बल चरणहीन वृष रूप धर्म भी जिस धर्म की उचित रक्षा करने वाले को पाकर बली बनकर चलने लगा था।।71

कामदेव की छवि शिव से अनास्था के कारण अच्छी देह के जलने से उसकी अतिशय स्थिति के लिए जिस राजा के कामदेववत् निश्चित रूप से बनाया ब्रह्मा ने।।72

जिसके स्वच्छ अंग रूप दूध के समुद्र में पूर्ण में मुख चन्द्र से हमेशा जैसे लक्ष्मी के समान चंचलता का आश्रय लिया- लक्ष्मी अपने अयश को छिपाने झाड़ने बुहारने के लिए मानो चंचलता को अपनाया।।73

लक्ष्मी के समान चन्द्र कमल में रत उसको सरस्वती ले जाने की इच्छा करती है जिसके मुख में कमल के जीतने वाले कमल में शोभा से लज्जापूर्वक ठहरी।।74

पापों से हीन हमेशा बढ़े को राजा राजा को ....राहु को तारा जिसे देखकर मानो दुख से क्षीण हो...........।।75

जिसके मुख में.............ठहरी को........राजा के समान समन्तात्भाव से लीन, कीर्ति क्रोध से शत्रु के मुख में।।76

.....अविनाशी कीर्ति के समान पूर्ण चन्द्र के विजय में तत्पर तीनों लोकों में जाने वाली कीर्ति को प्रसिद्ध करने के लिए...........।।77

ऊपर को रखते हुए शत्रु के पुर......और सिंह के कीर्ति के विस्तारक क्रीड़ा के चरण करके अभिकल्पना की थी।।78

रात..............यश रूप जन से भीगे शत्रु के रोग से कर=किरण, कर=हाथ दिये हैं कर जिसे वह दत्तकरा हुई।।79

वह........जल को मद जल की वर्षा हमेशा छोड़ता हुआ इन्द्र को जीतने वाला अतिशय सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाले को।।80

...........क्योंकि सभी स्थानों पर सूर्य है। कमल में सूना है प्रबोध= हँसना, खिलना, जगना, कमल खिलने पर भी क्या पर=दूसरा, पर=शत्रु क्या दूसरे ने जगाया था।।81

.........आग है एक प्रकाश जिसमें ऐसा वह शास्त्र की दीक्षा की विधि से दयालु हुआ था।।82

........चरण कमल को सिर पर उज्ज्वल यश राजाओं के सभी दिशाओं में आकाश पर महासागर की महाआज्ञा।।83

...........विद्या कला से पूर्ण था ब्राह्मण राज अतिशय स्वच्छ

था।।84

............धीरता में हिमालय के समान, तपस्या में सूर्य के समान।।85

.........सर्वदा घी से आग प्रज्वलित ....के समान तेजस्वी।।86

....................श्री इन्दुवर्मन अवनीन्द्र=राजेन्द्र, राजाओं का स्वामी, जिसे आमन्त्रित करने में उद्यत।।87

............पराक्रम किया श्री ईशानतीर्थ शिव की स्थापना के लिए।।88

........सिद्ध है अर्थ जिसका वह सिद्धार्थ= सिद्ध प्रयोजन, पूजा की हुई पहले हमेशा सम्पूर्ण संसार के पवित्र करने वाले को।।89

..........इस महेश्वर को दास, दासी से युक्त दान दिया उसने।।90

........उन सभी वस्तुओं को उसने प्रदान किया था श्री भद्रेश्वर शिव के लिए।।91

.............जिसने तपस्या का मन्दिर रमणीय पुराने से नया फिर बनाया था।।92

...............राजा श्री इन्द्रजयवर्मन का सज्जन होता पद को पाया था।।93

.............श्री जयवर्मन आदि परमेश्वर को धारण करने वाले का प्राप्त हुआ था।।94

...........फिर उस राजा से विभवों से शिविका आदि से डोला।।95

जो गुरु.....श्री भद्रेश्वर, नन्दीश की स्थापना करने के लिए आरम्भ करे।।96

...............नन्दीश्वर के समान ईश्वर को..........तब इस अग्निदेव को सभी दक्षिणाएँ दी थीं।।97

............रूप्यक और सुवर्णमय जो कल्याणप्रद है इस अग्निदेव को बहुत से गाँव, पशु और दास उसने दिये थे।।98

...................राजा के..................रक्षा करने योग्य जो श्रेष्ठ

आश्रम उसके अधीन विधिपूर्वक..............।।99

इस कल्याण देने वाले शिवाग्नि के............कल्पित किया गया उस यज्ञ करने वाले के द्वारा कुलपति द्वारा भोजन आदि आतिथ्य सत्कार करने लायक है।।100

............प्रार्थना की गयी महान् शासन के लिए.............होता के द्वार श्री जयवर्मन आदि परमेश्वर राजा की।।101

...............प्रतिदिन जिसके द्वारा जाय वह स्वर्ग को जाय जो नाश करे......कल्प के अन्त तक अवीचि नामक नरक आदि में।।102

..........सभी विद्याओं से जो हमेशा बहुत सेवित है विद्येश के समान जो विद्येशद्यीमान्इस नाम से जो नित्य प्रसिद्ध था।।103
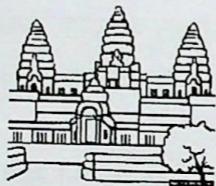
115

बैसेट खड़े पत्थर अभिलेख

Baset Stele Inscription

बटमबंग जिले के वट पो वल में इस अभिलेख के साथ खड़ा पत्थर पाया गया है। ऐसा कहा जाता है कि यह बैसेट से लाया गया। संस्कृत मूल लेख में देवता श्री त्रैलोक्यसार और एक बलिदान करने वाले जो पंचरात्र सम्प्रदाय के रीति-रिवाजों में निपुण था (सम्भवतः वह धर्मपाल ही था) का वर्णन करता है। धर्मपाल के द्वारा अच्युत देवता की मूर्ति की स्थापना की भी यही चर्चा करता है। अन्तिम चार श्लोक तिथियों का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है।

इस अभिलेख में कुल 13 पद्य हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

Vv 1-2 illegible

सिद्धैरपि तपस्सिद्धैर्य्यस्य.....................।

---

1. *IC, Vol.II*, p.133

स श्री त्रैलोक्यसाशख्यः ख्यातवीर्य्य......।।3
यज्वना पञ्चभिर्य्यज्ञैः पञ्चकलाभिगामिना।
पञ्च रात्रार्चाचुञ्जुना पाञ्चभौतिक वेदिना।।4
जयति प्र णतानेकभूमि पार्च्चित शासनः।
राजा श्री जयवर्म्मेति विजय प्रतिमो युधि।।5
यस्य रूपश्रियं वीक्ष्य मन्ये विस्मित चेतसः।
अनङ्गस्याङ्ग पतनादर तित्वं वृथा रतेः।।6
तस्मिन्महीमृति महीमरिशासिनि शासति।
पितृपैतामहीमन्य महीजित महीयसी(म्)।।7
(अ)नेक जन्म जनितव्रतनिर्धूत कर्म्मणाम्।
(कु)ले भागवतानां यो भागधेयाद जायत।।8
........पया संविभागेन नयेन विनयेन च।
अन्तरं यस्य नास्त्येव जनेषु रा(भा?)जनेषु च।।9
(धर्म्म) पालेन तेनेह भगवानयमच्युतः।
स्थापित पुण्ययशसा गुरुपुण्य विवृद्धये।।10
........यश्वविशिखैर्ग्गते शकपरिग्रहे।
सौरभेयगते शुक्रे रोहिणीन्दौ सभार्ग्ग(वे)।।11
द्वन्द्वस्त्रे सावनेयेऽर्क्के साश(शी)तकरणा(न)न्दने।
मृगराजोदये कुम्भसुर राज पुरोहिते।।12
सकृष्णपक्षे पि दिने विशुद्धे द्वादशे शुचेः।
सहस्रकरजे याते तुलामतुलतेजासि।।13

अर्थ- Vv 1-2 illegible

सिद्धों से तथा तपस्वियों से भी जिसके - प्रसिद्ध वीर्यवान वे तीनों लोकों के सार रूप में प्रसिद्ध (नाम वाले)।।3

पाँच महायज्ञों (पितृयज्ञ, देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, ब्रह्मयज्ञ तथा भूतयज्ञ) के करने वालों के द्वारा, पाँच कलाओं को जानने वाले के द्वारा एवं पाँच भूतों से निर्मित इस प्रपंच का जिनको यथार्थ ज्ञान हो गया है उनसे तथा पंचरात्रागम पद्धति से पूजा करने वालों के द्वारा पूजे जाते हैं।।4

प्रज्वलित शासन वाले अनेक राजागण जिनके चरणों प्रणत हैं

115. बैसेट खड़े पत्थर अभिलेख

ऐसे मूर्तिमंत विजय स्वरूप महाराजा श्री जयवर्मन युद्ध में विजयी होते हैं।।5

जिसके रूप सौन्दर्य को देखकर चकित बुद्धि लोगों ने कामदेव के अंग पतन के कारण रति के क्रोध को व्यर्थ माना।।6

शत्रुओं से शासित भूमि पर भी शासन करने वाले उस राजा जयवर्मन के शासन काल में पितृ पितामह द्वारा शासित भूमि के अतिरिक्त अन्यों के द्वारा भी शासित विशाल भूमि जीती गयी।।7

अनेक जन्मों के व्रतों से जिन्होंने कर्म विपाकों को धो दिया है, उन महाभागवतों के कुल में सौभाग्यवश जो उत्पन्न हुआ।।8

............सम्यक विभागों के द्वारा, न्याय एवं विनय से किये जाने वाले जिसके शासन में प्रजाजनों में तथा अपने लोगों में अन्तर नहीं था।।9

उस धर्मानुसार प्रजापालन करने वाले राजा के द्वारा पुण्य और यश के लिए तथा गुरुजनों के पुण्यवृद्धि के लिए इन भगवान् अच्युत की स्थापना की गयी।।10

..........वर्ष शकाब्द के बीत जाने के बाद वृष राशि में, शुक्र के रोहिणी नक्षत्र में शुक्र सहित चन्द्रमा के, मिथुन राशि में मंगल सहित सूर्य के साथ शीतकर नन्दन बुध के, कुम्भ राशि में देवेन्द्र गुरु बृहस्पति के तथा अतुल तेजस्वी शनि के तुला में स्थित होने पर तथा सिंह लग्न के उदय होने पर आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष के द्वादशी के विशेष पवित्र दिन में यह स्थापना की गयी।।11-13

116

प्रह कुहा लुओन अभिलेख
Prah Kuha Luon Inscription

यह अभिलेख प्रह कुहा लुओन में पाया गया जो बन्तेमस प्रान्त में स्थित है। भगवान् शिव की वन्दना एवं राजा जयवर्मन प्रथम की प्रशस्ति से यह प्रारम्भ होता है। उत्पन्नेश्वर देव के सामानों पर साधु के अधिकार की यह चर्चा करता है। अन्त में यह स्वाभाविक न मानने वालों के ऊपर विपत्ति का आह्वान करता है।

इस अभिलेख में 5 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं।

अभिलेख का सम्पादन जॉर्ज सेदेस द्वारा किया गया है।[1]

जयतीशः प्रवृत्तोऽपि नेप्सया न जिहासया।
यस्येच्छाचक्रघटितं विश्वं भ्रमत् स नैकधा।।1
येन कन्दर्प्यवपुषा समुद्रवसना मही।
सहारिमूर्द्धमणिभिः विक्रमैरधरीकृता।।2

---

1. *IC, Vol. II,* p.10

जयिना नृपतीन्द्रेण तेन श्रीजयवर्म्मणा।
आज्ञया सत्यसन्ध्ये(न्धे)न स्थितिरेवन्निबद्ध्यते।।3
क्षेत्रगोमहिषारामभृत्यादिधन संपदः।
अहार्य्याः पुरुषैरेषां पतयस्तापसा इति।।4
श्रीमदुत्पन्नेश्वरस्य हरन्ति द्रविणानि ये।
ते वसन्त्यन्धतामिस्रे यावदर्क्केन्दु तारकाः।।5

अर्थ- विश्व में जो राग-द्वेष से सर्वथा रहित होकर प्रवृत्त है तथा जिसकी इच्छा से यह संसार चक्र घूम रहा है, परन्तु स्वयं जो कभी नहीं घूमता हे, उस प्रभु की जय हो।।1

कामदेव के समान सुन्दर शरीर वाले, राजाओं के भी स्वामी, जिस महाराज श्री जयवर्मन द्वारा अपने विक्रम से इस समुद्रवसना पृथ्वी को तथा शत्रुओं के मुकुट मणियों को पैरों के तले कर रखा गया है, उनकी आज्ञा से सत्यसंघ के द्वारा इस व्यवस्था का निबन्धन किया गया।।2-3

ये खेत, गाय, भैंस, बागीचा, नौकर, धन-सम्पत्ति आदि राजपुरुषों द्वारा हरण करने योग्य नहीं हैं। इनके स्वामी तपस्वी लोग हैं।।4

श्रीमान् उत्पन्नेश्वर की सम्पत्तियों का जो हरण करते हैं वे सूर्य, चन्द्र तथा तारागणों की स्थिति पर्यन्त अन्धतामिस्र नामक नरक में वास करते हैं।।5

117

फुम क्रे पत्थर अभिलेख
Phum Crei Stone Inscription

पत्थर का वह टुकड़ा जिस पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है स्नाम क्रपो और फुम क्रे बीच में स्थित एक जंगल में पाया गया। यह स्थान कोपोन स्पू प्रान्त के कोन पिसेई जिले में है। इस अभिलेख की जो सजावट है (कमल और मोतियों की एक पंक्ति- अभिलेख के उत्कीर्ण भाग के नीचे) वैसा सातवीं शताब्दी के शिल्प कला में पाया जाता है। आर.सी. मजूमदार का मानना है कि लिखावट की शैली के आधार पर यह जयवर्मन का कार्य होगा।[1]

राजा के द्वारा विष्णु की मूर्ति स्थापित करने की चर्चा करते हुए एक श्लोक से यह प्रारम्भ होता है।

इस अभिलेख में केवल दो पंक्तियाँ हैं जो शुद्ध हैं।

जॉर्ज सेदेस द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन किया गया है।[2]

1. *IK,* p.563
1. *IC, Vol. II,* p.198

श्री कपिल वासुदेवेन नियोग चूम्बलेन यज्वना।
भृत्येन स्थापितो विष्णुः राज्ञा श्री जयवर्म्मणा।।

अर्थ- राजा श्री जयवर्मन द्वारा आदिष्ट यज्ञकर्ता सेवक श्री कपिल वासुदेव के द्वारा भगवान् विष्णु की स्थापना की गयी।

118

तुओल अन नोत खड़े पत्थर अभिलेख

Tuol An Tnot Stele Inscription

यह स्थान ता केव प्रान्त के बटी जिले में स्थित है। इस अभिलेख में श्री खण्ड लिंग और श्री रंडापर्वतेश नामक दो देवताओं के सहयोग की चर्चा है। इन दो देवताओं की मूर्तियों के सम्बन्ध में जो सम्पत्ति है उसी सिलसिले में सहयोग की बात है। भवचन्द्र के द्वारा इन मन्दिरों को दिये गये दानों का भी जिक्र है।

जयवर्मन के शासन-काल का अन्तिम वर्ष 674 जाना जाता था पर इस अभिलेख के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि वह 681 ई. तक शासन करता रहा।

इस अभिलेख में 6 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

जयत्यशेषलोकानान्नाथ एको महेश्वरः।

1. *IC,* p.39

प्रतनोति सदाष्टाभिस्तनुभिर्य्योऽखिलज्जगत्।।1
श्रीरण्डापर्व्वतेशेन कृतं श्रीजयवर्म्मणा।
मिश्रं श्रीखण्ड लिङ्गाख्यं त्रिव्योमर्तुयुते शके।।2
श्रीखण्डलिङ्गे यद्धतं भवचन्द्रेन यज्वना।
पुत्रपौत्रेरहर्त्तव्यमन्यैश्च कुलबान्धवैः।।3
द्रव्यं श्रीखण्डलिङ्गस्य ये हरन्ति नराधमाः।
तेऽवीचिनरकं यान्तु पितृभिब्बन्धिवैस् सह।।4
संख्यया विं(श)तिर्व्रीहेरेको भृत्यः पटद्वयम्।
संवत्सरमितो दतं श्रीरण्डापर्व्वतेश्वरे।।5
उत्सवेषू(त) स (वे)ष्वेव तण्डुलञ्च यथोचितम्।
निबन्धनञ्च यस्त्यक्त्वा स तामिस्रभितोगतः।।6

अर्थ- अशेष लोकों के एकमात्र स्वामी भगवान् महेश्वर की जय हो, जो सदा अपने आठों मूर्तियों से सम्पूर्ण जगत् का विस्तार करते हैं।।1

श्रीरण्डापर्वत के स्वामी महाराज श्री जयवर्मन ने श्रीखण्ड लिंग नाम से विख्यात इस मिश्र लिंग को शाके 603 में स्थापित किया।।2

श्रीखण्ड लिंग की सेवा में संसार को सुख देने वाले यज्ञकर्ता श्रीमान् जयवर्मन द्वारा जो कुछ दिया गया वह धन पुत्र-पौत्रों के द्वारा या अन्य लोगों के द्वारा अथवा कुलबान्धवों के द्वारा हरण करने योग्य नहीं है।।3

श्रीखण्डलिंग के धन को जो नराधम लोग हरण करते हैं वे अपने पितरों तथा बान्धवों के साथ अवीचि नामक नरक में जाते हैं।।4

श्रीखण्ड पर्वतेश्वर महादेव को बीस बीघा जमीन, एक सेवक तथा प्रतिवर्ष दो वस्त्र दिये गये।।5

प्रतिवर्ष उत्सवों में अपेक्षित यथोचित चावल भी दिया गया। इस दानाभिलेख को त्याग कर आचरण करने वाले अन्धतामिस्र नामक नरक में गये।।6

119

तुओल त्रमन अभिलेख
Tuol Traman Inscription

कोमपौन स्पू प्रान्त के कोन पिसेई जिले में त्रेतक गाँव में बसे एक तालाब में टापू की भाँति तुओल त्रमन एक ऊँचा स्थान है। पत्थर के एक टुकड़े पर अभिलेख उत्कीर्ण है। किसी ब्रह्मशक्ति द्वारा एक लिंग की स्थापना का यह वर्णन करता है।

इस अभिलेख में केवल 1 पद्य है। प्रथम पंक्ति अंशतः टूट चुका है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

.....................मृगपतिसहिते लग्नभावप्रयाते
तौले भौमेन्दुजार्क्का: त्रिदशगुरुयुतश्चन्द्रमाश्चापसंस्थः।
कीट शुक्रस्तु सौरस् समकरभवनेकार्त्तिकस्येहनक्तं
पौर्व्वाषाढ़े सुलिङ्ग सितरक्षगणितेऽतिष्ठिपद् ब्रह्मशक्तिः।।1

अर्थ- सिंह राशि सहित लग्न भाव में जाने पर, तुला राशि में मंगल,

1. *IC, Vol. II,* p.200

बुध तथा सूर्य के स्थित होने पर, बृहस्पति युक्त चन्द्रमा के धनुराशि में, वृश्चिक राशि में शुक्र के तथा शनि के चन्द्रमा की राशि (कर्क) में स्थित होने पर पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में कार्त्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी के इस रात्रि में ब्रह्म शक्ति ने सुन्दर लिंग की स्थापना की।।1

120

तुओल कोमनप अभिलेख
Tuol Komnap Inscription

तुओल कोमनप एक टीला है जो बटम बंग के निकट ताक फेन और वट एक के बीच में बसा है।

किसी ब्राह्मण नाग के द्वारा श्री विश्वरूप नामक विष्णु की एक मूर्ति की स्थापना का वर्णन इस अभिलेख में है। दूसरा टूटा हुआ अभिलेख मन्दिर को दिये गये दानों जिसमें धान के खेत और दासों की चर्चा करता है।

इस अभिलेख में 2 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 1 की प्रथम पंक्ति नष्ट हो गयी है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

................द्धे शशलक्षणे सुरगुरौ मार्ग्गे वृषे भार्ग्गवे
मेषे भास्कर सौम्य भौमशनिषु श्रद्धान्वितश्छान्दसः।
नानाज्ञाननिधिस् स्वकर्म्मनिरतो नागो द्विजो नामतो

1. *IC, Vol. III,* p.129

भक्त्यातिष्ठिपदीश्वरं गुणानधिश् श्रीविश्वरूपं हरिम्।।1
षद(ड्) दस्नर्तुगते शकेन्द्रसमये लग्ने स्थिते वृश्चिके
चित्रस्यासित्हारिषष्ठदिवसे सन्तर्पिताग्न्यर्ज्जिते।
लोकानां प्रभुख्ययस् स भ(ग)वान् कालात् परोऽप्यद्भुतां
सूक्ष्मां मूर्तिमपास्य सर्व्वजगते विश्वेशरस्तिष्ठति।।2

अर्थ- ....आधे चन्द्रमा में, मार्गी गुरु, बृषस्थ शुक्र मेषस्थ सूर्य तथा यथास्थान बुध-मंगल शनि में श्रद्धान्वित, अनेक प्रकार के ज्ञानों को धारण करने वाले, अपने विहित कर्म में निरत नागो नामक वैदिक ब्राह्मण ने शाके 616 चैत्र कृष्ण षष्ठी को वृश्चिक लग्न में भक्ति से यज्ञ के द्वारा, गुणों के अधीश्वर तिष्ठिपदीश्वर भगवान् श्री विश्वरूप हरि को संतर्पित किया।

सभी लोकों में जो श्रेष्ठ है वह भगवान् काल से भी श्रेष्ठ और अद्भुत है। वह विश्वेश्वर चराचरात्मक विश्व में व्याप्त रहते हुए भी इस सूक्ष्म मूर्ति में प्रतिष्ठित हैं।।1-2

121

कैमनन अभिलेख
Kamnon Inscription

कैमनन नामक गाँव प्री क्रबस प्रान्त में है। यह सातवीं शताब्दी का है। दरवाजों के खम्भों पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यह दरवाजे का खम्भा कृष्णमित्र के द्वारा स्थापित हरिहर (ख्मेर में जिसे यज्ञपतीश्वर कहा जाता है) के मन्दिर का है।

कृष्णमित्र के बहनोई सी डोक द्वारा भूमि के टुकड़े दान देने का वर्णन है। उनके पौत्र ईश्वर कुमार ने देवता का मन्दिर बनवाया और दान का कार्य पूरा किया। ख्मेर मूल लेख में इसकी विस्तृत चर्चा है।

इस अभिलेख में 4 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 2 और 4 अंशतः नष्ट हो चुका है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

पुनातु पुण्य कर्म्माणं कृष्णमित्रं सबान्ध(वम्)।

---

1. *IC, Vol. II,* p.26

स्थापितो येन विधिना भगवानीश्वरः प्र(भुः)।।1

स्यालस्तस्य चिदीक्नाम्ना कृष्णमित्रस्य नामतः।

तत् स्थापिताय देवाय योऽस्मै क्षेत्रमदा(त्)..।।2

कौमारात् प्रभुरत्रेतिस ईश्वर कुमार(कः)।

पौत्रस्तयोर्न्नियोगाच्च प्रासादं कृतवानि(मम्)।।3

यज्ञोपकरणञ्चात्र क्षेत्रं क्रीतन्तथाङ्ग............।

भूषणं स्थानमीदृक् च भक्त्या तेन कृतं स्व(यम्)।।4

अर्थ- जिसके द्वारा विधिपूर्वक भगवान् शिवजी की स्थापना की गयी। उस पुण्यकर्मा श्रीकृष्णमित्र को उनके बान्धवों सहित पवित्र करें।।1

उस कृष्णमित्र के चिदीक् नाम का साला था। उनके द्वारा स्थापित देवता के लिए श्रीकृष्ण मित्र ने भूमि दान किया।।2

कौमारावस्था से ही जो यहाँ राजा है, उस शिवकुमार नामक उनके पौत्र के द्वारा उन दोनों की आज्ञा से देव मन्दिर का निर्माण किया गया।।3

स्वयं अपनी भक्ति से उसने यज्ञ के उपकरण तथा खेत खरीदा तथा इस प्रकार के सुन्दर स्थान का निर्माण किया।।4
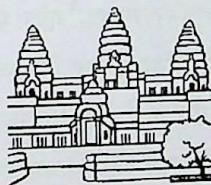
122

सम्बर स्तम्भ अभिलेख

Sambour Pillar Inscription

यह अभिलेख सम्बर (शम्भुपुर) नामक गाँव में पाया गया है। इस मूल लेख में केवल संस्कृत की पंक्ति है जो विद्याधारिणी देवी की मूर्ति की स्थापना का वर्णन करता है। एक वैद्य जिसका नाम अभिलेख में नहीं दिया गया है उसे भी दान में कई प्रकार की सामग्री का वर्णन मिलता है।

इस अभिलेख में 3 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 1 टूटा हुआ है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

......सो द्वादशरात्रौ ज्येष्ठेन्दावत्तितुलोदिते कृष्णे।
(च)तुरेक षड्गतेऽब्दे देवीयं स्थापिता भिषजा॥1
श्री विद्याधारणीति प्रथिततराभिदन्नामधेयन्तु यस्याः।
रोदस्योस साधकानां सततमुरुधियाध्येयमात्म प्रबुद्धेये।
तेन प्रज्ञैषिणैतद्भुवि विविध धनन्दानशीलेन तस्यै

---

1. *IC, Vol. II,* p.85

प्रादाय्येतावदेव प्रणिहितमनसा साधने सत्पदाव्याः।।2

आयुम्मसिसहस्रं सञ्जीव्य भिषग्वरस्तनुमञ्चयत्।

पौषे प्रथमे दिवसे नवद्विषड्विभूतशकाब्दे।।3

अर्थ- शकाब्द 614 में ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी की रात्रि में तुला राशि के उदय होने पर वैद्यराज ने इसी देवी की स्थापना की।।1

जिसके विद्याधारिणी इस प्रसिद्ध नाम को साधक लोग ध्यान करते हैं तथा द्यावा पृथ्वी के अनेक साधकगण आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए हार्दिक बुद्धि से निरन्तर जिसका ध्यान करते हैं, उन सत् पदवी देवी की साधना में भक्तिपूर्वक मन लगाये हुए विविध धन दान करने वाले, आत्मज्ञान जिज्ञासु उस वैद्यराज ने इस स्थल पर ये सब कुछ दान किये।।2

शकाब्द 619 में विभूति नामक संवत्सर के पौष मास के प्रथम दिन एक हजार महीने की आयु तक भली-भाँति जीकर वैद्यश्रेष्ठ ने यहाँ शरीर त्याग दिया।।3

123

लोबोक स्रौत अभिलेख

Lobok Srot Inscription

यह स्थान करासे प्रान्त में स्थित है। यद्यपि इस अभिलेख में की गयी प्रार्थना विष्णु को सम्बोधित की गयी है, पर देवता शैव प्रतीत होते हैं जैसा सिद्धेश्वर नाम से पता चलता है।

इस अभिलेख में 4 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 1 शुद्ध है शेष टूटे हुए हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख को दुबारा सम्पादित किया है।[1]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री जयवर्म्मणि नृपतौ शासति पृथ्वीं समुद्रपर्य्यन्तो।

ब्रह्मक्षत्राङ्शमने नतनृपधृत शासने नित्य(म्)।।1

..................रपरमेश्वरवल्लभः कुलोद्भवः।

..................भूरिविभूतिश श्रुताप्यतरः।।2

............वि........ष्ठदेवस्तेनैव स्थापित स् सतिऽमाङ्शुः।

1. *IC, Vol. II,* p.92

श्रीसिद्धेश्वरदेव प्रतीत..............................।।3

दहनाम्बरमुनिलक्ष्ये शाके...........................।

अश्विन्यामुङ्नाथे तुल..............................।।4

अर्थ- ॐकार सहित भगवान् वासुदेव को नमस्कार है।

ब्राह्मण और क्षत्रिय के अंश से उत्पन्न महाराजा श्रीजयवर्मन जिनके राज्यारोहण पर विश्व के सभी नृप उनके चरणों में झुक गये थे, उनके द्वारा नित्य रूप से समुद्रपर्यन्त पृथ्वी के शासनकाल में।।1

........परमेश्वर वल्लभ के कुल में उत्पन्न............विशाल हरिभक्त, सम्पत्तिवान तथा महान् विद्वान्।।2

............वि...........भगवान् विष्णु तथा सूर्यदेव को उसी ने स्थापित किया। भगवान् श्रीसिद्धेश्वर में विश्वास रखने वाला।।

703 शकाब्द में..................तुला लग्न में एवं चन्द्रमा के अश्विनी नक्षत्र में स्थित होने पर यह स्थापित की गयी।।4

124

प्रसत ता कम अभिलेख

Prasat Ta Kam Inscription

सियम रियप प्रान्त में क्रलन्ह के जिले में बसे एक मन्दिर में यह अभिलेख उत्कीर्ण है। इस अभिलेख का सर्वश्रेष्ठ महत्त्व यह है कि यह लोकेश्वर की चर्चा करने वाला सबसे प्राचीन अभिलेख है। कम्बोडिया में महायान सम्प्रदाय के अस्तित्व का यह सर्वप्रथम प्रमाण है।

इस अभिलेख में केवल 1 पद्य है जो शुद्ध है।

जॉर्ज सेदेस ने इसका सम्पादन किया है।[1]

समगुणशशिनगशाके प्रथितो यस् सुप्रतिष्ठितो भगवान्
जगदीश्वर इति नाम्ना स जयति लोकेश्वर प्रतिमः।।1

अर्थ- 713 शकाब्द में जो भगवान् जगदीश्वर के नाम से सुप्रतिष्ठित हुए वे लोकेश्वर के समान जय प्राप्त करते हैं।।1

---

1. *IC, Vol. III,* p.89; cf. Aymonier, Le Cambodge, Vol. II, p.171

125

वट तसर मोरोय अभिलेख

Vat Tasar Moroy Inscription

क्रासे जिले के सम्बर गाँव में वट तसर मोरोय नामक मन्दिर में यह अभिलेख पाया गया है।

प्रारम्भ के दो और अन्त में चार पंक्तियाँ संस्कृत भाषा में हैं। बीच का सभी ख्मेर भाषा में है। रानी ज्येष्ठार्या के द्वारा शिव को दिये गये दानों का वर्णन इसमें है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मन्दिर की स्थापना तीन दानकर्ताओं-जयेन्द्र, रानी नृपेन्द्ररानी तथा राजा जिसके श्रीन्द्रलोक जाने का वर्णन है, के उपलक्ष्य में हुई। इस अभिलेख में दासों और तमोन तथा और भी कई चीजों के दान की चर्चा है। तमोन नामक आदिवासी लोग यहाँ आज भी सम्बर के दक्षिण-पूर्वी भाग में पाये जाते हैं। उत्कृष्ट नामक व्यक्ति एवं गुरु सुवीर के द्वारा छोड़ी गयी सम्पत्ति को भी उनकी मृत्यु के पश्चात् इस मूर्ति को दान स्वरूप देने का भी वर्णन है।

इस अभिलेख में केवल 3 पद्य हैं। जिनमें पद्य संख्या 2 ही स्पष्ट है।

जॉर्ज सेदेस के द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन हुआ है।[1]

जितमपरोक्षज्ञानं सर्व्वज्ञेयेषु सर्व्वलोकेषु।

कर्तृत्वञ्चाक्षीणं यस्यैतत्तत ....॥1

तस्मै शिवाय गुरवे ज्येष्ठार्य्याख्या नमस्कृत्वा।

भक्त्यानुमानार्थमिदं सर्व्व प्रादादियं राज्ञी॥2

एभिः पुण्यफलैर्देवी नव.......तेदृ भक्तये।

शम्भवेऽतः फलत्यागादैशं पदमवाप्नुयात्॥3

अर्थ- जिसने सभी लोकों में सभी ज्ञेय वस्तुओं में अपरोक्ष ज्ञान को जीत लिया है और जिसका कर्तृत्व अक्षुण्ण है उसका यह...........॥1

उस महादेव रूपी गुरु ज्येष्ठ आर्य को नमस्कार (है) करके भक्ति से अनुमान के लिए इस रानी ने ये सब प्रदान किये॥2

इन पुण्यफलों से महारानी........भगवान् शिव की भक्ति के लिए अतः फलत्याग से ईश्वरत्व को प्राप्त करें॥3

1. *IC, Vol. III,* p.170

126

थप लुक हीयेन खड़े पत्थर अभिलेख

Thap Luc Hien Stele Inscription

यह स्थान कोचीन-चीन में रचजिआ प्रान्त में बसा हुआ है। यह अभिलेख प्रायः नष्ट हो चुका है और इसके सभी शब्द मिट चुके हैं। चावल के साथ-साथ रुपयों के दान देने का वर्णन इस अभिलेख में है। राजा यशोधर (यशोवर्मन) का नाम 814 वर्ष का जिक्र है, पर आर.सी. मजूमदार का कहना है कि वर्णाक्षर नौवीं शताब्दी के अन्त के बहुत दिनों के बाद का है।

इस अभिलेख में 5 पद्य हैं जो सभी टूटे हुए हैं। अतः छन्दों के विषय में हमें कुछ भी जानकारी नहीं मिलती है।

जॉर्ज सेदेस ने इसका सम्पादन किया है।[1]

---

1. *IC, Vol. II,* p.80

....

....

....................नृपतिश श्रीयशोधरश् श्री.............

....॥1

....................लसतिलस्थित कल्पिताना।

....

(अ)ब्दं समुद्रशशिमूर्तिसकार्त्तिकाणा

....॥2

पञ्चविङ्शति प्रस्थन्तत्रण्डुलञ्च दिने दिने।

....॥3

सराङ्गि पञ्च रूप्यानि एकैक पञ्च प्रस्थकम्।

....॥4

क्षेत्रग्राम....................गुर्नरोऽपिचकृतन्नैवेधकं कल्पना

....

धान्य भोज्यतिरञ्च तण्डुलदिने रूप्यं सराङ्गिमजौः॥5

अर्थ- ....राजा श्रीयशोधर श्री..............

..............................॥1

....................जल में स्थित कल्पितों का। ....वर्ष.....

.........914 कार्तिक सहित के.......................................॥2

पच्चीस प्रस्थ चावल प्रतिदिन...

......................॥3

पशुपक्षी, पाँच रुपये, एक एक पाँच प्रस्थ...............................

..................॥4

क्षेत्रग्राम....................मनुष्य भी नैवेद्य की कल्पना किया........

..............धान्यं भोज्यं, चावल, दिन में रुपये.........................॥5

127

दमनक स्डोक अभिलेख

Damnak Sdok Inscription

प्रसत त्रन के बहुत निकट यह स्थान है जहाँ यह अभिलेख उत्कीर्ण कराया गया है। इस अभिलेख में विष्णु, शिव, ब्रह्मा, लक्ष्मी और सरस्वती की प्रार्थना है। राजा का नाम पूर्णतः नष्ट हो गया है परन्तु अभिलेख के शेष भाग से यह प्रतीत होता है कि इसमें राजा की प्रशस्ति है। अभिलेख के अक्षर तथा लिखावट दसवीं शताब्दी के पूर्व के हैं।

इस अभिलेख में 14 पद्य हैं। पद्य संख्या 1 से 3 शुद्ध हैं। शेष सब टूट चुके हैं। जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

महावराहा(ह)हीन(नो)र्द्धदंष्ट्रा हरतु वोऽहितम्।
अन्तर्हिमाङ्शुशुभ्राभ्रकरद्युतिरिवोदुता॥1
जयत्युदधिपर्य्यङ्करतनिद्रश्चतुर्भुजः।
आत्मोदरविनिद्रस्य पद्मस्येव विभूत॥2

1. *IC, Vol. III,* p.100

भूत्या विभूषित तनुर्म्भवोऽस्तु विभवाय वः।
गङ्गापतन सक्षणविद्योरिव समाचितः॥3
रुद्रनेत्राग्नि...........रुचो रो(रौ)द्राश्च कासति।
कान्तकण्ठ...........विद्ध(ध्व)ङ्सन परा इव॥4
ताम्रपा...............र...............स्मित........।
निरस्ताशेष...............र्म्मा..........रसात्.....॥5
नमामि लक्ष्मी यां.................धस् सरन्तीमन्यसंपदः।
जित चन्द्राम...........हत्वेव स्वीचक्रे मधुसूदनः॥6
दशना...........................वेदवादिविश्वकृदाननात्।
नि..............................क्षुब्धाब्धेश श्रीरिवैन्दवी॥7
आ(सीत्).........................शिरोनिहित शासनः।
श्री...............................र्षिताशेष बान्धवः॥8
Only a few words remain of the Vv. 9-14.

अर्थ- जिनके अन्दर चन्द्रमा की शुभ्र रश्मि श्वेत मेघ की आभा के समान निकली हुई है वे अर्द्धदंष्ट्रहीन महावराह तुम्हारे अहित का निवारण करें॥1

अपने पेट में खिले कमल के समान जो तुम्हारे ऐश्वर्य के लिये हैं उन समुद्रपर्यङ्क पर निद्रामग्न चतुर्भुज की जय हो॥2

गंगा के गिरने से उत्सव सहित चन्द्र के समान अवस्थित ऐश्वर्य तथा भस्म से अलंकृत शरीर वाले शिव तुम्हारे ऐश्वर्य के लिए हों॥3

128

प्रसत ओ डमबन अभिलेख

Prasat O Damban Inscription

बटमबंग के निकट तीन मील दक्षिण पूर्व प्रसत ओ डमबन नाम का एक छोटे खण्डहर के रूप में यह मन्दिर है। इस अभिलेख के प्रारम्भ में भगवान् शिव की परमात्मन, शम्भु, विद्युतांश और सर्व के नाम के रूप में प्रार्थना है। इसमें विष्णु, ब्रह्मा, त्रिमूर्ति, उमा, लक्ष्मी और वाग्देवी की प्रार्थना भी है। शेष पद्यों में राजा की प्रशस्ति है।

इस अभिलेख में 17 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 14 से 17 नष्ट हो गये हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

यत्र तामरसोत्पन्न पङ्कजा क्षकप (दिनः)।
अभिन्ना स्था(त्मा) नमस्तस्मै परस्मै परमात्मने।।1
नमस् समस्त भुवन व्यापिने व्यापकात्मने।
योगि स्वान्त सरस् सङ्गि कलहङ्साय शम्भवे।।2

1. *IC, Vol. III,* p.105

नमो विधुवतङ्साय धत्ते तन्वक्षिमस्तके।
विधुत्रयं यः प्रत्येकन्त्रिलोकी ह्लाद नादिव।।3
जि(जी)याच्छार्व्वोऽर्क्कवह्नीन्दुगर्भन्नेत्रत्रयन्दधत्।
जो(ज्यो)तिषां बीजमात्मानमव्ययं व्यज्जयन्निव।।4
सर्व्वेषाञ्जन्मिनामङ्शो यस्य सर्व्वासु जाती(ति)षु।
विशिष्टो जायते तेन राजीव(वा)क्षेण जीयता।।5
सयोनिरपि योऽनङ्गजनकेनोच्यते बुधैः।
तन्नाभिनलिनोत्पन्नश् शर्म्म वेधा दधातु वः।।6
रक्षन्तु वस् सदाम्भोज भवाम्भोजाक्षशम्भवः।
लोकत्रय समुतपत्तिस्ति(स्थि)ति संहृति हेतवः।।7
श्रीकण्ठ कण्ठ संश्लेषमीलिता क्षिक जामुमाम्।
नमामि मूर्धचन्द्रार्ध रश्मि संस्पर्श नादिव।।8
लक्ष्मीर्व्वक्र(क्ष) स्स्थिता विष्णोः प्रभाविष्णोः पुनातुवः।
प्रोल्लसत्को(कौ)स्तुभादर्शनिजश्रीदर्शनादिव।।9
यत्सान्निद्धय(ध्य) मनासाध सान्निद्धेय(ध्ये)पुसुसंपदा।
वाचान्ना सुभृताञ्चेष्टा वाग्देवी सा पुनातु वः।।10
आसीदासिन्द(न्धु) भूपालभौलिलालित शासनः।
श्रीयशोवर्म्मदेवाख्यः ख्यातो भूमिभुजां पतिः।।11
यस्य सो(सौ)न्दर्य्यं संपत्ति जितो जात शुचा(चो) नित्यम्।
धतेऽधुनापि वाष्पौद्यं पाण्डुश् शीतकरो ध्रुम(व)म्।।12
त्रयाणाम समानानां योऽप्येवैकस् सभो मतः।
शौर्य्ये शौरेर्ब्बले वायोस्त्यागे कल्पतरोरपि।।13
यद्यशोगाढ़ दुग्धाब्धौ शुद्धो दृष्टः कदाचन।।
मज्जनान्मज्जनान्म............भानुमा(भाः) पुनरुत्थितः।।14
याने यस्य बलोद्धूत.............................र्द्धिवि।
भुवि नम्रारिराणमौलि...........................त्रिव।।15
उद्गमव्य(त्य) मृतं यस्य कलाः.......य......अर्णवे।
निमज्जनात्.................पानान्नु पाण्डुरद्यापि चन्द्रमाः।।16
युयुत्सः ....तीन् संहरन् सङ्गरे रिपून।

अर्थ- जहाँ कमल से उत्पन्न कमलनयन और शिव हैं- एकात्मा, उन्हें नमस्कार है जो परब्रह्म परमेश्वर हैं।।1

समस्त विश्वव्यापी व्यापक आत्मा वाले को नमस्कार है जो योगी के मन रूप सरोवर के साथी मधुर बोलने वाले कलहंस शिव हैं।।2

शरीर, आँख, मस्तक पर मानो जो तीन चन्द्रमाओं को धारण करने वाले हैं- तथा जो तीनों लोकों को प्रसन्न करने वाले हैं- ऐसे चन्द्रशेखर को नमस्कार है।।3

जो सूर्य, अग्नि, चन्द्र, गर्भ वाले तीन नेत्र धारण करते हैं तथा ज्योतियों की बीज अन्य आत्मा को व्यक्त करने वाले के समान हैं- ऐसे शिवजी जीते।।4

कमलनयन- विष्णु विजयी हों जो सभी प्राणियों के अंश जिसे सभी जातियों में पाते हैं- उससे विशिष्ट हो जाते हैं।।5

योनि सहित भी जो अनंग पण्डितों से कहे जाते हैं- उनकी नाभि के कमल से उत्पन्न जानने योग्य हमलोगों का कल्याण करें।।6

तीन लोकों की उत्पत्ति, पालन एवं संहार के कारण सदा कमल से उत्पन्न ब्रह्मा, कमलनयन विष्णु और शिव तुम्हारी रक्षा करें।।7

श्रीकण्ठ शिव के आलिंगन मुँदी आँखों वाली उमाजी को नमस्कार है। शिव के मस्तक पर आधे चन्द्र की किरण के सम्यक स्पर्श के बचाव के समान।।8

प्रभु विष्णु की छाती पर लक्ष्मी स्थित हैं, वे तुम्हें पवित्र करें। प्रकाशमान कौस्तुभमणि रूप आइने में अपनी शोभा देखने के लिए मानो हैं।।9

सरस्वती तुम्हें बचावें जिनकी समीपता न पाकर सुन्दर सम्पत्ति की समीपता में वाणियों में छिपी इष्ट फल देने वाली हैं।।10

सिन्धु तक के राजा के मस्तक से अंगीकृत एवं प्यार किये शासन वाले श्री यशोवर्मन राजा प्रसिद्ध सभी राजाओं के स्वामी थे।।11

जिसकी सुन्दरता रूपी सम्पत्ति हार कर सर्वदा उत्पन्न हुए शोच

वाले चन्द्र आज भी वाष्पों का समूह धारण कर निश्चित ही पीले पड़ गये हैं।।12

तीन आकाशों के जो एक समान समझे जाते हैं, शूरता में विष्णु के समान, बल में वायु के समान और त्याग में कल्पवृक्ष के समान भी हैं।।13

जिसके यश रूप गाढ़े दूध के समुद्र में शुद्ध होकर कभी देखा गया है। स्नान से डूबने से- मानो सूर्य की छवि फिर उग उठी हो।।14

आक्रमण में जिसका बल बहुत है..........आकाश में, स्वर्ग में, पृथ्वी पर विजीत शत्रु के मस्तक................................।।15

उगलती है अमृत को जिसकी कला- समुद्र में...........स्नान से, डूबने से........आज भी चन्द्रमा पीले पड़ गये दिखते हैं।।16

युद्ध की इच्छा........वाले राजाओं को संहार करते हुए युद्ध में शत्रुओं को वह.....समान जिसने प्रत्यादेश दिया।।17

129

वट त्रलेन केन अभिलेख

Vat Tralen Ken Inscription

अं लोनवेक में स्थित एक मन्दिर के सामने मलवे में पाये हुए एक खम्भे पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। अभिलेख जर्जर अवस्था में है। प्रारम्भ में इसमें बुद्ध और त्रिरत्न की प्रार्थना है। राजा यशोवर्मन की राजगद्दी और उनके गुणों को भी इंगित किया गया है। शैव मूर्तियों की स्थापना का भी यह वर्णन करता है। यद्यपि वन्दना से यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध मूर्ति के वर्णन करने के लिए यह अभिलेख है।

इस अभिलेख में कुल 6 पद्य हैं। पद्य संख्या 1 से 2 एवं 6 अस्पष्ट हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

वन्दे तथागतं यस्य..................(ते)जसा।
(जि)त्वा नु मारतिमिर.............वरायितम्।।1
(न)मो रत्न त्रया..................प्राक् त्रिमूर्तिधृक्।

---

1. *IC, Vol. II,* p.119

............दार्थमिह लोके............ज्ञानेन संयम(:)।।2

(च)न्द्र रूपाङ्गदीप्तश्रीश् श्रीययशोवर्म्म भूप(तिः)।

(ब)भूव भूभृदुन्मौलिमणितारा विरञ्जितः।।3

उमाप्तौ कामदहनानयो नु परमेश्वरः।

तत्कान्तिं निरवद्याङ्गं यं स्वमूर्तिन्यवेशयत्।।4

(अ)संख्याध्वरधूमाली वितानं वितनान यः।

शङ्के शतमखस्पर्द्धी भानुमार्गाग्नि वैश्मनि।।5

यश् शङ्करादिरूपाणि शिवलिङ्गान्यतिष्ठिपत्।

....।।6

अर्थ- ताराओं के प्रकाश को फीका कर देने वाले चन्द्रमा के समान शरीर सौन्दर्य वाले महाराज श्री यशोवर्मन- राजाओं के मस्तक मणि के समान हुए।।3

उमा की प्राप्ति में कामदहन रूप अन्याय हो गया है इसी कारण क्या शिवजी ने काम के समान अनिन्द्य देह कान्ति वाले महाराज श्री यशोवर्मन में काम की मूर्ति को प्रवेश करा दिया है।।4

मानो इन्द्र की प्रतिस्पर्द्धा में जिसने अनगिनत यज्ञों के धूम समूह का चँदोवा यज्ञशाला के आकाश में तान दिया है।।5

जिन्होंने शङ्करादि शिवलिङ्गों की स्थापना की........................ ....।।6
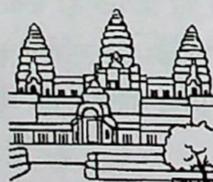
130

प्रसत नियांग खमन अभिलेख

Prasat Neang Khman Inscription

विष्णु की प्रार्थना से यह अभिलेख प्रारम्भ होता है और उसके पश्चात् राजा जयवर्मन की प्रशस्ति है। इस अभिलेख में यह कहा गया है कि जयवर्मन शक संवत् 850 में राजगद्दी पर बैठा परन्तु कोह केर में पाये गये विवरण से यह स्पष्ट है कि राजा शक संवत् 843 तक राज करता रहा।[1]

मन्दिर के भीतरी चित्रकला में कृष्ण के द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाने का दृश्य चित्रित किया गया है और विष्णु के द्वारा तीन पग में संसार के नापने का चिह्न भी दिया गया है।

इस अभिलेख में कुल 12 पद्य हैं जो दो खण्डों में विभक्त हैं-

-'A' में कुल 4 पद्य हैं जो सब समाप्त हो गये हैं।

-'B' में कुल 8 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं केवल पद्य संख्या 6 को छोड़कर।

---

1. *This point has been discussed by George Coedes in BEFEO, Vol. XXXI,* p.2

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[2]

'A'- ....वासुदेवाय वै नमः।
..................................दाता तां शरणार्थिने।।1
....।
सो नाम्ना वासुदेवो हि कर्म्मिधम्म प(रायणः)।।2
....।
...................योऽर्च्चा स्थापिता तेन भक्त्या।।3
....।
तं लक्ष्मीर्व्विष्णोर्न्नन्द...............................।।4

'B'- नमश् श्री लोकनाथाय यो यतायति शक्तिभिः।
त्रिपदक्रान्तधरणि व्योम ब्रह्माण्डमण्डलः।।1
श्री लोकनाथमिति शब्दभिभन्दधाति
युक्तं हरिस्त्रिभुवन प्रविकीर्ण्ण कीर्त्तिः।
पादत्रिविक्रमरुचाम्बर शैल शृङ्गस्
संलक्षितो भगवतायुगविस्तरान्तात्।।2
नम्रावनीन्द्रोत्तममूर्द्धमौलि-
रत्नद्युतिद्योतित पादपद्मः।
श्री कम्बुजेन्द्रः रवशराष्टराज्यो
र राज यश् श्री जयवर्म्मदेवः।।3
श्ररिवक्षस्स्थलोद्भ्रान्तश्रियासेः पातनाद्भृशम्।
यस्य वक्षोम्बुजे प्रीत्या युद्धेष्वाश्वाश्रयः कृतः।।4
युद्धेषु येन निर्म्मुक्तशानौघेः पूरिताम्बरैः।
निशायां दृप्तशत्रूणां लोचनेषु कृतन्तमः।।5
प्राक्चेदनङ्गस्य विभासः(अन)ङ्गशोभेव जितात्मशोभा।
त्रिनेत्र नेत्र..।।6
पाणिग्रहमकुर्व्वाणो लक्ष्म्या योऽमृत मन्थने।
अवाप्त लक्ष्मीं युद्धाब्धौ न बाहुं वह्वमन्यत।।7
यत्कीर्ण कीर्तिपीयूषैश् शान्ततापाग्नि सञ्चयः।

1. *IC, Vol. II,* p.32

केनापि नितरान्दिक्षु ज्वलव्यद्यापि कान्तिभिः।।8

अर्थ- जो अपने अघट घटना पटीयसी शक्ति से तीन ही पगों से पृथ्वी, आकाश और ब्रह्माण्ड तीन लोकों को आक्रान्त कर दिया था, उस भगवान् श्री लोकनाथ को नमस्कार है।।1

जिनकी कीर्ति तीन लोकों में फैली हुई है वे भगवान् श्री हरि लोकनाथ इस शब्द का धारण उचित ही करते हैं, उनके त्रिविक्रम करने वाले पैरों की शोभा जो भगवान् द्वारा सृष्टि के अन्त तक तीन क्रम में विस्तारित थे- गगनचुम्बी पर्वत की चोटियों की शोभा के समान थी।।2

चरणों में झुके श्रेष्ठ पृथ्वी पतियों के मुकुटों के रत्नों की प्रभा से जिनके चरण-कमल विशेष प्रकाशित हैं- वे कम्बुजेन्द्र श्री जयवर्मनदेव शक् संवत् 850 में राजसिंहासन पर सुशोभित हुए।।3

शत्रुओं के हृदय पर बार-बार जिसके तलवार के प्रहार से स्थान-भ्रष्ट हो युद्धस्थल में व्याकुल घूमती रिपु लक्ष्मी जिसके हृदय-कमल में प्रेमपूर्वक आश्रय पायी।।4

जिसके द्वारा युद्धों में छोड़े गये बाण समूहों से आकाश के भरे जाने से उद्धत शत्रु आँखों में जिसने अन्धकार कर दिया- वह जयवर्मन देव ही था।।5

अस्पष्ट होने से श्लोक 6 का अर्थ नहीं है।

अमृत प्राप्ति के समय सागर मन्थन से प्राप्त लक्ष्मी से जिसने विवाह किया था अतः जिसने सागर युद्ध मन्थन से विजय लक्ष्मी की प्राप्ति को भुजाओं की बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं माना (वह श्रीजयवर्मनदेव ही था)।।7

जिसकी फैली कीर्ति किरणों के अमृत से सारे दुखाग्नि समूह शान्त हो गये तथा अपनी कान्ति से आज भी दिशाओं में धधक रहा है (वह श्रीजयवर्मनदेव ही है)।।8

131

प्रह नोम अभिलेख

Prah Phnom Inscription

प्रह नोम नामक एक मन्दिर पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यह मन्दिर प्रसत लिक के उत्तर-पूर्व एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। अभिलेख से हमें शिव सोम के द्वारा कई मूर्तियों की स्थापना के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जिसे सोदेस इन्द्रवर्मन के इसी नाम के गुरु से भिन्न व्यक्ति मानता है।

दूसरा अभिलेख जो दसवीं शताब्दी का है एक राजकीय आदेश की चर्चा करता है जिसमें अमोघपुर के अतिरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम हैं।

इस अभिलेख में केवल दो पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं। प्रथम पद्य श्लोक का है तथा द्वितीय उपजाति छन्द का है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

भक्तिस्थिरीकर्त्तुमविघ्नकारिणी

1. *IC, Vol. III,* p.119

द्विपञ्च मूर्त्तौ(र्तौ) शिवसोमनामा।
चण्डीश्वरं विघ्नपतिश्च लिङ्गं
ग्रहैस सह स्थापितवान् सुभक्त्या।।1
भद्रं वौऽस्तु स्वकं पुण्यं भूयादस्मिन्वलाधियाः।
रक्षन्त्विदं मुदा ये हि चन्दिणं मृद्धये सदा।।2

अर्थ- अविघ्नकारिणी भक्ति को स्थिर करने के लिए शिवसोम नामक राजा ने (दशावतार की मूर्तियाँ) चण्डीश्वर भगवान् शिव तथा विघ्नपति गणेश की मूर्तियों के साथ ग्रहों की भी मूर्तियों को भक्तिपूर्वक स्थापित किया। इस स्थापना में आपलोगों का कल्याण हो तथा मेरे अपने लिए पुण्य हो।।1

जो बलवान इन भगवान् चण्डीश्वर की रक्षा करेंगे वह संरक्षण कार्य उनके आनन्द की सदा वृद्धि के लिए होगा।।2

132

नोम प्रह नेत प्रह मन्दिर अभिलेख

Phnom Prah Net Prah Temple Inscription

बटमबंग प्रान्त के स्वे सेक जिले में नोम प्रह नेत प्रह नाम की एक छोटी पहाड़ी है जहाँ एक मन्दिर है। इस मन्दिर के दरवाजे के खम्भे पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है।

इस अभिलेख से यह पता लगता है कि शक संवत् 890 में एक आश्रम की स्थापना के लिए शक लोन अप द्वारा लोन पित वरों से भूमि खरीद की गयी। उसने उसे धान के खेतों तथा चार दासों से सजा दिया। शक लोन अप की मृत्यु के बाद मन्दिर एक खण्डहर में बदल गया। लोन पारा की पत्नी ने अपने पति तथा दो व्यक्तियों अपने मामा लोन मध्य शिव पुत्र पीत वरों से प्रस्ताव रखा कि आश्रम को वापस जाये इसलिए कि यह पवित्र कार्य दाह संस्कार के लाभ को निश्चित रख

पाये। इस प्रस्ताव को उन लोगों के द्वारा मान लिया गया, मन्दिर का पुनरुद्धार हुआ तथा उन लोगों के द्वारा दान की व्यवस्था की गयी। आश्रम के प्रधान को प्रथागत दाह संस्कार करने का कर्तव्य सौंपा गया।

इस अभिलेख में केवल 1 पद्य है जो शुद्ध है और श्लोक छन्द में है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

ह्यङ्नाम्ना मातुलेनैव भर्त्तापुनश्च धर्म्मवान्।
रूपाद्रिमूर्तिशाकेन्द्रे सर्व्वोपायन्ददौ शिवे।।1

अर्थ- ह्यङ् नामक मामा से दीक्षित (धर्मोपदिष्ट) पति तथा पुत्र ने शक संवत् 871 में भगवान् शिव को सभी साधन (सभी उपचार) प्रदान किये।।1
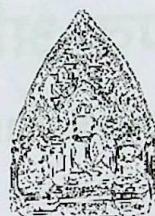
1. *IC, Vol. III,* p.34

133

नोम कण्व अभिलेख
Phnom Kanva Inscription

सि सोफन के सात मील उत्तर नोम कण्व नामक एक छोटी पहाड़ी पर बसे एक प्राकृतिक गुफा के दरवाजे के खम्भे पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। इस अभिलेख में कनलोन काम रतन अन राजगृहा नामक एक देवी जिसका अर्थ राजकीय गुफा में मृत रानी से होता है- का वर्णन है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह स्थान रानी का कब्रगाह रहा होगा।

ए, बी, सी और डी खण्डों में अभिलेख विभक्त है। केवल बी खण्ड में दो संस्कृत अभिलेख है जिससे स्वाभाविक विपत्ति का पता चलता है।

इस अभिलेख में केवल 2 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं और श्लोक छन्द में हैं।

जॉर्ज सेदेस[1] तथा आयमोनियर[2] के द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन हुआ है।

कल्पितं ये विलुम्पेयू(यु)र्ल्लङ्घयेयू(यु)श्च शासनम्।

---

1. *IC, Vol. III,* p.72
2. *Le Cambodge, Vol. II,* p.243

ते यान्ति नरकं तावत् स्थितौ चन्द्र दिवाकरौ।।1
अनुकुर्य्युरिदं येन शासनं परिकल्पितम्।
वर्द्धयेयुश्च पुण्यस्य फलार्द्ध प्र(प्रा)प्नुवन्तिते।।2

अर्थ- कल्पित शासन को जो रचित शासन को विलुप्त करें। उल्लंघन करें वे चन्द्र सूर्य की स्थिति तक नरक जाते हैं।।1

इस परिकल्पित, स्थिर किये हुए शासन का जो अनुकरण करें वे पुण्य को बढ़ाते हैं और आधा फल पाते हैं।।2

134

कोक समरन अभिलेख
Kok Samron Inscription

बटमबंग के सियम रियप जिले में यह स्थान है जहाँ ईटों से निर्मित मन्दिर के दरवाजे के खम्भे पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। आजकल यह मन्दिर खण्डहर रूप में परिवर्तित है तथा यह स्थान ता सिउ के नाम से प्रसिद्ध है।[1]

संघ की प्रार्थना एवं राजेन्द्रवर्मन तथा उसके पदाधिकारी भद्रातिशय की प्रशस्ति इस अभिलेख में है। भद्रातिशय के छोटे भाई ने एक देवता की मूर्ति की स्थापना की जिसका नाम अंशतः गायब है। पठनीय भाग..................केश्वरलिंग है।

इस अभिलेख में कुल पद्य 10 हैं, पद्य संख्या 1, 2, 4 से 10 तक अस्पष्ट है।

यह अभिलेख जॉर्ज सेदेस के द्वारा सम्पादित किया गया है।[2]

---

1. *Le Cambodge, Vol. II,* p.243
2. *IC, Vol. III,* p.79

नमस् संघाय...।
जलाञ्जलिरपि न्यस्तो..............................॥1
संबुद्धरत्नं प्रणमामि धर्म्म-
....।
निर्भिन्नता.......................स्त्रिलोके
ज...॥2
आसीन्नृपश् श्रीधर विक्रमश् श्री-
राजेन्द्रवर्म्मेति (जितारि)वृन्दः।
योऽरिद्विषण्मू(न्मू)र्तिभिराप्त राज्यो
विबुद्धकीर्तिद्युतिदीपिताशः॥3
कालेयगम्भीर तमः प्रबन्धा-
दुद्धारितो धर्म्मनयेन येन।
क्रमेण नीतः परमां विभूतिं
दिवाक................वर..............॥4
उदपादि तस्य भृत्यो भद्रो भद्राति शयनामा।
गुणमण्डलाधिको यः कुल......न्द चन्द्रनिभा॥5
स चित्रभानुद्रविणाष्ट शाके धर्म्म्यानुजश्च प्रद्धभक्तिः।
..........आन्तमनूननाम चित्रन्मुदातिष्ठिपदध देवम्॥6
..................केश्वरलिङ्गमेतत्
प्रासादमित्थञ्च यदस्ति पुण्यम्।
माता पिता भूमिपतिर्ग्गुरुश्च
बन्धुः सुहृच्चापि तदस्तु तेषाम्॥7
अनेन चाहं कुशलेन कर्म्मणा
मग्नज्जगन्तारयितुं समर्थः।
जन्मार्ण्णवे दुःख...........णौ-
र्बुद्धात्मजो जन्मनि जन्मनि स्याम्॥8
यद् यज्वना मणि..............सी
.............दास................दिदत्तम्।
ये लोभदग्ध.......................
(दीप्ता)नलं पुनरिमं प्रपतन्तु घोरम्॥9
संवर्द्धयन्ति गु..........च........णा ये

धर्म्मं परात्महितहेतुमिमं यथावत्।
ते ब(बा)न्धवैस् सह महाभ्युदयं प्रयान्तु
निर्व्वाण सौख्यमपि बौद्ध पदं परत्र॥10

अर्थ- संघ को नमस्कार है..........। जलांजलि भी दी गयी..........॥1

सम्यक बुद्धरूप रत्न को प्रणाम करता हूँ धर्म .... को........... ....॥2

अभिन्नता..............तीन लोकों में जिन्होंने 866 शकाब्द में राज्य प्राप्त किये थे वे देवोपम कीर्ति के प्रकाश से दिशाओं को प्रकाशित करने वाले श्रीधर भगवान् विष्णु के समान पराक्रम वाले, शत्रु समूहों को जीतने वाले राजेन्द्रवर्मन- इस नाम से विख्यात महाराज ही थे।॥3

काल सम्बन्धी अतिशय गहरे प्रबन्ध से जिसके द्वारा धर्मनीति से उद्धार किया गया था क्रमशः परम ऐश्वर्य को प्राप्त किया था।॥4

उत्पन्न किया उसके दास ने कल्याणकारी भद्रातिशय नामक को जो गुणों के समूह से अधिक गुणी था..........चन्द्र के समान।॥5

उसने चित्रभानु द्रविण आठ शाके में धर्मयुक्त का छोटा भाई प्रसिद्ध भक्ति वाला ...पूर्ण नाम चित्र को जिसने हर्ष से देव प्रतिष्ठा की थी।॥6

..........केश्वर नामक यह लिंग- इस प्रकार प्रासाद जो पुण्यप्रद है, माता-पिता, राजा, गुरु, बन्धु और मित्र भी वह हो।॥7

मैं इस कुशल कर्म से डूबे विश्व को तारने में समर्थ हूँ। जन्म रूप समुद्र में दुख......। बुद्ध का पुत्र जन्म जन्म में होऊँ...........॥8

जो यज्ञ करने वाले के द्वारा मणि........सी।...........दास........... दिये थे। जो लोग लोभ से जले............फिर वे इस दीप्तानल नामक में जो भयानक है उसमें गिर जायें।॥9

जो सम्यक रूप से बढ़ाने वाले हैं.........जो दूसरों के लिए और अपने लिए इस धर्म को यथोचित रूप से वे बन्धु-बान्धवों के साथ महा अभ्युदय को प्राप्त करें। दूसरे जन्म में या लोक में निर्वाण के सौख्य भी बुद्ध पद पावें।॥10

135

बसाक खड़े पत्थर अभिलेख

Basak Stele Inscription

बटमबंग प्रान्त में दोन त्री में एक खड़े पत्थर पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। महेश्वर, रुद्र एवं त्रिविक्रम की प्रार्थना से यह प्रारम्भ होता है। इस अभिलेख से हमें यह जानकारी मिलती है कि राजेन्द्रवर्मन 866 ई. में राजगद्दी पर आसीन हुआ। यह अभिलेख एक देवता वककाकेश्वर की प्रतिमा की स्थापना का वर्णन करता है जो नृपेन्द्र युद्धस्वामी नामक एक अधिकारी के द्वारा राजा राजेन्द्र वर्मन के आदेश से हुआ था। यहाँ बहुत से दान भी दिये गये जिनमें भूमि, नौकर एवं बहुत सी बहुमूल्य वस्तुएँ भी देवता को मिली।

इस अभिलेख में कुल पद्यों की संख्या 12 हैं जिनमें से कुछ नष्ट हो चुके हैं और पढ़ने योग्य नहीं हैं जिस कारण उनके छन्द-विन्यास का पता लगाना असम्भव सा प्रतीत होता है- शब्दार्थ तो दूर की बातें हैं।

इस अभिलेख का सम्पादन जॉर्ज सेदेस ने किया है।[1]

---

1. *IC, Vol. II,* p.58

वन्दे महेश्वरं यस्य भाति पदनरवप्रभा।

नमेन्द्र मौलिहेमाद्रिबालारुण विभा निभा।।1

नमोऽस्तु तस्मैरुद्राय यदर्द्धांगि हरिर्द्दधौ।

कालकूट विषोद्दाम दाह संहरणादिव।।2

त्रिविक्रमांघ्रि जं पातु ...... पातनम्।

क्रान्त त्रिलोकीलक्ष्यानु .... केशरम्।।3

विधिाप्रतिष्ठाकृत भूमौ भू ... विभवोऽभवत्।

यःश्री राजेन्द्रवम्मेन्द्रो इन्द्रदैत्येन्द्र मर्द्दनः।।4

यस्यासंख्यमखाम्भोधिजन्तु कीर्त्तीन्दुमण्डलम्।

शतक्रतुयतस्तारापाण्डुन् दिवमदीपयत्।।5

यद्कान्तवपुषं वोक्ष्य कामकान्ता पुरा यदि।

नूनमीश्वरनेत्राग्निदग्धान्नैच्छन् मनोभवम्।।6

सव्यापसव्यविकृष्टशरौ यो जगतो युधि।

तेनाप्येकोऽजयन्नित्यमकृष्टसृहृदुन्नतिः।।7

यः श्रोयशोधार पुरन्नवं कृत्वा यशोधारे।

तटाकेऽतिष्ठिपत् पञ्च देवान् सोधालयस्थितान्।।8

तस्यपार्श्वधारो भक्तः श्रीनशपेन्द्राधाभिधाः।

वककाकेश्वरस्य ....।।9

तेन सर्वाणि वित्तानि .... ।

किंकरग्रामकादीनि ....।।10

रुप्यस्वर्णविभूति ....।

....।।11

वककाकेश्वर पुरुष प्रधानास्तेभ्य एव मे।

इदं पुण्यम्परिन्दामि स्वपुण्यं पुण्यभागिनः।।12

अर्थः

उन शिवजी को प्रणाम है जिनके पैर के नख की ज्योति छटा इन्द्र के द्वारा शिरसा नमस्कार के कारण उसके मुकुट मणियों की प्रभा पड़ने से विविध प्रकाश छटा उसी प्रकार फैलती है जैसे प्रातःकालीन सूर्य की अरुण किरणों के

पड़ने के कारण हिमालय शिखर की प्रभा छटा फैलती है।।1

उन भगवान रुद्र को नमस्कार जिनके आधे अंग में भगवान विष्णु विराजमान हैं मानो अति उग्र कालकूट विष के जलन को शान्त करने के लिये ही विराजमान हुये हैं।2

पद्य संख्या 3 का अर्थ अभिलेख के नष्ट होने के कारण नहीं हो सका।

देवराज इन्द्र और दैत्यराज वृषपर्वा को भी पराजित कर देने वाले राजेन्द्रवर्मा नामक इन्द्र के - असंख्य यज्ञ सागर से उदित चन्द्रमंडल की प्रभा से सौ ही यज्ञ करने वाले इन्द्र स्वर्गाधिाराज इन्द्र की कीर्तिमंडल को वैसे ही प्रकाशहीन बना दिया जैसे सूर्यमंडल की प्रभा के उदित होने पर तारामंडल का प्रकाश फीका पड़ जाता है।।4-5

जिसके सुन्दर शरीर को कामदेव की पत्नी रति यदि पहले देखी होती तो भगवान शिव के नेत्राग्नि से दग्धा कामदेव के मनोभव रूप की इच्छा न करती।।6

संसार में युद्ध में दाएं-बाएं हाथों से कठोर वाण छोड़ने वाले उसने सबको जीतने पर भी एक को नहीं जीता वह था सरल जेय, मित्र की उन्नति।।7

वही श्री राजेन्द्रवर्मा नामक राजा ने यशोधरपुर को नया बनाकर यशोधर तटाक तट पर पंच देवों का विशाल मंदिर बनवाकर पंच देवताओं की स्थापना की।।8

उन्हीं राजा राजेन्द्र वर्मा के श्री नृपेन्द्रायुद्वद्ध नाम वाले भक्त आप्त सचिव ने वककाकेश्वर भगवान के लिये सभी प्रकार के धान, दास, ग्राम, सोना-चाँदी आदि दान दिया।।9-11

वककाकेश्वर भगवान के प्रधाान सेवकों को और वैसे ही मुझे भी जो अपने ही पुण्य से पुण्यवान है- यह और अधिक पुण्य देगा।।12

136

सिक्रेन पत्थर अभिलेख

Cikren Stone Inscription

कोम पौन थोम प्रान्त में सिक्रेन नामक स्थान है। इस अभिलेख में हृदयाचार्य द्वारा लोकेश्वर को दो आभूषणों- अर्द्धप्रसाद के दान देने की चर्चा है। उमा की प्रशस्ति इसमें है जो दानकर्ता की बहन और संग्राम की पुत्री थी।

इस अभिलेख में कुल 9 पद्य हैं। पद्य संख्या 2 एवं 3 अंशतः टूटे हुए हैं।

फिनौट[1] एवं जॉर्ज सेदेस[2] ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।

लोकेश्वरो जयति यस्य वराङ्घ्रिधूलि-
रावी चिकन्धगद्यगिव्यति वृद्ध वह्निम्।
नीरीचकार नरकव्यसनापहारे
तस्मिन् मदीयनतिरस्तु सहस्रवारम्।।1

---

1. *BEFEO, Vol. XV(2),* p.10
1. *IC, Vol. II,* p.48

.........आसीदनिन्दिताङ्शो यशश्रीसमरेन्द्र विख्यातः।
तस्योमेति तु नप्ता(प्त्री) शरदिन्दुरिवान्वय व्योम्नि।।2
..........रणाद्भुतसङ्ग्रामसुता सर्व्वकलाद्भुता।
शम्भोर्ग्गौरीव महिषी श्रीमहीधरवर्म्मणः।।3
(अ)लञ्चकार लोकेशमलङ्कारररविप्रभैः।
रत्नैरुप्यरचितैर्द्विन्न(न)वाष्ट शकेन या।।4
तदग्रजश्च सौदर्य्यो ह्याचार्य्याभिधानधृक्।
अर्द्धप्रासाद भूषे यः प्रत्यग् लोकेश्वरेऽदिशत्।।5
पुण्येनानेन रत्नद्युतिनिकरलसत्स्वर्ण्णपद्मोपरिस्यां
गन्धैरुन्मादितालिर्नरनयन मनोहारि सौन्दर्यजातः।
जातश्चेत् क्षुद्रजन्ताव कुशलमलिनो लोकनाथन्तिकेऽस्मिन्
भूयोभूय(:) समुन्मूलितमदजड़तामत्सराहङ्कृतिस् स्यामः।।6
(रा)जभयाद्यष्टभयं भयमपि घोरा वीचिकादिषु वा।
दुःखान्यद्यमानि च मे भवे भवेऽनेन माभूवन्।।7
न्यायेन लब्धमवलोकित भूषणं मे
स भ्रातृकेण रचितन्दृढ़भक्तिद्यौतुम्।
ये रत्नैरजत लुब्धतया हरन्ति
घोरे पतन्तु नरके सह बन्धुभिस्ते।।8
रक्षन्ति बन्धुसुदृढ़दन्य जना मदीयं
ये पुण्यभेतदिह देवपुरं प्रयान्तु।
जाति प्रति प्रहसिताननमण्डिनास्ते
वाग्भिर्ज्जगत्सु वपुषा सुभगा भवन्तु।।9

अर्थ- उन भगवान् लोकेश्वर की जय हो जिनके वर प्रदान करने वाली चरणों की धूलि नारकीय यातनाओं का संहार करते हुए अवीचि नामक नरक के धधकते हुए अग्नि के जलन को जल के समान शीतल बना देते हैं। नारकीय यातनाओं को हरण करने वाले शिवजी को मेरा हजार बार नमस्कार है।।1

अनिन्दित प्रभाव वाला यश जिनका था ऐसे भी समरेन्द्र नाम के एक विख्यात राजा थे। उनके वंश में शरदेन्दु के समान सुखद प्रकाश

बिखेरने वाली उमा नाम की नातिन थी।।2

रणभूमि में अद्भुत संग्राम करने वाले श्री संग्राम की वह पुत्री सभी कलाओं की अद्भुत ज्ञात्री थी। वह उमा भगवान् शिव की पार्वती के समान श्रीमान् महीधरवर्मन की सती पटरानी थी।।3

892 शकाब्द में उसने लोकेश्वर भगवान् को स्वर्ण, रजत और रत्नों से बने अलंकारों की अद्भुत प्रभा से अलंकृत किया।।4

हृद्याचार्य नामक उनका अग्रज तथा सहोदर भाई जो आधे महल को सुशोभित करता था उसने अलग से भगवान् लोकेश्वर की सेवा में दान किया।।5

इस पुण्य से, रत्नों के प्रकाश से सुशोभित स्वर्ण-कमल पर सुगन्ध से पागल हुए भौंरों के समान मनुष्यों के आँखों तथा मन को प्रभावित करने वाले सौन्दर्य से युक्त हुआ। यदि अकुशल, मलिन तथा क्षुद्र जन्तुओं में जन्म लेना पड़े तो भगवान् लोकेश्वर के निकट ही जन्म हो। मुझमें से मद, मूर्खता, ईर्ष्या, अहंकार बार-बार उन्मूलित हों।।6

इस पुण्य के द्वारा जन्म-जन्मान्तर में भी राज भय आदि अष्ट भय, अवीचि जैसे नरकों का घोर भय तथा अन्य अधम दुख भी न होवें।।7

ये सारे न्याय से प्राप्त आभूषण मेरे तथा मेरे भाई की दृढ़ भक्ति से बनवाये हुए हैं। जो लोग सोना, चाँदी तथा रत्न के लोभ से इन आभूषणों को चुराते हैं वे अपने बन्धु-बान्धवों सहित घोर नरक में गिरते हैं।।8

जो हमारे भाई, मित्र तथा अन्य जन इसकी रक्षा करते हैं वे इस पुण्य से स्वर्ग जाते हैं। यदि वे रक्षक संसार में उत्पन्न हों तो मुस्कराते मुखमण्डल से युक्त सुन्दर शरीर वाले, सुन्दर वाणी से विभूषित तथा सौभाग्य से युक्त हों।।9

137

नोम बन्ते नन अभिलेख
Phnom Bantay Nan Inscription

अंगकोर बोरी के करीब 2.5(ढाई) मील दक्षिण की दूरी पर नोम बन्ते नन बसा हुआ है। संस्कृत मूल लेख बौद्ध महायान देवी-देवताओं की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है जिनमें लोकेश्वर और प्रज्ञापारमिता भी हैं। बुद्ध की माँ की मूर्ति की स्थापना की भी चर्चा इस अभिलेख में है।

इस अभिलेख में 10 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं। 1 पद्य वसन्ततिलक छन्द है और शेष सभी श्लोक छन्द के हैं।

जॉर्ज सेदेस द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन किया गया है।[1]

सिद्धि स्वस्ति..
नमोऽस्तु परमार्थाय व्योमतुल्याय यो दधौ।
धर्म्म साम्भोग्निर्म्माणा कायान्त्रैलोक्यमुक्तये।।1
भाति लोकेश्वरो मूर्ध्ना योऽमिताभज्जिनन्दधौ।

1. *IC, Vol. II,* p.202

मितरश्मि प्रकाशा नामर्क्केन्द्वोर्दर्शनादिव।।2

प्रज्ञापारमिताख्यायै भगवत्यै नमोऽस्तुते।

यस्यां समेत्य सर्व्वज्ञास् सर्वज्ञत्वमुपेयुषः।।3

अस्ति त्रिभू(भु)वन वज्रो योगी विनयविश्रुतः।

दक्षिणि(णी) यो महानागो नित्यदानोऽपि निर्म्मदः।।4

यस्य मातामहो भृत्यश् श्रीनामा श्रीन्द्रवर्म्मणः।

तीर्थनाम्नीं ददौ दासीं श्रेयोर्थी जगदीश्वरे।।5

प्रियाये सोमवज्राख्यस् स्यालो लोकेश्वरन्ददौ।

यस्य संस्थाप्य पात्रेऽस्मिनवह्नि व्योमनवाङ्कि्ते।।6

तेन पूर्व्व(र्व्व) प्रतिष्ठाप्य गोत्रस्य जगदीश्वरम्।

मुनीन्द्रजननी भूयः स्थापिताग्निवियद्विलैः।।7

पूर्व्ववत्तत्र देवेषु कृत्वा गोत्रस्य कल्पनाम्।

दासीदासहिरण्यादिद्रव्यं सोऽदाद्विशेषतः।।8

तेभ्यो लघुतरास् सन्ति पञ्चानन्तर्य्यकारिणः।

लोभात् प्रसह्य लुम्पन्ति येऽस्माकं कल्पनाभिह।।9

क्षेत्रादिकिङ्कर सुनर्त्तकतु(तू)र्य्यकानां

केदार रत्न कनकाभरणादि दत्तम्।

ये यज्वनात्मधनमात्र विनाश लुब्धाः

लुम्पन्ति ये(ते)निरयमुग्रभयं प्रयान्ति।।10

Detached Line

ये भो(गं) लोपयति देवद्रव्यं ते

अर्थ- तीन लोकों के लोगों की मुक्ति के लिए, आकाश के समान निर्विकार होते हुए भी जिन्होंने धर्मसांभोगीनिर्माण शरीर धारण किये हैं, उन परमार्थ रूप भगवान् लोकेश्वर को नमस्कार है।।1

सिर पर अमिताभ बुद्ध को जो भगवान् लोकेश्वर धारण किये हुए हैं वे नित्य प्रकाशक सूर्य में चन्द्रमा के समान दिखलाई पड़ते हैं।।2

जिन्हें पाकर (जिनकी कृपा पाकर) सर्वज्ञ लोग सर्वज्ञत्व की प्राप्ति किये हैं, उन भगवती प्रज्ञापारमिता को नमस्कार है।।3

अपने विनय के कारण विख्यात दक्षिण देशीय (प्रदक्षिणा करने योग्य) महान् नागवंशीय त्रिभुवन वज्र नामक योगी नित्य दानी होते हुए भी अपने विनय के कारण विख्यात दक्षिण देशीय महान् हाथी के समान नित्य मदश्रावी होते हुए भी निर्मद (अहंकारहीन या पागल नहीं) है।।4

उनके श्री नामक नाना जो श्रीमान् इन्द्रवर्मन के सेवक हैं, श्रेय की कामना से तीर्थी दासी नाम की दासी जगदीश्वर की सेवा में प्रदान किये।।5

930 शकाब्द में भगवान् लोकेश्वर को इस पात्र में स्थापित कर पेय के लिए सोमवज्र नामक अपने साले को उनकी सेवा में प्रदान किया।।6

(उसके द्वारा) उसने पहले कुल देवता की स्थापना कर पुनः 930 शकाब्द में मुनीन्द्र जननी की स्थापना की थी।।7

पहले के समान ही देवताओं में धन दान करके पुनः विशेष रूप से दास-दासी, सुवर्णादि द्रव्य उसने दान किया।।8

पाँच जो बाद में करने वाले (दान करने वाले) हैं वे उनसे छोटे हैं। जो लोभ के वशीभूत होकर हम लोगों के किये गये दान का हरण करते हैं।।9

जो यज्ञकर्ता के इस धन के विनाश मात्र के लोभी, इन दान किये गये खेतों, बागीचा, सुवर्ण रत्नालंकारों, सेवकों, सुन्दर नर्तकों तथा वादकों का अपहरण करते हैं वे अत्यन्त दुख प्राप्त होने वाले नरक को जाते हैं।।10

....

जो देव द्रव्य एवं देवभोग को नष्ट करते हैं।
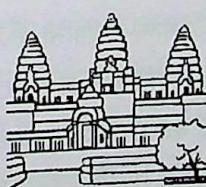
138

थमा पुओक अभिलेख
Thma Puok Inscription

प्रारम्भिक रूप में यह अभिलेख अराक चो नाम के ग्राम का है। बटमबंग प्रान्त में स्वे जिले में थमा पुओक है। अराक चो से यह अभिलेख जो एक छोटे मन्दिर पर उत्कीर्ण है, थमा पुओक लाया गया और एक मन्दिर में रखा गया। इसमें बुद्ध, प्रज्ञापारमिता, लोकेश्वर, वज्रिन, मैत्रेयी तथा इन्द्र की प्रार्थना के बाद जयवर्मन पंचम तथा साधु पद्मवैरोचन की प्रशस्ति है। यह वह साधु थे जिन्होंने 6 देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित कीं। यह कहा गया है कि ये सारे दान अपनी पत्नी धर्मप्रिय को सुपुर्द कर और सारी सांसारिक वस्तुओं को छोड़कर ये जंगलों में शान्ति के लिए चले गये।

इस अभिलेख में 14 पद्य हैं। पद्य संख्या 3 से 6, 8 से 10 टूटे हुए हैं।

जॉर्ज सेदेस द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन हुआ है।[1]

योऽप्येको बहुधा भिजो विनेयाशातुराधेतः।

---

1. *IC, Vol. III,* p.66

शशीव नैकनीरस्थविम्बो बुद्धस् स पातु वः॥1
प्रज्ञापारमिता पायादपायाद्वो वरीयसः।
जिनानामप्य जातानं या जाता जननी सती॥2
वन्दे लोकेश्वरं भक्त्यामिताभ इव भ.........।
यस्योत्तुंग..॥3
वज्री जयति..।
मार्त्तण्ड मण्डल...................................॥4
नमध्वमार्य्यमैत्रेयमाय्य।.......................।
करुणामुदितोपेक्षाक्षमाद्यात्मेव.................॥5
........बलाभिदा तेन जयन्नप्युर्जितं कलिम्।
.....सेनामरेन्द्रत्वं बलव्यूहैश्च यो यस्तै॥6
(वि)यद्विल वसु प्राप्तप्राज्य राज्यो बभूव यः।
(राजा श्री)जयवर्म्मेति जयश्रीलिङ्गतोऽनिशम्॥7
..................र्य्यभित्कान्तिद्वनिन्दिग्दन्ति दैत्यकृत्।
...........ङ्गर सङ्हत्रीं तावती यस्य शूरता॥8
तद्राज्येऽभूज्जगद्गीतगुणो यो मुनिपुङ्गवः।
पद्मवैरोचनाभिख्यो जगद्(त्) पद्मविरोचनः॥9
दानशीलक्षमावीर्य्यध्यान प्रज्ञादयो गुणाः।
सात्मीकृताः प्रवृत्त्यैव यस्य.......बहिष्कृताः॥10
बुद्धिमात्रिन्द्रमैत्रेय बुद्धलोकेश वज्रिणाम्।
प्रतिमा(माः) स्थापितास्तेन चन्द्र चन्द्रग्रहाङ्किते॥11
सत्वान् मोक्षे शशो दिक्षु शोकाग्नि मारमानसे।
दृष्टहृत्सु सतामस्मिन्देवान् सोऽतिष्ठिपत् समम्॥12
धर्म्मप्रिया धर्म्ममिमं रक्षताधर्म्म राक्षसात्।
तमाङ्सि घ्नन्ति लोकान् हि भास्करोत्येव भास्करः॥13
दासीन्दासञ्च भूम्यादिधनन्तस्यै प्रदाय सः।
करीव बन्धनिर्म्मुक्तश् शान्तये वनमाययौ॥14

अर्थ– जो एक भी बहुत प्रकारों से भिन्न है, विनेय आशा के अनुरोध से चन्द्र के समान न एक जल में स्थित विम्ब वाला वह बुद्ध तुम लोगों की

रक्षा करें।।1

बुद्धि की अन्तिम सीमा को प्राप्त माता भगवती तुम्हारी रक्षा करें, सभी बड़ों की रक्षा करें। जीते हुए और न उत्पन्न हुए और जो अतिशय बड़े श्रेष्ठ हैं उनकी जो सती माता उत्पन्न हुई वह आद्या दुर्गा महाराज्ञी सब की रक्षा करें।।2

लोकेश्वर की भक्ति से महात्मा बुद्ध के समान............जिसके ऊँचे..........।।3

इन्द्र जीतते हैं............सूर्य का मण्डल।।4

श्रेष्ठ आर्य मैत्रेय को नमस्कार करो............दया से हर्षित, क्षमा आदि वाले आत्मा के समान.........।।5

............उस बल के भेदने वाले.............जीतता हुआ भी बल, प्राणयुक्त कलि को.....सेना अमर के स्वामित्व को जो बल के व्यूहों से प्राप्त हुआ।।6

आकाश रूप बिल के धन से प्राप्त प्राज्य राज्य वाला जो हुआ..... राजा श्री जयवर्मन यह नाम धारणकर्ता हुआ जयरूप लक्ष्मी, जय लक्ष्मी लिंग से हमेशा।।7

..........कान्ति वाले दिग्गज की दीनता करने वाले मद जल...... संहार करने वाली वैसी जिसकी शूरता थी।।8

उसके राज्य में जो हुआ उसके गुण संसार द्वारा गाये गये जो मुनियों में श्रेष्ठ था। पद्मवैरोचन नाम का संसार रूप कमल का विरोचन।।9

दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, बुद्धि आदि गुण जिसने अपनी प्रवृत्ति से ही अपना लिये थे जिसके........बाहर किये गये थे।।10

बुद्धि की माता, इन्द्र, मैत्रेय, बुद्ध लोकेश, इन्द्र की प्रतिमाएँ उसने 911 शकाब्द में स्थापित की थीं – चन्द्र ग्रह से अंकित चन्द्र।।11

जीवों को मोक्ष में दिशाओं में शोक रूप अग्नि के द्वारा मन में इसमें हर्षित हृदय वालों के हृदयों में सज्जनों के साथ उसने स्थापित किये थे।।12

धर्म है प्रिय जिन्हें वे इस धर्म की रक्षा धर्म लोप करने वाले राक्षस से करें जैसे सूर्य अन्धकार को नष्ट करता ही है– प्रकाश फैलाता ही

है।।13

नौकर, नौकरानी, जमीन आदि धन उस देवी को देकर वह हाथी के समान बन्धन से छूटकर शान्ति के निमित्त जंगल में आया था।।14

139

प्रसत क्रलन अभिलेख

Prah Kralan Inscription

सियम रियप जिले के मुख्यालय क्रलन के करीब 500 गज दक्षिण की दूरी पर स्थित एक पवित्र स्थान में मन्दिर के द्वार खम्भे पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। यह अभिलेख जो खण्डित हो चुका है बौद्ध धर्म का प्रतीत होता है और श्री वागीन्द्रदेव, श्री विन्दवेश्वर तथा श्री वर्म्मेश्वर आदि देवताओं का नाम इसमें अंकित है।

इस अभिलेख में 5 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 2 से 4 टूट गये हैं।

आयमोनियर[1] तथा जॉर्ज सेदेस[2] के द्वारा इस अभिलेख का सम्पादन किया गया है।

त्रिलोक सरणं बुद्धं धम्मं स(?)त्ते नियानिकं।
वन्दं थारिय सङ्घश्च पापहिणाय साधवो।।1

---

1. *Le Cambodge, Vol. II,* p.369
2. *IC, Vol. III,* p.85

छद्वारः................वसकराजजिनप्पतिद्धो।
सीलेन भूसित वरो यति रामधम्मो।
भूद्य(द्या) खल्लभतरो मतिमातिरेको
पण्ह दसदृकुसलो परिपुच्छि......यं।।2
कुम्भिलानतकरावासा नदि..........ल पारगा।
वासेन्तो मनुस्से तेहि पच्छिमा(भि)मुखो जिनो।।3
तिस्सो दा(सी) तयो दासे तिस्सो गवी कपिलका।
तीनि गु.....नि खेनानि जिनाय........मुदा ददे।।4
धम्मालयशाम्यधारं सिरिवद्धो पद्यानको।
वेसाख पुण्णाभियञ्च यजमानो जिनं थपे।।5

अर्थ- त्रिलोक शरण भगवान् बुद्ध निर्वाण (मुक्ति) की ओर ले जाने वाले धर्म तथा स्थविर संघ को पाप विनाश के लिए वन्दना करता हूँ।।1

छः द्वारों.........को वश में करने वालों में श्रेष्ठ जिन (भगवान् बुद्ध) का आश्रय लिये हुए शील से विभूषित लोगों में सर्वोत्तम संयम के कारण धर्मों में समत्व बुद्धिवाला भूधरों अर्थात् राजाओं में श्रेष्ठ अत्यन्त मातिमान प्रश्नदर्शी तथा अर्धकुशल ने जिससे पूछो।।2

जिसके भीतर कुम्भीलों (मगरमच्छों) से भरी हुई नदी .... के पार जाकर मनुष्यों को बसाते हुए उनके द्वारा पश्चिम की ओर अभिमुख जिनकी प्रतिमा को स्थापित कराया।।3

प्रसन्नता के साथ जिन प्रतिमा के लिए तीन दासियों, तीन दासों तथा तीन कपिला गायों तीन.......बैलों तथा खेतों का दान दिया।।4

बढ़ी-चढ़ी शोभा से युक्त, प्रधानता को प्राप्त उस यजमान ने वैशाख पूर्णिमा के दिन धर्मालय में समता के संस्थापक बुद्ध (जिन) की प्रतिमा की स्थापना की।।5

140

तुओल प्रसत अभिलेख

Tuol Prasat Inscription

कोमपोन स्वे प्रान्त में तुओल प्रसत में यह अभिलेख उत्कीर्ण कराया गया है। संस्कृत भाग भगवान् शिव और धर्मकाया की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। यह धार्मिक सहयोग का एक आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके बाद जयवीर वर्मन की प्रशस्ति है। यह सहदेव से परिचय कराता है जो ख्मेर मूल लेख के वपसन से मिलते-जुलते हैं। माँ की वंशावली से इनका परिचय है। उनके परदादा गव्य ने एक भूखण्ड खरीदा तथा देवता की एक मूर्ति स्थापित की और देवी ग्राम में एक तालाब खुदवाया था। देवी के पत्थर से घिरे होने के कारण इसका नाम देवीग्राम पड़ा। गव्य की मृत्यु पर उनकी भूमि अधिकार कायम करने वाले तीन हुए। सहदेव ने इसकी शिकायत जयवर्मन पंचम से की जिसने उन दुष्टों को हाथ एवं होठ काटने की सजा दी।

कुछ समय के बाद उस भूमि पर अन्य पाँच लोग पुनः अधिकार प्राप्त करना चाहते थे। सहदेव की प्रार्थना पर राजा ने उनको शारीरिक सजा दी। सहदेव अपनी

सम्पत्ति पर निश्चिन्त हो गये जिसे उन्होंने लिंगपुरेश्वर, बुद्ध तथा लोकेश्वर को दे दिया। इस अभिलेख का अन्त दूसरे दानों की सूची तथा विपत्ति के आह्वान से समाप्त होता है।

इस अभिलेख में कुल 41 पद्य हैं। पद्य संख्या 14, 15 एवं 35 टूटे हुए हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

ओं

नमश् शिवायास्तु शिवाय यस्माद्
ब्रह्मादिरङ्शः प्रतिभूः प्रभूतः।
भिन्नोपधानाद् बहुधेव भिन्नो
नान्यस् स्वभावादिव वारिभानुः॥1

योऽनादिमद्ध(ध्य)निधनस् स्वसुखोपभोगे
साम्भोगिकं वपुरिवेन्दुवुधुन्दधानः।
निर्म्माणमङ्शुमिव वज्रिजिनादि लोक-
सौख्याय वो दिशतु शर्म्म स धर्म्मकायः॥2

बभूव भूपाल शिरोधृताङ्घ्रि-
राब्धिद्विरन्ध्राधिगताधिराज्यः।
योऽवार्य्यवीर्य्यो भुवनैकवीरो
राजा जयी श्री जयवीर वर्म्मा॥3

सोमान्ववायाम्बर पूर्ण्णसोमस्
सौम्याकृतिर्न्निर्म्मल कीर्ति सोमः।
यः क्षत्रनक्षत्रनुतोऽप्यनङ्कश्
श्री कम्बुजेन्द्रो भुवनाम्बुजेन्द्रः॥4

व्याप्तेषु तेनः प्रसरैर्य्यदीयै-
र्निरन्तरालङ्क कुभाम्म(म्मु)खेषु।
नैवान्य तेजो ऽवसरो ऽवसर्त्तु-
न्तेज स सहस्रैरिव सप्त सप्तेः॥5

नित्याभिपूर्ण्णाङ्किल निष्कलङ्का
यत्कान्तिमालोक्य शशी ह्रियेव।

1. *IC, Vol. III,* p.225

गङ्गात्विते्ऽद्यापि कलङ्कभङ्गे
विवेश शङ्के शशिमौलि मौलौ।।6
अजस्रमस्रस्रवपङ्कसङ्गी
सङ्खे स्खलन्ती शतशो जयश्रीः।
आश्रित्य विश्राम्यति यस्य दीर्घ-
दोहटिकस्तम्भम कम्पनीयम्।।7
यस्य प्रदानसमयोदित कीर्त्तिमालां
येषामिमाम गणितां गदितं समीहा।
तेऽसंख्य रत्ननिकरानखिलाम्बुराशौ
तारागणान् गणयितुं गगणे यतन्ते।।8
तस्याधिराजस्य महेन्द्रधाम्नो
यो वित्तमुद्रालिपि पालवित्तः।
भृत्यो नियुक्तो द्रविना(णा)धिकारे
हृत्पद्मदेवस् सहदेवनामा।।9
देवस्व माता पितृशास्तृमान्य-
सन्मा(म्मा) ननेनैव विशुद्धभक्त्या।
प्रीत्यादिभिर्म्मानितसर्व्व लोकस्
सन्नन्दिनीं यस् समवाय लक्ष्मीम्।।10
श्रीहर्षवर्म्माधिपतेः पटीयां
श्चमूपतिर्व्वीरपुरस् सरो यः।
मातामहो यस्य महामति(श्) श्री
वीरन्द्रवीरो जितवैरिवीरः।।11
यस्य प्रमातामह इद्धबुद्धि-
स्तन्मातुलो लोकहितैक कृत्यः।
गव्याह्वयो यो महनीयनीति-
स्त्यागी धनी धर्म्मनिधिश्च धीमान्।।12
आज्याद्यभिख्यैस् सह बन्धुवर्गैस्
सन्मानितैर्दत्तधनैः प्रहृष्टैः।
भूमिर्य्यथै वाभिमताः प्रदत्ताः

क्रेतैव यस् सर्व्वधनैर्धनाढ्यः।।13

स्वलेप रङ्गप-समाख्या भू-र्लाचूर्म्माण चार्व्वारसमाह्वया।

स्वेव्रै-नाम्री च पञ्चैतास् सर्व्वास् सवनगह्वराः।।14

....................प्राच्यामग्नेया.......................।

दक्षिणे............स्तुक्सङ्वाद दल्लेङ्नैरृतिके तथा।।15

वारुण्यां पिक्क्रवे-भूमि स्रेवै वायव्यतस्तथा।

छ्दिङ्चास् उत्तर उत्तरग्राम ईशानतस्तथा।।16

पारंपर्य्य प्रसिद्धैयता भूमि(भीः) कृत्वापि युक्तितः।

यश् श्रीराजेन्द्रवर्म्माणं ययाचे भूपतिं पुनः।।17

तेन राजाधिराजेन भूमिपालेन भूमयः।

यस्मिन्नर्थिनि गव्याख्ये भूयो दत्ताः प्रसादतः।।18

यदभ्यर्थितेन राज्ञा नियुक्तश्चारु चारकः।

तद्गोलस्थापनाकृत्वा तस्मै दत्ता इमा इति।।19

देवी शिलाबर्धि ग्रामो देवीग्राम इतीरितः।

तद्वेव स्थापनात्र्चक्रे यः काब्द(ब्ज?)कजलाशयान्।।20

दिवङ्गते तु यस्मिंस्ते ही-पू-के संज्ञकास्त्रयः।

अस्मद्भूमिरिति प्रौचुस् साहसात्ता जिहि(ही)र्षनः।।21

गोलान् संस्थापितान्तासु सुसिद्धान् राजशासनत्।

नियुक्तस् स्वयमुद्धर्त्तु हें नाम्ना पू-समाह्वयः।।22

सहदेवेन तन्नप्त्रा तेषां तद्दुष्कृतं कृतम्।

लिपिभिर्निवेदितस् सर्व्वं राज्ञिभी जयवर्म्माणि।।23

मन्त्रिभिस् ससमासद्भी राज्ञा सम्यक् समीक्षितम्।

तेषां पू संज्ञकादीनां दृष्टन्तद्दुष्कृतं स्फुटम्।।24

ओष्ठच्छेदं करच्छेदं हें नाम्नः प्वाह्वायस्य च।

यथा ताद्दोषतः कुर्य्यादिति तद्वान शासनम्।।25

स्वमातामहसूनुस्तु के- नामा सकुलस्तदा।

याचितस् सहदेवेन राज्ञा दत्तस् सभूमिकः।।26

अथ पञ् अय् गदाकेशास् सेशान शिवसंज्ञकाः।

यक् संज्ञिका च ते भूयो विवदन्ते पि तद्भुवः।।27

तेषां तद्भूजिहि(ही)र्षूणामापतिं राजकारिताम्।
ते पश्यन्तोऽपि शृण्वन्तो मोहात्तद्धरणोद्यताः।।28
आज्ञाव्यतीनान्नृप पुङ्गवानां
तान्दुर्द्दमान् साहसधर्म्मकतृन्।
न्यवेद यच्छ्री जय वीरवर्म्म-
देवेऽधिराजे सहदेवनामा।।29
तद्भूतमपि तद्वाक्यं श्रुत्वा राज्ञा विचारितम्।
मन्त्रिभिस् ससमासद्भिर्द्दष्टन्तुष्कृतन्तदा।।30
जङ्घापीड़ा शिरस्पीड़ाभूत्तेषां राजशासनात्।
अप्रियत(त्व)ञ्च अप-नामा पञ्च-नामा पञ्चताङ्गताः।।31
अवलाय(या)स्तु यक्-नाम्त्य(म्त्या) श् शिरसवीऽवकारिता।
तद्बान्धवास्तु भीतास्ते निलीना दिग्द्रुता द्रुतम्।।32
यावन्त्यो भूमयस् सर्व्वाः क्रीतादत्ताश्च राजभिः।
सहदेवस्य सिद्धास्ता इति तद्राज शासनम्।।33
क्षेत्राणि चार्वाद् प्रभृतीनि पञ्च
पुण्याश्रयाल्लिङ्ग पुरेश्वराय।
बुद्धे प्रभेशे च तदीयरूपे
लोकेश्वरे सोऽदित सुप्रशस्ते।।34
कृतेषु भक्त्या................
स षष्टिकप्रस्थघृतानि तासु।
षट्खारिकाराजततण्डुलाश्च
भद्रेश्वरेऽदात् प्रतिवद्(त्)सरञ्च।।35
स्वकीयवेश्मानि मनोहराणि
सर्व्वोप जीव्यानि सुखोदयानि।
तान्याश्रमायैव कृतानि बुद्धे
ताद्रूपके लोकपतौ च सोऽदात्।।36
श्रीसमन्तप्रभेशाख्ये श्रीघने श्रुतविश्रुतः।
स प्रादात् प्रत्यहं भक्त्या पञ्चप्रस्थार्द्धतण्डुलम्।।37
श्रीसमन्तप्रभेशे च स्वदेशोद्भुतरूपके।

सोऽन्वहं व्यतरत् पञ्चदशप्रस्थार्द्धतण्डुलम्।।38
लोकेश्वरे प्रशस्तेऽस्मिंल्लोके लोकहितोघतः।
सोऽदाच्च प्रत्यहं पञ्चदशप्रस्थार्द्धतण्डुलम्।।39
लुम्पन्ति नो ये मम कल्पनान्ते
स्वर्ग्गापवर्गीञ्चिर मावसन्तु।
तद्वर्द्धनार क्षण तत्पराणां
का चा कथा पुण्यफलेषु तेषम्।।40
पुण्यं मम स्वार्थपरार्थमेव
लुम्पन्ति ये स्वल्पधियस्तु तेषाम्।
उत्पत्तिरेव स्थितिरस्त्वहानि-
खल्पकल्पान्तरकेऽतिघोरे।।41

अर्थ- ॐ

कल्याण के लिए शिव को नमस्कार है जिससे ब्रह्मा आदि अंश पैदा हुए थे। भिन्न उपधान से बहुत के समान भिन्न है- एक की आकाश और जल में सूर्य के समान हैं- दूसरा नहीं है प्रकृति के समान- जल में सूर्य के समान हैं।।1

जो अनादि, अमध्य, अनिधन हैं, अपने सुख के उपभोग में सम्भोग सम्बन्धी शरीर के समान चन्द्र के समान धारण करने वाले हैं। निर्माण अंश किरण के समान इन्द्र और जिन आदि लोक के सुख के लिए वे धर्म शरीर तुम्हारा कल्याण करें।।2

राजा के सिर से धारण किये चरण समुद्र के दो छिद्रों से राज्य का ज्ञान होने वाला राज्य है जिनका जो अवार्य वीर्य बलवाले हैं सारे भुवन में एक अद्वितीय वीर हैं वह जय पाने वाले राजा श्री जयवीर वर्मन नाम से प्रसिद्ध हैं।।3

चन्द्रवंश रूप आकाश के पूर्ण चन्द्र के समान सुन्दर आकार वाले स्वच्छ यश रूप चन्द्र के समान जो क्षत्रिय रूप नक्षत्रों में भी निष्कलंक चन्द्र हैं श्री कम्बुजेन्द्र भुवन रूप कमल के सूर्य के समान हैं।।4

जिनके तेज के विस्तार से सर्वदा पर्याप्त रूप से सभी दिशाओं के मुखों में दूसरे के तेज का अवसर है, सूर्य के तेज (हजार) से मानो तेज

वाले हों ऐसा लगता है।।5

नित्य पूर्ण कलङ्क से रहित जिस राजा की कान्ति को देखकर चन्द्रमा मानो लज्जा से गंगा से युक्त आज भी कलंक के नाशक शिव के मस्तक पर चला गया कवि को है।।6

नित्य पानी चूने से पंक के साथी शंख में गिरती हुई सैकड़ों रूपों से जय लक्ष्मी आश्रय पाकर विश्राम करती है जिसके बड़े हाथ रूप सोने के खम्भे जो न काँपते हैं- उसमें है।।7

जिसके दान के समय उगी हुई कीर्ति की माला जिन्हें इन्हें गिनने की इच्छा है वे असंख्य समूहों वाले सभी को जल में तारागणों को गिनने के लिए यत्नवान हैं।।8

इन्हीं के सम तेज सी जिस राजा के जो धन, मुद्रा, लिपि के पालने से धनी है वह नौकर नियुक्त किया गया धन के अधिकार में हृदय रूप कमल सहदेव नाम से विख्यात।।9

देव, अपनी माता-पिता, शासन करने वाले माननीय लोगों के सम्मान से ही विशुद्ध भक्ति से प्रीति आदि से सभी लोकों से मान्य होकर अच्छी नन्दिनी प्रसन्न करने वाली लक्ष्मी को जिसने पाया था।।10

जो श्री हर्षवर्मन राजा के अतिशय चतुर सेनापति वीरों का अग्रसर जिसके मातामह (नाना) महाबुद्धिमान श्री वीरेन्द्र वीर जिसने शत्रुओं को जीता था।।11

जिसमें नाना के पिता (प्रमातामह) तेजस्वी बुद्धिवाला, उनके मामा जिनका कार्य एकमात्र लोकहित है, गव्य नामक जो पूजनीय नीति वाले हैं, त्यागी, धनी, धर्मनिधि और बुद्धिमान हैं।।12

आज्य आदि नामों से बन्धु वर्गो के साथ सम्मानित, दिये धनों वाले प्रसन्न जैसे ही भूमि मन चाही दी गयी जो सभी धनों से धनाढ्य है।।13

स्वल्पेक, रङ्गप नाम भूंलार्चमाण-चार्वाक् नाम चारस्तेयै नाम की कुल पाँच ये सभी पैदा होने वाले गह्वर हैं।।14

..........पूरब में अग्नि कोण में...........दक्षिण में......... स्तुकसङ्वाद, दल्लेङ्ग, नैऋत्य कोण में......।।15

140. तुओल प्रसत अभिलेख

पश्चिम में पिक्त्रवे भूमि, खेब्रै, वायव्य कोण में छदिङ्चास उत्तर में, उत्तर ग्राम ईशान में सीमाएँ हैं।।16

परम्परा से प्रसिद्ध सीमा, भूमि को युक्ति से निर्धारित करके जिसने पुनः श्री राजेन्द्रवर्मन राजा से याचना की थी।।17

उस राजाधिराज भूमिपाल द्वारा भूमि जिस याचक गव्य नाम वाले को पुनः प्रसन्नता से दी गयी थी।।18

जिसके माँगने पर राजा ने सुन्दर चार गुप्तचर नियुक्त किये थे उस गोल की स्थापना करके उसे ये भूमि दी थीं।।19

देवी शिला की अवधि सीमा तक देवी ग्राम कहा जाता है जिसने उस देव की स्थापना की और कमल वाले जलाशयों को खुदवाया था।।20

उसके स्वर्गीय होने पर वे ही, पू, के नाम वाले तीन ने कहा कि हमारी भूमि है- साहस से वे हरण करने की इच्छा करने वाले थे।।21

राजा की आज्ञा से उनमें गोलों को स्थापित किया जो सुप्रसिद्ध गोल थे स्वयं उद्धार करने के लिए है नाम से पू नाम से विख्यात को नियुक्त किया था।।22

श्री जयवर्मन राजा के समीप उसके नाती सहदेव ने उनके किये अधम कार्य को सब लिपियों में लिखकर निवेदित किया।।23

सभासद मन्त्रियों ने, राजा ने भली-भाँति सभी की समालोचना की थी उन पू नाम वालों के उन पापी कर्मो को स्पष्ट रूप से देखा था।।24

उस राजा का यह आदेश था कि होठ काट लो, हाथ काट लो, है नाम वाले के और पू नाम वाले के जैसा उसके दोष के अनुसार दण्ड दिये जायें।।25

तब अपने नाना के बेटे के नाम के वंश सहित राजा सहदेव से याचना की गयी भूमि सहित सब कुछ याचित वस्तुएँ राजा सहदेव ने दिये थे।।26

इसके बाद पञ्, अप्, गदाकेशास् सेशानशि नाम वाले और यक् नाम की वे सभी फिर विवाद करते हैं उस भूमि के सम्बन्ध में।।27

उन उस भूमि के हटने की इच्छा वालों की राजा से करायी गयी आपत्ति को तो देखते हुए भी सुनते हुए भी मोह से उसके हरण करने में

उद्यत थे।।28

आज्ञा व्यतीत होने पर श्रेष्ठ राजाओं के उन साहसी दुर्दमनीय अधर्म करने वालों को दोषी ठहराकर दण्ड देने के लिए सहदेव नाम वाले ने श्री जयवीरवर्मन राजाधिराज के समीप निवेदन किया था।।29

जो कुछ हुआ था सो बीतने पर भी पूर्व के वाक्य को सुनकर राजा ने विचारा तथा मन्त्रियों ने और सभासदों ने उनके उन अधम कार्यों को देखा।।30

राजा के आदेश से जाँघ में पीड़ा और सिर में पीड़ा की गयी, अप् नाम वाले की अप्रियता हुई तथा पञ् नाम वाला मर गया था।।31

यक् नाम की जो अबला थी उसे सिर की पीड़ा सी की गयी थी और उसके बन्धु-बान्धव तो डरकर कई दिशाओं में छिप गये थे।।32

उस राजा का आदेश था कि जितनी भूमि है सभी खरीदी और राजा से दी गयी है- सहदेव की वे भूमि सिद्ध हैं।।33

चार खेत, चार नौकर पुण्य के आश्रय से लिंगेश्वर महादेव जी को, बुद्ध को, प्रभेश को और उनके रूप को लोकेश्वर को उसने दिये थे जो देव सुप्रसिद्ध थे उन्हें दिये गये थे ।।34

भक्ति से करने पर उसने साठ प्रस्थ घी उनमें और छः खारी चाँदी के चावल हर वर्ष भद्रेश्वर मन्दिर में दिया था।।35

अपने मनोहर आश्रमों को सभी जीने की रकमों को उन सुख के उदयों को बुद्ध के लिए आश्रम के लिए ही उस रूप के लोकपति को उसने दिया था।।36

श्री समन्त प्रभेश को श्रीधन को प्रसिद्ध उसने प्रतिदिन भक्ति से पाँच प्रस्थ का आधा ढाई प्रस्थ चावल दान करता था।।37

और श्री समन्त प्रभेश को अपने देश के आश्चर्यकारी रूप वाले को उसने प्रतिदिन भक्ति से ढाई प्रस्थ चावल दिया करता था।।38

इस लोक में प्रशस्त लोकेश्वर लोकहित में उद्यत उसने प्रतिदिन साढ़े सात प्रस्थ चावल दिया था।।39

मेरी कल्पना को जो लोप करें वे दुख पावें। स्वर्ग अपवर्ग चिर काल तक पावें। जो बढ़ावें रक्षण करें उसमें तत्पर हों, उनके पुण्य का क्या

कहना?।।40

स्वार्थ और परमार्थ मेरे पुण्य को जो थोड़ी बुद्धिवाले लुप्त करें वे अतिशय भयानक नरक में बहुत दिनों तक एक कल्प से दूसरे कल्प तक पड़े। उत्पत्ति ही स्थिति पालन हो हानि न हो।।41

141
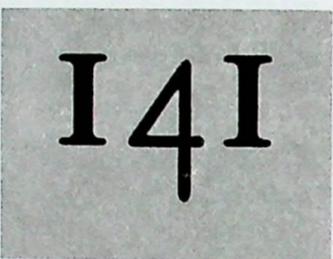
प्रसत खलन अभिलेख
Prasat Khlan Inscription

इस अभिलेख के प्रारम्भ में जयवीरवर्मन राजा की प्रशस्ति है और बाद के अंश में यह एक राजकीय अधिकारी की ओर संकेत करता है। इस अभिलेख का लक्ष्य स्पष्ट नहीं है।

इस अभिलेख में कुल 13 पद्य हैं जो सभी नष्ट हो चुके हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

.... को नरै।
राजा श्री जयवीरादिर्म्मान्तारव्यो गुणाकारः ।।1
प्र.................. इतं मनः।
स्वस्थानं यस्य वीतांगो बाह्यमंशिश्रियत।।2
.... लक्ष्मी .... महीमपि।
व्यक्कर्त्तमिव ते वा (व) के वसति स्म सरस्वती।।3

---

1. *IC, Vol. III,* p.225

.... न .... द्रयिभूषणे।
सुभाषितादि रत्नानां शतं यस्मिन्निवेशितम्।।4
.... अरिरुद्धि (धि) रमाहवे।
प्रणेमुरखिलोर्व्वीपाः पृथूपायन पाणयः।।5
.... यस्यैतत्रितयं प्रियम्
राज्यलक्ष्मणमन्येषां सम्भवो सम्भवोऽपि वा।।6
.... द्विजिह्वदमनोधतः
तथाप्य पक्षपातित्वाद् वैनतेयो यथा न यः।।7
.... सुमित्रा प्रतिम प्रियः।
अजानन्दकरोऽप्येवमाढयो (?) दशरथो न तु।।8
.... प्रजासु .... नि.......... आत्मकः।
वीतहेमोदयो योऽपि वर्ण्णितो नृपचन्द्रमाः।।9
.... अशेषाम् .... ।
शशंस सर्व्वदेवा .... मात्मवत्सु यदुद्भम्।।10
.... यक्षणभुपागतः।
दोलामर्हामपि .... स् सततं गुणतोषितात्।।11
.... भक्ताप्र .... नृपः।
वलदेव .... नेमं ...... सोपाय यत्र सोऽदिशत्।।12
.... सो .... नीज।
भुक्ति साक्ष्यैक कार्य्यन्त मखिले (?) ....प्रकारयत्।।13

इस अभिलेख का हिंदी अनुवाद इसलिये नहीं है कि संस्कृत मूल पाठ पूर्ण रूप में नष्ट हो चुके हैं।

142

नोम प्रह नेत प्रह मन्दिर अभिलेख

Phnom Prah Net Prah Temple Inscription

नोम प्रह नेत प्रह बटमबंग प्रान्त में है। मूल लेख में कई अशुद्धियाँ हैं। अभिलेख मध्यदेशा नामक एक मालिन (माला गूँथने वाली) की प्रशस्ति से प्रारम्भ है जो राजकीय मन्दिर में रहती थी। ब्रह्मयज्ञ नामक पूजा की समाप्ति के बाद उसने गुरु को दक्षिणा रूप में भूमि एवं बहुमूल्य वस्तुएँ दान स्वरूप दीं जिसे उसकी पौत्री उमा एवं पितृयज्ञक के द्वारा कायम रखा गया। दूसरे व्यक्ति का दानकर्ता के साथ क्या सम्बन्ध था– यह पता नहीं।

इस अभिलेख में कुल 12 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

सिद्धि स्वस्ति 928 शक

---

1. *IC, Vol. III,* p.40

उपनद्यालयन्नाम्ना मधु(थु)रापुरवत्पुरम्।
यमुनोपनदीवापि कलङ्कपवनाक्षया।।1
तस्मिन् बभूव या सैव मध्यदेशेति संज्ञया।
उदिता धर्म्मकामार्थवतीव परमेश्वरी।।2
सती सतीनां परमा वनाढेयण व श्वरि।
कुन्तीव धर्म्मिणाग्रा ग्राद् ब्राह्मणि वापि काम्बुजा।।3
कान्तानां कान्तिमत्या च राजमन्दिर मालिनी।
संसार सागराद् भीत्या धर्म्मकारक निर्द्धया।।4
आसहस्रात्तु यज्ञानां ब्रह्मयज्ञं महत्तरम्।
सर्व्व शास्त्रिगुरोरस्माद् ब्रह्मयज्ञं कृतन्तया।।5
पादद्वयञ्च केदारं दक्षिणेन नगस्य तु।
शिल्पिनो परतोऽस्यैव ब्रह्ममूल समीकम्।।6
तत्क्षेत्रं सधनं सर्व्वं रत्नरूप्य(प्यं) सहेमकम्।
गुरवे प्रणिपन्ना सा प्रादात् प्रि(प्री)त्या तु दक्षिणाम्।।7
शैवपादगिरिपुरे सर्व्व द्रव्यादि स्वर्ग्गदम्।
नात(ट)कादि संगीतादिसगन्धर्व्व र्शुनोद्यसन्।।8
पुरक्षेत्राणि सर्व्वाणि धर्म्मविच्छर्म(र्म्मि) लापेरा।
सा तत्कुलां पुरस्तात् सम(मी)क्ष्य प्रददौ मुदा।।9
परिपालाम(न) मेवास्यश् शिवपादस्य यज्वनः।
कल्पणा(नां) रक्षतिमाञ्च पौत्र्युमा पितृयज्ञकः।।10
पालयन्ति च ये धीराः सगोत्रक(कु)लबान्धवाः।
त्रिवर्ग्गफ(ल) दामेनान्ते यान्ति परमाङ्गतिम्।।11
नाशयन्ति च ये मूधा(ढ़ा) मूधा(ढ़ा)न्धकपनान्विताः।
अवीचि नरकं द्यौ(द्यो)रन्त यान्ति परमाङ्गतिम्।।12

अर्थ- सिद्धि स्वस्ति 928 शकाब्द

दोषयुक्त वायु को परिष्कृत करने वाली जो यमुना नदी है, उसके किनारे स्थित मथुरा नगर के समान ही यमुना नदी के तट पर उपनद्यालय नाम का नगर था।।1

उस उपनद्यालय में धर्मार्थ कामवती भगवती परमेश्वरी के समान जो उत्पन्न हुई, वह मध्यदेश के नाम से विख्यात हुई।।2

वह सती, सतियों में श्रेष्ठ, वनाढ्यता के कारण आप लोगों की पूज्या, धर्माचारिणियों में कुन्ती के समान प्रथम स्थान रखने वाली, ब्राह्मणी की तरह होते हुए भी कम्बुजा थी।।3

अंपने सौन्दर्य के कारण सुन्दरियों की तथा राजमहल की देवी, संसार सागर के भय से तत्त्व निश्चयपूर्वक धर्म करने वाली।।4

तथा गुरुओं से सभी शास्त्रों की शिक्षा पाने वाली उसने गुरुओं को स्मरण कर सभी यज्ञों से श्रेष्ठ, जिसमें हजार यज्ञ किये जाते हैं- ऐसा ब्रह्म यज्ञ किया।।5

शिल्पियों के निवास के बाद, ब्रह्ममूल के पास, इसी पर्वत के दक्षिण में दो पठार (ऊँची भूमि) तथा खेत।।6

शरणागत हुई उसने अत्यन्त प्रीति के साथ धन-धान्य से पूर्ण वे खेत तथा सोने-चाँदी और रत्नों के साथ दक्षिणा गुरुओं को प्रदान किया।।7

शैव पद पर्वत वाले नगर में स्वर्ग प्राप्ति मूलक समस्त द्रव्यों के साथ संगीत नाटकादि जानने वाले गन्धर्वों को अश्विनी नक्षत्र के उदय काल में दान किया।।8

धर्मतत्त्व को जानने वाली, दूसरी धर्मिता की तरह ही अपने कुलधर्म को देखकर आनन्दपूर्वक खेत, गाँव आदि दिये।।9

शैवपाद नगरी के यज्ञकर्ता की वाणी का परिपालन तथा इन दोनों की एवं मेरी रक्षा मेरी पोती उमा करती है।।10

जो धीर सगोत्र एवं कुल बन्धु इसकी रक्षा करते हें, उनके लिए यह रक्षण कार्य स्वर्ग फल देने वाला होगा तथा अन्त में वे मुक्ति पद को जायेंगे।।11

जो मूर्ख मूर्खतावश इसका नाश करते हैं, वे अवीचि नामक नरक को जाते हैं तथा रक्षा करने वाले मुक्तिपद को जाते हैं।।12

143

नोम सिसोर अभिलेख

Phnom Cisor Inscription

यह स्थान बटी प्रान्त में है। एक खड़े पत्थर के तीन ओर यह अभिलेख उत्कीर्ण कराया गया है। इस अभिलेख में त्रिदेव की प्रार्थना तथा एक ब्राह्मण दिवाकर की प्रशस्ति के बाद बहुत से देवी-देवताओं की प्रतिमा की स्थापना की चर्चा है। देवी-देवताओं के नाम उसी समय से नहीं मिलते हैं। राजा परमकैवल्यपद (जयवर्मन पंचम) और सिसोर से सूर्यपर्वत का जिक्र किया गया है। इसके पश्चात् मन्दिर को दिये गये दासों, भूमि इत्यादि की सूची दी गयी है।

इस अभिलेख में कुल 8 पद्य हैं। पद्य संख्या 2 और 5 से 8 अस्पष्ट हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

(न)मो हिरण्यगर्भाय विभवे भूतभूतये।
यस्यास्येन्दुकलाभ्यस्ते चतुर्वेदाः विनिस् सृ(ताः)॥1

---

1. *IC, Vol. III,* p.153

सर्गस्थाय नमस् स्थित्यै हरये परधा(?)रिणे।

चक्रे चक्रेण यो राजेश(?) चक्रस्य क...........।।2

नमद्धन्ध्वान्तविध्वङ्सं शङ्करं लोकशङ्करम्।

(त्रि)लोक्यारण्यदाहे यो दुर्विषह्यतरोऽनल:।।३

(आसी)देकान्त सर्व्वीयस् सर्व्ववाङ्मय गोचर:।

द्विजो(?)रागादिनिर्म्मुक्त: तमसेवं दिवाकर:।।४

...........श्रमाचार्य्स...........आचार्य्य.........हण:।

(यस्या)स्ये रुचिरे रम्ये रेमे शश्वत् सरस्वती।।५

Only a few letters of vv 6-7 are legible.

..........................वीक्ष्य............................।

...................................स्थापयति स्म य:।।८

अर्थ- सुवर्ण है गर्भ में जिसके, उस ब्रह्मा को नमस्कार है। विश्व में प्राणियों के ऐश्वर्य के लिए जिसके मुख रूप चन्द्र की कलाओं से वे चार वेद निकले।।1

सृष्टि में स्थित विष्णु को जो पर को धारण करने वाले हैं, पालन के लिए नमस्कार है जिसने चक्र से राजाओं के ईश के चक्र.....................।।2

अन्धकार के नाशक एवं लोगों के कल्याण करने वाले शंकर को नमस्कार है जो तीन लोक रूप वन के जलाने में अतिशय दुस्सह अग्नि हैं।।3

बिल्कुल एकान्त रूप से सबका सभी भाषाओं का ज्ञाता- देखने वाला ब्राह्मण राग आदि से छूटा हुआ जैसे सूर्य अन्धकार को दूर करने वाला है- वैसा था।।4

.........आश्रम के आचार्य......आचार्य जिसके सुन्दर रम्य मुख में सर्वदा सरस्वती रमण करती थीं।।5

....

VV- 6-8 का अर्थ अस्पष्ट होने के कारण नहीं हो सका।

I44

बस्सेत मन्दिर अभिलेख

Basset Temple Inscription

बस्सेत नाम का नगर बटमबंग के करीब 8 मील पूर्व में स्थित है। इस स्थान पर पाँच अभिलेख पाये गये हैं जिनमें एक पढ़ने लायक नहीं है। प्रथम ख्मेर तथा संस्कृत दोनों भाषाओं में है। संस्कृत अंश मुश्किल से पढ़े जाने लायक है।

इस अभिलेख में त्रिदेव या अकेले विष्णु की प्रार्थना के बाद राजकीय बढ़ई विश्वकर्मा की चर्चा है और उसके जीवन एवं कार्यों का संक्षिप्त विवरण है। इससे राजकीय पक्षपात का भी पता चलता है जिसमें उसे जमीन दिया गया तथा उसके परिवार को स्वर्णकार की जाति में सम्मिलित किया गया और भीमपुर के प्रधान चित्रकार के रूप में उसकी नियुक्ति हुई। उदयादित्यवर्मन द्वितीय के समय विश्वकर्मा ने अपना कार्य प्रारम्भ किया। राजा की मृत्यु के बाद उसे जो राजकीय उपादान मिले उसको हर्षवर्मन द्वितीय के द्वारा संतुष्ट किया गया। विश्वकर्मा की मृत्यु के पश्चात् इन सारे उपादानों को उसके भतीजे ने पा लिया।

इस अभिलेख में 17 पद्य हैं जिनमें 1 से 4, 6, 8 एवं 12 टूटे हुए हैं। आयमोनियर ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

पद्म..पङ्कजः।
....।।1
प्रदिशतु विश्वश्चतुर्भि........इराङ्क.....नश् शङ्ख।
....।।2
विदधतु वो रम्यधृतिं मुख विधवो...........ध्वान्ताः।
....।।3
सकुलानि..............र्व्विषयाधिपति......वदन्यो यः।
श्रीसूर्य्यवर्म्म..............................श्री...........।।4
तद्भार्य्या या नारी पतिव्रता देवीसुविनयभूषा।
सुषुवे पुत्रानष्टौ पुरुषान् पञ्च (स्त्रियस्ति)स्यः।।5
पुत्रास्ते गुणकुशलाश् शिवभक्तिरताः पृथक् पुरुषकाराः।
आढ्याश्चेष्टावन्तस्त्रिषु पतिषु वल्ल(भः)..........।।6
गुणगणरत्न समुद्रो दृढ़व्रतो ज्यायसोऽनुजस्तेषाम्।
कृतशिल्पश् शिल्पीन्द्रो नृपाज्ञया विश्वकर्म्मा(सीत्)।।7
मंदाकिन्याः खनने त्रिभुवन चूडामणोर्ग्गिरिर्ब्बन्धे।
नगरारम्भे च कृते नरपति नारं स कृत.........।।8
नृपतिः कार्य्यसमाप्तौ स्वभूमिभागं पुरो निरपवादम्।
उदय प्रसाद नाम्नादात् प्रथितन्दक्षिणान्वास्त(म्)।।9
मातापितृविक्रीतस्तैरष्टाभिश्च भूमि भागोऽयम्।
कुलभागैरन्यैश्च प्रसादितस्तेषु भूपतिना।।10
पुञ्जीकृत्य द्विजजन राज कुलं साक्षिणं सभापतिभिः।
सीमाः पञ्च प्रतिदिशमवनि पतिरकारयत्तस्य।।11
तद्गुण चोदित मनसा नरपतिना सादरेण स प्रथिते।
वर्ण्णे हेमकरङ्के सकुलपुरो लिखितो...........।।12
भीमपुराख्ये विषये सक्षेत्रे भूधरे सभृति कारे।
शिल्पिनि चित्रकरे चाधिपतिर्नामाज्ञया स गुणी।।13

1. *Le Cambodge, Vol. II,* p.239

144. बस्सेत मन्दिर अभिलेख

स्वर्ग्ग याते तस्मिन्नुदयादित्ये न्यवापयेत्त स्याम्।
श्री हर्षवर्म्म देवस्तद्गुण कृपया पुनस् सीमाम्।।14
तस्मिन् स्वर्ग याते तत्संस्कारं प्रकार्य्य राजायत्।
देशोपायं भगिनीसुते पुरावत् कुमाराख्ये।।15
स कुमारो विनयाढ्यस् सूनुर्म्मधुरेन्द्र पण्डितस्य पटुः।
स्वोपायस्याधिपतिर्हेमकरङ्कोपचर वृद्धिः।।16
स नृपतिरुदयादित्याभिधानो यशोर्थी
दिशि दिशि कृतकृत्यस्तर्पिता चार्य्यविप्रः।
द्रविणगणसमुद्रैस्तेन दत्ता मही तां
पुनरनुज नृपोऽदाद्विश्व कर्म्मण्युमेशः।।17

अर्थ- कमल- कमल- ।।1

चारों से विश्व को आदेशित करे.............शंख।।2

तुम्हारे विधान करें सुन्दर धैर्य को मुखरूप चन्दों................ अन्धकारों को।।3

वंश सहितों को.............विषयों के स्वामी............दानी जो श्री सूर्यवर्मन..........श्री।।4

उनकी पत्नी जो पतिव्रता नारी देव सुन्दर विनय रूप भूषण वाली ने आठ सन्तानों को जन्म दिया जिनमें पाँच पुरुष और तीन नारी थीं।।5

वे पुत्र गुणों में निपुण थे, शिव की भक्ति में परायण अलग पुरुषार्थ दिखाने वाले, धनी, चेष्टा वाले तीन स्वामियों के प्रिय थे।।6

गुणों के समूहों के समुद्र दृढ़ व्रत वाले उनके बड़े से छोटे कारीगरी जानने वाले शिल्पियों के स्वामी राजा की आज्ञा से विश्वकर्मा थे।।7

मन्दाकिनी के खनने में त्रिभुवन चूड़ामणि पर्वत के बाँधने में नगर के आरम्भ करने में..... राजा के नर समूह को उसने किया........... ।।8

राजकार्य की समाप्ति में अपनी भूमि के भाग को आगे अपवाद से रहित उदय प्रसाद नाम से दिया जो दक्षिण दिशा में स्थित था।।9

माँ-बाप से बेची जमीन और उन आठों से यह जमीन की टुकड़ी वंश के भागों से और अन्यों से प्रसन्न होकर उन्हें राजा के द्वारा मिली।।10

राजा द्वारा उसकी सीमाएँ पाँच करायी गयीं- इस कार्य में ब्राह्मण एवं राजकुल के लोगों को गवाह के रूप में सभापतियों द्वारा।।11

उसके गुण से प्रेरित मन वाले राजा से आदर सहित प्रसिद्ध वह वर्ण में सुवर्ण के करङ्क वंश सहित पुर लिखित हैं...............।।12

भीमपुर नामक ग्राम के विषय में खेत सहित पर्वत नौकर सहित कारीगर, चित्र बनाने वाले सबों का मालिक वह गुणी राजा की आज्ञा से बना।।13

उस उदयादित्य के स्वर्ग जाने पर श्री हर्षवर्मन राजा ने उसके गुण पर कृपा करके फिर सीमा को उस पुरी में नपवाया था।।14

उनके स्वर्गगामी हो जाने पर उनका अन्तिम संस्कार करके उनका बहन पुत्र कुमार (भांजा) परम्परा के अनुसार या पूर्व की भाँति ही राजा हुआ।।15

वह कुमार विनय से पूर्ण (धर्माचरण से उत्तम) धर्म धुरेन्द्र का विद्वान् पुत्र अपने प्रयत्न से सुवर्ण, सुवर्ण पात्रों और रत्नों की अतिवृद्धि की।।16

वह महाराज उदयादित्य नाम धारण करने वाला यश की कामना से सभी दिशाओं के विद्वान् (आचार्य) ब्राह्मणों को तृप्त कर कृत कृत किया। बाद में छोटे भाई राजा को सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति और समुद्रपर्यन्त पृथ्वी तथा पृथ्वी का शासन-भार जिसने (उसने) दे दिया।।17

प्रसत खतोम अभिलेख

Prasat Khtom Inscription

बटमबंग में स्वे सेक से उत्तर 3 मील की दूरी पर स्थित तीन मन्दिरों का यह समूह है। केन्द्रीय मन्दिर पर यह अभिलेख उत्कीर्ण है पर इसका पहला भाग खो गया है। संस्कृत का लेख ग्यारहवीं शताब्दी का है और इसमें इन पवित्र स्थानों को दिये गये लोगों और वस्तुओं की एक सूची है।

इस अभिलेख में कुल 11 पद्य हैं जिनमें पद्य संख्या 5 से 11 टूट चुके हैं। यह अभिलेख जॉर्ज सेदेस[1] द्वारा सम्पादित हुआ है।

कृतज्ञपुरजान् पौरान् सज्जण्णांमाख्यजांस्तथा।
सर्व्वाङ्गन्देव कार्य्यार्यान् प्रतिपक्षम कल्पयत्।।1
गीतवादित्रशङ्खनां ध्वनिनाङ्करिणो सदा।
दिने दिने महास्ना(?)दन्नर्त्तकाभिनयान्विताः।।2
व्रीहीनां शतमेकैकं पुरयोरप्य कल्पयत्।

---

1. *IC, Vol. III,* p.109

सकर्म्मणा शतञ्चैकं त्रिदेवे परिकल्पितम्।।3

महानसं पत्रकारं पूजापालञ्जनाधिपम्।

आचमं यज्ञकरञ्च सर्व्वाङ्ग परि(क)ल्पितम्।।4

भद्राश्रमे तु धान्यानां शतद्वयमकल्पयत्।

मालाकारं भक्तकारमेकैकं स्नेह........कम्।।5

अभिनेयादि संयुक्त पूजापालञ्चनाधिपम्।

सोद्धरं सर्व्व..........साश्रमं प्रददौ शिवे।।6

आरामाणि तु सर्व्वाणि सक्षेत्राणि........वन्ति मे।

..........................पि.......................।।7

पञ्च प्रस्थ...............प्रतिपक्ष.........त्रये।

....।।8

ये..........सर्व्व..........आरक्षन्ति मम पुण्यञ्च।

गुह्यवत् सर्व्वरक्ष...............................।।9

....................क्रूरः परपुण्य..............।

....।।10

Only a few letters of V. 11 are legible.

अर्थ- किये उपकार के मानने वाले पुर में पैदा होने वाले पुरवासियों को तथा सज्जणर्णमा नामक पुत्रों को सभी अंगों को देवों के कार्यों के प्रयोजनों को प्रतिपक्ष में करने के लिए नियुक्त किया।।1

गीत, बाजे, शंखों की ध्वनियों को करने वाले प्रतिदिन नृत्य नाटक युक्त हों।।2

एक-एक सौ ब्रीहि दोनों पुरों में कल्पित थे। कर्म सहित वाले के द्वारा एक सौ तीन देवों के लिए कल्पित थे।।3

रसोई बनाने वाले, पत्ते बनाने वाले, पूजा कराने वाले लोगों के स्वामी, आचमन करवाने वाले, यज्ञ कराने वाले सभी अंगों वाले कर्मचारियों की कल्पना थी।।4

भद्राश्रम में दो सौ धान्य कल्पित थे। मालाकार, भात बनाने वाले एक एक को स्नेह....कार।।5

अभिनय आदि से संयुक्त पूजा कराने वाले जन का स्वामी........

के साथ सब.......आश्रम सहित शिव को दिये गये थे।।6

सभी वाटिकाएँ खेत सहित...........मेरे।.............पि................ ।।7

पाँच प्रस्थ............प्रतिपक्ष..................तीन में.............।।8

जो........सब..............मेरे पुण्य का रक्षण करते हैं। छिपाने योग्य के समान सब की रक्षा.............।।9

.......................निर्दय.............दूसरे के पुण्य..........। ....।।10
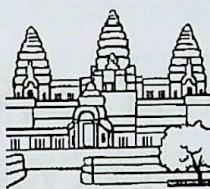
प्रसत संख अभिलेख

Prasat Sankhah Inscription

प्रह नेत प्रह के उत्तर-पूर्व की ओर करीब 15 मील की दूरी पर संख अवस्थित है। इस स्थान पर पाया गया अभिलेख शिव और शक्ति, विष्णु, ब्रह्मा और हरिहर की प्रार्थना के बाद राजा सूर्यवर्मन की प्रशस्ति प्रस्तुत करता है। इस राजा के राजगद्दी पर आने के पहले जो मुसीबतें आयी थीं, उनका भी वर्णन यह करता है और तब वागीश्वर पण्डित की प्रशस्ति धार्मिक दानों के साथ की गयी है। वागीश्वर पण्डित जो ब्राह्मण माधव का लड़का था यहाँ एक लिंग, उमा, विष्णु, विक्रम, घोड़े के चेहरे का एक देवता (यक्ष) तथा त्रैलोक्यसार की स्थापना की।

इस अभिलेख में कुल 25 पद्य हैं जो सभी शुद्ध हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

नमश् शिवायात्मविदान्दधानं

---

1. *IC, Vol. III,* p.45

योगं मनो यत्र विभर्त्त्यभेदम्।
घटाम्बुधिन्यस्तमुदन्वदम्बु-
राशा विवानेकर सप्रभिन्नम्।।1
निसर्ग्ग सर्ग्गा न भवन्त्यभावाद्
यस्या विरिञ्च्यादि तृणा वसानाः।
दुर्ब्बोधभावा विबुधैरभेद्याः
सा शक्ति राधावतु वश् शिवस्य।।2
मार्त्तण्डमन्दद्युतिभूनभस्व-
दम्भोनभोह व्यभुगात्यमभिर्य्यी।
अष्टाभिरेभिस्तनुभिस्त नोति
व्यक्तं स्वमङ्गं स शिवोऽवताद् वः।।3
वसुन्धरां माधवमुद्धश्रत-
न्दुर्ब्बोधमिदं विबुधैर्न्नमध्वम्।
आधारणा भावमिवात्मनो यो
भूतादिभूमिं कथयत्बिभर्त्ति।।4
नाभ्यन्तरारूढ़ सरोरु(रु) हस्थं
विष्णोर्न्नमध्वञ्च तुरास्य माद्यम्।
अपूरयद् वेदपयोब्धिनीरैस्
स्वात्मानमस्थानमिवादधद् यः।।5
चन्द्रार्द्ध चूड़ामणि पङ्कजाक्षा-
वेकत्वमङ्गस्य यथा दधानौ।
त्रैलोक्यनाथौ विशदामदभ्रां
संभूय भूतिन्दिशतान्त था वः।।6
सम्मान तोर्व्वीधर मूर्द्धरूढ़-
निक्षिप्त पादश् शमितान्यतेजा।
उद्यन्द्युतिद्योतितदिक्कलङ्कश्
श्री सूर्य्यवर्म्मेव बभूव भानुः।।7
दुग्धाब्धितुल्ये विशदान्ववाये
जातोऽवदातो न यथा शशाङ्कः।

श्रद्धान्दधद् वेदयमग्रहैर्य्यो
विश्वम्भरामाजलधेर्ब्बभार।।8
विजातिमाश्रित्य हरिः खगेन्द्रं
रामः कपीन्द्रञ्च रिपून्ममर्द्द।
स्वबाहुमाजौ विषमे सुजाति-
मजातरोषस्तु य एकवीरः।।9
दृष्टि प्रदानेन वराङ्गनाना-
माप्रिस् स्थितेः केवलदुर्लभास्याः।।10
यदाननोर्व्वीधरराज श्रृङ्गाद्
विनिस्सृता मृष्टजगत्कलङ्का।
पुराण रामायण भारतादि-
कथाविवक्षामरधाम सिन्धुः।।11
बाह्योपमानास्यविलास कान्ति-
समान शोभा कनकाण्ड जाण्डे।
इतीव कान्तास् स्वमनानांसि निन्युस्
समापयन्त्यो यमनङ्गकान्त्या।।12
यस्याङ्ग लावण्य मनन्यलब्ध-
ञ्चेदीक्ष्य कामापदि कामकान्ता।
स्वाङ्गन्दिधक्षुः किमु जातहर्षा
मुञ्चेत् कथञ्चिन्न नु वाष्पमात्रम्।।13
स्वान्ते मदीये विदधातु नित्यं
स्थास्नुस्थितिं स्थाणुरितीव सम्यक्।
शुभ्रवृषं सूक्ष्मगति प्रतीतं
यस् स्थापायोमास मनस्यजस्नम्।।14
तथा प्रदानोचित मानसेन
दत्तानि येनानुदिनन्धनानि।
यथार्थिभिः कृत्स्नपरिग्रहे प्य-
समर्थतागृह्यत शत्रु गृहा।।15
सामान्य वृत्तेरपि नु(दु)र्मृगाक्षी

क्षुद्रात्मधाम्नश्च पला न युक्ता।
राजाधिराजस्य तु यस्य कीर्तिः
प्रिया सती सर्व्वगतात्र चित्रम्।।16
निरन्तराक्लिष्ट निसृष्ट यज्ञैश्
शतक्रतोर्यो भुवि तुल्यवृत्तिः।
क्षितिञ्चकाराम रवि प्रकीर्ण्णा-
मध्यासितां पुण्यजनैरिव द्याम्।।17
उत्पत्ति नाशाम्बुनिधौ जगन्ति
मज्जन्त्यजस्नं करुणार्द्रचेताः।
समीक्ष्य शास्त्रार्थविधिक्रियां यश्
शिवस्य पूजाजननीञ्चकार।।18
यस्योन्नतिं राजगुणे च धर्म्मे
कलिर्ब्बली चालयितुन्न शक्तः।
उत्पातभूता अपि रत्न रश्मिं
वातूलसंघा न हि कम्पयन्ति।।19
निर्जित्य शत्रूनापि राज्यलक्ष्मीं
साध्यामपि प्राप्य सुख प्रसन्नः।
ध्यानोज्ज्वलत्पावकमध्युवास
साध्याभिलाषीव सदा मुनिर्य्यः।।20
तस्याप्रभृत्यो नयाविद्विदग्धो
वाग्मी वदन्यो गुणिनां वरिष्ठः।
आसीन्मनीषी परिशुद्धभक्तिश्
शर्व्वप्रियश् शर्व्वपुरान्व यो यः।।21
शैवेतिसाढ्य पुराणकाव्य-
शास्त्राण्यनेकान्यक(ल)ङ्क बुद्धिः।
निश्शेषमुक्त्वा गुरुगौरवेण
योऽध्याययामास पराननल्पान्।।22
सौवर्ण्ण दोलादिविभूतिभाजो
द्विजस्य विद्यार्ण्णवपारगस्य।

यो माधवाख्यस्य विशिष्टजन्म-
जातस्य पुत्रो विनयैकधाम्नः।।23
यो भोगिभोगादि विभूतिरम्यं
सुवर्ण्ण दण्डात पवारणाढ्यम्।
देवादिवागीश्वर पण्डितान्तं
नामोर्ज्जितं पत्युरवाप राज्ञः।।24
सोऽतिष्ठि पल्लिङ्गमुमा मुरारिं
त्रिविक्रमं वाजिमुखं मखेद्धः।
त्रैलोक्य सारं जगतान्निकृत-
संसार सारं विधिना विधिज्ञः।।25

अर्थ- आत्मज्ञानियों द्वारा धारण किये जाने वाले जहाँ मन अभेद धारण करता है, घड़े रूप समुद्र में रखे समुद्र के जल की राशि में जैसे एक अभिन्न रस हरि ऐसे शिव को नमस्कार है।।1

शिव की वह आद्या शक्ति तुम लोगों की रक्षा करें जो अभाव के कारण प्रकृति से वंचित नहीं होती जिसे ब्रह्मादि देव तृण के समान अन्त ही हैं जो दुर्बोध भाव से देवों और विद्वानों से भेदने योग्य नहीं हैं।।2

वे शिवजी तुमलोगों की रक्षा करें जो सूर्य और चन्द्र, पृथ्वी, वायु, जल और आकाश रूप हवनीय पदार्थ को भोगने वाला अपनी आत्मा से जो है इन आठ शरीरों से विस्तारित करते हैं- अपने स्पष्ट रूप से अपने शरीर को वे शिवजी तुम्हारी रक्षा करें।।3

पृथ्वी का उद्धार करते हुए विष्णु जो दुर्बोध है देवों द्वारा भी उन्हें तुमलोग नमस्कार करो जो धारण के अभाव के समान आत्मा के पंचभूतों में पहला भूत पृथ्वी है, उसको कहते हुए धारण करते हैं।।4

जिस ब्रह्मा ने अपनी आत्मा को न स्थान के समान धारण करने वाले हैं, उन ब्रह्माजी को नमस्कार करो, विष्णु की नाभि के अन्दर पैदा हुए कमल में स्थित हैं। उन चतुर्भुज आद्यदेव को नमस्कार करो जो चार वेद रूप चार समुद्रों के जल से अपनी आत्मा को स्थानहीन के समान धारण करते हैं।।5

अर्द्धचन्द्रशेखर और विष्णु दोनों अंग की एकता को जैसे धारण

करते हैं- दोनों मिलकर एक रूप हैं वे उज्ज्वल और बिना कुश के पैदा हो करके ऐश्वर्य देवें वैसे ही तुमलोगों को।।6

सम्मान से राजा के मस्तक पर पैर रखने वाले दूसरों के तेज को शान्त करने वाले दिशाओं के कलंक अन्धकार को उगते हुए अपनी ज्योति से प्रकाशित करने वाले सूर्य के समान श्री सूर्यवर्मन हुए।।7

दूध के समुद्र के समान उजले वंश में उत्पन्न उजला जैसा चन्द्र भी उजला नहीं है, श्रद्धा को धारण करता हुआ अग्रहों से जो जानने लायक है- समुद्र तक पृथ्वी को भरण-पोषण करने वाला था।।8

विष्णु ने विजाति गरुड़ को आश्रित बनाकर, राम ने बालि को और अपने शत्रुओं को मार डाला था, विषम युद्ध में सुजाति अपनी बाँह को धारण करने वाला जो है जिसे न क्रोध पैदा होता है उस जैसा एक अद्वितीय वीर है।।9

वरश्रेष्ठ अंगना स्त्री, श्रेष्ठ स्त्रियों की प्राप्ति जिसे दृष्टि प्रदान से होती है। केवल दुर्लभ मुख वाली के पालन से जिसके मुख में पूर्व में किसी दूसरे के मुख न होने वाली विद्या किसी भाँति विद्या जिसके मुख विद्या निवास करने लगी।।10

जिसके मुख रूप धरणी को धारण करने वाले श्रेष्ठ राजा से निकली संसार भर के कलंक को छुड़ाने वाली पुराण, रामायण, महाभारत आदि कथा के कहने की इच्छा अमर देवता के धाम के समुद्र सी है।।11

बाहरी उपमान से मुख की सुन्दरतापूर्ण विलास की कान्ति के समान शोभा सुवर्णमय ब्रह्माण्ड में ऐसा सोचकर स्त्रियों ने अपने-अपने मन में लिया जिसे कामदेव की कान्ति के समान कान्तिमान समझकर कामदेव को समाप्त किया।।12

जिसके अंग के सौन्दर्य को जो सौन्दर्य दूसरे से प्राप्य नहीं है यदि देखकर कामदेव के जलने पर कामदेव की पत्नी रति अपने अंग को जलाने की इच्छा वाली हर्षित होकर क्या किसी भाँति थोड़ा भी आँसू बहाती? नहीं बहाती या देखती।।13

भली-भाँति शिवजी मानो ऐसा सोचकर ही कि मेरे मन में नित्य स्थायी रूप से राजा रहे मानो यह सोचकर स्थाणु शिवजी उजले बैल पर

धीरे चलने के विश्वास पर जिसने मन में हमेशा के लिए स्थापित किया।।14

वैसे प्रदान के उचित मन से दिये हुए प्रतिदिन धनों को जिसके द्वारा याचकों को कठिनाई में भी असमर्थता को ग्रहण किया शत्रु से ग्रहण करने वाले ने।।15

सामान्य जीविका वाले मनुष्य की स्त्री जो मृगलोचना है क्षुद्रात्मा वाले तेजस्वी की स्त्री चंचला हो यह उचित नहीं है- जिस राजाधिराज की कीर्ति प्यारी सती सब में गत होकर भी विचित्रता यह है कि वह सती ही है। कीर्ति रूप रानी सर्वत्र जाति पर सती है।।16

हमेशा क्लेश न देने वाले निकले यज्ञों से पृथ्वी पर सौ अश्वमेध करने वाले इन्द्र के समान वृत्तिवाला जो राजा है- पृथ्वी को ही देवों से पाट दिया था उसने जैसे पुण्यकर्ता लोग स्वर्ग में छा जाते हैं उसी प्रकार पृथ्वी पर देव लोग।।17

उत्पत्ति और नाश के समुद्र भुवनों में लोग सर्वदा डूबते रहते हैं इस पर कृपा करुणा से भींगे चित्तवाले राजा ने समीक्षा करके शास्त्रार्थ की विधि की क्रिया की आलोचना करके जिसने शिव की पूजा रूप माता को ही निर्मित किया था।।18

जिसकी उन्नति राजगुण में धर्म में है। कलि बली है चलाने में शक्त नहीं है। उत्पात रूप भी रत्न की किरण को बातूनी लोगों के समूह नहीं कँपा पाते।।19

शत्रुओं को जीतकर भी राजलक्ष्मी को साध्य को भी प्राप्त करके सुख से प्रसन्न हैं जिसने ध्यान से ऊपर को जलते अग्नि में निवास किया, साध्य के अभिलाषी के समान सदा जो मुनि बना है।।20

उसके नौकर जो प्राप्त हुए उसे वे नीति के जानकार हैं, पण्डित हैं थोड़ा और सार बोलने वाले वाग्मी हैं। दाता का गुण उनमें है- दानी हैं। गुणियों में बड़े श्रेष्ठ हैं। मनीषा बुद्धि है जिसे वह मनीषी बुद्धिमान विद्वान् हैं। परिशुद्ध भक्ति वाले हैं। शिव को प्रिय समझने वाले हैं। शिवपुर के वंशज हैं जो राजा स्वयं भी।।21

शिव सम्बन्धी इतिहासों से आढ्य पुराण काव्य और अनेक

शास्त्रों को कलंकहीन बुद्धिवाला गुरु गौरव से निःशेष कहकर दूसरे बड़े थे- उन्हें जिसने पढ़ाये थे।।22

सुवर्ण के बने डोले आदि ऐश्वर्य के भागी विद्यारूप समुद्र के पारंगत ब्राह्मण के जो माधव नाम के थे उनके विशिष्ट पुत्र जिसका विनय ही एक धाम है ऐसे थे।।23

जिसने भोगी के भोग आदि ऐश्वर्यों से रमणीय सुवर्ण के दण्डवाले छातों से धनी, जिनके आदि में देव और अन्त में पण्डित शब्द है- 'देव वागीश्वर पण्डित' नाम से अर्जित बल प्राणयुक्त स्वामी राजा से पाया था।।24

उसने स्थापना की थी उमा और मुरारि को, विष्णु को, त्रिविक्रम को, हयग्रीव भगवान् को, यज्ञ से प्रकाशित होकर जो त्रैलोक्य के सार हैं- भुवनों के करने वाले संसार के सार विधि के जानकार विधि के ज्ञाता हैं।।25
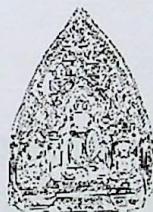
147

प्रह नोम अभिलेख

Prah Phnom Inscription

प्रसत लिक के उत्तर-पूर्व एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर प्रह नोम नामक स्थान में यह अभिलेख पाया गया है। इस अभिलेख में राजा जयवर्मन की चर्चा की गयी है। पद्मपुर, जो इस इलाके का प्राचीन नाम प्रतीत होता है, में राजा के पुजारी द्वारा भगवान् शिव की मूर्ति स्थापित करने की चर्चा इस अभिलेख में है।

इस अभिलेख में केवल 1 पद्य है जो स्पष्ट एवं शुद्ध है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

उर्व्वीभुजा श्री जयवर्म्मनाम्ना
नियोजिताज्ञोऽनलदोर्धुचन्द्रैः।
अस्थापयत् पद्मपुराख्य ईशं
होतृषभो राजपुरोहितेन्द्रः॥

---

1. *IC, Vol. III,* p.119

अर्थ- श्री जयवर्मन नामक राजा की आज्ञा से प्रधान राजपुरोहित होतृषभ ने पद्मपुर नामक भगवान् शिव के इस मूर्ति की स्थापना की।

148

नोम अकसर अभिलेख
Phnom Aksar Inscription

इस अभिलेख का स्थान अंगकोर थोम के 22 मील उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के तप स्वे गाँव से 10 मील की दूरी पर है। नोम अकसर का अर्थ होता है वर्णाक्षरों या अक्षरों की पहाड़ी। इस अभिलेख का संस्कृत मूल लेख विद्यावासा नाम के एक साधु की चर्चा करता है। इस साधु को बहुत से राजाओं-जयवर्मन षष्ठ, सूर्यवर्मन द्वितीय तथा धरणीन्द्रवर्मन प्रथम से प्रतिष्ठा मिली थी। श्यामाद्री पहाड़ी पर तीन लिंगों की स्थापना इस साधु ने सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल में की।

इस अभिलेख में कुल 4 पद्य हैं। पद्य संख्या 1 टूटा हुआ है।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

विद्यावासेनिनामाहं तेजस्वी भुवि विश्रुतः।
दशनापतपरम्यं कृत्वा......................॥1

---

1. *IC, Vol. III,* p.134

सर्व्वागमानुकूल गुः सा(शा)स्त्रज्ञो धर्म्म तत्परः।
तपकर्म्मविशुद्धात्मा (वाङ्मन)कायकर्म्मणा।।2
श्रीजयश्रीधरणीन्द्र श्रीसूर्य्यादिभिरेवतु
राजभिः पूजितश् शश्वत् सर्व्व सत्कृतसंपदा।।3
श्री सूर्य्यवर्म्मणो राज्ये शिवभक्त्याभिचोदितः।
श्यामाद्रि संज्ञके तसिमद्गिरौ लिङ्गत्रयं शिवम्।।4

अर्थ- तेजस्वी के रूप में जगत् प्रसिद्ध मैं दस ताप वाले सुन्दर श्रेष्ठ तपों को करके..........।।1

सभी आगमों के अनुकूल चलने वाला, शास्त्रों का ज्ञाता, तप तथा कर्मों से विशुद्धात्मा, मन, वचन, शरीर और कर्म से धर्मतत्पर, श्री जयवर्मन, श्री धरणीन्द्रवर्मन तथा श्रीसूर्यवर्मन आदि राजाओं से शाश्वत पूजित, सभी सत्कर्मजन्य पुण्य सम्पदा से सम्पन्न, विद्यावास नाम वाले मैंने श्रीमान् सूर्यवर्मन के राज्य में, भगवान् शिव को भक्ति से प्रेरित होकर श्यामाद्रि नामक पर्वत पर तीन लिंगों के रूप में भगवान् शिव की प्रतिमा को स्थापित किया।।2-3-4

149

नोम अकसर के खड़े पत्थर अभिलेख

Phnom Aksar Stele Inscription

पहले इलाके में ही यह अभिलेख पाया गया है। एक खड़े पत्थर के चारों ओर यह अभिलेख उत्कीर्ण है। प्रारम्भ में संस्कृत मूल लेख संख्या 146 के मूल लेख से मिलता-जुलता है जबकि शेषांश नष्ट हुई अवस्था में है और वे इस मन्दिर में दिये गये उपहारों एवं दानों का वर्णन करते हैं। उनमें भी विपत्ति का आह्वान किया गया है।

अभिलेख में पद्यों की कुल संख्या 14 है जो सभी नष्ट हो चुके हैं।

जॉर्ज सेदेस ने इस अभिलेख का सम्पादन किया है।[1]

VV 1-4 identical with those in No. 167 A of RCM.

......................सम्यक् तथा विभवविष्टरैः।

.................एतं धर्म्मम.........न्य शिवं ययौ।।5

श्री सूर्य्यवर्म्मेतिनाम राज्ञो मन्न.............।

---

1. *IC, Vol. III,* p.45

....यज्ञ।।6

....शिवं ययौ।

............................यज्ञं लिङ्गे प्रकल्पयेत्।।7

....................लिङ्गभक्षदासदासी...........।

....द्वयम्।।8

.......................लिङ्गोपदां प्रकल्पयेत्

शिवलिङ्गहितं सर्व्वं शैले संलक्ष्य यत्नतः।

....

........यो वर्द्धते......लिङ्गधर्म्म मयेरितम्।।9

शापानुग्रहण(णं) शैलं कृतवानत्र निश्चयो(यम्)।

........यो वर्द्धते......लिङ्गधर्म्म मयेरितम्।।10

................भवेत् कल्पान्तन्..........णः।

...............................सतां...............।।11

अमरपुरन्दिव्यं गच्छेद्र........न्यं शिवं य (यौ)।

.................केन द्वात्रिंशन(न्न)रकेषु सः।।12

.............द्यौरैस्तप्यते सह वा(बा)न्धवैः।

................र्य्यक् दुःख शोकभयान्वितः।।13

............मे तद्वाक्याञ्च ब्रह्मवाक्यसमं मतम्।

..........मार्थ मोक्षञ्च कांक्षेद्र यो नैन लङ्घयेत्।।14

अर्थ- ......भली-भाँति एवं ऐश्वर्य के विस्तार के अनुसार.....इस धर्म को......शिव को प्राप्त हुआ।।5

श्री सूर्यवर्मन इस नाम के राजा का............यज्ञ।।6

...........यज्ञ को लिंग में प्रकम्पित करे।।7

लिंग भोजन दास-दासी...................दोनों ।।8

.......लिंग के समीप सामग्री प्रकल्पित करे, शिवलिंग के लिए सब कुछ पर्वत पर यत्न से संलक्षित करके........जो बढ़ता है.....लिंग के विषय में धर्म मैंने कहा है।।9

शापानुग्रहण पर्वत को यहाँ बनाया यह निश्चय है......जो बढ़ता

है.....लिंग धर्म मैंने कहा।।10

..........होव...........कल्पान्त............सज्जनों का।।11

सुन्दर स्वर्ग पुर जाय..........शिव को प्राप्त हुआ था.......बत्तीस नरकों में वह.......।।12

......भयंकर द्वारा बान्धवों के साथ पाया जाता है.....दुख, शोक और भय से युक्त है।।13

......और मेरा यह वाक्य ब्रह्म वाक्य के समान है, माना गया है.... ....करें।।14

परिशिष्ट

परिशिष्ट-1

वर्तमान समय में अभिलेखों की अवस्थिति

Thailand

Inscription No.	*Title*
38	Ban Bung ke Inscription (Ubon Province)
102	Phnom Run Inscription (Korat District)
106	The Say-Fong Inscription (Between Vieng- Chan and Nong Khai)

Laos

10	Phu Lokhon Inscription (Mun-Mekong Junction)
26	Vat Phu Inscription (Near Bassac on the Mekong river)
99	Vat Phu Stele Inscription (In the Locality of S.No.26)
101	Ban That Inscription (20 miles south-weat of Bassac)

Cochin- China

2	Prasat Pram Loven Inscription (Thup Muoi Locality)
14	Nui Ba The Inscription (Rach-Gia Province)
125	Thap Luc Hien Stele Inscription (Rach-Gia Province)

Combodia

Mlu Prei Province

50	Phnom Prah Vihar Stele Inscription
76	Prasat Kom Phus Inscription
85	Prasat Khan Inscription
88	Prasat Khan Inscription
94	Prasat Khan Inscription

Koh Ker Locality

52	Phnom Sandak Stele Inscription
59	Prasat Thom Inscription
60	Prasat Damrei Inscription
61	Prasat Andon Inscription

130	Prasat Neang Khman Inscription
Chikreng District	
71	Sek Ta Tuy Inscription
102	Chikreng Inscription
Roluos District	
48	Loley Door Pillar
82	Prah Ko Inscription
Siem Reap District	
34	Prah Ko Inscription
35	Bakong Stele Inscription
57	Vat Thipedi Inscription
63	Prah Put Lo Rock Inscription
70	Bantay Srei Inscription
75	Prah Einkosei Inscription
83	Vat Thipedi Inscription
107	Prasat Tor Stele Inscription
112	Bantay Srei Inscription
124	Prasat Ta Kam Inscription
134	Kok Samron Inscription
139	Prasat Kralan Inscription
Angkor Vat Area	
5	Phnom Bantay Nan Inscription
40	Loley Inscription
41	Eastern Baray Inscription
42	Eastern Baray Inscription
43	Eastern Baray Inscription
44	Eastern Baray Inscription
51	Phnom Dei Temple Inscription
65	Baksei Camkron Inscription
84	Bantay Kdei Inscription
91	Pon Prah Thvar Cave Inscription

93 Prasat Prah Khset Inscription
105 Prah Khan Stele Inscription
114 Angkok Vat Inscription
137 Phnom Bantay Nan Inscription

Angkor Thom Area

37 Prasat Kok Po Inscription
49 Prasat Takeo Inscription
53 Phimanakas Inscription
55 Angkor Thom Inscription
56 Ankor Thom Inscription
66 Mebon Inscription
67 Bat Cum Inscription
72 Angkor Vat Inscription
70 Bantay Srei Inscription
73 Bantay Srei (4 Dedicatory Inscription)
77 Ta Tru Inscription
78 Angkor Thom Inscription
79 Prasat Kok Po Inscription
80 Prasat Kok Po Inscription
87 Prasat Takeo (5) Inscription
92 Prah Nok Stele Inscription
99 Trapan Don On Stele Inscription
104 Ta Prohm Inscription
107 Prasat Crun Stele Inscription
109 Phimanaka Inscription
110 Phimanaka Bilingual Inscription
113 Angkok Temple Stele Inscription
148 Phnom Askar Inscription
149 Phnom Askar Stele Inscription

Sisophan Area

89 Sdok Kak Thom Inscription

133 Four Inscriptions at Phnom Kanva

Battambang

115 Baset Stele Inscription

128 Prasat O Damban Inscription

142 Phnom Prah Net Prah Inscription

135 Basak Stele Inscription

138 Thma Puok Inscription

142 Phnom Prah Net Prah Inscription

144 Prasat Khtom Inscription

145 Prasat Sankhah Inscription

Stung Treng District

8 Veal Kantel Inscription

29 Ban Deume Inscription

Kompon Svay Province

11 Sambor Prei Kuk Inscription

63 Prasat Pram Inscription

85 Prasat Trapan Inscription

88 Prah Khan Inscription

140 Tuol Prasat Inscription

Kompon Thom Province

136 The Cikren Stone Inscription

Sambor Region

122 Sambor Pillar Inscription

Kraceh Province

9 Thma Kre Inscription

31 Prah That Kvan Pir Inscription

32 Lobok Srot Inscription

123 Lobok Srot Inscription

125 Vat Tasar Moroy Inscription

Trang District

1 Neak Ta Dambang Dek Inscription

4 Bayang Temple Inscription
36 Bayang Temple Inscription
54 Bayang Stele Inscription

Kompong Chang Province

6 Phnom Prah Vihar Inscription
90 Phum Da Stele Inscription

Barai Province

25 Barai Inscription

Kompong Siem District

7 Han Chei Inscription
30 Vihar Thom Inscription

Lonvek District

97 Lonvek Inscription
128 Vat Tralen Inscription

Phnom Penh

13 Svay Chno Stone Inscription

Kompon Spu Province

117 Phum Crei Stone Inscription
120 Tuol komnap Inscription

Prei Veng Province

19 Tuol kok Prah Inscription
23 Tuol Prah That Inscription

Ba Phnom Province

15 Vat Chakret Inscription
16 Kedei Ang Temple Inscription
20 Vat Prei Var Inscription
22 Vat prei Vat Stone Inscription
58 Vat Chacret Temple Inscription

Chaudoc District

12 Ang Pu (Vat Pu) Inscription

Bati Province

3	Ta Prohm Inscription
98	Phnom Cisor Inscription
118	Tuol Tramum Inscription
143	Phnom Cisor Inscription

Bayang Locality

17	Bayang Temple Inscription

Con Prei District

24	Tan Kran Inscription
27	Tan Kran Inscription
39	Prah Bat Stele Inscription

Thbon Khmun Province

28	Prasat Prah That Inscription

Bantay Mas Province

116	Prah Kuha Luon Inscription

Prei Krahas Province

121	Camnon Inscription

Prei Prasat Area

45	Prasat Komnap Inscription
46	Tep Praanam Stele Inscription
47	Prei Prasat Stele Inscription

Sutani Kom Province

33	Prasat Kandol Inscription

Puok District

96	Prasat Sralau Inscription

Man Rusei Province

95	Palhal Stele Inscription

परिशिष्ट–2 अभिलेखों का साहित्यिक विश्लेषण

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
1	1	निकता दमबांग डेक	कुल प्रभावती
2	2	प्रसत प्रम लोवेन	गुणवर्मन
3	3	ता प्रौम	रुद्रवर्मन
4	8	बयांग मन्दिर	
5	9	नोमबन्ते नान	भववर्मन
6	10	नोम प्रह विहार	भववर्मन
7	12	हान ची मन्दिर	
8	13	वील कन्तेल	भववर्मन प्रथम

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
5वीं शताब्दी	5	पद्य 3,4,5 अस्पष्ट श्लोक-2, अन्य सभी शार्दूल विक्रीडित
5वीं शताब्दी	12	पद्य 9 एवं 11 को छोड़ सभी टूटे हुए; वसन्ततिलक- 2,3,5 एवं 9; श्लोक-4; शार्दूल विक्रीडित- 10 एवं 11; औपच्छन्दशिक-12
6ठीं शताब्दी	11	सभी टूटे हुए; पृथ्वी-केवल 1; शार्दूलविक्रीडित- अन्य सभी
546 ई	12	10, 11 एवं 12 को छोड़कर सभी टूटे हुए; वंशस्थ- 1 से 6; उपजाति- 7 से 9; वैतालीय 10-11; अनुष्टुभ-12
	1	त्रिष्टुभ-1, स्पष्ट
	9	1 एवं 9 टूटे हुए; श्लोक-1 से 8; आर्य- 9
	46	अ- 34 सभी स्पष्ट; ब-12 सभी अनुष्टुभ
	7	6 एवं 7 टूटे हुए सभी अनुष्टुभ

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
9	14	थ्मा क्रे	चित्रसेन
10	15	फू लोखोन	चित्रसेन
11	16	संबोर प्री कुक	ईशानवर्मन
12	18	अंग पु (वट फु)	ईशानवर्मन
13	19	स्वे च्नो	
14	22	नुइ बाथे	नृपादित्य
15	25	वट चक्रेत	ईशानवर्मन
16	26	केदेई अंग मन्दिर	
17	26 अ	बयांग मन्दिर	भववर्मन
18	27	भववर्मन का अभिलेख	भववर्मन
19	28	तुओल कोक प्रह	जयवर्मन प्रथम

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
	1	शुद्ध, अनुष्टुभ
	3	शुद्ध, अनुष्टुभ
549 ई.	15	शुद्ध, सभी अनुष्टुभ
	7	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट; सभी अनुष्टुभ केवल एक शार्दूलविक्रीडित
	4	3 एवं 4 टूटे हुए; उपजाति-1; इन्द्रवज्रा-2; वसन्ततिलक-3; अनुष्टुभ-4
	11	सभी स्पष्ट; आर्य 1 से 6; अनुष्टुभ 7 से 11
549 ई.	7	अ- 5; ब- 2; पद्य-6 अस्पष्ट; अनुष्टुभ 1 से 6; स्रगधरा- 7
550 ई.	16	अ- 4 शुद्ध एवं स्पष्ट; ब-12 (1, 2, 9, 10, 11 एवं 12 टूटे हुए); उपजाति-1, अनुष्टुभ-2 से 4 (अ), अनुष्टुभ- 1 से 4 एवं 7 से 12; स्रगधरा- 5; मालिनी- 6
	3	सभी टूटे हुए एवं अस्पष्ट
561 ई.	3	सभी शुद्ध, श्लोक 1 और 3, उपजाति-2
579 ई.	7	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
20	29	वट प्री वार	जयवर्मन प्रथम
21	30	केदेई अंग मन्दिर	जयवर्मन प्रथम
22	31	वट प्री वार पत्थर	
23	33	तुओल प्रह थाट	जयवर्मन प्रथम
24	34	तन क्रन	जयवर्मन प्रथम
25	36	बरई	
26	37	वट फू	जयवर्मन प्रथम
27	39	तन क्रन	
28	41	प्रसत प्रह थट	
29	48	वन डियुम	
30	49	विहार थोम	
31	50	प्रह थट क्वान पीर	
32	52	लोबोक श्रौत	जयवर्मन
33	54	प्रसत कंडोल डोम(उत्तर)	इन्द्रवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
587 ई.	8	केवल पद्य 4 शुद्ध है अन्य सभी टूटे हुए हैं। अनुष्टुभ- 1 से 6; उपजाति- 7; मालिनी- 8
589 ई.	26	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट; अनुष्टुभ- 1 से 25; शार्दूलविक्रीडित- 26
	1	शुद्ध एवं स्पष्ट, स्रगधरा
595 ई.	11	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट, सभी आर्या
	23	2, 9 से 15, 18 एवं 21 शुद्ध एवं स्पष्ट हैं। शेष सभी टूटे हुए हैं। इन्द्रवज्रा-1 एवं अन्य सभी शार्दूलविक्रीडित
598 ई.	1	अस्पष्ट, शार्दूलविक्रीडित
	5	सभी शुद्ध; स्रगधरा- 2; शार्दूलविक्रीडित 1,3,4 व 5
7वीं शताब्दी	1	शुद्ध; छन्द - अज्ञात
7वीं शताब्दी	3	पद्य 1 शुद्ध नहीं है, सभी श्लोक
7वीं शताब्दी	4	केवल एक पद्य ही पढ़ा जा सकता है; सभी श्लोक
	1	शुद्ध, श्लोक
638 ई.	1	शुद्ध, स्रगधरा
703 ई.	4	पद्य 1 शुद्ध है शेष सभी अस्पष्ट हैं; सभी आर्य
	48	पद्य 1 से 7 नष्ट, पद्य 8 से 12 अंशतः स्पष्ट, शेष सभी

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
34	55	प्रह को	इन्द्रवर्मन
35	56	बकौंग के खड़े पत्थर	इन्द्रवर्मन
36	57	बयांग मन्दिर	
37	58	प्रसत कोक पो	
38	59	बान बंग के	इन्द्रवर्मन
39	60	प्रह बट के खड़े पत्थर	

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		शुद्ध; सभी श्लोक
801 ई.	40	सभी शुद्ध हैं श्लोक 1-3, 7-27 एवं 29 से 40; उपजाति- 6 शार्दूलविक्रीडित 4, 5 एवं 28
803 ई.	49	सभी शुद्ध हैं श्लोक 1 से 3, 6 से 22 एवं 24 से 49; आर्य- 23 शार्दूलविक्रीडित 4 एवं 5
	15	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट अनुष्टुभ- 1 से 3 एवं 9 से11 शार्दूलविक्रीडित- 4 एवं 6 उपजाति- 5; वसन्ततिलक- 7, 8 एवं 12 से 15
805 ई.	16	1 से 11 एवं 16 शुद्ध एवं स्पष्ट; 12 से 15 टूटे हुए हैं; आर्य- 8; श्लोक- 8
808 ई.	7	केवल 5 पद्य शुद्ध हैं शेष सभी टूटे हुए हैं; स्रगधरा-1; शेष सभी श्लोक
811 ई.	50	सभी शुद्ध, अनुष्टुभ- 1 एवं 17 से 50 उपेन्द्रवज्रा- 6 वसन्ततिलक-2,4,7 एवं 8 मन्दाक्रान्ता-16

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
40	61	लोले	यशोवर्मन
41	62	पूर्वी बारे	यशोवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		उपजाति-3, 5, 9 से 12, 14 एवं 15
	93	सभी पद्य स्पष्ट एवं शुद्ध हैं। वसन्ततिलक- 1 से 3, 5, 8, 9 एवं 67 उपजाति- 4, 6, 10, 11, 12, 13, 15 एवं 16 इन्द्रवज्रा- 14, मन्दाक्रान्ता- 17 अनुष्टुभ- 18, 66 एवं 68 से 93
	108	केवल पद्य संख्या 79 टूटा हुआ है। वसन्ततिलक- 3, 9, 90, 91 से 102; उपजाति- 20, 24, 26, 28 से 37, 39 से 50, 52, 53, 55, 57, 58, 60, 63, 64, 66, 68, 71 से 82, 84, 87, 88, 92, 104 से 108; इन्द्रवज्रा- 25, 38, 51, 54, 56, 59, 61, 62, 67, 83, 85, 89, 91 एवं 93; उपेन्द्रवज्रा- 27 एवं 69; वंशस्थ- 70 एवं 86; मालिनी- 103

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
42	63	पूर्वी बारे	यशोवर्मन
43	64	पूर्वी बारे	यशोवर्मन
44	65	पूर्वी बारे	यशोवर्मन
45	66	प्रसत कोमनौप के खड़े पत्थर	यशोवर्मन
46	67	तेप प्रनम के खड़े पत्थर	यशोवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
	108	पद्य संख्या 20 से 23 एवं 79 से 82 टूटे हुए हैं। श्लोक- पद्य 19 से 102 वसन्ततिलक- 103 उपजाति- 104 से 108
	108	पद्य संख्या 20, 22, 24 एवं 27 को छोड़कर सभी शुद्ध एवं स्पष्ट; श्लोक- 19 से 102; वसन्ततिलक- 103; पद्य सं. 1 से 18 एवं 104 से 108 क्रम सं. 41 के समान
	108	पद्य संख्या 25 से 27 एवं 62 टूटे हुए हैं। श्लोक- 19 से 102; मालिनी- 103; पद्य संख्या 1 से 18 एवं 104 से 108 क्रम सं. 41 के समान
	108	पद्य संख्या 18 से 20, 27 एवं 81 को छोड़कर सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं।
	109	सभी स्पष्ट एवं शुद्ध हैं। पद्य संख्या 1 से 2 क्रम संख्या 40 के पद्य संख्या 1 से 2 के समान; पद्य संख्या 4 से 18 क्रम संख्या 40 के पद्य संख्या 3 से 17 के

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		समान; पद्य संख्या 48 से 56 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 52 से 60 के समान; पद्य संख्या 59 से 62 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 63 से 66 के समान; पद्य संख्या 64 से 66 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 68 से 70 के समान; पद्य संख्या 68 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 71 के समान; पद्य संख्या 73 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 76 के समान; पद्य संख्या 75 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 78 के समान; पद्य संख्या 79 से 82 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 82 से 85 के समान; पद्य संख्या 86 क्रम संख्या 47 के पद्य संख्या 88 के समान; पद्य संख्या 87 से 93 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 89 से 95 के समान; पद्य संख्या 95 से 97 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 97 से 99 के समान; पद्य

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
47	68	प्री प्रसत	यशोवर्मन
48	70	लोले द्वार स्तम्भ	यशोवर्मन
49	71	प्रसत तकेओ	
50	71 अ	नोम प्रह विहार के खड़े पत्थर	
51	72	नोम देई मन्दिर	यशोवर्मन
52	73	नोम संडक के खड़े पत्थर	यशोवर्मन
53	74	फिमेनक	यशोवर्मन
54	75	बयांग	यशोवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		संख्या 99 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 101 के समान; पद्य संख्या101 क्रम संख्या 45 के पद्य संख्या 103 के समान
	96	पद्य संख्या 18 से 27, 29, 35 39 42, 43, 44, 46 से 50, 72, 75, 76, 78 एवं 96 टूटे हुए हैं और अस्पष्ट भी हैं।
815 ई.	12	मन्दिर 1पद्य 9(अ-7, ब-2) मन्दिर 2 पद्य 1 मन्दिर 3 पद्य 1 मन्दिर 4 पद्य 1; सभी छन्द उपजाति एवं शार्दूलविक्रीडित
815 ई.	30	पद्य 1 से 8, 15, 18, 19, 23 से 25 और 27 से 29 टूटे हुए हैं। सभी श्लोक
815 ई.	51	पद्य संख्या 25 से 27 एवं 39 टूटे हुए हैं। सभी श्लोक
815 ई.	2	पद्य 1 टूटा हुआ; दोनों श्लोक
817 ई.	39	अ-26, ब-13; सभी शुद्ध एवं स्पष्ट; सभी श्लोक
832 ई.	12	पद्य संख्या 1 से 3 टूटे हुए श्लोक-11, स्रगधरा-1
	18	सभी शुद्ध एवं सभी श्लोक

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
55	76	अंगकोर थोम	यशोवर्मन
56	77	अंगकोर थोम	यशोवर्मन
57	78	वट थिपेदी	ईशानवर्मन (द्वितीय)
58	79	वट चक्रेत मन्दिर	
59	80	प्रसत थोम	जयवर्मन चतुर्थ
60	85	प्रसत डैमेर	जयवर्मन
61	86	प्रसत अंडोन	जयवर्मन चतुर्थ
62	87	नोम बयांग	
63	90	प्रह पुट लो चट्टान	

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
	14	पद्य 3 को छोड़कर सभी टूटे हुए; सभी श्लोक
	5	केवल पद्य 1 शुद्ध एवं स्पष्ट शेष टूटे हुए
832 ई.	19	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट सभी श्लोक
	4	पद्य संख्या 2 को छोड़कर सभी शुद्ध एवं स्पष्ट; छन्द-श्लोक
843 ई.	3	सभी टूटे हुए; छन्द- वसन्ततिलक- पद्य संख्या 1, शार्दूलविक्रीडित- 2 एवं 3
	20	पद्य संख्या 1 से 14 टूटा हुआ; इन्द्रवज्रा- 6, 8 एवं 9; उपजाति- 2, 3, 5, 10 एवं 15 से 18; शार्दूलविक्रीडित- 19; मालिनी- 20
	41	पद्य 6, 11, 13 से 17, 20, 21, 29 से 41 टूटे हुए हैं। पद्य 41 को छोड़ सभी श्लोक
	32	अंशतः स्पष्ट; पद्य संख्या 24 से 27 अस्पष्ट; उपजाति- पद्य संख्या 25 और 28, वसन्ततिलक- पद्य संख्या 31 और 32, अन्य सभी श्लोक
869 ई.	1	शुद्ध एवं स्पष्ट, छन्द-वसन्ततिलक

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
64	91	प्रसत प्रम	राजेन्द्रवर्मन
65	92	बकसी चमक्रौंग	राजेन्द्रवर्मन
66	93	मेबन	राजेन्द्रवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
869 ई.	58	पद्य संख्या 1 से 3 एवं 30 से 31 टूटे हुए हैं। श्लोक- 1 से 29, 31 से 37, 40 से 43, 46, 47, 49 एवं 51 से 58; शार्दूलविक्रीडित- 30, 44 एवं 50; इन्द्रवज्रा- 38, 39 एवं 45; आर्य- 48
869 ई.	48	पद्य संख्या 1 से 5, 20 एवं 21 टूटे हुए; वसन्ततिलक- 1 से 21; उपजाति- 22 से 45; शार्दूलविक्रीडित- 46; स्वगत- 47 एवं आर्य- 48
874 ई.	218	निम्नलिखित पद्य टूटे हुए एवं अस्पष्ट हैं। 13, 46, 48, 50, 52, 53, 54, 56, 58, 60, 62, 64, 66, 68, 70, 72, 74, 76, 104, 106, 108, 110, 114, 120, 122, 124, 126, 159, 161 से 165, 167, 169, 171, 173, 175, 177, 179, 181, 183, 185, 187, 189, 191, 212 एवं 214 टूटे व अस्पष्ट हैं। शार्दूलविक्रीडित- 1 से 4, 9, 10 एवं 12; वसन्ततिलक- 5 से 7; स्रगधरा- 8, 11,

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
67	96	बट चम	राजेन्द्रवर्मन
68	97	प्रे रूप	राजेन्द्रवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		13 एवं 218; इन्द्रवज्रा- 14 से 104; उपजाति- 206 से 217; श्लोक- 105 से 203
882 ई.	107	पद्य संख्या 1, 82, 83, 85 से 90 एवं 106 से 107 टूटे हुए एवं अस्पष्ट; वसन्ततिलक- 1 से 14, 17 से 19, 21, 22, 65 एवं 66; श्लोक- 15, 16, 25 से 63, 68 से 99, 101, 105 एवं 107; उपजाति- 20 एवं 23; मालिनी- 24 एवं 106; वैतालीय- 64; शार्दूल विक्रीडित- 67 एवं 100
883 ई.	298	पद्य संख्या 123, 125, 127, 128, 130, 132, 136, 140, 143, 166, 169, 172, 175, 177, 180 एवं 182 अस्पष्ट; श्लोक- 7, 8, 123 से 270; वंशस्थ- 90; उपेन्द्रवज्रा- 36, 65; इन्द्रवज्रा- 22, 34, 35, 46, 52, 56, 58, 60, 61, 68 से 70, 76 से 79, 80, 86, 97, 98, 107, 110, 121, 275, 278, 283, 389, 397; उपजाति- 11, 12, 18, 19, 23 से 33, 38 से 41, 45, 47 से 50, 53 से 55, 57, 59, 63, 64, 67, 71, 72 से 75, 77 से 78, 81, 82, 85, 88, 91

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
69	101	बसक खड़े पत्थर	राजेन्द्रवर्मन
70	102	बन्ते श्री	जयवर्मन पंचम
71	103	सेक ता तुई	जयवर्मन पंचम
72	105	अंगकोर वाट	जयवर्मन पंचम

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		से 96, 99 से 102, 105, 16, 109, 111 से 116, 118 से 120, 271 से 274, 276, 282,, 284 से 288 एवं 290 से 296; वसन्ततिलक- 20, 21, 37, 42 से 44, 51, 63, 84, 87, 104, 108 एवं 117; मालिनी- 122 एवं 298; मन्दाक्रान्ता- 103; शार्दूल विक्रीडित- 1, 2, 4, 5, 9, 14 से 16 एवं 62; स्रगधरा- 3, 6, 10, 13, 17, 66 एवं 277; आर्य- 279 से 281
	12	पद्य- 3, 4, 9 से 11 टूटे हुए एवं अस्पष्ट; छन्द- सभी श्लोक
890 ई.	44	सभी शुद्ध एवं स्पष्ट; एक इन्द्रवज्रा एवं शेष श्लोक-43
	33	पद्य 27 एवं 28 शुद्ध; पद्य संख्या 1 से 26 क्रमसंख्या 69 के समान, पद्य संख्या 29 से 35 क्रम संख्या 69 के पद्य संख्या 39 से 43 के समान; सभी श्लोक
890 ई.	9	पद्य 1 और 5 टूटे हुए हैं। उपजाति-4; श्लोक- 1, 5, 7; इन्द्रवज्रा- 8 एवं 9; वसन्ततिलक- 2; शार्दूल विक्रीडित- 3

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
73	107	बन्ते श्री	
74	108	बन्ते श्री	
75	111	प्रह येन कोसी	जयवर्मन पंचम

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
891 ई.	11	पद्य संख्या 4 और 5 को छोड़कर सभी शुद्ध; सभी श्लोक
	6	सभी शुद्ध; अभिलेख 4 प्रमुख भागों में विभक्त है- अ- 1, ब- 1, स- 1 एवं द- 3
890-892 ई.	45	अभिलेख तीन प्रमुख भागों में विभक्त है-अ-9, ब-33 एवं स- 3; अ में टूटे हुए पद्य हैं- 1 3 एवं 6 से 9; ब में टूटे हुए पद्य हैं- 1 से 6, 9, 13, 22, 23; स में टूटे हुए पद्य हैं- 27 से 30 केवल 3; छन्द- (अ) श्लोक- 2 से 4 एवं 9 वसन्त तिलक- 1, शार्दूल विक्रीडित- 6 एवं 8; उपजाति- 7 (ब) वसन्ततिलक- 1, 3, 8, 10, 13, 16, 20 एवं 23; उपजाति- 2, 4, 25 एवं 27; आर्य- 11; मालिनी- 1, 15 एवं 18; वंशस्थ- 14; स्रगधरा- 17, 21, 22 एवं 30; शार्दूल विक्रीडित- 24 एवं 28; त्रिष्टुभ- 29 एवं 31 (स) शार्दूल विक्रीडित- 1; वसन्त तिलक- 2; श्लोक-3

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
76	112	प्रसत कौमफस	जयवर्मन पंचम
77	112 अ	तात्रु	
78	116	अंगकोर थोम	
79	117	प्रसत खन	उदयादित्यवर्मन
80	124	प्रसत कोक पो	

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		892-894 ई. 59 प्द्य संख्या 54 से 59 को छोड़कर सभी टूटे हुए एवं अस्पष्ट; श्लोक- 2, 4, 11, 12, 15 से 17, 24, 26, 29, 32, 37, 48, 52 एवं 55 से 59; उपेन्द्रवज्रा- 43; उपजाति- 8, 13, 20, 21, 23, 40, 41 एवं 45; वंशस्थ- 34; वसन्ततिलक- 1, 9, 14, 18, 19, 22, 25, 28, 30, 33, 44, 46, 53 एवं 54; मालिनी- 27, 35 एवं 38; शार्दूल विक्रीडित- 5, 7, 10, 42 एवं 47; स्रगधरा- 6, 36 एवं 39; आर्य- 31
900 ई.	1	टूटा हुआ
	18	पद्य 4, 5, 7 से 10 एवं 18 अस्पष्ट सभी श्लोक
	36	दो भागों में विभक्त है- अ- 11, ब- 25 अ में 1 से 4 एवं ब में 6 को छोड़कर शेष सभी अस्पष्ट; शार्दूल विक्रीडित- 1, 3, 5, 6, 9 एवं 11; वसन्ततिलक- 2; स्रगधरा- 4 एवं 6; आर्य- 8; उपजाति- 10
906 ई.	3	सभी शुद्ध तथा सभी शार्दूल विक्रीडित छन्द

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
81	125	प्रसत कोक पो	
82	126	प्रह को	जयवीरवर्मन
83	129	वट थिपेदी	सूर्यवर्मन
84	129 अ	बन्ते कदेई	शिवाचार्य
85	131	प्रसत त्रपन रुन	जयवीरवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
906 ई.	51	यह अभिलेख दो भागों में विभक्त है- अ- 22, ब- 29; अ में पद्य संख्या 19 से 22 टूटे हुए हैं, ब में सभी शुद्ध एवं स्पष्ट। अ- श्लोक- 1 से 3, 6, 8 से 15, 17, 18, 20 एवं 21 उपजाति- 7; वसन्ततिलक- 4 एवं 5 पृथ्वी- 22; शार्दूल विक्रीडित-16; स्रग्धरा- 19 ब- श्लोक- 1 से 3, 6, 8 से 15, 17 से 19 एवं 22 से 28 उपजाति- 7 एवं 21 वसन्ततिलक- 4, 5 एवं 20 पृथ्वी- 29; शार्दूल विक्रीडित-16
927 ई.	18	पद्य संख्या- 9 नष्ट, 7 एवं 8 पठनीय, 2 एवं 12 टूटे हुए, शेष सभी शुद्ध; इन्द्रवज्रा- 4, 5, 13, 14 एवं 17; उपजाति- 1, 3, 6, 10, 11, 15 एवं 16; मालिनी- 18
927 ई.	23	पद्य 21 से 23 टूटे हुए; सभी श्लोक
	45	पद्य 7, 13 से 15, 16, 18 से 20, 28, 30 एवं 37 टूटे हुए सभी श्लोक
928 ई.	58	सभी शुद्ध

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
86	144	प्रसत खन	सूर्यवर्मन
87	148	प्रसत तकेयो	सूर्यवर्मन
88	149	प्रह खन	सूर्यवर्मन प्रथम
89	152	स्डोक काक थोम खड़े पत्थर	उदयादित्यवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		श्लोक- 1 से 41, 49 से 57 इन्द्रवज्रा- 42 से 48 एवं 58
963 ई.	1	टूटा हुआ, अस्पष्ट
	52	यह अभिलेख अ, ब, स, द एवं ई पाँच भागों में विभक्त है। अ- 18, ब- केवल एक पंक्ति पठनीय, स-3, सब टूटे हुए केवल 2 को छोड़कर, द- 28 सभी शुद्ध एवं पठनीय अ- शार्दूल विक्रीडित- 5 अनुष्टुभ- 1 से 4 एवं 7 से 18 वसन्ततिलक- 6 स- सभी शार्दूल विक्रीडित द- श्लोक- 1 से 12, 16 से 23 उपजाति- 13, 14, 26 मालिनी-15, 24, 25 एवं 28 वसन्ततिलक-27
	9	सभी शुद्ध; स्रगधरा-1, श्लोक- 2 से 9
	130	पद्य संख्या 89 से 92, 94, 101, 102, 105 एवं 108 टूटे हुए हैं। श्लोक- 33 से 60, 78 से 91, 97 से 118, 129, 130 इन्द्रवज्रा- 1 से 5, 9, 12, 13, 17 से 21, 23 से 24, 26 से 31, 62 से 76, 92 से 93 एवं 121 से 126 मालिनी- 22, 61, 77, 119 एवं

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
90	153	फुम दा खड़े पत्थर	
91	154	पौन प्रह थ्वर गुफा	
92	155	प्रह नोक खड़े पत्थर	
93	156	प्रसत प्रह क्षेत	उदयादित्यवर्मन
94	157	प्रसत खन	उदयादित्यवर्मन
95	158	पल्हल खड़े पत्थर	हर्षवर्मन तृतीय
96	159	प्रसत स्रलौ	हर्षवर्मन तृतीय
97	160	लौनवेक	हर्षवर्मन तृतीय

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		128; औपचण्डक्षिक- 25, 95, 96, 120, 127; वसन्ततिलक- 6 से 8, 10, 11 एवं 14 से 16; पुष्पितग्र- 32; संवृत- 94
976 ई.	9	सभी शुद्ध; श्लोक- 1 से 3, 6, 7 एवं 9; उपजाति- 4, 5 एवं 8
	7	सभी शुद्ध एवं सभी श्लोक
988 ई.	161	पद्य संख्या 1 नष्ट, 2 से 60 एवं 77 से 91 अंशतः टूटे हुए। वसन्ततिलक- 156 से 161, शेष सभी श्लोक
989 ई.	7	पद्य 7 को छोड़कर सभी शुद्ध हैं। वसन्ततिलक-1, इन्द्रवज्रा- 2, श्लोक- 3 से 6, उपजाति- 7
982 ई.	125	अ एवं ब दो भागों में विभक्त अ में 3 पद्य टूटे हुए, ब में 122 सभी शुद्ध, स्रगधरा व मन्दाक्रान्ता
991 ई.	55	पद्य संख्या 1 से 3, 5 से 7, 10 से 14, 16, 30 से 32 एवं 51 अंशतः टूटे हुए हैं। उपजाति- 14 एवं शेष- श्लोक
993 ई.	15	केवल पद्य 9 टूटा हुआ श्लोक- 1 से 15 वसन्ततिलक- 14; आर्य- 15
	59	पद्य 1 व 28 से 30 अंशतः टूटे हुए श्लोक- 1 से 12, 14 से 35 एवं

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
98	166	नोम सिसर	सूर्यवर्मन द्वितीय
99	170	त्रपन दोन खड़े पत्थर	
100	172	वट फू खड़े पत्थर	सूर्यवर्मन
101	173	बन थट	सूर्यवर्मन द्वितीय

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		37 से 57; मालिनी- 13 एवं 36; वसन्ततिलक- 58; रथोदधात-59
1038 ई.	6	सभी शुद्ध; श्लोक- 1 से 5 इन्द्रवज्रा- 6
1051 ई.	32	पद्य संख्या 7 और 20 को छोड़कर सभी शुद्ध; सभी श्लोक
1061ई.	1	टूटा हुआ - अपठनीय
	129	इस अभिलेख में चार सर्ग हैं- सर्ग- 1 में कुल पद्यों की संख्या 52 है, पद्य 1 से 18 अस्पष्ट, 18 एवं 19 अंशतः नष्ट, 21 एवं 39 अस्पष्ट, 16, 17, 20, 22, 26, 28, 29, 30, 32, 33, 34 से 41, 47 से 49 एवं 51 अंशतः नष्ट; 42 से 46 अपठनीय एवं 50 नष्ट; उपजाति- 16 से 49; मालिनी- 51 एवं 52 सर्ग-2 में कुल पद्यों की संख्या 28 है। पद्य 2 से 5 एवं 26 से 28 अंशतः नष्ट; वंशस्थ- 1 से 18; वसन्ततिलक- 19 से 26; मन्दाक्रान्ता- 27, 28 सर्ग- 3 में कुल 35 पद्य हैं जिनमें 12 एवं 13 नष्ट हो चुके हैं। वसन्ततिलक- 1 से 5; उपजाति- 6 से 35

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
102	174	1.नोम रुन एवं 2. नोम संडक	सूर्यवर्मन द्वितीय
103	175	चिक्रेंग	
104	177	ता प्रोम	जयवर्मन सप्तम
105	178	प्रह खन	जयवर्मन सप्तम

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		सर्ग- 4 में कुल 14 पद्य हैं जो सभी टूटे हुए हैं, अत: छन्दों का पता नहीं लगता है।
	8	नोम रुन- पद्य 6 जिनमें 1 से 5 टूटे हुए हैं। नोम संडक- पद्यों की संख्या 2 जो सभी शुद्ध हैं।
	10	केवल 2 पद्य पठनीय हैं।
1108 ई.	145	सभी शुद्ध हैं। वसन्ततिलक- 1 से 4, 6, 9, 10, 13, 17, 20 से 24, 26, 28 एवं 141 से 144; उपजाति- 5, 8, 11, 12, 14 से 16, 25, 27, 29 से 31 एवं 33 से 36; इन्द्रवज्रा- 7, 19, 32 एवं 37; श्लोक- 38 एवं 140 शार्दूल विक्रीडित- 18, आर्य- 145
	179	पद्य 86 से 92, 100 एवं 105 से 112 टूटे हुए हैं। श्लोक- 35 से 166; इन्द्रवज्रा- 7, 20, 23, 33 एवं 169; उपजाति- 5, 8, 11, 12, 14 से 16, 21, 22, 25, 26, 30, 31 एवं 170; वसन्ततिलक- 1 से 4, 6, 9, 10, 13, 17, 19, 24, 27 से 29, 32 एवं 171 से 176; मालिनी- 168; शार्दूल

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
106	179	सेफौंग	जयवर्मन सप्तम
107	180	प्रसत तोर खड़े पत्थर	जयवर्मन सप्तम 1111 या 1117
108	181	प्रसत क्रन	जयवर्मन सप्तम

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		विक्रीडित- 18, 167 एवं 177 से 179; आर्य- 34
	48	सभी शुद्ध श्लोक- 1, 2, 10 से 41 उपजाति- 3, 4 से 9, 42 से 47 स्रगधरा- 48 तम मेन टौच में 39 पद्य हैं जिनमें 1 से 19 नष्ट हो चुके हैं। पद्य 26 सेफौंग के 27वें के समान है, पद्य 37 सेफौंग के 38वें के समान है। बन पकेन अभिलेख में 28 पद्य हैं पर इसमें 1 से 24 नष्ट हैं और 25 से 28 अंशत: टूटे हुए हैं।
	61	सभी शुद्ध हैं। वसन्ततिलक- 1 से 5, 9 से 12, 19 से 21, 24 से 26, 28, 31 से 36, 46 से 47, 49 से 51, 53 से 60; इन्द्रवज्रा- 7 से 13, 15, 17, 18, 27, 29 एवं 61; उपजाति- 6, 8, 16, 23, 48 एवं 52; श्लोक- 14 एवं 30; वंशस्थ- 22; शार्दूलविक्रीडित- 39, 41, 43; स्रगधरा- 37, 38, 40, 42, 44 एवं 45
	5	अ, ब, स एवं द चार खण्डों में विभक्त है।

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
109	182	फिमेनक	जयवर्मन अष्टम
110	186	फिमेनक द्विभाषी	
111	188	कोक स्वे सेक	श्रीन्द्रवर्मन
112	189	बन्ते श्री	श्रीन्द्रवर्मन
113	190	अंगकोर मन्दिर खड़े पत्थर	श्रीन्द्रजयवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		अ में केवल 5 पंक्तियाँ जिनमें प्रथम एवं तृतीय नष्ट हो चुकी हैं। ब में 1 पंक्ति नष्ट हो चुकी है। स में 4 पंक्तियाँ - सभी शुद्ध हैं। द में 8 पंक्तियाँ हैं पर तीसरी, छठीं और आठवीं नष्ट हो चुकी है।
	102	पद्य संख्या 2, 3, 8 से 13, 15 से 18, 23, 24, 30 से 57, 60 से 69, 71 से 74, 77 एवं 78 टूटे हुए हैं। इन्द्रवज्रा- 1, 3 से 5, 7 से 9, 29 से 90; उपेन्द्रवज्रा एवं उपजाति- 96 एवं 100; वंशस्थ- 2, 97 एवं 99; वसन्ततिलक- 6, 95, 101 एवं 102; श्लोक- 10 से 28 एवं 91 से 94
	3	सभी शुद्ध हैं।
1230 ई.	10	सभी शुद्ध हैं (पालि)
	28	पद्य 28 को छोड़कर शेष सभी शुद्ध हैं। वसन्ततिलक- 1 से 16, 22 से 24 एवं 26 से 28 उपजाति- 17 से 20 शार्दूलविक्रीडित- 21; इन्द्रवज्रा- 25
	61	पद्य 16, 17, 21, 23, 24, 34, 35, 41, 44 से 47, 49, 51 से 56 अंशतः नष्ट, 42 एवं 43 सम्पूर्ण नष्ट।

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
114	191	अंगकोर वाट परमेश्वर	जयवर्मन
115	27 अ	बसेट खड़े पत्थर	जयवर्मन प्रथम
116	35	प्रह कुहा लुओन	जयवर्मन प्रथम
117	37 अ	फुम क्रे पत्थर	जयवर्मन प्रथम
118	41 अ	तुओल अन नोट खड़े पत्थर	जयवर्मन प्रथम
119	41 द	तुओल त्रमन स्रगधरा	
120	41 इ	तुओल कौमनाप	
121	43	कैमनन	
122	49 अ	सम्बर स्तम्भ	
123	52	लोबोक स्रौत	जयवर्मन
124	52 अ	प्रसत ता कम	
125	53	वट तसर मोरोय	
126	68 अ	थप लुक हियेन खड़े पत्थर	

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
		वसन्ततिलक- 1 एवं 2 श्लोक- शेष सभी
	103	पद्य 2 से 6, 8 से 20, 51 से 64, 67 एवं 75 से 101 अंशतः टूटे हुए हैं। 21 सम्पूर्ण नष्ट हो चुका है। वसन्ततिलक- 83, आर्य- 102, श्लोक- शेष सभी पूरक अभिलेख
	13	पद्य 1 एवं 2 अपठनीय; 3, 9 एवं 11 अंशतः नष्ट हो चुके हैं।
596 ई.5		सभी शुद्ध एवं सभी श्लोक 2पंक्ति शुद्ध एवं श्लोक
603 ई.	6	शुद्ध एवं सभी श्लोक
615 ई.	1	प्रथम पंक्ति अंशतः टूटा हुआ है।
626 ई.	2	पद्य 1 की प्रथम पंक्ति नष्ट है।
		शार्दूलविक्रीडित
	4	पद्य 2 से 4 अंशतः नष्ट
629 ई.	3	पद्य 1 टूटा हुआ है। आर्य- 1 और 3, स्रगधरा- 2
703 ई.	4	केवल पद्य 1 शुद्ध है, अन्य सभी नष्ट हैं।
713 ई.	1	शुद्ध - आर्य
725 ई.	3	सभी टूटे हुए हैं। आर्य-1, श्लोक-2
814 ई.	5	सभी नष्ट हो चुके हैं।

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
127	73 अ	दमनक स्डोक	
128	75 अ	प्रसत ओ डमबन	यशोवर्मन
129	77 अ	वट त्रलेन	यशोवर्मन
130	83	प्रसत नियांग खमन	जयवर्मन चतुर्थ
131	83 अ	प्रह नोम	
132	92 अ	नोम प्रह नेत प्रह मन्दिर	
133	100 अ-द	नोम कन्व	
134	100 इ	कोक समरन	राजेन्द्रवर्मन
135	101	बसाक खड़े पत्थर	राजेन्द्रवर्मन
136	107 अ	सिक्रेन पत्थर	
137	113	नोम बन्ते नन	
138	113 अ	थमा पुओक	जयवर्मन

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
14		पद्य 1 से 3 शुद्ध हैं, अन्य टूटे हुए हैं। श्लोक- सभी
17		पद्य 14 से 17 टूटे हुए हैं। सभी श्लोक
6		पद्य 1, 2 एवं 6 टूटे हुए हैं। श्लोक- सभी
850 ई.	12	यह अभिलेख अ और ब दो खण्डों में विभक्त है। अ में 4 पद्य हैं जो टूट चुके हैं। ब में 8 जिनमें पद्य 3 को छोड़कर सभी शुद्ध हैं। श्लोक- 1, 4, 5, 7 एवं 8 वसन्ततिलक-2; उपजाति-3एवं 4
852 ई.	2	सभी शुद्ध, श्लोक-1, उपजाति-1
871 ई.	1	शुद्ध एवं श्लोक
	2	सभी शुद्ध; श्लोक- 1 और 2
	10	पद्य 1, 2, 4 से 6 एवं 7 से 10 टूटे हुए हैं। श्लोक- 1 उपजाति- 2 से 4 एवं 6 से 8 आर्य-5 वसन्ततिलक- 9 व 10
	10	सभी टूटे हुए- अपठनीय
892 ई.	9	पद्य 2 एवं 3 अंशतः अपठनीय हैं। वसन्ततिलक- 1, 8 एवं 9 आर्य- 2 एवं 7, श्लोक- 3 से 5 स्रगधरा- 6
902-903 ई.	10	सभी शुद्ध, वसन्ततिलक- 1 श्लोक- शेष सभी
911 ई.	14	पद्य 3 से 6, 8 एवं 10 अस्पष्ट हैं।

क्रम सं.	आर.सी. मजूमदार क्रम सं.	स्थान जहाँ अभिलेख उत्कीर्ण है	उत्कीर्णक
139	116 अ	प्रसत क्रलन	
140	122	तुओल प्रसत	जयवीरवर्मन
141	128 अ	प्रसत खलन	जयवीरवर्मन
142	131 अ	नोम प्रह नेत प्रह मन्दिर	
143	138 स	नोम सिसोर	
144	145	बस्सेत मन्दिर	
145	148 अ	प्रसत खतौम	सूर्यवर्मन प्रथम
146	149 अ	प्रसत सेख	सूर्यवर्मन प्रथम
147	162 अ	प्रह नोम	जयवर्मन
148	167 अ	नोम अकसर	
149	167 ब	नोम अकसर	

तिथि	पद्यों की संख्या	साहित्यिक विवरण
	5	पद्य 2 से 4 अस्पष्ट हैं। वृत्त- 1, 3 से 5; वसन्ततिलक- 2
925 ई.	41	पद्य 14, 15 एवं 35 अस्पष्ट हैं। उपजाति- 1, 3, 5 से 7, 11, 29, 34 से 36 एवं 41; इन्द्रवज्रा- 4, 9, 10, 12, 13 एवं 40 वसन्ततिलक- 2 एवं 8 श्लोक- 14 से 28, 30 से 33 एवं 37 से 39
	13	सभी अस्पष्ट, सभी श्लोक
928 ई.	12	सभी शुद्ध एवं सभी श्लोक
	8	पद्य 2 एवं 5 से 8 अस्पष्ट हैं एवं सभी श्लोक हैं।
958-964 ई.	17	पद्य 1 से 4, 8 एवं 12 अस्पष्ट आर्य- 1 से 16, मालिनी- 17
	11	पद्य 5 से 11 टूटे हुए हैं। सभी श्लोक
	25	सभी शुद्ध एवं सभी उपजाति
1023 ई.	1	शुद्ध एवं उपजाति
1039 ई.	4	पद्य 1 टूटा हुआ है एवं सभी श्लोक में हैं।
1040 ई.	14	सभी टूटे हुए हैं तथा सभी श्लोक में हैं।

परिशिष्ट-3

THAILAND
Anlong Veng
Samraong
Tbeng
Meanchey
Sisophon
3
Siem Reap
Tonle
Sap
Battambang
2
Pursat
Kompong
Chhnang
Koh Kong
Kompong
Speu
5
Takeo
Sihanoukville
Kampot
GULF OF
THAILAND

(कम्बोडिया का मानचित्र)

परिशिष्ट-4

संक्षिप्तिका

AA	*Arts Asiatique, Paris*
ABIA	*Annual Bibliography of Indian Archaeology, Leyden*
AM	*Asia Lajor, London*
AQR	*Asiatic Quarterly Review*
AR	*Asiatic Review, London*
BCAIC	*Bulletin de la Comission Archaeology de l' Indsochine, Paris*
BEFEO	*Bulletin de l' Ecole Francaise d' Extreme Orient, Paris*
BSOAS	*Bulletin School of Oriental and African Studies, London*
CHI	*Cultural Heritage of India (Ramakrishna Centenary Volume), Calcutta*
CJ	*Contemporary Japan, Tokyo*
CR	*Calcutta Review, Calcutta*
CR	*China Review, Hong Kong*
EA	*Eastern Art, Philadelphia*
EH	*Eastern Horizon*
FA	*France ASIE, Saigon*
FEQ	*Far Eastern Quarterly, New York*
GM	*Geographical Magazine*
HJAS	*Harward Journal of Asiatic Studies, Cambridge*
HT	*Hindustan Times, New Delhi*
IA	*Indian Antiquary, Bombay*
IA	*Indian Antiqua, Leyden*
IAC	*Indo Asian Culture, New Delhi*
IAL	*Indian Art and Letters, London*
IC	*Inscriptions du Cambodge, Paris*
IHQ	*Indian Historical Quarterly, Calcutta*

IK	*Inscriptions of Kambuja, Calcutta*
ISC	*Inscriptions de Campa et du Cambodge, Paris*
JA	*Journal Asiatique, Paris*
JAGS	*Journal of American Geographical Society*
JAOS	*Journal of the American Oriental Society, New Heaven*
JAS	*Journal of Asian Studies*
JBRS	*Journal of the Bihar Research Society, Patna*
JGIS	*Journal of Greater India*
JGS	*Journal of the Geographical Society*
JIH	*Journal of Indian History, Trivendrum*
JISOA	*Journal of the Indian Society of Oriental Art, Calcutta*
JOI	*Journal of the Oriental Institute, Baroda*
JOR	*Journal of Oriental Research, Madras*
JRASNCB	*Journal of the Royal Asiatic Society, Shanghai*
JRCAS	*Journal of the Royal Central Asian Society, London*
JRGS	*Journal of the Royal Geographical Society, London*
JSEAH	*Journal of South East Asian History*
JSS	*Journal of Siam Society, Bangkok*
MA	*Memoirs Archæologique, Paris*
MR	*Modern Review, Calcutta*
NGM	*Natural Geographic Magazine, Washington*
NH	*Natural History, New York*
PA	*Pacific Affairs, New York*
RA	*Revue Archæologique, Paris*
RAA	*Revue des Arts Asiatique, Paris*
REJ	*Royal Engineer Journal, London*
TE	*Travel and Exploration, London*
UA	*United Asia, Delhi*

सहायक ग्रन्थों की सूची

SELECT BIBLIOGRAPHY

1. ORIGINAL SOURCES

(a) Inscriptions

Barth, M. — *Inscriptions Sanscrities du Cambodge,* Paris, 1893.

Bergaigne, A. — *Inscriptions Sanscrities du Cambodge,* Paris, 1893.

Coedes, G. — *Inscriptions du Cambodge* (7 Vols.), Hanoi and Paris, 1937-1954.

Majumdar, R.C. — *Inscriptions of Kambuja,* Calcutta, 1953.

(b) Indian Literature

Harivamsa — Translated by Rishikumar Ramachandra Sharma (2 Vols.), Moradabad, 1926.

Mahabharata — English translation by M.N. Dutta, Calcutta, 1895-1905.

Narada — Translated by Jolly in SBE, Vol. XXXI, II.

Natyasastra — Chowkhamba edition, Varanasi.

Sukraniti — Chowkhamba edition, Varanasi.

© Foreign Literature

Aymonier, E. — *Histoire de L'Ancien Cambodge,* Paris, 1920.

Le Cambodge, Vol. I, Le royaume actuel, Paris, 1900.

Le Cambodge, Vol. II. Les province Siamoises, Paris, 1901.

Le Cambodge, Vol. III, Le group d'Angkor et l'histoire, Paris, 1904.

Cambefort, G. — *Introduction au Cambodgien,* Paris, 1950.

Coedes, G. — *Les Etats hindouise's d'Indochine et d' Indone'sie,* Histoire du Monde, Vol. VIII, Paris, 1948.

Pour Mieux Comprendre Angkor, Paris, 1947.

Commaille, J. — *Guides aux Ruines Angkor,* Paris, 1912.

Cuisiner, J. — *Danses Cambodgiennes,* Phnom-Penh.

Dauphin-Meunier, A. — *Histoire du Cambodge,* Paris, 1961.

DeCoral, R.G. — *L'Art Khmer,* Paris, 1940.

Dupont, P. — *La Statuaire Pre'angkorienne,* Ascona, 1955.

Finot, L. and others — *Le Temple d'Angkor Vat,* pt. I, L'Architecture du monument; Introduction, Paris, 1929.

Giteau, M. — *Histoire du Cambodge,* Paris, 1958.

Glaize, M. — *Les monuments du Groupe d'Angkor,* Guide, Saigon, 1948.

Groslier, G. — *Les Arts indigenes au Cambodge,* Hanoi, 1931.

Les collections Khme'res du Musee. Albert Sarraut a Phnom-penh, Paris, 1931.

Groslier, B.P. — *Angkor Hommes et Pierres,* Paris, 1962.

Angkor et la Cambodge au xv le Siecle, Paris, 1958.

Josselinde, J.P.E. — *Minang kabau and Sembilan Negri* (Socio-political structure in Indonesia), Djakarta, 1960.

Lajonquiere — *Inventaire descriptif des Monuments du Cambodge,* Vol. II, Paris, 1912.

Leclere, A. — *Histoire du Cambodge,* Paris, 1914.

Le Thenh Khoi — *Histoire de l'Asie du Sud-Est,* Paris, 1959.

Levi, S. — *L'Inde et le Monde,* Paris, 1928.

Madrolle, Cp. — *Hisoire du Cambodge,* Paris, 1935.

Malleret, L. — *L'Archaeologie du delta du Mekong,* Vol. I, Paris, 1959.

Mansuy, H. — *La Prehistoire en Indochine,* Paris, 1931.

Maspero, G. — *L'Empire Khmer,* Histoire et documents, Phnom-Penh, 1904.

L'Indochine : un Empire Colonial Francais, Paris, 1929.

Marchal, H. — *L'Architecture Comparee dans l'Inde et l'Extreme orient,* Paris, 1944.

Guide Archaeologic aux Temples d'Angkor.

Moura, J. — *Le Royaume du Cambodge* (2 Vols.), Paris, 1883.

Parmentier, H. — *L'Art Khmer primitif,* Paris, 1927.
L'Art Khmer classique, Paris, 1939.

Pelliot, P. — *Memoires Sur les contumes du Cambodge par Tcheou-Ta-kuan,* Paris, 1951.

Russier, H. — *Histoire Sommaire du Royaume de Cambodge,* Hanoi, 1929.

Sahai, S. — *Les Institutions politiques et l'organisation administrative du Cambodge ancien,* Paris, 1970.

Stern, P. — *L'Art du Champa et son evolution,* Paris, 1927.

Thierry, J. — *L'Evolution de la Condition de la Femme en Droit Prive' Campbodgien, Phnom-Penh,* Paris, 1956.

2. SECONDARY SOURCES

Agrawala, P.K. — *Skanda-Karttikeya,* Varanasi, 1967.

Agrawala, V.S. — *Siva-Mahadeva,* The great God, Varanasi, 1966.
India as Known to Panini, Lucknow, 1953.
Prachina Bharatiya Lokadharma, Varanasi, 1964.

A Preface to Angkor — Department of Tourism of Cambodia, Phnom-Penh, 1969.

Bagchi, P.C. — *Bharata O Indochina* (Bengali), Calcutta.
Pre-Aryan and Pre-Dravidian in India, Calcutta, 1929.
Studies in Tantras, Calcutta, 1929.

Basham, A.L. — *The Wonder that was India,* London, 1954.

Baudesson, H. — *Indochina and Its Primitive People,* London, 1919.

Bose, P. — *The Hindu Colony of Cambodia,* Madras, 1927.
The Indian Colony of Champa, Madras, 1926.

Bowie, T. — *The Arts of Thailand,* Bloomington, 1960.

Briggs, L.P. — *A Pilgrimage to Angkor,* California, 1943.
The Ancient Khmer Empire, Philadelphia,

1951.

Brodrick, A.H. *Beyond The Burma Road,* London, 1944.
Little Vehicle, London, 1949.

Brown, Percy *Indian Architecture, Buddhist and Hindu,* Bombay.

Buddha Prakash *India and the World,* Hoshiarpur, 1964.
Studies in Asian History and Culture, Meerut, 1970.

Burgess, Jas *Buddhist Art in India,* London, 1901.

Burchett, W.G. *Mekong Upstream,* Hanoi, 1957.

Bussagli, M. *Indian Miniatures,* London, 1969.

Buxton, L.H.D. *The People of Asia* (The History of Civilisation), London, 1925.

Cady, J.F. *Southeast Asia : Its Historical Development,* New York, 1964.

Candee, H.C. *Angkor The Magnificent,* London, 1925.

Casey, R.J. *Four Faces of Shiva :* The Detective Story of a Vanished Race, London, 1929.
Cambodian Quest, Indianapolis, 1931.

Chhabra, B.C. *Expansion of Indo-Aryan Culture during Pallava Rule,* Delhi, 1965.

Chatterji, B.R. *Indian Cultural Influence in Cambodia,* Calcutta, 1965.
South East Asian Transition, Meerut, 1965.

Clark, T. *Encyclopaedia of Religion and Ethics.*

Clayes, J.Y. *Angkor,* Paris, 1948.

Clifford, S.H. *Further India,* London, 1904.

Coedes, G. *Angkor-* An Introduction, Hong, O.U.P., 1963.
The Making of South East Asia, University of California Press, 1966.
The Indianised States of South East Asia, Honolulu, 1968.

Colam, Lance *Death Treasure of the Khmers,* London, 1949.

Coomaraswamy, A.K. *Myths of the Hindus and Buddhists,* Dover Publications, New York.
The Transformation of Nature in Art, Dover Publications, New York.
Christian and Oriental Philosophy of Art,

Dover Publications, New York.
The Arts and Crafts of India and Ceylon, New York, 1966.
Buddha and the Gospel of Buddhism, New York, 1964.
Introduction to Indian Art, New York, 1964.
The Dance of Shiva, New York, 1957.
History of Indian and Indonesian Art, London, 1927.
Yaksas, Vol. I, Washington, 1928.

Coomaraswamy, A.K. & Horner — *The Living Thought of Gotama the Buddha,* London, 1948.

Deniker, Joseph — *The Races of Man : An outline of Anthropology and Ethnography,* London, 1913.

Dobby, D.H.G. — *South East Asia,* London, 1948.

Durant, Will. — *The Story of Civilisation,* New York, 1935.

Dutt, S. — *Buddhist Monks and Monasteries of India,* London, 1962.
Buddhism in East Asia, New Delhi, 1966.

Eliot, Charles — *Hinduism and Buddhism,* 3 Vols., London, 1921.

Embree, J.F. & Dotson, L.O. — *Bibliography of the Peoples and Cultures of Mainland South East Asia,* New Haven, 1950.

Fergusson, J. — *A History of Indian and Eastern Architecture,* Delhi, 1967.

Frank, V. — *The Land of the White Elephant,* New York, 1884.

Frederic, L. — *The Temples and Sculpture of South East Asia,* London, 1965.

Furnivall, J.S. — *Educational Progress in South East Asia,* New York, 1943.

Gelty, Alice — *Ganesa :* A monograph on the Elephant faced God, Oxford, 1961.

Gerini, G.F. — *Researches in Ptolemy's Geography of Eastern Asia,* London, 1909.

Ghosh, M.M. — *A History of Cambodia,* Saigon, 1960.

Giteau, M. — *Khmer Sculpture and the Angkor Civilisation,* London, 1965.

Goloubew, V. — *India and the Art of Indochina,* London, 1923.

Gonda, J. — *Sanskrit in Indonesia,* Nagpur, 1952.

Gopalan, R. — *History of the Pallavas of Kanchi,* Madras, 1928.

Gordon, D.H. — *The Pre-Historic Background of Indian Culture,* Bombay, 1958.

Gover, G. — *Bali and Angkor,* London, 1936.

Groslier, B.P. — *Indochina : Art in the melting pot of Races,* London, 1962.

Angkor, Art and Civilisation, London, 1957.

Grousset, R. — *The Civilisation of the East,* Delhi, 1969.

Hall, D.G.E. — *A History of South East Asia,* London, 1955.

Harris, W.B. — *East for Pleasure,* London, 1929.

Harrison, B. — *South East Asia, A Short History,* London, 1954.

Hay, S.N. & Case, M.H. — *South East Asian History, A Bibliographical Guide,* New York, 1962.

Hayes, J.H. & Baldwin, M.W. — *History of Europe,* New York, 1959.

Herz, M.F. — *A Short History of Cambodia,* New York, 1958.

Hirth, F. & Rockhill, W.W. — *Chou Ju-Kua,* His work on the Chinese and Arab Trade in the Twelfth and Thirteenth Centuries (Translated from Chinese), St. Petersburg, 1911.

Hobbs, Cecil C. — *South East Asia,* An Annotated Bibliography of Selected Reference Sources, Washington, 1952.

Indochina : A Bibliography of Land and People, Washington, 1950.

Hooykaas, C. — *Agama Tirtha,* Five studies in Hindu Balinese Religion, Amsterdam, 1964.

Janse, O.R.T. — *Archaeological Research in Indochina,*

Cambridge, 1947.
Jennerat, de Beerski, P. *Angkor Ruins in Cambodia,* London, 1923.
Jennings, H. *The Indian Religions, or Results of the Mysterious Buddhism,* London, 1890.
Kalyanaraman, A. *Arya Tarangini :,* The Saga of the Indo-Aryans, Bombay, 1970.
Kane, P.V. *History of Dharmasastras,* Poona, 1946.
Keith, A.B. *A History of Sanskrit Literature,* London, 1928.
King, J.K. *South East Asia in Perspective,* New York, 1956.
Kramrisch, S. *Art of India,* London, 1954.
Landon, K.P. *South East Asia,* Cross-road of Religions, Chicago, 1947.
Lasker, B. *Peoples of South East Asia,* New York, 1944.
Le May, R. *A Concise History of Buddhist Art in Siam,* Cambridge, 1938.
The Culture of South East Asia, London, 1958.
Levi, S. *Sanskrit Texts from Bali,* Baroda, 1933.
Long, L.K. *An Outline of Cambodian Architecture,* Varanasi, 1967.
MacDonald, M. *Angkor,* London, 1958.
Madrolle, C. *Indochina, Cochin China, Cambodia, Annam, Tonkin, Yunnan, Laos, Siam,* London, 1930.
Malcolm, H. *Travels in South Eastern Asia,* 2 Vols., London, 1839.
Majumdar, R.C. *Ancient Indian Colonisation in South East Asia,* Baroda, 1955.
Ancient Indian Colonies in the Far East, Vol. I, *Champa,* Lahore, 1927.
Vol. II, *Suvarnadvipa,* Pts. I and II, Dacca, 1937.
Kambujadesa, Madras, 1944.
Hindu Colonies in the Far East, Calcutta, 1963.
Greater India -National Information and Publications, Bombay, 1948.

Marchal, H. — *Archaeological guide to the Temples of Angkor,* Paris, 1928.

Monier-Williams, Sir Monier — *Hinduism,* New Delhi, 1971.

A Sanskrit-English Dictionary, Oxford, 1899.

Mouhot, H. — *Travels in the Central Parts of Indochina (Siam), Cambodia, Laos.* 2 Vols. London, 1864.

Mookerji, A. — *Art of India,* Calcutta, 1952.

Mookerji, R.K. — *Ancient India,* Allahabad, 1956.

Bharata ki Sanskriti aur Kala, Delhi, 1959.

Ancient Indian Education, London, 1951.

Social Function of Art, Calcutta, 1946.

Mookerji, S.B. — *South East Asia,* Calcutta, 1966.

Nag, Kalidas — *India and the Pacific World,* Calcutta, 1941.

Narasu, P.L. — *The Essence of Buddhism,* Bombay, 1948.

Pandey, R.N. — *Dakshinapurva Asia Mein Bharatiya Sanskriti, Allahabad, 1999*

Panikkar, K.M. — *Asia and Western Dominance,* London, 1955.

Parmentier, H. — *Angkor,* Phnom-Penh, 1957.

Pezner, N.M. — *Ocean of Story* being C.H. Towney's Translation of Somadeva's Katha Saritasagara with introductory notes etc. 10 Vols.,London, 1928.

Pettazzoni, R. — *The All Knowing God,* London, 1956.

Ponder, H.W. — *Cambodian Glory,* London, 1936.

Puri, B.N. — Sudurapurva Mein Bharatiya Sanskriti Aur Usaka Itihasa, Lucknow, 1965

Pyam, C. — *The Road to Angkor,* Old Brompton Road, 1957.

Rao, T.A.G. — *Elements of Hindu Iconography,* Varanasi, 2nd Edn., 1971.

Rawson, P. — *The Art of South East Asia,* London, 1967.

Rowland, B. — *The Art and Architecture of India, Buddhist, Hindu, Jain,* Penguin Books, 1967.

Saraswati, S.K. — *A Survey of Indian Sculpture,* Calcutta,

1957.
Sastri, K.A.N. *South Indian Influences in the Far East,* Bombay, 1949.
Sen, A.C. *Asoka's Edicts,* Calcutta, 1956.
Sharan, M.K. *Studies in Sanskrit Inscriptions of Ancient Cambodia,* New Delhi, 1974.
Select Cambodian Inscriptions, New Delhi, 1979.
Sircar, D.C. *Indian Epigraphy,* Calcutta, 1965.
Select Inscriptions, Calcutta, 1942.
Studies in Geography of Ancient and Medieval India, Delhi, 1960.
Sivaramamurti, C. *Sanskrit Literature and Art,* New Delhi, 1970.
Indian Sculpture, New Delhi, 1961.
Steinberg, D.J. *Cambodia : Its People, its Society, its Culture,* New Haven, 1959.
Stutterheim, W. *Indian Influences in the Lands of the Pacific,* Batavia, 1928.
Swami Sadanand *Hindu Culture in Greater India,* Delhi.
Takakusu, J. *A Record of the Buddhist Religion as Practiced in India and the Malay Archipelago (A.D. 671-695) I-Tsing,* Oxford, 1896.
Theodore, G. Th. Pigeand *Java in the 14th century : A Study in Cultural History,* 5 Vols., The Hague, Martinus, Nijhoff.
Van, Leur *Indonesian Trade and Society,* The Hague, 1955.
Vella, W.F. *Siam Under Rama III,* New York, 1958.
Vincent, F. *The Land of the White Elephant,* New York, 1882.
Wales, H.G.Q. *Ancient South East Asian Warfare,* London, 1952.
Angkor and Rome, London, 1965.
Pre History and Religion, London, 1957.
Towards Angkor, London, 1937.
The Making of Greater India, London, 1961.
Ancient Siamese Government and

	Administration, London, 1934.
	Siamese State Ceremonies, London, 1931.
Walker, G.B.	*Angkor Empire,* Calcutta, 1955.
Wood, W.A.R.	*A History of Siam,* Bangkok, 1933.
Zimmer, H.	*Myths and Symbols in Indian Art and Civilisation,* New York, 1962.
	The Art of Indian Asia, 2 Vols., New York, 1964.
	Philosophies of India, New York, 1951.
Zurcher, E.	*Buddhism,* London, 1962.

3. ARTICLES

Ajarananda	"The Grand Monarchs of Cambodia", *UA,* Delhi, Vol. III, 1951, pp. 333-337.
	"Hindu Kingdoms of Indochina", *UA,* Delhi, Vol. III, No. 3, 1951, p. 205 ff.
Auboyer, J.	"French Excavations in Indochina and Afghanistan, 1935-37", *HJAS,* Cambridge, Vol. III, 1938, pp. 213-222.
Au Chhieng	"Etudes de philologie Indo-Khmere, I et II", *JA,* 1962, pp. 575-591.
Aymonier, E.	"Quelques notions Sur les inscriptions en vieux Khmer", *JA,* 1883, pp. 199-228, 441-505.
Bachhofer, L.	"The Influx of Indian Sculpture into Funan", *JGIS,* Vol. II, 1935, pp. 122-127.
Bagchi, P.C.	"On Some Tantric Texts Studied in Ancient Kambuja", *IHQ,* 1929, pp. 754-769; 1930, pp. 93-107.
Bailey, T.	"Angkor the Lost Kingdom of the Khmers", *NH,* New York, Vol. 47, 1941, pp. 212-226.
Bajpai, K.D.	"India's Cultural Relations with South East Asia", *CF,* Vol. XI, Nos. 3-4, April-July 1969, pp. 70-76.
Bastian, A.	"The Remains of Ancient Cambodia", *JRASNCB,* Shanghai, 1865, NS 2, pp. 125-133.
	"A Visit to the Ruined Cities and

Buildings of Cambodia", *JRGS*, Vol. 35, 1864, pp. 74-87.

Benda, H.J. — "The Structure of South East Asian History : Some Preminary Observations", *JSEAH*, Vol. III, No. 1, March 1962, p. 113 ff.

Benedict, P.K. — "Languages and Literature of Indochina", *FEQ*, Vol. VI, No. 1-4, August 1947, pp. 379-389.

Bernard, S. — "Cent-Cinquantenaire de l'Ecole Nationaledes Langues Orientales Vivantes", Cambodgien, 1947, Paris, pp. 367-370.

Bhattacharya, K. — "Some Aspects of Temple Administration in the Ancient Khmer Kingdom", *CR*, Vol. 134, Nos. 1-3, January-March 1955, p. 193ff.

"The Pancharatra sect in Ancient Cambodia", *JGIS*, Vol. XIV, No. 2, 1955, pp. 107-117.

"Les Religions Brahmaniques Dans L'Ancien Cambodge, D'Apres L'Epigraphie, Et L'Iconographie", *BEFEO*, 1961, p. 43 ff.

"Recherches Sur le vocabulaire des inscriptions Sanskrities du Cambodge", *BEFEO*, 1964, pp. 1-70.

Boeles — "The Migration of the Magic Syllable OM", *IA*, Leiden, 1947, pp. 40-56.

Bosch, F.D.K. — "Le Temple d'Angkor Vat", *BEFEO*, Vol. XXXII, 1932.

Birnbaum, M. — "Ramblings and Recollections", *NH*, New York, Vol. 54, 1945, pp. 181-191.

Black, John — "The Lofty Sanctuary of Khao Prah Vihar", *JSS*, Vol. XLIV, pt. I, 1956, p. 2 ff.

Brandt, G. — "Road to Cambodia", *TE*, London, Vol. 70, Feb. 1938, pp. 16-19, 53-54.

Briggs, L.P. — "The Khmer Empire and the Malay Peninsula", *FEQ*, Vol. IX, Nov. 1949, No. 1, p. 256 ff.

"The Hinduised States of SEA", *FEQ*,

Vol. VII, Nov. 1947, p. 376 ff.

"Siamese Attacks on Angkor before 1430", *FEQ,* Vol. VIII, 1948-49, p. 3 ff.

"A Sketch of Cambodian History", *FEQ,* Vol. VI, 1946-47, p. 345 ff.

"The Treaty of March 23, 1960 between France and Siam and the return of Battambang and Angkor to Cambodia", *FEQ,* Vol. V, Feb. 1946, No. 2, p. 439 ff.

"The Syncretism of Religions in SEA especially in the Khmer Empire", *JAOS,* Vol. 71, 1951, p. 230 ff.

Buchanan, K. — "The Women of Angkor", *EH,* No. 12, Oct. 63, p. 13 ff.

"The Dancers in the Forest-Angkor revisited", *EH,* Vol. IV, No. 5, May 1965, p. 24 ff.

"Cambodia : Oasis of Peace", *GM,* May 1965, p. 368 ff.

Casey, R.J. — "The Four Faces of Shiva : The Mystery of Angkor", *NGM,* Washington, Vol. 54, 1928, pp. 303-332.

Chatterji, B.R. — "Tantrism in Cambodia, Sumatra and Java", *MR,* Calcutta, Vol. 47, 1930, pp. 90-94.

"Recent Advances in Kambuja Studies", *JGIS,* Vol. 6, 1939, pp. 138-148; Vol. 7, 1940, pp. 43-50.

"A Current Tradition among the Kambuja of North India relating to the Khmers of Cambodia", *AA,* Vol. XXIV, p. 253 ff.

"The Hindu Kingdoms of Indochina", in Cultural Heritage of India, Vol. III, Sri Ramakrishna Centenary Volume, Calcutta.

Chatterji, S.K. — "Hindu Culture and Greater India", in *CHI,* Vol. III, Sri Ramakrishna Centenary Vol., Calcutta.

Choudhary, R.K. — "Some Aspects of Feudalism in Cambodia", *JBRS,* Vol. XLIV, pts. I-IV, Jan.-Dec. 1961, pp. 246-268.

"Slaves and Serfs in Medieval Cambodia", *JIH,* Vol. XLIV, pt. III, Dec.1966, pp. 799-812.

Coedes, G. "Some Problems in the Ancient History of the Hinduised States of South East Asia", *JSEAH,* Sept. 1964, p. 3 ff.

"Indian Influence upon Siamese Art", *IAL,* No. 1, 1930, p. 22 ff.

"A Date of Isanavarman II : The Inscription of Tuol Kul (Province of Mong, Cambodia)", *JGIS,* Vol. III, Jan. 1936, No. 1, p. 65 ff.

"A New Inscription from Funan", *JGIS,* Vol. IV, No. 2, July 1937, p. 117 ff.

"Discovery of the Sacred Deposit of Angkor Vat", *ABIA,* 1935, pp. 43-47.

"Excavations at the Bayon of Angkor Thom", *ABIA,* Vol. XII, 1937, pp. 42-50.

"Reconstruction work in the group of Angkor", *ABIA,* Vol. XIII, 1938, pp. 17-26.

"The Causeway of Giants in Angkor Thom", *IHQ,* Vol. XIV, 1938, pp. 607-612.

"Nouellef douness epigraphiques", *JA,* 1958, p. 132 ff.

"Le Destination fumiraire des Grands Monuments Khmers", *BEFEO,* Vol. 40, pp. 315-343.

"Note Sur l'Apotheose au Cambodge", *BCAI,* 1911, pp. 38-49.

"Seconde Etude Sur les bas-reliefs d'Angkor Vat", *BEFEO,* Vol. XIII, 1913.

"Les Bas-reliefs d'Angkor Vat", *BCAI,* Paris 1911, pp. 1702-20.

"Les Etats Hindoises d'Indochine et d'Indonesia, Nouvelle edition revue et misc a journ, Paris, E. De Boccard", 1964.

Conner, J.E. "Forgotten Ruins of Indochina", *NGM,* Vol. 23, 1912, pp. 209-272.

Courtellemont, G. "Enigma of Cambodia : Angkor", *NGM,*

1928, pp. 306-323.

Connor, S.J.O. "Note on a Mukhalimga from Western Borneo", *AA,* Vol. 29, No. 1, 1967, pp. 93-98.

Cuisinier, J. "The Gestures in the Cambodian Ballet", *IAL,* NS. 2, 1927, pp. 92-103.

Damrong, R. "Angkor from a Siamese point of view", *JSS,* Vol. 19, 1925, pp. 141-152.

Davy, C.W. "The Ruins of Angkor with notes on the construction of the Khmer Temples", *REJ,* Dec. 1924.

DeCoral, R.G. "Concerning some Indian influences in the Khmer Art", *IAL,* Vol. VII, No. 2, 1933, p. 110 ff.

Filliozat, J. "Research in SEA and in the FE", in the proceedings of the First International Conference-Seminar of Tamil Studies, Vol. I, 1967, p. 7 ff.

Finot, L. "Le Temple d'Icvarapura (Bantei Srei Cambodge)", *MA,* Vol. I, 1926, pp. 69-123.

"Hindu Kingdoms in Indochina", *IHQ,* Vol. 2, 1926, pp. 250-261.

"Outline of the History of Buddhism in Indochina", *IHQ,* Vol. 2, 1926, pp. 679-689.

"Note transcription du Cambodgien", *BEFEO,* Vol. II, 1902, No. 1, pp. 1-15.

"Les Bas-reliefs de Baphuon", *BCAI,* 1910.

"Sur quelques traditions Indochinoises", *BCAI,* 1911, p. 32.

"Lokesvara en Indochine", *EA,* Vol. I, 1925.

Fisher, W.E. "Living stones of Angkor", *CJ,* Vol. 30, 1939, pp. 219-223.

Fordes, R. "Angkor Miracle of Cambodia", *GM,* Vol. 4, 1936-37, pp. 415-430.

Foucher, A. "Influence of Indian Art onCambodia and Java", Sir Asutosh Mookerji Silver Jubilee Volume, Calcutta, 3(I), pp. 1-35.

Gangoly, O.C. "The Cult of Agastya and the Origin of Indian Colonial Art", *Rupam,* Calcutta, Vol. I, 1926, pp. 1-16.

"The Aryanisation of Ancient Cambodia", *MR,* January 1964, p. 43 ff.

Geldern, R.H. "Conceptions of States and Kingship in South East Asia", *FEQ,* Vol. 2, 1942-43, p. 15 ff.

Gerini, G.E. "A Trip to the Ancient Ruins of Cambodia", *AQR,* Vol. 17, 1904, pp. 355-398; Vol. 17, 1905, pp. 361-395.

Ghosh, M.M. "Antiquity of Angkor", *MR,* January 1964, pp. 44-51.

Ghoshal, U.N. "A Rare Indian Temple type in Cambodia", *JGIS,* Vol. VII, July 1940, No. 2.

"Notes on a type of Lokesvara in Cambodge", *JGIS,* Vol. V, 338, pp. 56-59.

Giteau, M. "Influence of Buddhism on Khmer Art", *Guardian*, Dec. 1967, p. 26 ff.

Goloubew, V. "New Explorations around Mount Bakheng", *ABIA,* 1934, pp. 21-22.

"Angkor in the Ninth Century", *IAL,* Vol. VIII, No. 2, 1934-35, pp. 123-129.

Groslier, G. "Royal Dancers of Cambodia", *Asia,* Vol. 22, 1922, pp. 47-53 and 74-75.

"Les Collections Khmers du Musee Albert Sarraut", *AA,* Vol. XVI, 1931.

Groslier, B.P. "Our Knowledge of the Khmer Civilisation : A reappraisal", *JSS,* Vol. XLVIII, pt. I. 1960.

Guardian, M. "A City of Funan", *Mirror,* Vol. XVIII, 18 July, 1949, p. 91.

Hall, D.G.E. "Looking at South East Asian History", *JAS,* May 1960.

"On the Study of South East Asian History", *PA,* Sept. 1960.

Handy, W.C. "Renaissance in Indochina-A French Experiment in reviving Cambodian Art", *PA,* Vol. 2, 1929, pp. 71-72.

Henderson, E.J.A. "The Main Features of Cambodian

Pronunciation", *BEFEO,* Vol. XIV, pt. I, 1952, pp. 149-174.

Honda, M. "The Say-Fong Inscription of Jayavarman VII", *IBK,* Vol. XIV, No. 1, 1965.

Hopewell, E.F. "Angkor Vat : Origin of Architecture", *JRCAS,* Vol. XXV, 1938, p. 674 ff.

Hutchinson, E.W. "Silhouettes of Indochina, Cambodia and Laos, the link with Siam", *AR,* NS 42, 1946, pp. 140-14.

Jacob, J.M. "The Structure of the word in old Khmer", *BSOAS,* Vol. XXIII, pt. II, 1960, pp. 351-368.

Jaini, P. "Mahadibbamanta : A Paritta Manuscript from Cambodia", *BSOAS,* Vol. XXVIII, 1965, p. 61 ff.

Jayaswal, K.P. "History of India C. 150 A.D. to 350 A.D.- Naga Vakataka Imperial period", *JBRS,* Vol. XIX, pts, I-II, 1933, p. 169 ff.

John, B. "The Inscriptions of Khao Prah Vihar", *JSS,* Vol. 47, pt. I, June 1959, p. 23 ff.

Jones, B.W. "Spindrift of an Asian Tour IV- Indochian (Cambodia)", *AQR,* Vol. XLV, No. 162, p. 535.

Karpeles, S. "About Some Ancient Khmer Kingdoms in Cambodia", *Asia,* Vol. I, 1951, pp. 425-432.

Kaushal Kishor "Varnas in Early Kambuja Inscriptions", *JAOS,* Vol. 85, pp. 566-569.

Keane, A.H. "The Aryan origin of the Cambodians", *CR,* Vol. IX, 1880-81, pp. 256-257.

Krasa, M. "The World of Angkor", *EH,* Vol.II, No.1, January 1962, p. 26ff.

Kroef, J.M. van der "The Hinduisation of Indonesia reconsidered", *FEQ,* Vol. XI, 1951, pp. 17-30.

Le May, R. "India's contribution to the culture of South East Asia", The Royal India and Pakistan Society- The Rabindra Nath Tagore Lecture for 1949, London, 1949.

Lenart, E.R. "Angkor - the city of Gods and People",

EH, Vol. IV, No. 8, August 1965, p. 27 ff.

Lingat, R. "L'Influence Juridique de l'Indeau Champa et au Cambodge d'apres L'Epigraphie", *JA,* Vol. 237, No. 2, 1949, p. 263 ff.

Luce, G. H. "Countries Neighbouring Burma", *JRBRS,* Vol. XIV, 1924, pp. 138-205.

Mabbett, I.W. "Devaraja", *JSEAH,* Vol. X, No. 2, September 1969, pp. 202-223.

Majumdar, B.K. "Cambodia and Indian Influence", *IAC,* Vol. XIV, No. 1, Jan. 1965, pp. 36-44; Vol. XIV, No. 2, April 1965, pp. 96-105.

Majumdar, R.C. "The Indian Epics in Indochina", *IHQ,* Vol. XXII, 1946, pp. 220-222.

"Fame of Sankaracharya in the Far East", *IR,* Vol. XLI, Feb. 1940, No. 2, p. 69 ff.

"The date of accession of Jayavarman II", *JGIS,* Vol. X, Jan. 1943, No. 1, p. 52 ff.

Marchal, H. "Principal Works carried out on the site of Angkor during the year 1933", *ABIA,* 1933.

"Khmer Art and the work of the Ecole Francaise d'Extreme Orient", *JSS,* Vol. XXXII, 1939, p. 137 ff.

Mauger, H. "Angkor Borei", *BEFEO,* Vol. 35, p. 491 ff.

McFarland, S.G. "An account of a trip made to Angkor Vat in 1872", *JSS,* Vol. 30, 1937, pp. 35-56.

Meynard, A. "The stones, waters and gestures of Angkor", *Asia,* Vol. 28, 1928, pp. 25-31.

"A Cambodian Costume-piece", *Asia,* Vol. 29, 1929, pp. 452-549.

Moore, W.R. "Angkor, Jewel of the Jungle", *JGS,* Vol. 117, No. 6, April 1960, p. 517 ff.

Murat, A. "Diggers in Cambodia", *Asia,* Vol. 31, 1933, pp. 208-210.

Mus, Paul "Angkor in the time of Jayavarman VII", *IAL,* NS 11, 1937, pp. 65-75.

Osborne, M. "Notes on early Cambodian provincial History- Isanapura and Sambhapura", *FA,* 1914, pp. 434-448.

Pai, M.P. "The glory of Angkor Vat", *HT,* August 3, 1952, pp. 11-12.

Pandey, R.B. "Sanatan Hindu Dharma at a glance", *Hindutva,* April 1970, p.8ff.

Parmentier, H. "The History of Khmer Architecture", *EA,* Vol. 3, 1931, pp. 141-179.

"L'Art presume du Founan", *BEFEO,* Vol. XXXII, 1932.

Peal, S.E. "The Khmers of Kambuja", *Nature,* Vol. 54, 1896, pp. 461-462.

Pelliot, P. "Quelques textes Chinois concernant L'Indochine hindoisee", *EA,* Vol. II, 1925, pp. 243-263.

"Memoires sur les Contumes du Cambodge de Tcheou Ta-Kouan", *BEFEO,* Vol. II, 1902, pp. 123-177.

"Le Founan", *BEFEO,* Vol. III, pp. 248-303.

Ph, Stern "Diversite et rythme des foundations royales Khmers", *BEFEO,* Vol. XLIV, 1954, pp. 649-685.

Prjyluski, J. "La legende de Rama dans les bas-reliefs d'Angkor Vat", Arts et Archaeologique Khmers, Vol. I, pp. 319-330.

"The legend of Krishna Dvaipayana at the Bayon of Angkor Thom", *YBOAC,* London.

"Is Angkor Vat a Temple or a Tomb?", *JISOA,* Vol. V, 1937, pp. 131-144.

Puri, B.N. "Some Aspects of Social Life in Ancient Kambujadesa", *JGIS,* Vol. XV, No. 2, 1956, pp. 85-92.

"Administrative System of the Kambuja Rulers", *JGIS,* Vol. XV, No. 1, 1956.

"Bhavavarman I and the conquest of Funan", *JGIS,* Vol. XV, 1956, No. 2, pp. 77-84.

Raghavan, V. "Variety and integration in the pattern of Indian Culture", *FEQ,* Vol. XV, No. 1, 1955, p. 497 ff.

Rehatsek, E. "On Hindu Civilisation in the Far East as

represented by Architectural monuments and inscriptions (Cambodge and Annam)", *JAS,* Vol. I, 1886, pp. 502-532.

Ricklefs, M.C. "Land and the law in the epigraphy of tenth century Cambodia", *JAS,* Vol. XXVI, No. 3, May 1971, pp. 411-420.

Sahai, S. "Rajyasastra in Ancient Cambodia", *VIJ,* Vol. IX(1), March 1971, pp. 151-163.

"Medium of Exchange in Ancient Cambodia- A Study in the Contemporary economic life (600-800 A.D.)", *MUJ,* Vol. III, No.1, 1970, pp. 20-29.

"Sources of the Lao Ramayana Tradition", *Indian Horizons,* Vol. XXI, Nos. 2-3, April-July 1972, pp. 70-81.

Sarkar, J.N. "Hindu Influence on Further India", *MR,* Vol. 40, July1926, pp. 4-7.

Sarkar, K.K. "Opening formula in some Cambodian Inscriptions", *VIJ,* Vol. VI, 1968, p. 130 ff.

"Mahayana Buddhism in Funan", *SIS,* Vol. V, pt.1, 1955, p. 69 ff.

"Some Sanskrit place names in Ancient Cambodia", *VIJ,* Vol. III, pt. IV, Sept. 1965, p. 299 ff.

"Some similar expressions in Cambodian (Khmer) and Chinese Languages", South East Asian Studies section, XXVI International Congress of Orientalists, New Delhi, 1964.

"Indian Literature in Ancient Cambodia", Proceedings of the 25th session of Indian History Congress, 1963, pp. 67-69.

Sarma, K.V. "The Mahabharata in South East Asia", *VIJ,* Vol. VIII, 1970, pp. 227-241.

Sastri, K.A.N. "Sanskrit in Greater India", *JOR,* Vol. XVI, pp. 121-128.

"A Note on the Kaundinyas in India", *AA,* Vol. XXIV, p. 403 ff.

Sastri, S.S. "Sri Samkara in Cambodia", *IHQ,* Vol. XVIII, March 1942, No.1, p. 175 ff.

Schnitger, F.M. "Les monuments megalithiques des nias",

	RAA, Vol. XIII, 1939.
Seidenfaden, E.	"The Kui people of Cambodia and Siam", *JSS,* Vol. XXXIX, pt. 2, Jan. 1952.
Senart, E.	"Une Inscriptions bouddhique du Cambodge", *RA,* 1883, pp. 182-192.
Sharan, M.K.	"Prachina Kambuja ke Sanskrit Abhilekha", Magadhi, No. 2, 1971, pp. 1-5.
	"Reference of the Sanjakas in the Cambodian Inscriptions", *JOI,* Vol. XXI, June 1972, No. 4, pp. 325-328.
Singaravelu, S.	"A brief survey of Hinduism in South East Asia prior to 1500 A.D.", *CF,* Vol. XI, Nos. 3-4, April-July 1969, p. 55 ff.
Sivaramamurti, C.	"Some Aspects of Indian Culture", New Delhi, 1969.
Srinivasachari, C.S.	"Indian Culture in Funan and Cambodia", *JOR,* Vol. II, 1928, pp. 10-24.
Srinivas, M.N.	"A Note on Sanskritization and Westernization", *FEQ,* Vol. XV, No. 2, 1955, p. 485 ff.
Suyen, H.	"The Laughing Cambodians", *EH,* Vol.I, No.1, July 1960, p.24 ff.
Thakur, U.	"Kaundinya : The founder of Indian Kingdoms in Funan and Kambuja", *JBRS,* Vol. LIV, pts. I-IV, 1968, pp. 67-75.
Thomson, G.	"Notes on Cambodia and its races", Transactions of the Ethnological Society, London, NS 6, 1968, pp. 246-252.
Vincent, F.	"The Wonderful Ruins of Cambodia", *JAGS,* Vol. 10, 1878, pp. 229-252.
Wales, H.G.Q.	"Culture change in Greater India", *JRAS,* 1948.
	"The Pre-Indian basis of Khmer Culture", *JRAS,* 1952, pp. 117-123.
	"A newly explored route of Ancient Indian Cultural expansion", *IAL,* NS IX, 1935, pp. 1-31.
Whittingham, J.B.	"Spindrift of an Asian tour-IV, Indochina, Cambodia", *AR,* Vol. XLV, NS 161, 1949, pp. 532-540.

Wolters, O.W. "Tambralinga", *BSOAS,* 1958, pp. 587-607.

"The Khmer king at Basan (1371-3) and the restoration of the Cambodian chromology during the fourteenth and fifteenth centuries", *AM,* Vol. XII, pt. 2, p. 44 ff.

Zieseniss "The Studien Zur Geschichte des Sivaismus Die Sivaitischen system in der Attjavanizchen Literature I", *Bijdragen, KI,* Vol. 98, (1938), pp. 75-224.

4. BIBLIOGRAPHY, JOURNALS, PROCEEDINGS AND LECTURES

1. Annual Bibliography of the Indian Archaeology, Leiden.
2. Arts Asiatique, Paris.
3. Artibus Asiae, Switzerland.
4. Arts Asiatique.
5. Asia, New York.
6. Asia, Saigon.
7. Asia Major, London.
8. Asiatic Quarterly Review.
9. Asiatic Review, London.
10. Bijdragen tot de Taad land en Volkenkunde Van Nederlandsch-India.
11. Bulletin de la Commission archaeology de L'Indochine, Paris.
12. Bulletin de l'Ecole Francaise d'Extreme Orient.
13. Bulletin School of Oriental and African Studies, London.
14. Calcutta Review, Calcutta.
15. China Review, Hong Kong.
16. Contemporary Japan, Tokyo.
17. Cultural Forum, New Delhi.
18. Eastern Art, Philadelphia.
19. Eastern Horizon.
20. Epigraphica Indica.
21. Etudes Asiatique.
22. Far Eastern Quarterly, New York.
23. France Asie.
24. (The) Geographical Magazine.
25. Guardian, Rangoon.

26. Harward Journal of Asiatic Studies, Cambridge.
27. Hindustan Times, New Delhi.
28. Hindutva, New Delhi.
29. India Antiqua, Leiden.
30. Indian Art and Letters, London.
31. Indian Historical Quarterly, Calcutta.
32. Indian Horizons, New Delhi.
33. Indian Review, Madras.
34. Indo Asian Culture, New Delhi.
35. Indojaku bukkyojaku Kenkyu, Tokyo.
36. Journal of the American Geographical Society, New york.
37. Journal of the Anthropological Society of Bombay.
38. Journal Asian Studies.
39. Journal Asiatique, Paris.
40. Journal Bihar Research Society, Patna.
41. Journal of Geographic Society.
42. Journal Greater Indian Society, Calcutta.
43. Journal of Indian History, Trivandrum.
44. Journal of the Indian Society of Oriental Art, Calcutta.
45. Journal of the Oriental Institute, Baroda.
46. Journal of Oriental Research, Madras.
47. Journal Royal Asiatic Society, Calcutta.
48. Journal Royal Asiatic Society, Malayan Branch.
49. Journal Royal Asiatic Society, New China Branch, Shanghai.
50. Journal of the Royal Burma Research Society, Rangoon.
51. Journal of the Royal Central Asian Society, London.
52. Journal of the Royal Geographical Society, London.
53. Journal Siam Society, Bangkok.
54. Journal South East Asian History.
55. Magadh University Journal, Bodhgaya.
56. Magadhi, Bodhgaya.
57. Mirror, London.
58. Modern Review, Calcutta.
59. National Geographic Magazine, Washington.
60. Nature, London.
61. Natural History, New York.
62. Pacific Affairs, New York.
63. Proceedings of International Congress of Orientalists, New Delhi, 1964.
64. Proceedings of the 25th Session of Indian History Congress, 1963.

65. (The) Rabindra Nath Tagore Lecture for 1949, The Royal India and Pakistan Society.
66. Ramakrishna Centenary Volume, Calcutta.
67. Revue des Arts Asiatique.
68. Royal Engineer Journal, London.
69. Rupam, Calcutta.
70. Sir Asutosh Mookerji Silver Jubilee Volume, Calcutta.
71. Transactions of the Ethnological Society, London, 1868.
72. Travels and Exploration, London.
73. United Asia, Delhi.
74. Vishveshvaranand Indological Journal, Hoshiarpur.
75. Year Book of Oriental Art and Culture, London.

लेखक परिचय

डॉ० महेश कुमार शरण
(जीवन–वृत्त एवं उपलब्धियाँ)

जन्मतिथि : दिनांक 26 जून 1944

जन्मस्थान : ग्रा० शिवनगर, पो० भण्डारी, जिला : सीतामढ़ी, बिहार

माता : स्व० दुर्गा देवी जी

पिता : स्व० सियावर शरण जी

शिक्षा : कैलासपति हाईस्कूल, अथरी से माध्यमिक परीक्षा (1959)

रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी से 'प्राक् कला' (1960)

ग्रामीण प्रतिष्ठान बिरौली से 'डिप्लोमा इन रूरल सर्विसेज' (1963)

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया से एम०ए०द्वय– प्राचीन भारतीय एवं एशियाई अध्ययन (1965) एवं इतिहास (1969)

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया से 'पीएच० डी०' (1969)

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया से 'डी० लिट्०' (1973)

अध्यापन-कार्य : मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के स्नातकोत्तर प्राचीन भारतीय एवं एशियाई अध्ययन विभाग में 07.01.1966 से 13.12.1973 तक प्राध्यापक;

गया कॉलेज के इसी विभाग में 14.12.1973 से 13.11.1980 तक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष;

गया कॉलेज में ही इसी विभाग में 14.11.1980 से 31.01.1985 तक उपाचार्य एवं अध्यक्ष;

गया कॉलेज में ही इसी विभाग में 01.02.1985 से 30.06.2004 तक आचार्य एवं अध्यक्ष।

शोध-निर्देशन : 5 शोधकर्ताओं को 'डी० लिट्०' तथा 60 शोधकर्ताओं को 'पीएच० डी०' के लिए शोध-निर्देशन

सेवानिवृत्ति : 30.06.2004

प्रकाशित ग्रन्थ :

1. ***Tribal Coins : A Study*** (Abhinav Publications, E-37 Hauz Khas, New Delhi- 110016), ISBN : 978-0712801324, 1972,
2. ***Studies in Sanskrit Inscriptions of Ancient Cambodia*** (Abhinav Publications, E-37 Hauz Khas, New Delhi-110 016), ISBN8170170060, 9788170170068, 1974,
3. ***The Bhagavadgītā and Hindu Sociology*** (Bharat Bharati Bhandar, Varanasi), 1977,
4. ***Court Procedure in Ancient India*** (Abhinav Publications, E-37 Hauz Khas, New Delhi-110 016), ISBN : 8170170761, 9788170170761, 1978,
5. ***प्राचीन भारत*** (2 खण्ड) (चौखम्भा ओरियटैलिया, वाराणसी), 1979 एवं 1981ए
6. ***Select Cambodia Inscriptions*** (Kamala Nagar, Delhi- 110 007), 1981
7. ***Political History of Ancient Cambodia*** (Vishwa Vidya Publishers, Ramesh Nagar, New Delhi-110 015), 1985,
8. ***कम्बुज देश का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास*** (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी),

1995,

9. ***श्री कायस्थ कुलदर्पण*** (गया), 2004,
10. ***थाईलैण्ड की सांस्कृतिक परम्पराएँ*** (विशाल पब्लिकेशन, दरियापुर, पटना, 2004,
11. ***Dhammapada*** (Abhinav Publications, E-37 Hauz Khas, New Delhi-110 016), ISBN : 9788170174752, 81701747592006, 2006,
12. ***एक संघर्षरत विश्वविद्यालय शिक्षक की आत्मकथा*** (बिहार के महामहिम राज्यपाल द्वारा विमोचित) (विशाल पब्लिकेशन, दरियापुर, पटना), 2011,
13. ***भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास : प्राक् ऐतिहासिक काल से प्राक् गुप्त काल तक*** (प्रत्यूष पब्लिकेशन, पावी सादकपुर, गाज़ियाबाद-201 103, उ०प्र०), 2014,
14. ***प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास : गुप्त काल से पूर्व-मध्य काल तक*** (प्रत्यूष पब्लिकेशन, पावी सादकपुर, गाज़ियाबाद-201 103, उ०प्र०), 2014,
15. ***प्राचीन भारतीय मुद्राएँ*** (प्रत्यूष पब्लिकेशन, पावी सादकपुर, गाज़ियाबाद-201 103, उ०प्र०), 2014,
16. ***प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख*** (प्रत्यूष पब्लिकेशन, पावी सादकपुर, गाज़ियाबाद-201 103, उ०प्र०), 2014,
17. ***प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास*** (प्रत्यूष पब्लिकेशन, पावी सादकपुर, गाज़ियाबाद-201 103, उ०प्र०), 2014,
18. ***थाईलैण्ड : पर्यटकों का देश*** (प्रत्यूष पब्लिकेशन, पावी सादकपुर, गाज़ियाबाद-201

103, उ०प्र०), 2014,

19. ***कम्बोडिया के संस्कृत अभिलेख*** (2 भाग), (अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, आपटे भवन, केशव कुञ्ज, झण्डेवाला, नयी दिल्ली-110 055), 2015

आगामी प्रकाशन : 1. ***The Glory of Thailand***,
2. ***भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया : एक अध्ययन,***
3. ***India and South-East Asia : A Study***,
4. ***The Cambodia : they saw***,
5. ***युगयुगीन गया***

सम्पादन : 1. ***मगध : जैन-संस्कृति का मूल क्षेत्र*** (1986 में जैन समाज गया से प्रकाशित स्मारिका),
2. ***बुद्ध-वन्दना*** (बोधगया से 1999 से 2006 तक आयोजित बुद्ध-महोत्सव की स्मारिका)
3. ***उद्‌भव*** (2015 से गोरखपुर से प्रकाशित वार्षिक शोध-पत्रिका)

शोध-पत्र : शताधिक शोध-पत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं प्रकाशित

शैक्षणिक विदेश यात्राएँ : शोध-प्रबन्ध के सिलसिले में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की यात्रा (1976),
महाचुलालौंगकौर्न बौद्ध विश्वविद्यालय (बैंकॉक, थाईलैण्ड) में तीन माह तक अतिथि अध्यापक (1979),
थाईलैण्ड के विभिन्न स्थानों में शोध-प्रबन्ध सामग्रियों के संग्रह हेतु सात सप्ताह के लिए भ्रमण (1986),
नेपाल की दो बार शोध-सामग्री हेतु यात्रा (1995)

सम्पर्क : 'अपराजिता', 26-आर, बैंक कॉलोनी, पादरी बाज़ार, गोरखपुर-273014 (उ०प्र०);

सचलभाष : 09452778554